नया उपन्यास
अनिल मोहन
हुक्म मेरे आक़ा
मोना चौधरी सीरीज
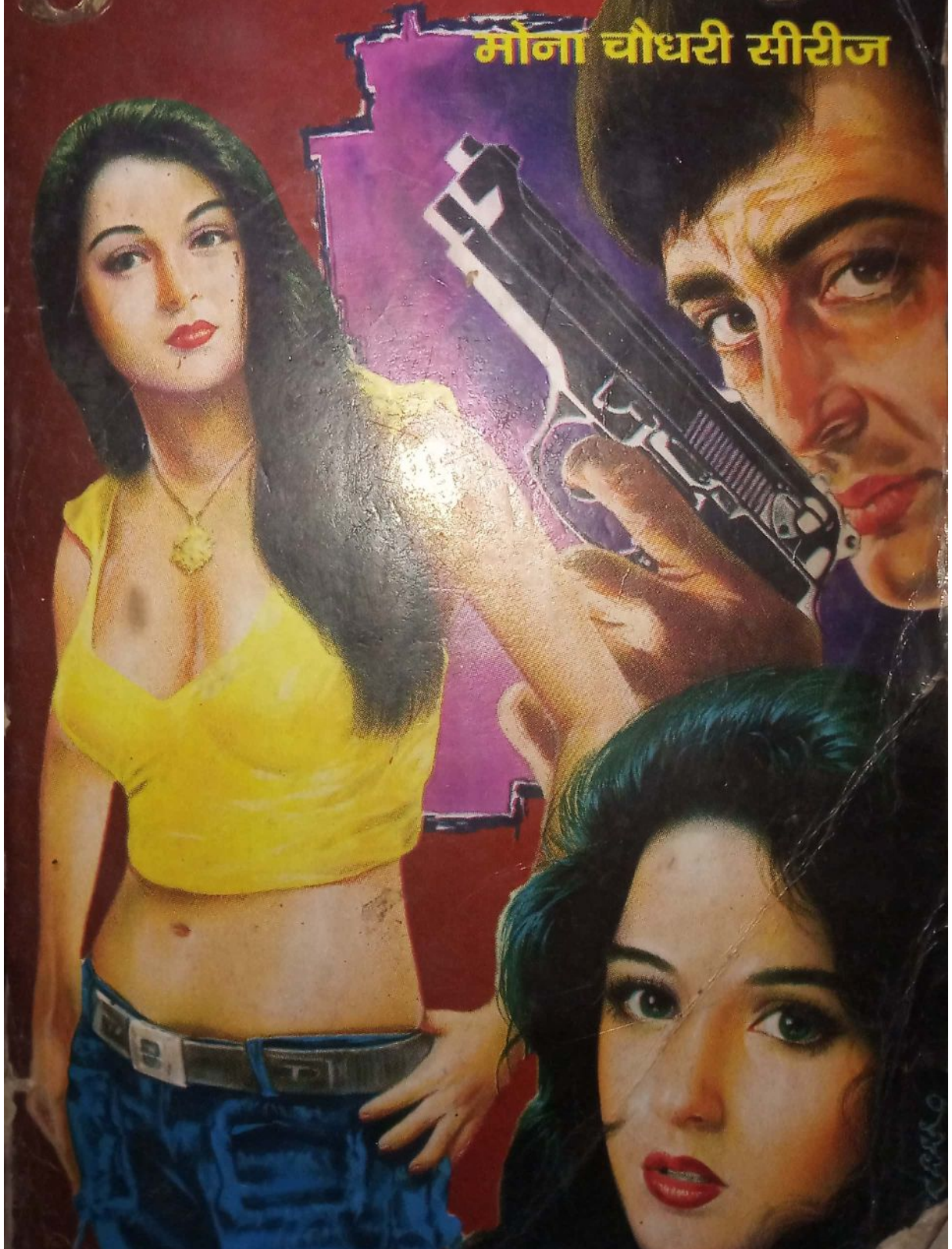
देवराज चौहान सीरीज

हुक्म मेरे आका

अनिल मोहन

मोना चौधरी गहरी नींद में थी।

सुबह चार बजे बर्मा से लौटी थी। वहां बारह दिन लग गये थे और बर्मा में जो काम था, उसमें इतनी व्यस्त रही कि चार घंटे लगातार नींद ले पाने का मौका न मिल पाया था।

अब वो थकी-टूटी नींद में पस्त पड़ी हुई थी।

दिन के ग्यारह बज रहे थे।

ठीक इसी पल फोन की बैल बजने लगी।

बैल बजती रही। फिर बन्द हो गई। कुछ पलों बाद दोबारा बैल बजनी शुरू हुई।

इस बार मोना चौधरी नींद में हिली और करवट लेकर बैड के साइड टेबल के करीब आ गई और बजते फोन का रिसीवर उठाया। कहा कुछ नहीं। कान में लगाये नींद में पड़ी रही।

"बेटी...!" उसके कानों में मिस्टर पहाड़िया की आवाज पड़ी।

"मर गई... ।" मोना चौधरी ने नींद में ही कहा और रिसीवर तिपाई पर रख दिया।

मोना चौधरी पुनः नींद में डूब गई थी।

कुछ पलों बाद बैड पर ही रखे मोबाइल फोन की बैल बज उठी।

उसी क्षण मोना चौधरी की दोनों आंखें खुलीं। आंखों
र चेहरे पर नींद बसी स्पष्ट दिखाई दे रही थी। मोबाइल
न की बेल बजती रही। मोना चौधरी का हाथ बैड पर घूमा
र अगले ही पल मोबाइल उसके हाथ में था। कुछ पल
्रीन पर आया नम्बर देखती रही, फिर कॉलिंग स्विच दबाकर
ोन कान से लगाया—

"हैलो... ।"

"बेटी...!" मिस्टर पहाड़िया की आवाज कानों में
ड़ी—"तुमसे अभी बहुत ही खास काम है।"

"मैं कोई काम नहीं करना चाहती।" मोना चौधरी ने फोन बन्द करके रखा और उठ बैठी।

छः-सात घंटे की नींद लेकर पूरा तो नहीं, शरीर को थोड़ा-सा आराम अवश्य मिला था। अब तो नींद टूट गई थी। वो उठी और किचन की तरफ बढ़ गई। शरीर पर पैन्टी और नाइट गाउन था। छोटा-सा एयर बैग बैड पर अभी भी एक तरफ पड़ा था, जिसे वो बर्मा से अपने साथ लाई थी।

पांच मिनट में ही किचन से कॉफी बनाकर निकली। फ्लैट के छोटे से ड्राइंग रूम में पहुंची और घूंट भरते हुए सोफे पर बैठने लगी कि कॉलबैल बजी।

मोना चौधरी ठिठकी, फिर कॉफी का मग थामे दरवाजे के पास पहुंची और आई मैजिक पर आंख लगाकर देखा, मिस्टर पहाड़िया का चेहरा दिखा।

मोना चौधरी के होंठ गोल हो गये। हैरान-सी हुई कि मिस्टर पहाड़िया अभी तो फोन कर रहे थे और अब एकदम से उसके दरवाजे पर कैसे आ गये?

मोना चौधरी ने दरवाजा खोला।

मिस्टर पहाड़िया उसे देखते ही मुस्कुराये।

"क्या बाहर खड़े फोन कर रहे थे?" मोना चौधरी पीछे हटते हुए बोली।

"रास्ते में था।" मिस्टर पहाड़िया ने भीतर प्रवेश किया और दरवाजा बन्द किया—"मैं जानता हूं कि तुम थकी हुई

हो। रात को ही बर्मा से लौटी हो, परन्तु काम ही ऐसा आ गया कि तुम्हें डिस्टर्ब करना पड़ा।"

मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

"आपको कैसे पता कि मैं बर्मा से लौटी हूं... ?"

मिस्टर पहाड़िया मुस्कुराये।

"आप मुझ पर नजर रखवाते हैं?"

"नहीं... ।"

"तो मेरे बर्मा से लौटने की बात आपको कैसे मालूम? जबकि सुबह चार बजे ही मैं लौटी हूं।"

"बर्मा में मेरे एजेन्टों ने तुम्हें पहचान लिया था। मेरे कहने पर वो तुम पर नजर रख रहे थे। अगर तुम किसी भारी मुसीबत में पड़तीं तो वो तुम्हारी सहायता करने भी आगे आ जाते... ।"

मोना चौधरी, मिस्टर पहाड़िया को देखती रही।

मिस्टर पहाड़िया आगे बढ़कर सोफे पर बैठे और सिगरेट सुलगा ली।

मोना चौधरी की निगाह मिलिट्री सीक्रेट सर्विस के चीफ मिस्टर पहाड़िया पर टिकी रही।

"जो मामला अभी सामने आया है, उसे पूरा करना मेरे एजेन्टों के बस का नहीं... ।"

"मैं कोई काम नहीं करना चाहती, बर्मा की थकान चढ़ी हुई है। मैं... ।"

मिस्टर पहाड़िया ने उसकी बात काटकर शान्त स्वर में कहा—

"तुम कॉफी पीती रहो, मैं कम शब्दों में तुम्हें सारा मामला समझाता हूं।"

"आपने शायद सुना नहीं कि मैं कोई काम नहीं करना चाहती। सुनना भी नहीं चाहती और... ।"

"आई डिटैक्टिव नाम की जासूसी संस्था है। पंजाबी बाग, सिटी काम्पलैक्स में दूसरी मंजिल पर ये आफिस है। इसकी मालकिन प्रिया नाम की तीस बरस की युवती थी,

जिसका कि रात को कत्ल हो गया।"

मोना चौधरी ने कॉफी का घूंट भरा। नजरें मिस्टर पहाड़िया पर थीं।

"प्रिया पर मेरे एजेन्ट पन्द्रह दिनों से नजर रखे हुए थे।"

मोना चौधरी ने शांत भाव में घूंट भरा।

"हमारे हाथ कुछ ऐसे सबूत लगे थे कि जिससे इस बात का शक पैदा होता था कि वो दुश्मन देशों के लिये जासूसी करती थी। यानि कि अपनी प्राइवेट डिटैक्टिव आई एजेन्सी की आड़ में वो देश के गुप्त रहस्य तलाश करके, हासिल करके, दुश्मन देशों को देती थी।" मिस्टर पहाड़िया ने कहा।

"ऐसा था तो उसे गिरफ्तार कर लेते।"

"उसके खिलाफ हमारे पास ठोस सबूत न थे कि उसे गिरफ्तार कर सकते।"

"क्या फर्क पड़ता है?" मोना चौधरी ने लापरवाही से कहा– "उसे चुपके से उठा लेते। मामूली काम है आपके लिये। उसके बाद आसानी से उसका मुंह खुलवा लेते कि क्या सच है और क्या झूठ... ।"

मिस्टर पहाड़िया ने इन्कार में सिर हिलाते हुए कहा–

"बहुत सोच-समझ कर कदम उठाना पड़ता है। अगर प्रिया को उठा लेते तो बहुत नुकसान हो जाता। उसके साथी सतर्क होकर हमारे हाथों से दूर पहुंच जाते। तब हम मामले की तह तक न पहुंच पाते।"

मोना चौधरी ने कॉफी का घूंट भरा।

"हमें उसके खिलाफ कुछ-कुछ सबूत मिलने शुरू हो गये थे। उन लोगों की पहचान होनी भी शुरू हो गई थी, जो प्रिया से अक्सर मिलते रहते हैं। एक सप्ताह तक कोई नतीजा सामने अवश्य आना था, परन्तु कल आधी रात को प्रिया की हत्या हो गई और हमारे सारे काम रुक गये।"

"किसने किया प्रिया का कत्ल?"

"मालूम नहीं।" मिस्टर पहाड़िया ने कश लिया–"अगर हमें ऐसा हो जाने का अंदेशा होता तो हम प्रिया को मरने न देते। उसे उठाकर अपने कब्जे में कर लेते।"

मोना चौधरी खामोशी से कॉफी के घूंट भरती रही।

"मेरा क्या काम है, इस मामले में?"

"प्रिया ने शादी कर रखी थी। बाइस साल की उम्र में उसकी शादी हुई थी। डेढ़ साल अपने पति के साथ रही, परन्तु दोनों में बन नहीं पाई और वे अलग हो गये, लेकिन वे तलाक न ले पाये। यानि कि प्रिया का वारिस उसका पति ही है। आज सुबह मेरे एजेन्ट उससे मिले और आई डिटैक्टिव एजेन्सी का बिजनेस उससे उचित कीमत पर खरीद लिया। इस वक्त मेरे एजेन्ट और प्रिया का पति प्रदीप गोस्वामी कोर्ट में कागज तैयार कर रहे हैं।"

"बहुत जल्दी दिखाई प्राइवेट डिटैक्टिव एजेन्सी को खरीदने में... ।" मोना चौधरी के होंठ सिकुड़े।

"जल्दी करना जरूरी था।" मिस्टर पहाड़िया ने गम्भीर स्वर में कहा–"वरना प्रिया के अंजान साथी उस आफिस को खरीद सकते थे या फिर वहां पर अगर कोई खास चीजें मौजूद हों तो उसे उड़ा ले जा सकते थे।"

"ये काम तो वो अब भी कर सकते हैं।"

"नहीं। मेरे दो एजेन्ट प्रिया की प्राइवेट डिटैक्टिव एजेन्सी पर नजर रखे हुए हैं।" मिस्टर पहाड़िया ने कहा–"मुझे पूरा विश्वास है कि आई डिटैक्टिव एजेन्सी में ऐसा बहुत कुछ हो सकता है, जो हमारे काम का है। अगर वहां कुछ भी नहीं है तो भी वो जगह हमारे बहुत काम आ सकती है मोना चौधरी... ।"

"वो कैसे?"

"प्रिया की मौत की खबर मैंने आम नहीं होने दी कि हर कोई ये बात जान ले। ऐसे में कई लोग प्रिया से मिलने आयेंगे और वहां पर तुम मौजूद होगी। हमें बहुत-सी नई बातें पता चलेंगी।"

मोना चौधरी के होंठ सिकुड़े।

"इस काम में मेरी क्या जरूरत है? आपका कोई एजेन्ट भी ये काम कर सकता है।"

"नहीं। इस काम में मुझे सावधानी लेनी है। जो भी प्रिया की जगह पर आयेगा, उसके बारे में वे लोग पूरी तरह छानबीन करेंगे कि वो कौन है। यानि कि अपने तौर पर वो तुम्हारी भी छानबीन करेंगे। मैं नहीं चाहता कि प्रिया की जगह लेने वाले की पोल खुले। उसका सम्बन्ध मिलिट्री सीक्रेट सर्विस से जुड़े। इसलिए इस काम में मैंने तुम्हारा चुनाव किया है। तुम्हारे बारे में वो ज्यादा-से-ज्यादा ये ही जान सकते हैं कि तुम इश्तिहारी मुजरिम मोना चौधरी हो, जिसकी पुलिस को तलाश है। इससे ज्यादा कुछ नहीं। तुम्हारा मेरा सम्बन्ध नहीं जोड़ सकते और ये जानकर कि तुम मोना चौधरी हो, अपराधी हो, वो कुछ लापरवाह भी हो सकते हैं कि तुमसे उन्हें कोई खतरा नहीं। तुम्हारे मोना चौधरी होने का भी हमें फायदा मिल सकता है।"

"आप तो पूरी तैयारी करके आये हैं।" मोना चौधरी मुस्कुराई।

"मेकअप से तुम्हारा चेहरा बदल दिया जायेगा। जरूरत का हर पहचान-पत्र कुछ ही घण्टों बाद तुम्हें मिल जायेगा। अब तुम आई डिटैक्टिव के मालिक के तौर पर प्रिया की जगह ले लोगी।"

मोना चौधरी के चेहरे पर गम्भीरता आ गई।

"मेरे ख्याल में वहां तुम्हारे सामने कई नई बातें आयेंगी। वो सब कुछ सम्भालना है तुमने। ये देखना है कि क्या प्रिया सच में देश के गुप्त राज बाहर के लोगों को बेचती थी। तो हो सकता है, वो लोग तुमसे बात करने की चेष्टा करें।" मिस्टर पहाड़िया ने कहा—"साथ ही प्रिया के मर्डर का केस सॉल्व करना है।"

"प्रिया मर्डर केस?"

"हां। प्रिया का पति प्रदीप गोस्वामी तुम्हारे पास

आयेगा, तुम्हें अपनी पत्नी के कातिल को तलाश करने को कहेगा। प्रदीप गोस्वामी से बात हो चुकी है इस बारे में... ।"

"ऐसा क्यों?"

"मैं चाहता हूं, तुम प्रिया के मामले में पूरा दखल दो। खामखाह दखल दोगी तो कोई भी सोचने के लिये मजबूर हो सकता है कि तुम ऐसा क्यों कर रही हो। तुम पर वो लोग शक कर सकते हैं। अगर प्रदीप गोस्वामी तुम्हें अपनी पत्नी के हत्यारे को तलाश करने को कहेगा तो तुम शक के घेरे में नहीं आओगी।"

मोना चौधरी ने समझने वाले भाव में सिर हिलाया।

"आई प्राइवेट डिटैक्टिव एजेंसी में तुम्हें सहायक के तौर पर रोमी नाम का आदमी मिलेगा। जो कि मेरा बेहतरीन एजेन्ट है, परन्तु इस काम में तुम्हारा असिस्टेंट होगा।"

"रोमी क्या करेगा?"

"जो तुम कहोगी। वो अपना दिमाग नहीं लगायेगा।"

"हूं।" मोना चौधरी ने विचार भरे अंदाज में सिर हिलाया।

"और एक चपरासी मिलेगा तुम्हें। तुम उसे गोपाल कह सकती हो। गोपाल बहुत ही खतरनाक कमाण्डो है और दुश्मनों को मौत देने में उसे मजा आता है।" मिस्टर पहाड़िया ने कहा—"गोपाल वहशी माना जाता है। अगर उसे दुश्मनों के बीच छोड़ दें तो...। वो ही गोपाल आफिस में तुम्हारा चपरासी होगा।"

"सब तैयारी कर रखी है?"

"पहले तुम प्रिया का आफिस सम्भालो। बाकी बातें तुम फिर भी पूछ सकती हो।"

"कब आफिस सम्भालूं?"

"कल सुबह... ।"

"आज क्या करना है?"

"हमारे एक्सपर्ट तुम्हारा मेकअप करेंगे। तुम्हारा हुलिया बदलेंगे, जो कि कई दिनों के लिये स्थाई रहेगा। इसके अलावा

जो जानकारी तुम्हें चाहिये होगी, वो भी मिलती रहेगी। यानि कि काम भी, बातें भी...।"

"बातें तो हो ही जायेंगी।" मोना चौधरी ने मग से घूंट भरकर उसे टेबल पर रखा—"मुझे मिलेगा क्या?"

"क्या चाहती हो?"

"काम बढ़िया रहा तो एक करोड़। खास काम न हुआ तो जो आप ठीक समझें, वो ही दे देना।"

मिस्टर पहाड़िया मुस्कुराये।

"क्या हुआ...?"

"ये बहुत खतरनाक मामला है बेटी। इस बात की मैं पहले ही तसल्ली कर चुका हूं। तुम्हें कदम-कदम पर सतर्क रहना होगा। यानि कि तुम्हारे साथ कुछ भी हो सकता है।"

"इसका मतलब अभी आपने कई बातें मुझे नहीं बताईं?"

"जो जरूरी था, वो बता दिया।"

मोना चौधरी गहरी सांस लेकर दूसरी तरफ देखने लगी।

"कोई समस्या...?"

"मैं कुछ दिन आराम करना चाहती थी। बर्मा से बहुत थकी आई हूं।"

"ये काम खत्म कर लो, फिर तुम जी भर कर आराम कर लेना।" मिस्टर पहाड़िया उठ खड़े हुए—"जब तुम अपने अपार्टमेंट से बाहर निकलकर सड़क पर आओगी तो वहां तुम्हारे इन्तजार में छोटी-सी लाल रंग की कार खड़ी होगी। कार का नम्बर है 0500। उसमें बैठ जाना। तुम ठिकाने पर पहुंच जाओगी।"

मोना चौधरी होंठ सिकोड़ कर मुस्कुराई।

"चलता हूं।" मिस्टर पहाड़िया ने कहा और आगे बढ़ते हुए दरवाजा खोलकर बाहर निकल गये।

मोना चौधरी सोचों में डूबी वहीं बैठी रही।

□□□

□□□

एक घंटे बाद मोना चौधरी अपार्टमेंट से बाहर निकली।

मोना चौधरी ने घुटनों से ऊपर तक की पीली स्कर्ट और सफेद स्कीवी पहन रखी थी। स्कीवी में उसके उभार जरूरत से ज्यादा आकर्षक दिखाई दे रहे थे। खुले-सिल्की बाल कन्धों तक आते लहरा रहे थे। कानों में छोटी-सी बालियां पड़ी थीं। हथेली में नन्हां-सा मोबाइल फोन दबा हुआ था।

अपार्टमेंट के गेट से बाहर निकलते ही ठिठकी।

इधर-उधर देखा।

बायीं तरफ सौ कदम आगे छोटी-सी लाल कार नजर आई। जिसका नम्बर 0500 था। मोना चौधरी उस तरफ बढ़ गई। गर्मी हो चुकी थी। सूर्य सिर पर चढ़ा तप रहा था।

मोना चौधरी कार के पास पहुंची। झुककर भीतर झांका।

ड्राइविंग सीट पर पैंतालिस बरस की औरत मौजूद थी। उसने पैन्ट-कमीज पहन रखी थी। उसके बाल छोटे ही थे, लेकिन फिर भी उन्हें पीछे को करके रबड़ बैण्ड लगा रखा था।

"हैलो।" मोना चौधरी बोली।

"पीछे बैठ जाओ।" उसने शांत स्वर में कहा।

मोना चौधरी ने पीछे का दरवाजा खोला और सीट पर बैठ गई।

उस औरत ने कार स्टार्ट की और आगे बढ़ा दी।

"मिस्टर पहाड़िया के लिये काम करती हो?" मोना चौधरी ने बाहर देखते हुए पूछा।

"हां। मैं कैप्टन हूं।"

"इस वक्त तो तुम ड्राइवर का काम कर रही हो।"

"ये सीक्रेट मिशन है। हम चन्द लोगों को ही पता है कि हम क्या करने जा रहे हैं।"

"हूं...नाम क्या है तुम्हारा?"

"तुम मुझे रानी कह सकती हो।" वो बोली—"प्रिया

का एक खास दोस्त है मुकेश वालिया। प्रिया के खास मिलने वालों में से है। दोनों में बिजनेस धन्धे का वास्ता है या प्यार-मोहब्बत का, ये मालूम नहीं हो सका।''

''यानि वे दोनों मिलते रहते थे...?''

''हां। मुकेश वालिया अक्सर प्रिया के आफिस में ही आता था मिलने। दो-दो-चार-चार घंटे वहीं रहता था।''

''उस आफिस में प्रिया के अलावा भी तो और काम करने वाले होंगे?''

''फील्ड के काम अधिकतर प्रिया ही देखती थी। आफिस के मामलों को वो खुद ही टाइप करती थी, बेशक रात के ग्यारह ही उस काम में क्यों न बज जायें। एक तरह से वो काफी मेहनती थी।''

''और देश के खिलाफ काम करती थी।''

''हां।'' रानी ने सिर हिलाया—''जरूरत पड़ने पर वो अपने असिस्टेंट से काम लेती थी। विजय मल्होत्रा नाम का उसका असिस्टेंट कम ही उसके आफिस में आता था। प्रिया उसे फोन पर ही काम सौंपती थी और फोन पर ही रिपोर्ट लेती थी।''

''अजीब बात है। प्रिया उसे आफिस क्यों नहीं आने देती थी?''

''शायद वो नहीं चाहती होगी कि विजय मल्होत्रा ये जाने कि उसके आफिस में क्या हो रहा है।''

''ये ही बात होगी। बात की विजय मल्होत्रा से...?''

''हां। परन्तु उससे कोई काम की बात पता नहीं चल सकी। प्रिया उससे अपने खास काम नहीं लेती थी।''

''मारा किसने प्रिया को?''

''पता नहीं।''

''तुम लोगों को ये भी नहीं लगा कि वो मारी जा सकती है?'' मोना चौधरी ने पूछा।

''नहीं। ऐसा कुछ नहीं लगा हमें। जरा भी शक होता तो हम प्रिया को मरने न देते।''

"और कौन-कौन खास लोग हैं, जो प्रिया से मिलते थे?"

"मिस्टर पहाड़िया उनके बारे में बतायेंगे।"

मोना चौधरी खामोश हो गई।

"तुम बहुत खूबसूरत हो।" रानी बोली।

"जानती हूं।" मोना चौधरी मुस्कुराई।

"तुम्हारे चाहने वाले भी बहुत होंगे?"

"खूबसूरती के चाहने वाले, सब ही जगह बहुत होते हैं। बिना ढूंढे मिलते हैं।"

"किस्मत वाली हो।"

"क्या तुम नहीं हो?"

"मेरी जिन्दगी तो देश की है। हम महिला एजेन्ट अगर खूबसूरत हों तो, चारे के तौर पर दुश्मनों को डाली जाती हैं। हम लोगों का अपना कोई जीवन नहीं होता।" रानी ने शांत स्वर में कहा।

"क्या तुम अपने काम से खुश हो?"

"बहुत। शुरू में ऐसे काम करने में परेशानी होती थी, परन्तु अब आदत-सी हो गई है। अच्छा लगता है। एक ही धुन सवार रहती है कि मौत के खेल में, दुश्मन को मात देनी है।"

"शादी की?"

"नहीं। वक्त ही नहीं मिला। यहां तो समझो देश के गले में वरमाला डाल दी। उसी से शादी हो गई।"

मोना चौधरी मुस्कुराई।

"इस काम में मैं भी रहूंगी तुम्हारे साथ। परन्तु छिपे तौर पर।"

"मुझे तो लगता है कि मिस्टर पहाड़िया ने इस मामले में जरूरत से ज्यादा तैयारी कर रखी है।"

"ये खतरनाक खेल है।" रानी गम्भीर हो उठी—"बहुत जल्द तुम्हें इस बात का अहसास हो जायेगा। इस मामले में खास ताकतवर और खतरनाक लोगों का हाथ है। हालांकि

हम उन लोगों की पहचान नहीं कर पाये। परन्तु इस बात का अहसास हमें हो चुका है, इस काम को तुम्हें गम्भीरता से लेना होगा, वरना मारी जाओगी।"

मोना चौधरी ने गहरी सांस ली और कह उठी–

"अब हम कहां जा रहे हैं?"

"तुम्हारा मेकअप किया जायेगा, जो कि कम से कम बीस दिन तक स्थाई रहेगा।"

"कौन करेगा?"

"मैं...।"

"यानि कि बीस दिन से पहले मेकअप मेरे चेहरे पर ही रहेगा। चाहकर भी उतार न सकूंगी?"

"आवश्यकता महसूस हो तो तुम उस मेकअप को उतार सकोगी। कैसे उतारना है, तुम्हें बता दूंगी।"

❑❑❑

❑❑❑

रात के दस बज रहे थे।

सात घंटों से कुर्सी पर बैठे-बैठे मोना चौधरी थकान से चूर हो गई थी। रानी बिना थके उसका मेकअप करने में लगी हुई थी। ये जुदा बात थी कि अब उसके चेहरे पर भी थकान के भाव नजर आने लगे थे।

रानी सारे काम से फारिग हुई।

मोना चौधरी ने भरपूर निगाहों से खुद को शीशे में देखा।

आंखों पर प्लास्टिक के फ्रेम का नजर का चश्मा। जो कि सादे शीशों से जड़ा था। सिर के बालों को पूरी तरह काला करके पीछे को कन्घा करके रबड़ बैण्ड लगा दिया था। आंखों पर भी काले कॉन्टैक्ट लैंस रख दिये थे। कानों में लम्बे-लम्बे लटकते कांटे। इलास्टिक वाली सफेद खास तरह की आठ इंच चौड़ी बैल्ट को उसकी छातियों पर कसकर डाल दिया गया था। जिससे कि उसके उभार पूरी तरह दब गये थे।

कलाइयों में कांच की चूड़ियां पहना दी थीं।

खास तरह के लोशन को चेहरे पर इस तरह लगाया

कि आधे घण्टे बाद चेहरे पर बदलाव नजर आने लगा था। मोना चौधरी का खुशनुमा चेहरा अब सपाट-सा दिखने लगा था।

कुल मिलाकर वो ऐसी युवती दिखाई देने लगी थी, जिसका कोई आशिक न हो और वो अपने काम में व्यस्त रहती हो। इधर-उधर झांकना भी उसे गंवारा न हो। नीरस-सा पात्र लगने लगी थी वो।

"तुमने मुझे साधारण-सी युवती क्यों बनाया?" शीशे में देखते मोना चौधरी ने पूछा।

"क्योंकि ऐसी बेकार की युवतियों से लोग हर तरह की बात कर लेते हैं।" रानी मुस्कुराई–"प्यार की बात को छोड़कर। मत भूलो तुम जासूसी संस्था की मालिक बनने जाओगी। अगर तुम्हारी तड़क-भड़क बरकरार रहती तो सामने वाला तुमसे बात करने में हिचकता। अब तुम दबी-सी, बेकार-सी युवती लग रही हो, ऐसे में हर कोई तुमसे बेहिचक बात कह देगा। मिस्टर पहाड़िया चाहते हैं कि आई डिटैक्टिव एजेन्सी में तुमसे कोई मिलने आये या फोन करे तो वो जो कहना चाहता हो, कह दे। कोई धमकी देना चाहे तो, फौरन दे दे। यानि कि सामने वाले के भीतर जो भी बात है, बाहर आ जाये।"

"अगर मैं किसी से प्यार करना चाहूं तो सामने वाला मुझसे दूर भागेगा?"

"ऐसे में तुम वक्षों पर लिपटी बैल्ट उतार देना। आंखों पर चढ़ा चश्मा उतार देना और बालों को खोलकर लहरा देना। सामने वाला उसी पल तुम्हारे सामने बिछ जायेगा।"

"लगता है, ये सब काम तुमने बहुत कर रखे हैं।" मोना चौधरी मुस्कुराई।

"जासूसी के धन्धे में जाने क्या-क्या करना पड़ा...।"

तभी दरवाजे पर आहट हुई।

दोनों की निगाह तुरन्त दरवाजे की तरफ घूमी।

उसी पल दरवाजा खुला और मिस्टर पहाड़िया ने भीतर प्रवेश किया।

□□□

□□□

मिस्टर पहाड़िया के शरीर पर सुबह वाले ही कपड़े थे। चेहरे पर थकान की छाप स्पष्ट दिखाई दे रही थी। हाव-भाव में व्यस्तता के भाव थे। भीतर प्रवेश करते ही उन्होंने मोना चौधरी को सिर से पांव तक देखा।

"गुड! ये हुलिया ठीक है।" मिस्टर पहाड़िया ने तसल्ली भरे ढंग से सिर हिलाया—"तुमने ठीक काम किया है रानी... ।" मिस्टर पहाड़िया ने रानी को देखा।

"थैंक्यू सर... ।" रानी ने शांत स्वर में कहा।

मिस्टर पहाड़िया आगे बढ़े और कुर्सी पर बैठते हुए मोना चौधरी से कहा।

"इस मिशन में तुम्हारा कोड वर्ड 'हुक्म मेरे आका' होगा।"

"कोड वर्ड की जरूरत है?" मोना चौधरी के होठों से निकला।

"तुम्हें जरूरत पड़ेगी।" मिस्टर पहाड़िया ने गम्भीर स्वर में कहा—"मेरे कई एजेन्ट इस काम पर हैं। वो जब तुमसे बात करेंगे तो उन्हें अपनी पहचान बतानी जरूरी होगी, तभी तो तुम उन्हें पहचान पाओगी।"

मोना चौधरी ने शांत भाव में पहलू बदला और बोली—

"क्या इस काम में आपके एजेन्टों की जरूरत है?"

"हां। वो अभी भी काम पर हैं।"

"मुझे बताया नहीं गया।"

"वक्त आने पर तुम्हें अभी कई बातें पता चलेंगी।"

"यानि कि कई बातें मुझसे छिपाई जा रही हैं।"

"छिपाई नहीं जा रहीं, बल्कि हम खुद कई बातों में उलझन में हैं।" मिस्टर पहाड़िया ने कोट की जेब से मोबाइल फोन निकाला और मोना चौधरी की तरफ बढ़ाते हुए

कहा—"ये प्रिया का मोबाइल फोन है।"

"प्रिया का?"

"हां। उसकी लाश के पास ही मिला था। तब स्विच ऑफ कर दिया गया था। यानि कि कल रात से स्विच ऑफ है। तुम चाहो तो फोन स्विच ऑन कर सकती हो।"

मोना चौधरी ने फोन थाम लिया।

मिस्टर पहाड़िया ने कोट की जेब से लिफाफा निकालकर मोना चौधरी की तरफ बढ़ाया।

"इसमें तुम्हारा ड्राइविंग लाइसेंस है, तुम्हारी इसी तस्वीर के साथ, जिस चेहरे में तुम अभी बैठी हो।"

"रानी ने तुम्हारी तस्वीर देखकर पहले ही बता दिया था कि इस तरह तुम्हारा चेहरा होगा। तुम्हारी तस्वीर को इस चेहरे जैसी बनाकर, तस्वीर के कई प्रिंट हमने निकाल लिए थे। ड्राइविंग लाइसेंस के साथ पहचान-पत्र, प्राइवेट आई डिटैक्टिव एजेन्सी का पहचान-पत्र है। तुम्हारा नाम मोना है।"

मोना चौधरी ने वो लिफाफा भी थाम लिया।

"चलो... ।" मिस्टर पहाड़िया ने उठते हुए कहा।

"किधर... ?"

"तुम्हारे परिवार में। जहां तुम्हें रात रहना है और वहां से सुबह अपनी डिटैक्टिव एजेन्सी पहुंचना है।"

मोना चौधरी के होंठ सिकुड़े।

"परिवार में कौन-कौन हैं?"

"तुम्हारे मां-बाप और तुम्हारी छोटी बहन। छोटी बहन देविका अभी-अभी कॉलेज करके हटी है, जबकि ये तीनों मेरे बेहतरीन एजेन्ट हैं। उनके बारे में तुम्हें निश्चित रहना चाहिये। कोई तुम्हारे बारे में छानबीन करेगा तो परिवार देखकर उसे शक नहीं होगा।"

□□□

□□□

मोना चौधरी, मिस्टर पहाड़िया के साथ आध घंटे के

सफर के बाद मोती नगर के एक मकान में पहुंची। रात के ग्यारह बज रहे थे। कॉलबैल बजाने पर फौरन दरवाजा खुला।

दरवाजा खोलने वाला पचपन वर्षीय स्वस्थ व्यक्ति था।

दोनों भीतर आये।

भीतर पैंतालिस बरस की औरत साड़ी पहने मौजूद थी और बाइस-तेइस बरस की एक युवती भी वहां मौजूद थी। जो कि आकर्षक थी। उसकी आंखें उसके कठोर होने की चुगली कर रही थीं।

"ये मोना है।" मिस्टर पहाड़िया ने उन तीनों से कहा, फिर मोना चौधरी से बोला—"ये तुम्हारे पिता सुरेन्द्र लाल हैं। ये तुम्हारी मां राधिका और ये तुम्हारी छोटी बहन देविका।"

मोना चौधरी ने तीनों पर नजर मारकर सिर हिलाया।

"मुझे कपड़ों की जरूरत होगी।" मोना चौधरी बोली—"यहां मेरे कपड़े... ।"

"तुम्हारी आलमारी कपड़ों से भरी पड़ी है।" देविका मुस्कुराकर कह उठी।

मोना चौधरी ने मिस्टर पहाड़िया को देखा।

"मैं चलता हूं।" मिस्टर पहाड़िया बोले—"कल सुबह नौ बजे तुमने आई डिटैक्टिव के आफिस पहुंचना है।"

मोना चौधरी ने सिर हिलाया।

"चाहो तो बेशक, छोटी बहन के तौर पर देविका को अपने साथ ले जा सकती हो।"

"मुझे साथ चलना अच्छा लगेगा।" देविका कह उठी।

"ठीक है।" मोना चौधरी ने देविका को देखा—"चलना तुम सुबह मेरे साथ... ।"

❑❑❑

❑❑❑

पंजाबी बाग।

सिटी काम्पलैक्स।

देविका कार चलाती सिटी काम्पलैक्स की पार्किंग में

पहुंची। मोना चौधरी बगल में बैठी थी।

पार्किंग में कार रोककर देविका ने इंजन बन्द किया। मोना चौधरी दरवाजा खोलकर बाहर निकली।

तभी पार्किंग वाला हाथ में पर्चियों की गड्डी थामे वहां पहुंचा।

"तुम पार्किंग वाले हो?" मोना चौधरी ने पूछा।

"यस मैडम... !" वो पर्ची पर कार का नम्बर लिखने लगा।

"आई डिटैक्टिव एजेन्सी अब मेरी है।"

"वो प्रिया मेमसाब की है... ।" नम्बर लिखना छोड़कर उसने मोना चौधरी को देखा।

देविका भी कार से बाहर आ गई।

"अब मैंने खरीद ली है।"

"ओह! मुझे पता नहीं था।"

"मंथली पार्किंग जो लेते हो, वो ही मिलेगा।"

"ठीक है मैडम।"

मोना चौधरी और देविका इमारत के भीतर की तरफ बढ़ गईं।

दोनों सीढ़ियां तय करके दूसरी मंजिल पर पहुंचे।

वहां सीढ़ियों के पास दूसरी मंजिल के आफिसों का इंडैक्स बना हुआ था। इन्डैक्स में 23 नम्बर खाने में आई डिटैक्टिव एजेन्सी लिखा हुआ था।

मोना चौधरी और देविका गैलरी में आगे बढ़ गये।

शांत साफ-सुथरी जगह थी। गैलरी के दोनों तरफ आफिसों के बन्द दरवाजे नजर आ रहे थे।

हर दरवाजे पर नम्बर और आफिस का नाम लिखा हुआ था।

कुछ पलों बाद वे 23 नम्बर के सामने रुके। दरवाजे पर पीतल के अक्षर 'आई डिटैक्टिव एजेन्सी' चिपके हुए थे। मोना चौधरी ने चाबी लगाकर दरवाजा खोला और भीतर प्रवेश कर गई देविका के साथ।

मोना चौधरी ठिठकी और आंखों पर चढ़ा रखे चश्मे को ठीक करके वहां नजरें दौड़ाईं।

ये सोलह फीट चौड़ा और चौदह फीट लम्बा कमरा था।

कमरे में दो टेबल और कुर्सियां पड़ी थीं। एक तरफ दीवार के साथ फाइलें रखने के लिये रैक बने हुए थे, जिन पर शीशा चढ़ा रखा था। दोनों टेबलों पर फोन रखे हुए थे। दो तरफ की दीवारों पर सीनरी अटका रखी थी। दीवार पर वॉल क्लॉक थी। छत पर दो पंखे लगे हुए थे। फर्श पर जूट का कारपेट बिछा रखा था। एक तरफ की दीवार के साथ लकड़ी की आलमारी छत तक जाती बनी हुई थी। टेबल पर चाबियों का गुच्छा पड़ा था। सब कुछ सामान्य-सा लग रहा था।

सामने की दीवार के बीच एक दरवाजा नजर आ रहा था।

''देविका।'' मोना चौधरी आगे बढ़ती हुई बोली—''टेबल पर रखा चाबियों का गुच्छा चैक करो। मेरे ख्याल में ये चाबियां सामने की लकड़ी की आलमारी की होनी चाहिये। इसके अलावा यहां पड़ी एक-एक चीजों को चैक करो। किसी भी चीज को फालतू मत समझना। इस सामान में से हमें अपने काम की चीजें तलाश करनी हैं।''

''हमारा आज का दिन इसी काम में लग जायेगा।'' देविका ने आगे बढ़कर चाबियों का गुच्छा उठाया।

तभी दरवाजे पर आहट हुई।

दोनों फुर्ती से पलटीं।

दरवाजे पर तीस बरस का युवक खड़ा दिखा।

''गुड मॉर्निंग मैडम!'' वो मुस्कुराया—''मैं रोमी, आपका असिस्टेंट।''

मोना चौधरी ने देविका से कहा—

''तुम जानती हो इसे?''

''नहीं।''

तभी दरवाजे पर दूसरा चेहरा दिखा, जो कि पैंतालिस बरस का था।

''मुझे गोपाल कहते हैं।'' वो बोला—''चपरासी होने के साथ-साथ बाकी सब काम भी करता हूं।''

''दरवाजे पर अपनी जगह सम्भाल लो और देविका, तुम छानबीन करने में रोमी को अपने साथ लगा लो।''

''ठीक है।''

''दो आदमी इस जगह की निगरानी कर रहे थे?'' मोना चौधरी ने रोमी को देखा।

''वो आपके आने पर चले गये होंगे। ऐसा ही आदेश था उन्हें।''

''जल्दी से पूरे आफिस की तलाशी लो।'' कहने के साथ मोना चौधरी पीछे के दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

गोपाल ने एक तरफ पड़ा स्टूल उठाया और दरवाजा जरा-सा खोलकर स्टूल दरवाजे के भीतर रखकर उसके ऊपर बैठ गया और बोला—

''कहो तो मैं भी तुम्हारी सहायता करूं?''

''जरूरत होगी तो बता देंगे।'' रोमी ने कहा।

फिर रोमी और देविका वहां के जर्रे-जर्रे की तलाशी लेने में व्यस्त हो गये।

❑❑❑

❑❑❑

मोना चौधरी ने उस दरवाजे से भीतर प्रवेश किया तो खुद को बढ़िया केबिन में पाया।

शानदार, अण्डाकार डिजाइन का टेबल मौजूद था। जिसके इस तरफ तीन कुर्सियां पड़ी थीं और दूसरी तरफ ऊंची पुश्त वाली आरामदेह चेयर। टेबल पर दो फोन और जरूरत का सामान रखा हुआ था। पीछे की दीवार के साथ डेढ़ फीट चौड़ाई वाली कबर्ड फिक्स कर रखी थी।

सामने की दीयार पर वॉल क्लॉक टिक-टिक कर रही थी।

बायीं तरफ की दीवार के साथ सवा फीट चौड़ी सैटी लगा रखी थी, जो कि पांच फीट लम्बी थी। ज्यादा लोग हों तो वहां भी बैठा जा सकता था या फिर वहां आराम किया जा सकता था।

फर्श पर सुर्ख रंग का कारपेट था।

मोना चौधरी की निगाह हर तरफ घूम चुकी थी।

वो आगे बढ़ी और टेबल पर रखे दोनों फोनों का रिसीवर बारी-बारी उठाकर देखा। दोनों फोन चालू हालत में थे। तभी मोना चौधरी को याद आया तो उसने मिस्टर पहाड़िया का दिया, प्रिया का मोबाइल फोन जेब से निकाला और ऑन का स्विच दबाकर टेबल पर रख दिया। उसके बाद कबर्ड के पास पहुंची और उसके पल्लों को खोलने की चेष्टा की, परन्तु वो लॉक्ड थे।

मोना चौधरी पलटकर कुर्सी पर बैठ गई।

दूसरे कमरे में देविका, रोमी और गोपाल की आवाजें आ रही थीं।

मोना चौधरी ने टेबल का ड्राज खोला।

ड्राज में डायरी, चन्द कागज और सिगरेट का पैकेट और लाइटर था। मोना चौधरी ने पैकेट में से सिगरेट निकाली और लाइटर से सुलगाकर कश लिया, उसके बाद डायरी और कागजों को खोलकर देखने लगी।

एक घंटा बीत गया।

डायरी में कई नाम-पते थे। कोई भी नाम-पता आने वाले वक्त में काम का साबित हो सकता था। मोना चौधरी बाकी सब ड्राजों को चैक करने लगी।

नीचे वाले ड्राज में विदेशी व्हिस्की की बोतल और एक गिलास रखा था।

बीच वाले ड्राज से उसे छोटी फाइल मिली।

फाइल में जरूरी कागजों को पंच करके फंसा रखा था। उन कागजों को चैक करती पलट रही थी कि तभी फाइल में रखी पोस्टकार्ड साइज की एक फोटो हाथ लगी।

मोना चौधरी के होंठ सिकुड़े और नजरें फोटो पर जा टिकीं।

तस्वीर में एक युवती के अलावा दो और लोग थे। युवती तीस बरस के आस-पास थी। उसके बाल कटे हुए थे। पैंट-कमीज पहन रखी थी उसने। साथ में जो दो व्यक्ति थे, उनमें से एक पैंतीस का था और दूसरा पचास के आस-पास का था।

युवती दोनों के बीच खड़ी थी।

मोना चौधरी कई पलों तक तस्वीर को देखती रही।

तभी रोमी ने भीतर प्रवेश किया।

"मैडम!" वह बोला—"आपसे एक आदमी मिलने आया है।"

"मेरे से?" मोना चौधरी ने रोमी को देखा।

"प्रिया से।"

"ले आओ।" मोना चौधरी ने तस्वीर टेबल पर रख दी।

रोमी बाहर निकल गया।

कुछ सैकिण्ड के पश्चात् ही चालीस बरस के एक व्यक्ति ने भीतर प्रवेश किया।

"नमस्कार।" वो बोला—"आप प्रिया मैडम हैं?"

"बैठो... ।"

"मुझे बैठने के लिये मना किया है।" उसने जेब से एक लिफाफा निकालते हुए कहा—"ये आपको देने को कहा है।"

मोना चौधरी ने लिफाफा थामा।

"किसने भेजा है ये?"

"विजय मल्होत्रा साहब ने।"

मोना चौधरी को ध्यान आया कि विजय मल्होत्रा वो है जो प्रिया के लिये जासूसी के काम करता था, यानि कि उसका असिस्टेंट। मोना चौधरी ने उसे देखा।

"विजय मल्होत्रा कहां है?"

"मैं नहीं जानता। लिफाफा आप तक पहुंचाने का उसने मुझे तीन सौ रुपया दिया है। चलता हूं।"

अगले ही पल वो पलटकर बाहर निकल गया।

मोना चौधरी ने लिफाफे को देखा।

आगे-पीछे कहीं भी कुछ भी नहीं लिखा था।

तभी दरवाजे पर देविका दिखी।

"बहुत जल्दी चला गया?" उसने पूछा।

"ये लिफाफा देने आया था।" मोना चौधरी लिफाफा खोलते हुए बोली—"विजय मल्होत्रा ने भिजवाया है।"

"विजय मल्होत्रा...प्रिया का असिस्टेंट?"

"हां... ।"

देविका भीतर आ गई।

"तुम्हें कोई काम की चीज मिली?" मोना चौधरी ने पूछा।

"अभी नहीं। तलाश जारी है।"

"पता भी तो नहीं कि क्या तलाश करना है।" मोना चौधरी ने लिफाफे में रखा सामान बाहर निकाला।

वो कुछ कागज थे। स्टेपल किये हुए थे।

मोना चौधरी ने उन कागजों को देखा।

कुछ भी समझ में न आया।

कोड वर्ड की भाषा लिखी हुई थी। बीच-बीच में लाइनों द्वारा, नक्शे जैसा भी कुछ बनाया हुआ था। मोना चौधरी ने उन कागजों को देविका की तरफ बढ़ाया।

"देखो तो, ये क्या हैं?"

देविका ने कागज देखे।

"मुझे नहीं समझ आ रहा।"

"इन्हें मिस्टर पहाड़िया तक पहुंचा दो। वो देख लेंगे।" मोना चौधरी ने कहा और टेबल पर रखी तस्वीर उठाई—"इसे भी देखो, क्या इन तस्वीर वाले चेहरों को जानती हो?"

देविका ने तस्वीर देखी और कह उठी—

"तस्वीर में प्रिया है।"

"आई डिटैक्टिव की मालिक?"

"हां। मैंने इसकी लाश देखी थी। इसलिए पहचान लिया।"

"साथ के आदमियों को नहीं जानतीं?"

"नहीं... ।"

तभी रोमी ने भीतर प्रवेश किया। तस्वीर पर नजर पड़ते ही वो चौंका।

"ये तस्वीर कहां से मिली?"

"टेबल की ड्राज से...क्यों?" मोना चौधरी ने रोमी को देखा।

"ये सफेद कमीज वाला जाफर शरीफ है, खूंखार आतंकवादी। इसके साथ प्रिया का तस्वीर में होना, इस बात की तरफ इशारा करता है कि हम ठीक दिशा में चल रहे हैं।" रोमी बोला।

"जाफर शरीफ... !" तस्वीर देखते ही मोना चौधरी बड़बड़ा उठी।

"साथ वाला व्यक्ति कौन है?" देविका बोली।

"उसे नहीं जानता।" रोमी ने इन्कार में सिर हिलाया।

"इस आफिस की अच्छी तरह तलाशी लो। शायद हमें और भी कुछ मिले।" मोना चौधरी ने गम्भीर स्वर में कहा।

रोमी और देविका ने सिर हिलाया।

तभी टेबल पर पड़े फोन की बैल बजी।

तीनों की नजरें मिलीं।

मोना चौधरी ने रिसीवर उठाया।

"हैलो... ।"

"मैं कामनी बोल रही हूं।" उधर से किसी युवती का शांत स्वर कानों में पड़ा—"तुम्हारा काम हो गया है।"

"गुड... ।" मोना चौधरी समझ नहीं पाई कि क्या कहे।

"तुमने दस हजार देने को कहा था।"

"अपना कहा मैं भूलती नहीं।" मोना चौधरी ने सतर्क

स्वर में कहा—"इस वक्त तुम कहां हो? मेरे पास आ जाओ।"

"तुम्हारे पास नहीं आ सकती प्रिया। सच बात तो ये है कि तुम्हारा काम करके मैंने खुद को मुसीबत में डाल लिया है। उसे अब तक पता चल गया होगा कि मैंने रात क्या किया है। वो मुझे ढूंढेगा।"

"मेरे पास आ जाओ। वो तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा।"

"तुम ही मेरे पास पहुंचो।"

"मेरी असिस्टेंट तुमसे मिलने आयेगी। दस हजार उसी के पास होगा। कहां मिलोगी तुम?"

"होटल ब्लैक होल। धर्मपुरा। अंसल बिल्डिंग के पीछे। मेरे पास वक्त कम है। कब तक आ रही हो?"

"एक घंटे में मेरी असिस्टेंट तुम्हारे पास होगी।"

"जल्दी आना।" उधर से कामनी ने कहकर रिसीवर रख दिया।

मोना चौधरी ने रिसीवर रखा।

"क्या बात हुई?" रोमी ने होंठ सिकोड़े पूछा।

मोना चौधरी ने बताया।

"हम नहीं जानते कि कामनी कौन है?" देविका कह उठी।

"हमने जो जगह सम्भाली है, यहां जो भी आयेगा, वो हमारे लिये अंजान ही होगा।" रोमी बोला।

"कामनी कोई खतरा भी तो हो सकता है हमारे लिये?"

"खतरा हो सकता है, लेकिन शायद होगा नहीं।" मोना चौधरी कह उठी—"कामनी के लहजे में स्पष्ट था कि प्रिया ने उसे कोई काम करने को बोला था और वो काम पूरा करके उसने प्रिया को यानि कि मुझे फोन कर दिया।"

तीनों की नजरें मिलीं।

मोना चौधरी उठ खड़ी हुई।

"मैं कामनी से मिलने जा रही हूं।"

"तुम्हारा अकेले जाना खतरे से भरा होगा मोना चौधरी।" देविका बोली—"यहां पर, इस काम में हम नये हैं। क्या पता क्या मामला है। ये कोई जाल भी हो सकता है तुम्हारे लिये।"

"मेरे साथ गोपाल जायेगा।" मोना चौधरी बोली।

"ये ठीक रहेगा।"

"तुम दोनों पूरे आफिस की अच्छी तरह तलाशी लो, जो भी खास चीज मिले, उसे समझने की चेष्टा करो।" कहने के साथ ही मोना चौधरी ने टेबल पर रखा अपना और प्रिया का मोबाइल फोन उठाकर जेब में डाला और उस कमरे से निकलकर दूसरे कमरे में पहुंची।

गोपाल प्रवेश द्वार का आधा दरवाजा खोले बीच में स्टूल रखे बैठा था।

"तुम मेरे साथ चलो। ड्राइवर के तौर पर कार चलाओगे।"

गोपाल फौरन उठते हुए बोला।

"खास बात है क्या?"

"हां, रास्ते में बता दूंगी।"

"जाना कहां है?"

"धर्मपुरा, होटल ब्लैक होल।"

❑❑❑

❑❑❑

गोपाल ने कार को एक तंग गली के किनारे पर रोका। गली के भीतर कुछ आगे ब्लैक होल होटल का बोर्ड नजर आ रहा था। मोना चौधरी बाहर निकलते हुए बोली।

"मैंने वहां जाकर कामनी से मिलना है।"

"मैं कितनी देर तुम्हारा इन्तजार करूं?"

"मेरे ख्याल में आधे घंटे तक आ जाऊंगी। न आई तो जैसा तुम ठीक समझो, वैसा ही करना।"

गोपाल के सिर हिलाने पर मोना चौधरी गली में आगे बढ़ गई। दिन के बारह बज रहे थे। खास भीड़ नहीं थी गली

में। मोना चौधरी वहां रुकी, जहां ब्लैक होल्त का बोर्ड लगा हुआ था। चन्द चौड़ी सीढ़ियां चढ़कर काले शीशों का दरवाजा था।

मोना चौधरी ने सीढ़ियां तय कीं और दरवाजा धकेलकर भीतर प्रवेश कर गई।

छोटी-सी लॉबी थी।

एक तरफ छोटा-सा रिसेप्शन के नाम पर काउण्टर नजर आ रहा था। दूसरी तरफ ऊपर जाती सीढ़ियां दिखाई दे रही थीं। मोना चौधरी रिसेप्शन पर पहुंची। आंखों पर चढ़ा रखा चश्मा ठीक किया।

वहां एक युवक मौजूद था।

"यस मैडम...!"

"कामनी से मिलना है।"

"ऊपर चौदह नम्बर कमरे में है। चली जाओ।"

मोना चौधरी सीढ़ियों की तरफ बढ़ गई।

पहली मंजिल पर पहुंची। वहां कमरे थे। मोना चौधरी दरवाजों पर लिखे नम्बरों को पढ़ती हुई आगे बढ़ी और चौदह नम्बर कमरे के सामने ठिठकी। दरवाजा बन्द था।

मोना चौधरी ने दरवाजा थपथपाया।

फौरन ही दरवाजा खुला। पच्चीस बरस की युवती दिखी।

"हैलो...।" मोना चौधरी ने चश्मा ठीक करते हुए कहा—"तुम कामनी हो?"

"हां...तुम...?"

"प्रिया ने भेजा है मुझे।"

"ओह, आओ।" कहते हुए वो दरवाजे से पीछे हटी।

मोना चौधरी ने भीतर प्रवेश किया। साधारण-सा कमरा था ये। डबल बैड बिछा हुआ था। दीवार पर शीशा लगा हुआ था। अटैच बाथरूम था।

"दस हजार लाई हो?" उस युवती ने सीधे कहा।

"हां।"

"निकालो...।"

"लेकिन तुमने तो मुझे कुछ दिया नहीं, कुछ बताया नहीं कि तुम्हें दस हजार दे दूं।"

"इन कामों में पहले कीमत चुकाई जाती है।"

मोना चौधरी ने जेब से दस हजार रुपये निकाले और उसे थमाये।

"गिन लो।"

"जरूरत नहीं।" एकाएक वो मुस्कुराई—"मुफ्त का माल कम भी हो तो, चिन्ता नहीं।"

"क्या मतलब?" मोना चौधरी चौंकी।

उसी पल उसका घूंसा मोना चौधरी के गाल पर पड़ा।

मोना चौधरी लड़खड़ाई। पास ही दीवार पर हाथ रखकर सम्भली। उसे देखा।

उसके चेहरे पर जहरीली मुस्कान नाच रही थी।

"ये सब क्या है?" मोना चौधरी ने बेहद सब्र के साथ पूछा।

"मैं कामनी नहीं हूं।"

"क्या?" मोना चौधरी के चेहरे पर अजीब से भाव उभरे—"कौन हो तुम?"

"गेजी।"

"ये सब क्या हो रहा है, मुझे बताओगी? मेरे ख्याल में फोन पर तुमने बात नहीं की थी।" मोना चौधरी को उसकी आवाज वो न लगी जो आवाज उसे फोन पर सुनाई दी थी।

"तुमने ठीक समझा कि मैं वो नहीं हूं, जिसने फोन पर बात की थी। फोन पर बात करने वाली कामनी थी। उसे पता न लग सका था कि जब वो बात कर रही थी, हम उसके पीछे आ पहुंचे थे।"

"हम...?"

"पीछे देखो...।"

मोना चौधरी फौरन पलटी।

कमरे के दरवाजे के बाहर दो आदमी खड़े दिखे। एक

के हाथ में रिवाल्वर थी।

मोना चौधरी समझ गई कि वो फंस गई हूं।

"चलो... ।" रोजी बोली।

"किधर...?" मोना चौधरी अब सतर्क-सी नजर आने लगी थी।

"साथ वाले कमरे में।"

"वहां क्या है...?"

"चलकर देख लेना।"

"तुम लोग कौन हो...?"

"ज्यादा सवाल नहीं।" रोजी ने मोना चौधरी की बांह पकड़कर बाहर को धकेला—"चलो।"

मोना चौधरी ने इन्कार नहीं किया।

वो खुद जानना चाहती थी कि मामला क्या है?

उन तीनों के साथ मोना चौधरी बगल वाले 14 नम्बर कमरे में पहुंची। उसकी निगाह उस युवती पर जा टिकी, जिसके हाथ-पैर बांधकर कमरे के कोने में डाला हुआ था। उसके अलावा चालीस बरस का एक व्यक्ति कुर्सी पर बैठा था। उसने काली पैन्ट और आधी बांह की कमीज पहन रखी थी।

उस व्यक्ति की निगाह मोना चौधरी पर जा टिकी।

"तुम कामनी हो?" मोना चोधरी ने बंधी युवती से पूछा।

"हां।" बंधे हुए उसने फंसी-फंसी सी आवाज में कहा।

"तो तुम आई हो आई डिटैक्टिव एजेन्सी से?" उस व्यक्ति ने मोना चौधरी से पूछा।

"हां, लेकिन तुम लोग कौन हो? ये सब क्या हो रहा है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"ये कहती है इसे प्रिया ने भेजा है।" रोजी ने उस व्यक्ति से कहा।

मोना चौधरी को लाने वाले दोनों आदमी शांत खड़े थे।

"प्रिया ने भेजा है।" वो मोना चौधरी को देखकर

मुस्कुराया— "कहां है प्रिया?"

"अपने आफिस में... लेकिन तुम ये सवाल क्यों पूछ रहे हो?"

"पूछ नहीं रहा। सोच रहा हूं।"

"क्या?"

"कि जो मर जाये, वो किसी को कैसे भेज सकता है?" उसने जहरीले स्वर में कहा।

मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

"तो तुम जानते हो कि प्रिया अब नहीं रही?"

"हां, वो... ।"

"तुमने मारा है उसे?" मोना चौधरी ने पूछा।

"मैं तुम्हारे सवालों का जवाब देने के लिये यहां मौजूद नहीं हूं।" उसने एकाएक तीखे स्वर में कहा—"अपने बारे में बताओ। कौन हो तुम? आई डिटैक्टिव एजेन्सी में कैसे मौजूद थीं?"

मोना चौधरी ने दरवाजे की तरफ देखा।

"उधर तुम्हें बचाने के लिये कोई नहीं आने वाला। इस होटल में इस वक्त मेरा कब्जा है।"

"कम से कम ये तो बताओ कि तुम कौन हो? इससे हम आराम से बात कर सकेंगे।"

"मुझे आराम से बात नहीं करनी तुमसे। और तुम मेरा वक्त खराब कर रही हो।" उसकी आवाज में अब सख्ती आने लगी थी—"रोजी, इसे समझाओ कि वक्त बरबाद न करे, वरना... ।"

"समझ जाओ।" रोजी ने चेतावनी भरे स्वर में मोना चौधरी को देखकर कहा।

कुछ पल वहां चुप्पी रही।

"बोलो, कौन हो तुम?"

"मैं आई डिटैक्टिव एजेन्सी की मालिक हूं।" मोना चौधरी ने कहा और चश्मा ठीक किया।

"मालिक...?" वो हैरान हुआ—"आई डिटैक्टिव की

मालिक तो प्रिया थी?"

"अब उसके इस बिजनेस की मालिक मैं हूं। उसके पति प्रदीप गोस्वामी से ये बिजनेस मैंने खरीद लिया है।"

"कब खरीदा?"

"कल।"

"बहुत जल्दी दिखाई। सच में इस जल्दबाजी पर हैरानी है। लेकिन तुम इस तरह प्राइवेट जासूस नहीं बन सकतीं। इसके लिये तुम्हारे पास लाइसेंस होना जरूरी है।" उसने सोच भरे स्वर में कहा।

"तुमने मेरा लाइसेंस देखने के लिये ये सारी मेहनत की है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"नहीं... ।"

"तो काम की बात करो।"

"नाम क्या है तुम्हारा?"

"मोना... ।"

"इस मामले में क्यों दखल दे रही हो?"

"मुझे नहीं मालूम तुम किस मामले की बात कर रहे हो। मैंने आज ही काम सम्भाला है। मैं नहीं जानती क्या हो रहा है। कामनी का फोन आया तो मैंने इससे मिलना जरूरी समझा। आ गई।"

"अपने काम से मतलब रखो। प्रिया के कामों में दखल देने की चेष्टा न करो। उसकी मौत के साथ ही उसके काम खत्म हो गये।" उसने शब्दों को चबाते हुए कठोर स्वर में कहा।

"तुम मुझे बता रहे हो कि मैंने अपने काम कैसे करने हैं?" मोना चौधरी ने शांत स्वर में कहा।

"मेरा समझाया जाना तुम्हें पसन्द नहीं तो बता दो, अभी तुम्हें गोली मार देते हैं।"

"अपने बारे में कुछ नहीं बताओगे?"

"मेरे बारे में जानने की चेष्टा भी मत करना।" उसकी आवाज में धमकी भरे भाव आ गये थे।

मोना चौधरी चुप रही।

तभी रोजी उस आदमी से बोली—

"कामनी का क्या करना है?"

उस आदमी की निगाह कामनी पर गई।

हाथ-पांवों से बंधी कामनी एकाएक सहम-सी गई।

"दिल तो करता है इस हरामजादी के टुकड़े कर दूं! रात मेरे साथ रही और मेरे ब्रीफकेस से सामान निकालकर प्रिया के हवाले करना चाहती थी।" उसकी आवाज में खूंखारता के भाव आ गये थे—"लेकिन अभी मेरा मन इसकी जान लेने का नहीं है। साली, घटिया औरत है!"

कामनी सहमी-सी पड़ी रही।

वो आदमी उठ खड़ा हुआ।

"तुम अपने कामों से मतलब रखो।" उसने खा जाने वाले स्वर में मोना चौधरी से कहा—"प्रिया के किसी काम में दखल मत दो। उसे और उसके कामों को भूल जाओ। समझीं... ।"

मोना चौधरी ने सिर हिला दिया।

फिर वो व्यक्ति, रोजी और दोनों आदमियों के साथ वहां से चला गया।

❑❑❑

❑❑❑

मोना चौधरी ने जल्दी से कामनी के बंधन खोले।

कामनी की हालत बुरी थी। वो घबराई हुई थी।

"म...मुझे नहीं मालूम था कि प्रिया की मौत हो चुकी है।" कामनी हांफते हुए बोली।

"परसों रात किसी ने उसकी हत्या कर दी थी।"

"ओह! जब मैंने फोन किया तो ये बात तुमने मुझे क्यों न बताई?"

"बता देती तो क्या तुम मुझसे मिलतीं?"

कामनी अपने हाथ-पांवों को दुरुस्त करने में लगी थी।

"अब बताओ, क्या हो रहा है यहां?"

"क्यों बताऊं तुम्हें?"

"तुम्हारे बुलावे के कारण मैं भारी खतरे में पड़ी। कम से कम पता तो चले कि मामला क्या है?"

"तुमने देखा नहीं कि मेरी जान जाते-जाते बची है। इस काम में पड़कर मुझे क्या मिला?"

"तुम्हारे लिये मैं दस हजार लाई थी, गलती से वो रुपया मैंने रोजी के हवाले कर दिया।"

"हरामी...कुतिया। मेरा दस हजार ले गई।" कामनी दांत भींचे कह उठी—"अब तुम्हारे पास कुछ है मुझे देने को?"

"दो-तीन हजार होगा।"

"दो... ।"

"पहले मामला बताओ।"

कामनी चन्द पल चुप रहकर कह उठी—

"सारी बात तो मैं भी नहीं जानती। जिस आदमी से तुम मिली हो, वो हर सप्ताह में दो दिन मेरे पास आया करता था। मैं कॉलगर्ल हूं। तीन-चार महीने से ये मेरे पास आ रहा था। मैं अपने ग्राहकों को इसी ब्लैक होल होटल में ले आती हूं। चार दिन पहले प्रिया मुझसे मिली।"

"इस आदमी का नाम क्या है?"

"हरजीत नाम है इसका... ।"

"कहां रहता है?"

"मैं नहीं जानती। इसे जब भी मेरे से मिलना होता तो मेरे मोबाइल फोन पर बात कर लेता था।"

"तो प्रिया तुमसे मिली?"

"हां। उसने कहा कि हो सकता है हरजीत तुम्हारे पास कल आये। मैं तुम्हें दस हजार दूंगी, अगर तुम उस वक्त उसके पास मौजूद ब्रीफकेस में मौजूद पीला लिफाफा खिसका कर मुझे दे दो। मैं समझ नहीं पाई कि प्रिया के लिये ये काम करूं या नहीं। उसने मुझे अपना फोन नम्बर दे दिया कि अगर काम हो जाये तो उसे फोन कर दूं। वो दस हजार रुपया लेकर पहुंच जायेगी।"

मोना चौधरी कामनी को देखे जा रही थी।

"कल रात हरजीत ने मेरे साथ बिताई और मुझे इसका ब्रीफकेस देखने का मौका मिल गया। उसमें पीला लिफाफा पड़ा था। मैंने वो लिफाफा चुपके से निकाल लिया। सुबह हरजीत चला गया तो मैंने तुम्हें फोन कर दिया, लेकिन हरजीत ने जब ब्रीफकेस खोला होगा तो लिफाफा उसमें न पाकर उसका शक मुझ पर ही गया होगा। वो रोजी नाम की लड़की और दो आदमियों को लेकर यहां आ पहुंचा। जब मैं फोन पर तुमसे बात कर रही थी, तो रोजी मेरे पीछे आ खड़ी हुई थी।"

मोना चौधरी को अब थोड़ी-सी बात समझ में आई।

"तुमने मुझे इतनी लेट फोन क्यों किया? हरजीत तो तुम्हारे पास से सुबह चला गया होगा?"

"मैं तो सुबह से ही तुम्हें फोन कर रही थी, लेकिन फोन बन्द ही मिला हर बार।"

मोना चौधरी को ध्यान आया कि प्रिया का फोन उसने आई डिटैक्टिव एजेन्सी पहुंचकर ही ऑन किया था। कामनी को वो सोच भरी नजरों से देखती रही।

"नोट दो... ।"

मोना चौधरी जेब में हाथ डालते हुए बोली—

"उस लिफाफे में क्या था?"

"मुझे क्या पता? वो बन्द था। उसे मैंने खोला नहीं, लेकिन मेरे ख्याल में उसमें कागज थे या कागज जैसी ही कोई चीज होगी। नोट दो, मैं चलूं। प्रिया के चक्कर में पड़कर मेरा परमानेंट ग्राहक हाथ से निकल गया।" कामनी ने अफसोस भरे स्वर में कहा—"मुझे ये काम नहीं करना चाहिये था।"

मोना चौधरी ने दो हजार उसे दिए।

कामनी जाने लगी तो मोना चौधरी ने कहा—

"इस मामले में कोई खास खबर हो तो बताना, बदले में नोट दूंगी।"

उसने मोना चौधरी को घूरा, फिर बाहर निकल गई।
मोना चौधरी उलझन में फंसी वहीं खड़ी रही।
तभी दरवाजे पर गोपाल का चेहरा दिखा।
"सब ठीक है?"
"हां। अभी तक तो ठीक ही है।" मोना चौधरी बोली—"यहां से बाहर निकलो।"
दोनों वहां से आगे बढ़ गये।
"यहां आने का फायदा हुआ...कामनी मिली?"
"मिली...लेकिन अभी तो कोई खास फायदा नहीं हुआ।" मोना चौधरी ने सारी बात गोपाल को बताई।
दोनों होटल से बाहर निकलकर कार की तरफ बढ़ गये थे।
"यानि पता नहीं चला कि प्रिया किस चक्कर में थी?"
"नहीं पता चला, लेकिन वो हरजीत जानता था कि प्रिया की मौत हो चुकी है। मैं हरजीत के बारे में कुछ नहीं जान सकी। वो ज्यादा बात नहीं कर रहा था। उसे यहां से निकलने की जल्दी थी।"
"उसके साथ की लड़की का नाम रोजी था?"
"हां।"
"वो देखने में कैसी लगती थी? उसका हुलिया बताओ। मैं उसे ढूंढने की चेष्टा करूंगा।"
मोना चौधरी ने रोजी का हुलिया बताया।
दोनों कार में बैठे। गोपाल ने कार आगे बढ़ा दी।
मोना चौधरी के चेहरे पर सोच के भाव ठहरे हुए थे।
"मालूम करना पड़ेगा कि प्रिया ने क्या-क्या चक्कर फैला रखे थे...।" गोपाल ने कहा।
मोना चौधरी ने सीट की पुश्त से सिर टिकाकर आंखें बन्द कर लीं।

□□□
□□□

गोपाल बहुत अच्छी तरह से कार चला रहा था। आदत

के मुताबिक उसकी निगाह हर तरफ जा रही थी। एकाएक उसकी निगाह बैक मिरर पर टिकी और आंखें सिकुड़ गईं।
पीछे एक कार बहुत तेजी से अन्य वाहनों को पार करके आगे आने की कोशिश कर रही थी। गोपाल ने मोना चौधरी पर निगाह मारी, जो कि बगल की सीट पर आंखें बन्द किये बैठी थी।
गोपाल की निगाह जब उस कार पर पड़ी थी, तो वो तीन अन्य कारों के पीछे थी। अब वो दो कारों को पार करके, सिर्फ एक कार पीछे ही रह गई थी।
गोपाल बैक मिरर के द्वारा उस कार में बैठे व्यक्तियों को देखने की चेष्टा कर रहा था। उनके चेहरे तो स्पष्ट न देख पाया, परन्तु इतना समझ गया कि उस कार में तीन लोग मौजूद हैं।
"ठीक तरह बैठो...।" एकाएक गोपाल ने सतर्क स्वर में कहा।
"क्यों?" मोना चौधरी ने आंखें खोलीं। गोपाल को देखा।
"पीछे एक कार है।" गोपाल की निगाह कार चलाने के साथ-साथ पीछे भी जा रही थी—"उसमें तीन लोग मौजूद हैं, वो कार बहुत तेजी से आगे आई है। मैं शीशे में उन्हें देख रहा हूं, शायद वो हमारी कार को ही देख रहे हैं।"
मोना चौधरी ने गर्दन घुमाकर पीछे देखा।
"हमारे पीछे जो कार है, उस कार के पीछे वाली सफेद कार की बात कर रहा हूं मैं।"
मोना चौधरी ने देखा, वो कार अपने आगे वाली कार को ओवरटेक करके उनके पास आने की चेष्टा कर रही थी। मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं। आंखों पर चढ़ा रखा चश्मा ठीक किया।
"तुम ठीक कहते हो, उनकी निगाह हम पर ही...।"
'भड़ाक्...!'
मोना चौधरी के शरीर को तीव्र झटका लगा।

यही हाल गोपाल का हुआ।

दोनों के सिर विण्ड शील्ड से टकराते-टकराते बचे।

कार जबरदस्त झटके के साथ रुक चुकी थी।

इस टक्कर से स्टेयरिंग गोपाल की छाती में लगा, लेकिन बचाव हो गया था। एकाएक सामने से कार आई और उनकी कार से टक्कर मार दी थी। हैडलाइटों के टकराने की वजह से, शीशे टूटने की तेज आवाज वहां उभरी थी। मोना चौधरी ने भी खुद को सम्भाला।

"क्या हुआ?" मोना चौधरी ठीक से कुछ समझ नहीं पाई थी।

"सामने से आती कार ने जानबूझ कर टक्कर मारी है।" गोपाल दांत भींचकर बोला।

मोना चौधरी ने फुर्ती से कार का दरवाजा खोला। बाहर निकली।

तब तक सामने वाली कार से दो आदमी निकलकर उसके पास आ गये थे। पीछे से आती सफेद कार भी पास आकर रुक गई थी। उसमें से भी तीन आदमी निकले।

मोना चौधरी ने बारी-बारी सबको देखा।

गोपाल बाहर निकला तो दो आदमियों ने उसे भी घेर लिया।

सड़क पर जाते ट्रेफिक ने उनके एक्सीडेंट की परवाह नहीं की। कोई नहीं रुका।

"तुमने जानबूझ कर एक्सीडेंट किया है।" गोपाल ने एक से कहा।

"हां।" वो व्यक्ति शांत स्वर में बोला।

"क्यों?"

जवाब में उस व्यक्ति का हाथ हिला और चांटा गोपाल के गाल पर पड़ा।

गोपाल तिलमिला उठा।

तभी एक व्यक्ति ने कहा—

"तलाशी लो इनकी।"

फौरन ही गोपाल और मोना चौधरी की तलाशी ली गई।

आई डिटैक्टिव एजेन्सी के कार्ड। ड्राइविंग लाइसेंस, रिवाल्वर वगैरह मिला। गोपाल के पास रिवाल्वर नहीं था। उन सब ने दोनों को इस तरह घेर रखा था कि बचने के लिए एकाएक कुछ कर पाना भी कठिन था।

एक आदमी उनके सामान को चैक करने लगा।

"कौन हो तुम लोग?" मोना चौधरी ने कठोर स्वर में पूछा।

"चुप कर, वरना दांत तोड़ दूंगा।" पास खड़ा व्यक्ति गुर्रा उठा।

"इतने लोग घेर कर, रौब मारते हो?" गोपाल मुंह लटका कर कह उठा।

"नाम क्या है तेरा?" उस व्यक्ति की निगाह गोपाल पर जा टिकी।

"गोपाल।"

"काम क्या करता है?"

"मैं...मैं तो मैडम के पास चपरासी की नौकरी करता हूं। कार चलानी आती है तो कभी-कभी कार भी चला लेता हूं। आज मैडम के यहां पहला दिन है मेरा।" गोपाल ने घबराहट भरे स्वर में कहा।

"जिन्दा रहना चाहता है तो ये नौकरी छोड़कर भाग जा।"

"हां, मैं भाग जाऊंगा।"

सामान चैक करने वाले ने सारा सामान मोना चौधरी की तरफ बढ़ाया, रिवाल्वर भी।

"रख लो।"

मोना चौधरी ने सामान थामा और जेबों में डालने लगी।

"आई डिटैक्टिव एजेन्सी की मालिक तुम कब बनीं?"

"कल... ।"

"प्रिया कहां है?"

"उसने अपना बिजनेस बेच दिया और मैंने खरीद

लिया।" मोना चौधरी ने कहा।

"मैंने पूछा है प्रिया कहां है?"

"वो... ।" मोना चौधरी ने शांत स्वर में कहा—"मर गई। परसों रात किसी ने उसकी हत्या कर दी।"

"ओह... ।" वो चौंका—"किसने की हत्या?"

"मुझे क्या पता?"

"तुमने उसका बिजनेस किससे खरीदा?"

"प्रिया के पति प्रदीप गोस्वामी से।"

उस व्यक्ति ने मोना चौधरी को घूरा।

"और तुम किस चक्कर में हो?"

"चक्कर...क्या कह रहे हो तुम?"

"अपनी दुकान बन्द करके भाग लो, अगर जिन्दा रहना चाहती हो तो।" उसे व्यक्ति ने कठोर स्वर में कहा।

"क्या मतलब?" मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

पलक झपकते ही उस व्यक्ति ने रिवाल्वर निकाली और नाल मोना चौधरी के माथे पर रख दी।

मोना चौधरी का चेहरा सख्त-सा हुआ। वो सतर्क दिखने लगी।

"समझ में आया मतलब?" उसने कड़वे स्वर में कहा—"इस वक्त तो छोड़ रहा हूं...मगर तुमने अपनी जासूसी की दुकान खोली तो ये वक्त फिर आयेगा और तब मैं ट्रेगर दबा दूंगा।"

"मेरे जासूसी का धन्धा करने में तुम्हें क्या एतराज है?" मोना चौधरी कह उठी।

"तुम्हारे धन्धे पर मुझे एतराज नहीं है, एतराज इस बात पर है कि तुम प्रिया की किसी जगह के पास भी न दिखो।"

"क्यों?"

"मारूं गोली?"

मोना चौधरी ने होंठ भींच लिये।

वहां दूर-दूर खड़े लोग ये सब तमाशा देख रहे थे।

"समझ आ गई... ?"

मोना चौधरी ने उसकी आंखों में झांकते हुए सिर हिलाया।

"अब तुम वहां दिखाई मत देना, जहां प्रिया बैठा करती थी।"

मोना चौधरी ने पुनः सिर हिलाया।

"अगर प्रिया से तुम्हारा कोई रिश्ता है तो बता दो।"

"रिश्ता?"

"तुमने खामखाह तो आनन-फानन प्रिया का धन्धा खरीदा नहीं होगा। कोई तो वजह होगी ही।"

"पता नहीं तुम क्या कह रहे हो... ?"

"जल्दी मरोगी तुम... ।" तीखे स्वर में कहते हुए उसने रिवाल्वर वापस अपनी जेब में रखी।

"मैं ये नौकरी छोड़ दूंगा।" गोपाल घबराये स्वर में बोला— "समझो, छोड़ दी नौकरी... ।"

उस व्यक्ति ने मोना चौधरी को घूरा।

मोना चौधरी और गोपाल को उन सबने घेरे में ले रखा था।

"जा रहा हूं मैं।" वो कठोर स्वर में बोला—"प्रिया की जगह से दूर हो जाना।"

मोना चौधरी ने कुछ नहीं कहा।

देखते-ही-देखते वो सब कार में बैठे और कारें आगे बढ़ती चली गईं।

गोपाल और मोना चौधरी की नजरें मिलीं।

"समझ में नहीं आता कि प्रिया ने आई डिटेक्टिव एजेन्सी की आड़ में क्या चक्कर फैला रखे थे।" गोपाल बोला।

"उन्हीं चक्करों को समझने की तो कोशिश की जा रही है।" तभी मोना चौधरी की निगाह सामने से जाती कार पर पड़ी।

"हम खतरे में पड़ते जा रहे हैं।" गोपाल गम्भीर स्वर में बोला—"आज ही हम आफिस में बैठे हैं और दो तरह के

लोगों ने हमें घेरा। होटल ब्लैकहोल में और अब ये लोग। लेकिन ये लोग हमसे क्या चाहते थे। इन्होंने हमारा रास्ता क्यों रोका। प्रिया की डिटैक्टिव एजेन्सी से हमें हटने को क्यों कहा?''

मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ चुकी थीं।

जिस कार को तेजी से सामने से गुजरते देखा था, उसकी ड्राइविंग सीट पर रानी बैठी थी। उसका कार चलाने का अंदाजा बता रहा था कि शायद वो उन लोगों के पीछे गई है।

''किधर देख रही हो तुम?'' गोपाल ने टोका।

''रानी शायद उन लोंगों के पीछे गई है।''

''रानी?'' गोपाल के माथे पर बल उभरे—''ये कौन है?''

''तुम नहीं जानते?''

''नहीं... ।''

''नाम भी नहीं सुना... ?''

''नहीं।'' गोपाल ने इन्कार में सिर हिलाया।

''तो रानी का जिक्र तुम्हारे सामने करना मेरी गलती थी। आओ चलें यहां से... ।''

''कार की हालत बुरी हो चुकी है।'' गोपाल बोला।

''मुझे आफिस छोड़ने के बाद, कार ठीक करा लेना।''

□□□

□□□

मोना चौधरी आई प्राइवेट डिटैक्टिव एजेन्सी पहुंची। गोपाल उसे छोड़कर कार ठीक कराने चला गया था।

''नई खबर?'' मोना चौधरी ने कुर्सी पर बैठते हुए रोमी से पूछा।

''नहीं... ।''

''कोई फोन नहीं आया?''

''नहीं। हम यहां की छानबीन करने में लगे हुए हैं, अभी तक तो हमें काम का कुछ नहीं मिला। अगर काम का कुछ

है तो वो हमें समझ नहीं आ रहा।'' रोमी ने धीमे स्वर में कहा।

तभी देविका ने केबिन में प्रवेश करते हुए पूछा।

''जहां तुम गई थीं, वहां क्या हुआ?''

''बहुत बुरा।''

''क्या मतलब... ?''

''हम अंजाने में खतरनाक मामले में दखल देते जा रहे हैं। पता नहीं कब क्या हो जाये... ?''

रोमी और देविका की नजरें मिलीं।

मोना चौधरी ने होटल ब्लैक होल में हुआ सारा मामला बताया और रास्ते में हुई गड़बड़ भी।

''वो कौन थे, जिन्होंने रास्ते में तुम्हारी कार रोककर तुम्हें प्रिया के आफिस से दूर हो जाने को कहा?'' रोमी बोला।

''उन्होंने अपने बारे में नहीं बताया।''

''हमें सतर्क रहना होगा। वो लोग कभी भी हमको घेर सकते हैं।'' देविका बोली।

मोना चौधरी ने ड्रॉज से तस्वीर निकाली और उस पर नजर मारकर कहा—

''प्रिया की तस्वीर खूंखार आतंकवादी जाफर शरीफ के साथ है। स्पष्ट है कि प्रिया ने किसी लम्बे मामले में ही हाथ डाल रखा था। हो सकता है, वो प्राइवेट जासूस की आड़ में, जाफर शरीफ के लिये काम करती हो।''

''कुछ भी हो सकता है।''

मोना चौधरी की निगाह, तस्वीर पर जा टिकी।

तभी मोबाइल फोन की बैल बजी।

मोना चौधरी ने देखा, वो बैल प्रिया के मोबाइल फोन पर बज रही है।

''हैलो... ।'' मोना चौधरी ने कॉल अटैण्ड की।

''मैडम! मेरा भेजा सामान मिल गया होगा।'' कानों में किसी व्यक्ति की आवाज पड़ी।

मोना चौधरी सतर्क-सी नजर आने लगी।

"विजय मल्होत्रा?" मोना चौधरी के होंठों से निकला।

"हां।" इस बार स्वर में उलझन थी—"तुम...तुम प्रिया नहीं हो। कौन हो तुम...?"

"मैं मोना हूं...।"

"मोना?" आवाज में उलझन भरी थी—"कौन मोना, तुम्हारे पास प्रिया का मोबाइल फोन कैसे आया?"

"मैं तुम्हारे बारे में सब जानती हूं।" मोना चौधरी ने शांत स्वर में कहा।

"क्या सब जानती हो?"

"यही कि तुम प्रिया के लिये जासूसी का काम करते हो।"

"बेकार की बात मत करो। सब जानते हैं ये बात। तुम कौन हो?"

"आई प्राइवेट डिटेक्टिव एजेन्सी की नई मालिक... ।"

"नई मालिक...? प्रिया कहां है?" विनय मल्होत्रा का स्वर कानों में पड़ा।

"किसी ने उसका कत्ल कर दिया।"

विजय मल्होत्रा की आवाज नहीं आई।

"परसों रात उसे मार दिया गया।"

"कैसे?" विजय मल्होत्रा के गहरी सांस लेने की आवाज आई।

"मैं नहीं जानती।"

"नहीं जानतीं?"

"फोन पर मैं किसी से ज्यादा बातें नहीं करती। तुम्हें खास जानती भी नहीं मैं।"

"तो...?"

"क्या तुम मेरे पास आ सकते हो?"

"तुम्हारे पास...तुम कहां हो...?"

"पंजाबी बाग...सिटी काम्पलैक्स में।"

"यानि कि प्रिया के अ[illegible]त में?"

"हां।"

"परसों रात प्रिया को किसी ने मारा तो, तुम उसके बिजनेस की मालिक कैसे बन गई?"

"मैंने उसके पति से जासूसी का ये आफिस खरीद लिया।"

"प्रदीप गोस्वामी से...?"

"हां...तुम जानते हो उसे...?"

"नाम से। देखा कभी नहीं। किसने मारा प्रिया को?"

"नहीं जानती। आ रहे हो तुम?"

कुछ पल चुप रहने के बाद विजय मल्होत्रा की आवाज आई—

"आता हूं।"

मोना चौधरी ने फोन बन्द करके टेबल पर रखा।

देविका और रोमी उसे ही देख रहे थे।

"प्रिया का असिस्टेंट विजय मल्होत्रा आ रहा है। शायद उससे कई नई बातें पता चलें।"

"उससे पूछताछ हो चुकी है। वो कुछ खास नहीं जानता।" रोमी बोला—"वो... ।"

"पहले हुई पूछताछ में तुम शामिल थे?"

"नहीं। हमें सिर्फ खबर दी गई। पूछताछ कब हुई, नहीं मालूम। चीफ ने ही इस सारे काम को अंजाम दिया था।"

मोना चौधरी कुछ कहने लगी कि आफिस की कॉलबैल बजी।

"बाहर कोई है।" देविका बोली।

"मैं देखता हूं।" कहते हुए रोमी बाहर निकला।

देविका उनके पीछे-पीछे चली गई।

मोना चौधरी ने तस्वीर वापस ड्राअर में डाली। ड्राअर में रखे प्रिया के सिगरेट के पैकेट में से सिगरेट निकाली और सुलगाकर कश लिया। तभी देविका ने भीतर प्रवेश किया।

"प्रिया का पति, प्रदीप गोस्वामी मिलने आया है।" देविका ने कहा।

□□□
□□□

पैंतीस बरस का, स्वस्थ और लम्बे कद का व्यक्ति था प्रदीप गोस्वामी। क्लीन शेव्ड चेहरा। सिर पर साधारण से छोटे बाल। कमीज-पैन्ट भी उसने लापरवाही भरे अंदाज में डाल रखी थी। कमीज पर कई जगह बल नजर आ रहे थे। फिर भी वो आकर्षक नजर आ रहा था।

''हैलो।'' उसने मोना चौधरी को देखते ही कहा।

''बैठिये।'' मोना चौधरी ने आंखों पर चढ़ा चश्मा ठीक करते हुए, कुर्सी की तरफ इशारा किया।

प्रदीप गोस्वामी बैठा।

मोना चौधरी ने कश लेकर उसे देखा।

''ये आफिस, मेरी पत्नी प्रिया का होता था कभी।'' वो बोला—''लेकिन तब मैं यहां कभी नहीं आया।''

मोना चौधरी उसे देखती रही।

''मुझसे किसी ने ये आफिस खरीद लिया। साथ ही उसने कहा था कि मैं तुम्हारे पास आऊं और प्रिया के हत्यारों की खोज करने को कहूं।'' प्रदीप गोस्वामी बोला।

''यानि कि आप किसी के कहने पर अपनी पत्नी के हत्यारे को तलाश करवाना चाहते हैं।'' मोना चौधरी बोली।

''हां। मुझसे कहा गया था कि मुझसे कोई फीस नहीं ली जायेगी।''

''आपकी बात सुनकर तो लगता है कि आपको अपनी पत्नी की हत्या का कोई दुःख नहीं!''

''ठीक समझीं आप।''

''क्यों?''

''प्रिया के साथ मेरी बन नहीं पाई। शादी के पश्चात् हम अलग हो गये थे और बातचीत भी नहीं थी। कई सालों से हम अकेले रह रहे थे। ऐसे में मैं उसके साथ कैसे हमदर्दी रखूंगा?''

''प्रिया के बारे में आप और क्या जानते हैं?''

''मैं इतना ही जानता हूं कि वो प्राइवेट जासूस बनी हुई थी। ज्यादा कुछ नहीं जानता।''

''आप क्या करते हैं?''

''आसाम में चाय के बागानों की, विदेशों में सेल्समैनी करता हूं। चाय के बड़े-बड़े ऑर्डर बुक करता हूं। साल में चार-पांच महीने विदेशों में टूर पर ही रहता हूं।''

मोना चौधरी ने कश लेकर सिगरेट ऐश-ट्रे में डाली।

''आप सिगरेट बहुत पीती हैं।'' प्रदीप गोस्वामी कह उठा।

''आपकी पत्नी का पैकेट ही ड्रॉज में पड़ा हुआ था। उसे ही खत्म कर रही हूं, वरना मैं शौकिया तौर पर अवश्य सिगरेट लेती हूं। पैकेट नहीं रखती।'' मोना चौधरी बोली—''प्रिया की मौत के बारे में आप क्या जानते हैं?''

''खास कुछ नहीं...।''

''किसी पर शक है आपको?''

''मुझे किस पर शक होगा! मैं तो जानता ही नहीं कि वो किन लोगों में बैठती थी। कौन उससे मिलता था। कैसे कामों में वो फंसी हुई थी। मैंने तो कब का उसकी तरफ ध्यान देना बन्द कर दिया था।''

''कहां मरी वो?'' मोना चौधरी ने प्रदीप गोस्वामी की आंखों में झांका—''कहां उसे मारा गया?''

''वो अपनी कार में जा रही थी। जनकपुरी में थी तब, जब उसकी कार पर गोलियों की बरसात की गई। मेरे को तो तब उसकी मौत के बारे में पता चला, जब कुछ लोग उसका ये बिजनेस खरीदने मेरे पास पहुंचे।''

''और आपने ये बिजनेस फौरन बेच दिया।''

''मेरे को इस काम में कोई दिलचस्पी नहीं है।''

''आपने देखा भी नहीं कि यहां क्या-क्या पड़ा है।''

उसने इन्कार में सिर हिलाया।

''किन लोगों ने आपसे ये बिजनेस खरीदा?''

''मैं नहीं जानता।'' उसने मोना चौधरी के चेहरे पर

नजर मारी—"आप यहां बैठी हैं, इस वक्त तो उनके बारे में आपको बहुत अच्छी तरह पता होगा। वैसे वो खतरनाक लोग हैं। यही मैंने महसूस किया।"

मोना चौधरी कुछ पल चुप रही, फिर टेबल की ड्राज से तस्वीर निकालकर उसे दिखाई।

"इस तस्वीर में प्रिया दो आदमियों के साथ है। मैं इन दोनों आदमियों के बारे में जानना चाहती हूं।"

प्रदीप गोस्वामी ने तस्वीर देखी और इन्कार में सिर हिलाते कह उठा—

"मैं नहीं जानता इन दोनों को।"

"प्रिया इन दोनों के साथ तस्वीर में बहुत खुश नजर आ रही है।" मोना चौधरी ने कहा।

"वो तो दिखाई दे रहा है, लेकिन मुझे नहीं मालूम ये दोनों कौन हैं?"

मोना चौधरी ने तस्वीर उठाकर वापस रखते हुए कहा—

"आप मुझे सहयोग नहीं कर रहे, तो मैं कैसे प्रिया के हत्यारों को ढूंढ पाऊंगी।"

"मत ढूंढिये।" प्रदीप गोस्वामी ने सरल स्वर में कहा—"जिन लोगों ने मुझसे आफिस खरीदा है, उनके कहने पर ही मैं प्रिया के हत्यारों को ढूंढने के लिये कह रहा हूं, वरना इस काम में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं।"

तभी रोमी ने प्रिंट हुआ एक फार्म प्रदीप गोस्वामी के सामने रखा।

"ये क्या है?" प्रदीप गोस्वामी ने रोमी को देखा।

"हमारी जासूसी संस्था का फार्म है। इसे भर दीजिये।" रोमी ने फौरन कहा—"इस फार्म को भरने के बाद ये बात तय हो जायेगी कि आपने आई डिटेक्टिव एजेन्सी को प्रिया के हत्यारे को तलाश करने का काम सौंपा है। मेरे ख्याल में तो आपको फार्म भरने में कोई एतराज नहीं होना चाहिये।"

प्रदीप गोस्वामी ने फार्म भर दिया। जिसमें सब बातों के अलावा उसका नाम-पता और फोन नम्बर भी था। दस

मिनट लगे इस काम को।

"आपसे मिलकर ये तो स्पष्ट हो गया कि आप कैसे किस्म के इन्सान हैं।" मोना चौधरी ने मुस्कुरा कर कहा और उसके हाथों से फार्म लेकर अपनी तरफ सरका लिया।

"प्रिया के हत्यारों की तलाश मैं बे-मन से करवा रहा हूं।" प्रदीप गोस्वामी ने गहरी सांस ली—"ये ही बड़ी बात है कि इस काम के लिये मैं यहां तक आ गया हूं।"

"तुम मना भी कर सकते थे इस काम को।"

"किया था।"

"तो...?"

"मुझे रिवाल्वर दिखाकर धमकी दी गई कि अगर आज की तारीख में मैंने प्रिया के हत्यारे को तलाश करने का काम इस एजेन्सी को नहीं सौंपा तो, मुझे मार दिया जायेगा।"

"ओह!"

"तुम तो ये सब सवाल ऐसे पूछ रही हो, जैसे तुम्हें कुछ पता ही न हो।"

"नहीं पता।"

"उन्हीं लोगों ने तुम्हें यहां बिठाया है, जिन्होंने ये आफिस खरीद कर, मुझे आने की धमकी दी।"

मोना चौधरी उसे देखती रही, फिर बोली—

"मैं खुद नहीं जानती कि ये सब क्या हो रहा है?"

"मैं चलूं? अब मेरा काम पूरा हो गया।"

"प्रिया के बारे में कुछ और बता सको तो अच्छा होगा।"

"मैं कुछ नहीं जानता। सालों से प्रिया से अलग रह रहा हूं। उससे मेरी बातचीत भी नहीं होती थी।" प्रदीप गोस्वामी उठते हुए बोली—"प्रिया का हत्यारा मिले या न मिले, मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं।"

मोना चौधरी मुस्कुराई।

"मेरे ख्याल में अब हमारी मुलाकात नहीं होगी।" कहकर प्रदीप गोस्वामी बाहर निकल गया।

मोना चौधरी ने होंठ सिकोड़कर फार्म को देखा, फिर रोमी से बोली—

"मिस्टर पहाड़िया ने इसे जबरदस्ती यहां क्यों भेजा कि प्रिया के हत्यारे को ढूंढने का केस सौंपे।"

"पता नहीं... ।"

तभी देविका भीतर आई।

"ठीक बात हुई उससे?"

"रोमी बता देगा।" मोना चौधरी बोली—"विजय मल्होत्रा भी आने वाला है।"

देविका सिर हिलाकर बाहर निकल गई।

मोना चौधरी को कई बातें अजीब-सी लग रही थीं। खुद को उलझन में पाया उसने।

❑❑❑

❑❑❑

विजय मल्होत्रा आया।

वो पैंतीस बरस का मध्यम कद का व्यक्ति था। उसने वहां पहुंचते ही रोमी और देविका को गहरी निगाहों से देखा। वे उसे मोना चौधरी तक ले गये। मोना चौधरी को देखते ही विजय मल्होत्रा ने कहा—

"आवाज सुनकर तो लगता था कि तुम हूरपरी होओगी।"

"क्यों?" मोना चौधरी ने आंखों पर पड़ा चश्मा ठीक किया— "हूरपरी नहीं हूं क्या?"

"जिसका दिल तुम पर आ जायेगा, उसके लिये तो तुम हूरपरी ही होओगी।"

"ये डिटैक्टिव एजेन्सी है, शादी ब्याह का ब्यूरो नहीं।" रोमी ने घूरा उसे।

"मालूम है मुझे... ।" विजय मल्होत्रा ने उसे देखकर सिर हिलाया, फिर मोना चौधरी को देखा—"तुम जो भी हो, तुम्हें यहां देखकर मुझे हैरानी हो रही है। प्रिया को मार दिया गया और आनन-फानन तुम यहां की मालकिन बन गईं।"

"आनन-फानन नहीं। नोट देकर ये सारा बिजनेस खरीदा है।" मोना चौधरी ने कहा।

"बेहतर होता कि अगर तुम ब्यूटी पार्लर खरीद लेतीं उन पैसों का। वहां तुम अपने को संवार सकती थीं।"

"तुम दूसरों को सलाह बहुत देते हो।" मोना चौधरी ने होंठ सिकोड़े।

"मैं समझने की कोशिश कर रहा हूं कि यहां पर क्या हो रहा है?" विजय मल्होत्रा ने गम्भीर स्वर में कहा।

मोना चौधरी कुछ कहने लगी कि उसका मोबाइल फोन बजा।

मोना चौधरी ने कॉल अटैण्ड की।

"हैलो।"

"मैं बोल रहा हूं।" मिस्टर पहाड़िया की आवाज कानों में पड़ी—"कुछ देर पहले ही देविका ने मेरे आदमी को बुलाकर कागज भेजे थे, मेरे पास... ।"

मोना चौधरी समझ गई कि विजय मल्होत्रा वाले कागजों की बात हो रही है।

"तो... ?"

"वो कागज नेवी के चन्द गोपनीय और महत्वपूर्ण दस्तावेजों में से हैं। असल की फोटो कॉपी हैं ये।"

"ओह... ।" मोना चौधरी की निगाह विजय मल्होत्रा पर गई।

"कहां से मिले ये कागज?" मिस्टर पहाड़िया का स्वर कानों में पड़ा।

"विजय मल्होत्रा ने दिए हैं।" उसे देखती मोना चौधरी बोली— "उसका कहना है कि तीन दिन पहले प्रिया ने उसे कहीं से ये लिफाफा लाने को कहा था और इस वक्त विजय मल्होत्रा मेरे सामने बैठा है।"

"ओह! क्या बात हुई?"

"अभी...कुछ नहीं।"

"बात करो। शायद कोई बात पता चले।"

मोना चौधरी ने फोन बन्द करके टेबल पर रखा।

"कौन था... मेरे बारे में क्या बात हो रही थी?" विजय मल्होत्रा ने पूछा।

"तुम जैसे बड़े लोगों के बारे में अक्सर बातें छिड़ जाती हैं।" मोना चौधरी बोली।

विजय मल्होत्रा मोना चौधरी को देखता रहा।

मोना चौधरी ने ड्राज खोलकर पैकेट निकाला। सिगरेट सुलगाई।

"प्रिया भी इसी ब्रांड की सिगरेट पीती थी।" विजय मल्होत्रा बोला।

"ये पैकेट उसी का है।" मोना चौधरी ने कश लिया। सोच भरी निगाहों से उसे देखती रही। रोमी और देविका खड़े थे। मोना चौधरी बोली—"तुमने सुबह जो पैकेट भेजा था, वो क्या है?"

"मुझे क्या पता! तुम्हें पता होगा। वो तुमने देख लिया होगा।" विजय मल्होत्रा बोला।

"कहां से लिया वो पैकेट? किसने दिया था?"

"प्रिया ने मुझे कहा था कि आज जवाहर नगर पोस्ट आफिस के बाहर, नीली कमीज पहने कोई मुझे मिलेगा। मुझे बस इतना करना है कि वहां जाकर खड़ा हो जाऊं। मैंने ऐसा ही किया। मुझे वहां खड़े आधा घण्टा ही हुआ था कि नीली कमीज वाला आदमी आया। मुझे वो लिफाफा देकर चला गया। हममें कोई बात नहीं हुई...।"

"तुम क्या सोचते हो कि तुम्हारा ये झूठ चल जायेगा?"

"झूठ...?" विजय मल्होत्रा के माथे पर बल पड़े—"तुम्हें मैं झूठ बोलता नजर आता हूं।"

"हां...।"

"हैरानी है।" विजय मल्होत्रा मुंह बिचका कर रह गया।

"इस पैकेट को लेकर तुम खुद क्यों नहीं आये?"

"प्रिया ने खामखाह यहां आने को मुझे मना कर रखा है। वो नहीं चाहती थी कि हर कोई जाने कि मैं उसके लिये

काम करता हूं। अक्सर वो मुझे फोन पर ही काम बताया करती थी।" विजय मल्होत्रा ने कहा।

"यानि कि तुम आफिस में प्रिया के पास नहीं आंते थे?"

"याद नहीं कि पिछली बार कब यहां आया था।"

"प्रिया से मुलाकात नहीं होती थी?"

"होती थी, परन्तु इस आफिस से बाहर। वो फोन पर बता दिया करती थी कि कहां मिलेगी?"

मोना चौधरी ने कश लेते हुए उसके चेहरे पर नजरें टिकाकर पूछा।

"जानते हो, जो लिफाफा तुमने यहां भिजवाया, उसमें क्या था?"

"नहीं। मैंने लिफाफा नहीं खोला तो कैसे जानूंगा!"

"उस लिफाफे में नेवी के महत्वपूर्ण कागजों की फोटो स्टेट थीं।"

"ओह!" विजय मल्होत्रा के चेहरे पर अजीब-से भाव आ ठहरे— "मुझे नहीं मालूम था।"

"अब मालूम हो गया?"

"हां।"

"तो बताओ कि तुम्हारा क्या करूं? मैं तो ऐसे गैरकानूनी काम करती नहीं।"

"मैं भी नहीं करता। प्रिया ने लिफाफा लाने को कहा था, वो बन्द का बन्द मैंने यहां पहुंचा दिया। मुझे क्या मालूम कि बीच में कौन-सा बम है।" विजय मलहोत्रा ने शांत स्वर में कहा।

"प्रिया करती क्या थी?"

"प्राइवेट जासूस थी।"

"कौन-से केस उसने सॉल्व किए? या फिर तुमने किए?"

"मैंने तो कोई केस सॉल्व नहीं किया। प्रिया ने कोई केस सॉल्व किया हो तो मुझे पता नहीं। वो मुझे इधर-उधर

से कोई सामान लाने को कहती थी, वो मैं ला देता। कभी किसी की निगरानी पर लगा देती थी, तो शिकार की पूरी रिपोर्ट प्रिया को देता रहता, फिर एकाएक वो नजर रखने के काम से हटा देती।''

मोना चौधरी ने रोमी और देविका को देखा।

''प्राइवेट जासूस क्या इस तरह काम करते हैं?'' मोना चौधरी बोली।

''नहीं।'' रोमी बोला।

''वे कहता है कि उसने कभी कोई केस सॉल्व नहीं किया और इससे सिर्फ फील्ड के काम लेती थी।''

रोमी और देविका खामोश रहे।

मोना चौधरी ने नजरें पुनः प्रिया पर टिका दीं।

''क्या तुम्हें पता नहीं था कि प्राइवेट जासूस कैसे काम करते हैं?''

''पता था।''

''तो तुम्हें प्रिया पर कभी शक नहीं हुआ कि प्राइवेट जासूस बनकर वो किस तरह का काम करती है?''

''मुझे वक्त पर तनख्वाह मिलती थी और बढ़िया मिलती थी। मैं क्यों इधर-उधर की बातें सोचूं?''

''नेवी के महत्वपूर्ण कागजों के साथ तुम्हें पुलिस के हवाले कर दूं तो सब समझ में आ जायेगा। फिर तुम हर तरफ की बातें सोचोगे विजय मल्होत्रा... ।'' मोना चौधरी ने कड़वे स्वर में कहा।

''तुम ऐसा नहीं कर सकतीं।''

''क्यों...?''

''मैं ये बात स्वीकार ही नहीं करूंगा कि मैंने तुम्हारे पास कोई लिफाफा भिजवाया था।''

''खूब!'' मोना चौधरी हंसी—''तुम्हें ये नहीं बताया कि पुलिस को मैं साथ में एक सी.डी. भी दूंगी।''

''सी.डी.?''

''हां। उसमें यहां होने वाली सारी बातचीत भी दर्ज

होगी। तस्वीरें भी।''

विजय मल्होत्रा ने चौंककर कमरे में नजरें दौड़ाईं।

''इस तरह तुम्हें कैमरा नहीं दिखेगा।''

विजय मल्होत्रा आंखें सिकोड़े मोना चौधरी को देखने लगा।

मोना चौधरी ने कश लेकर सिगरेट ऐश-ट्रे में डाली और उठकर विजय मल्होत्रा के पास पहुंची।

विजय मल्होत्रा की निगाह मोना चौधरी पर थी।

''तुम बहुत कुछ जानते हो...और मुझे कुछ नहीं बता रहे।''

''क्या कहती हो?'' विजय मल्होत्रा ने उठना चाहा—''मैं... ।''

तभी मोना चौधरी का हाथ हिला और उसके गाल पर पड़ा।

उठता-उठता विजय मल्होत्रा वहीं बैठ गया।

''ये क्या कर रही हो? मुझे यहां बुलाकर तुम मुझसे इस तरह का व्यवहार नहीं कर सकतीं।''

''मैं बहुत कुछ कर सकती हूं।'' मोना चौधरी ने सख्त स्वर में कहा—''इतना तो मैं महसूस कर चुकी हूं कि तुम जानते बहुत कुछ हो और मुंह नहीं खोल रहे। रोमी... ।''

''हां।''

''इसे समझाओ कि हम जरूरत पड़ने पर कहां तक पहुंच सकते हैं?'' मोना चौधरी ने कठोर स्वर में कहा।

रोमी ने उसी पल रिवाल्वर निकाली और आगे बढ़कर विजय मल्होत्रा के गले पर रख दी।

''बेकार का ड्रामा न करो।'' विजय मल्होत्रा ने उखड़े स्वर में कहा—''तुम मुझे गोली नहीं मार सकते। यहां हर तरफ आफिस बने हुए हैं। गोली की आवाज सुनकर लोग इकट्ठे हो जायेंगे। किसी को गोली की आवाज सुनाई न भी दी तो उस स्थिति में मेरी लाश को यहां से बाहर ले जाना असम्भव होगा। तुम... ।''

"लाश ठिकाने लगाना मेरा काम है।" रोमी गुर्रा उठा—"तुम अपनी जान की फिक्र करो। ये रिवाल्वर तो तुम्हें बिठाये रखने के लिये निकाली है। असल में तुम्हारी जान तो गला काटकर ली जायेगी।"

"गला...!" विजय मल्होत्रा ने कहना चाहा कि तभी देविका के हाथ में लम्बा चाकू देखकर रुक गया।

चाकू थामे देविका कहर भरी निगाहों से उसे देख रही थी।

"बोलो, मुंह खोलना चाहोगे या।" मोना चौधरी कड़वे स्वर में दांत भींचकर बोली—"मरना पसन्द करोगे?"

"म...मैं ज्यादा कुछ नहीं जानता।"

"जो जानते हो, वो ही बताओ।" मोना चौधरी उसी स्वर में कह उठी।

विजय मल्होत्रा कुछ पलों तक सोच भरे अंदाज में चुप रहा, फिर बोला—

"मेरे ख्याल में प्रिया गैरकानूनी काम करती थी।" विजय मल्होत्रा बोला।

"कैसा गैरकानूनी काम?"

"पक्के तौर पर तो मैं कुछ नहीं कह सकता, लेकिन उसका वास्ता खतरनाक लोगों से था। वो किन्हीं लोगों से कुछ लाने को कहती थी, तो कभी-कभार मैं उन लोगों के बारे में जानकारी प्राप्त करने की भी चेष्टा करता था। मुझे कई बार लगा कि वो लोग हमारे देश के नहीं हैं। या फिर आतंकवादियों जैसे हैं।"

मोना चौधरी की नजरें विजय मल्होत्रा पर थीं।

"कई बार प्रिया एक जगह से पैकेट या ब्रीफकेस लेकर, किसी अन्य जगह पहुंचाने को कहती। तो ऐसे में मैं उस पैकेट या ब्रीफकेस को खोलकर देख लिया करता था।"

"क्या होता था बीच में...?"

"अधिकतर कागज ही होते। जिन्हें मैं ठीक से समझ नहीं पाता।"

"और...?"

"एक बार ब्रीफकेस में रिवाल्वरें भरी हुई थीं।"

"ओह...!"

"दो-तीन बार जो ब्रीफकेस मैंने कहीं पहुंचाया, उसमें बारूद रखा हुआ था।" विजय मल्होत्रा ने कहा।

"फिर भी तुम प्रिया के लिये काम करते रहे?"

"क्या करता...वो पैसा बहुत बढ़िया देती थी।"

"ये काम करते हुए तुम पुलिस के हाथों फंस भी सकते थे।"

विजय मल्होत्रा खामोश रहा।

"प्रिया के इस सामान को एक ही जगह पहुंचाया करते थे या अलग-अलग जगह पर?"

"अलग-अलग जगह पर। एक ही जगह पर दोबारा सामान कभी नहीं पहुंचाया।"

"ऐसा कोई आदमी, जिसका प्रिया के साथ खास सम्बन्ध हो?"

"मुझे नहीं मालूम। प्रिया से मेरा इतना ही वास्ता था, जितना बता दिया।"

मोना चौधरी ने ड्रॉज में से तस्वीर निकाली और उसके सामने रखी।

तस्वीर पर नजर पड़ते ही विजय मल्होत्रा चौंका।

"जानते हो इन्हें? किन के साथ प्रिया खड़ी है?"

"शायद इस आदमी को जानता हूं।" उसने तस्वीर के दूसरे व्यक्ति पर नजर रखी—"रंजन जोशी नाम है इसका।"

"रंजन जोशी?"

"हां। इस आदमी को मैं दो बार पैकेट देने गया था, तो नाम भी मालूम हो गया था।"

"रंजन जोशी...कहां रहता है ये...?"

"पता नहीं...मैंने राह चलते इसे सामान दिया था।"

"करता क्या है?"

"क्या मालूम!"

"और ये जो दूसरा व्यक्ति है तस्वीर में?"
विजय मल्होत्रा ने जाफर शरीफ को देखा।
"इसे नहीं जानता।"
"ये जाफर शरीफ है। खूंखार आतंकवादी।"
"ओह... ।"
"जाफर शरीफ जैसे खतरनाक आदमी के साथ इस आदमी की तस्वीर है तो ये भी खतरनाक होगा।"
विजय मल्होत्रा ने आहिस्ता से सिर हिलाया। बोला—
"पहले तो मैं सोचता था कि प्रिया को किसी ने मोटे पैसे के लालच में कोई काम सौंप दिया है, इसलिए इन कामों में हाथ डाले हुए है...। लेकिन जाफर शरीफ के साथ प्रिया की तस्वीर देखकर लगता है कि मामला गहरा है।"
"मानते हो कि प्रिया आतंकवादियों के साथ थी?"
विजय मल्होत्रा हिचकिचाया।
"मानने में एतराज है तुम्हें?"
"कुछ समझ में नहीं आता। प्रिया के लिये मैं दो-तीन सालों से काम कर रहा हूं। वो ऐसी लगी नहीं कभी।"
"सब कुछ तुम्हारे सामने है।"
"ठीक है, उसके कर्मों का मामला समाप्त हो गया। इस मुद्दे पर बात करने का क्या फायदा?"
"मामला तो अभी शुरू हुआ है।" मोना चौधरी तस्वीर उठाकर ड्रॉज में रखती बोली—"आज ही मेरा एक नया क्लाइंट बना है। वो चाहता है कि मैं प्रिया के हत्यारे को तलाश करूं।"
"प्रिया के हत्यारे को?" विजय मल्होत्रा के माथे पर बल पड़े—"कौन चाहता है ये?"
"नाम नहीं बताऊंगी। क्लाइंट गुप्त है।"
"मैंने तो आज तक ऐसे किसी व्यक्ति के बारे में सुना नहीं जो प्रिया के लिये चिन्तित रहा हो। हो भी सकता है ऐसा कोई हो। मैं प्रिया की सारी लाइफ के बारे में जानता नहीं।"

"प्रिया के पति को जानते हो?"
"प्रदीप गोस्वामी नाम है उसका, वो ही जानता हूं। देखा कभी नहीं।"
"प्रिया ने कभी उसका जिक्र किया हो, कोई बात की हो?"
"नहीं। मुझसे ऐसी कोई बात नहीं हुई।"
मोना चौधरी विजय मल्होत्रा को देखती रही, फिर बोली—
"तुम्हारा क्या ख्याल है कि प्रिया की हत्या किसने की होगी?"
"मुझे क्या मालूम? मैं प्रिया की व्यक्तिगत जिन्दगी के बारे में कुछ नहीं जानता। उससे दूर रहकर ही उसके लिये काम करता था। वो जाफर शरीफ जैसे आदमियों के लिये वास्ता रखती थी, तो उसे कोई भी मार सकता होगा।" विजय मल्होत्रा ने कहा—"मेरे ख्याल में तो तुम्हें प्रिया के हत्यारे को नहीं ढूंढना चाहिये।"
"क्यों?"
"ये खतरनाक मामला है। तुम भी खतरे में पड़ सकती हो।"
"सलाह के लिये शुक्रिया। जो काम मैंने हाथ में लिया है, वो अवश्य पूरा करूंगी। तुम प्रिया के इशारे पर पैकेट या ब्रीफकेस जहां-जहां पहुंचाते रहे, वो सारी जगह हमें बताओ।"
"मैंने अधिकतर डिलीवरी खुले में ही दी। सड़कछाप, फुटपाथ, पार्क या... ।"
तभी दूसरे कमरे में कदमों की आहटें गूंजीं।
कोई था वहां।
महसूस हुआ, एक से ज्यादा आदमी हैं वहां।
देविका फौरन पलटी, बाहर दूसरे कमरे में झांकने के लिये।
तभी दरवाजे पर एक आदमी दिखा। उसके हाथ में

रिवाल्वर दबी थी। रोमी ने उस पल अपना रिवाल्वर वाला हाथ, उसकी तरफ घुमा लिया। देविका के हाथ में चाकू था।

मोना चौधरी के होंठ भिंच गये थे।

कुछ पलों के लिये जैसे वक्त रुक गया हो।

तभी दो व्यक्तियों ने दरवाजे पर खड़े आदमी की बगल से निकलते हुए भीतर प्रवेश किया। दोनों के हाथों में रिवाल्वर दबे हुए थे।

एक रोमी के पास पहुंचा और सख्त स्वर में कह उठा—

"रिवाल्वर निकाली तूने। हमें मारेगा क्या...बोल मारेगा हमें?"

रोमी कठोर नजरों से उसे देखता रहा।

"ये पहले से ही हाथ में पकड़ी हुई है।" मोना चौधरी ने शांत स्वर में कहा।

"गिरा इसे... ।"

रोमी ने रिवाल्वर गिरा दी।

उसने देविका को देख तो देविका ने चाकू गिरा दिया।

दूसरे ने चाकू और रिवाल्वर उठाकर अपने जेब में रख लिये।

तभी दरवाजे पर खड़े व्यक्ति ने एक कदम आगे बढ़ाया और खड़ा हो गया। उसी पल चौथे व्यक्ति ने भीतर प्रवेश किया। जिसे देखकर सब चौंके।

वो रंजन जोशी था।

जिसे तस्वीर में विजय मल्होत्रा ने पहचान कर उसका नाम बताया था।

रंजन जोशी के होठों पर मूंछें थीं। आंखों पर काला चश्मा पहन रखा था। सफेद पैन्ट और सुर्ख-सी कमीज में था वो। काले चश्मे के पीछे आंखें किसे देख रही थीं, पता न चल रहा था।

"तुम?" विजय मल्होत्रा चौंककर कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

रंजन जोशी ने आंखों पर पड़ा काला चश्मा उतारा।

"अच्छा हुआ तुम आ गये। मौके पर आये।" विजय मल्होत्रा जल्दी से कह उठा—"ये लोग मेरी जान लेने की चेष्टा कर रहे थे। अगर तुम न आते तो ये मुझे अब तक मार ही देते।"

"बैठ जाओ।" रंजन जोशी ने शांत स्वर में कहा।

"लेकिन... ।"

"सुना नहीं...बैठ जाओ।"

विजय मल्होत्रा बैठ गया।

रंजन जोशी ने मोना चौधरी को देखा।

मोना चौधरी ने आंखों पर डाल रखा नजर का चश्मा ठीक किया।

"प्रिया का बिजनेस तुमने खरीदा है?"

मोना चौधरी ने सहमति से सिर हिलाया।

"आज मेरे ही आदमियों ने तुम्हें सड़क पर रोका था।" रंजन जोशी बोला।

"ओह! कौन हो तुम?"

"रंजन जोशी।" वो आगे आया और कुर्सी खींचकर बैठ गया— "प्रिया मुझे बहुत अच्छी तरह जानती थी।"

"यहां क्या करने आये हो?"

"अगर तुम ये बिजनेस चालू रखना चाहती हो तो मेरे काम की चीज मेरे हवाले कर दो।"

"क्या?"

"काले चमड़े की फाइल है एक। वो मेरी है। किसी काम के लिये मैंने प्रिया को दी थी, लेकिन वो मर गई।"

"काले चमड़े की फाइल?"

"हां।"

"मैं नहीं जानती उस फाइल को।"

"वो यहीं होगी।"

"ढूंढ लो। मुझे कोई एतराज नहीं। हमें तो ऐसा कुछ नहीं दिखा, यहां पर... ।" मोना चौधरी ने कहा।

"हो सकता है, तुम्हें मिली हो और तुमने उस फाइल

को कहीं छिपा दिया हो।''

''मुझे काले चमड़े की तो क्या, सफेद चमड़े का भी कुछ नहीं मिला।''

रंजन जोशी ने मोना चौधरी की आंखों में झांका, फिर अपने आदमियों से कहा—

''फाइल ढूंढो।''

उसके बाद रोमी, देविका और विजय मल्होत्रा को नीचे दीवार के साथ बैठा दिया गया और सख्त स्वर में उनसे कहा गया कि वो यहां से उठें नहीं।

उसके बाद वे तीनों आदमी आफिस के दोनों कमरों की तलाशी लेने लगे।

मोना चौधरी सतर्क-सी रंजन जोशी को देख रही थी।

''जाफर शरीफ के साथ तुम्हारा क्या रिश्ता है?'' मोना चौधरी बोली।

रंजन जोशी ने आंखें सिकोड़ कर मोना चौधरी को देखा।

''तुम कैसे कह सकती हो कि जाफर शरीफ से मेरा कोई रिश्ता है?'' वो बोला।

''प्रिया का भी तुमसे और जाफर शरीफ जैसे आतंकवादी से रिश्ता था।'' मोना चौधरी बोली।

''कैसे मालूम...?''

''एक तस्वीर देखी थी, जिसमें तुम तीनों साथ थे।''

कुछ पल खामोशी के बाद रंजन जोशी कह उठा—

''तुम कौन हो?''

''मोना।''

''तुम जिस तरह प्रिया की जगह पर फौरन आ बैठीं, उससे तुम शक के घेरे में आ गई हो।''

''मैं नहीं जानती, तुम किस शक की बात कर रहे हो?''

रंजन जोशी उसे देखता रहा, बोला कुछ नहीं।

''इतना तो मैं समझ चुकी हूं कि प्रिया यहां बैठकर प्राइवेट जासूसी का धन्धा नहीं करती थी, कुछ और ही काम

करती थी। जाफर शरीफ जैसे आतंकवादी के साथ उसके सम्बन्ध थे।''

रंजन जोशी के चेहरे पर अजीब-सी मुस्कान उभरी।

''और तुम... तुम कौन हो... जाफर शरीफ जैसे हो तुम?''

''मैं!'' वो खुलकर मुस्कुरा पड़ा—''मैं, प्रिया और जाफर शरीफ के बीच का व्यक्ति हूं।''

''क्या करते हो तुम?''

''जिसके सम्बन्ध जाफर शरीफ जैसे इन्सान से होंगे, वो क्या करेगा?''

''अच्छा जवाब दिया तुमने... ।'' मोना चौधरी रंजन जोशी की आंखों में देखने लगी—''वैसे प्रिया करती क्या थी?''

''जो अब तक तुमने जाना, वो ही करती थी।''

''मेरे ख्याल में वो दुश्मनों के लिये जासूसी करती थी।'' मोना चौधरी बोली।

रंजन जोशी ने कुछ नहीं कहा।

''जिस डायरी को तुम ढूंढ रहे हो... उसमें क्या है?''

''ये जानने की तुम्हें जरूरत नहीं है।''

''उसे ढूंढते यहां तक आ गये तो जाहिर है, उसमें कुछ खास ही होगा।''

''तुम अपने को बचा के रखना।'' रंजन जोशी ने एकाएक कहा।

''क्यों?''

''क्योंकि तुम बारूद के ढेर पर आ बैठी हो। प्रिया भी बारूद के ढेर पर बैठी थी। इस बात का अहसास था उसे और फिर भी उसका कत्ल हो गया। वो अपने को बचा नहीं सकी।'' रंजन जोशी ने कठोर स्वर में कहा।

''तुमने मारा उसे?''

''नहीं... ।''

''तो किसने मारा?''

"मैं नहीं जानता। और तुम्हें इन बातों से दूर रहना चाहिये, वरना जल्दी मर जाओगी।"

"मुझे प्रिया के हत्यारों को तलाश करने का काम मिला है।"

"किसने कहा तुमसे इस काम के लिये...?"

"उसके पति प्रदीप गोस्वामी ने।"

"हैरानी है। प्रिया तो अपने पति को कई सालों से छोड़ चुकी थी।" रंजन जोशी के होठों से निकला।

"कानूनन दोनों अलग नहीं हुए थे।"

"बेहतर होगा कि प्रिया के हत्यारों को ढूंढने का काम हाथ में न लो।"

"तुमने नहीं मारा उसे तो फिर चिन्ता क्यों करते हो?"

"मुझे जरा भी चिन्ता नहीं है।" रंजन जोशी ने तीखे स्वर में कहा—"मैं तुम्हें नेक सलाह दे रहा हूं। प्रिया के हत्यारे की तलाश में तुम मधुमक्खियों के छत्ते में हाथ डाल दोगी और मर जाओगी।"

"तुम्हारी बातों से लगता है कि तुम बहुत कुछ जानते हो।" मोना चौधरी बोली।

"हां।"

"तो मुझे बताओ। मैं कुछ भी नहीं जानती।"

"या तो तुम पागल हो या फिर बहुत चालाक।" रंजन जोशी ने कठोर नजरों से उसे घूरा—"लेकिन ये बात अपने दिमाग में बिठा लो कि प्रिया के हत्यारे को तलाश करने की कोशिश में तुम जल्दी मरोगी।"

"वो कैसे?"

"जब मौत आयेगी, उससे पूछना।" सख्त स्वर में कहते हुए वो उठ खड़ा हुआ।

मोना चौधरी उसे देखती रही।

"तुम इस काम पर आने से पहले क्या करती थीं?" रंजन जोशी ने पूछा।

"जासूसी का प्रशिक्षण स्काटलैण्ड से लेकर दो सप्ताह

पहले ही लौटी हूं। ये तो अच्छा हुआ कि मुझे आई डिटेक्टिव एजेन्सी के रूप में जमा-जमाया काम मिल गया और...।"

"तुम यहां ज्यादा देर न टिक पाओगी।"

"क्यों?"

"मैंने पहले ही कहा है कि तुम बारूद के ढेर पर आ बैठी हो। उस बारूद के ढेर में से कोई न कोई चिंगारी तुम्हें झुलसाती रहेगी। चैन से न बैठ सकोगी। ऐसे में कोई बड़ा चिंगारा निकलकर तुम्हारी जान भी ले लेगा। बहुत आसानी से तुम मर जाओगी।" रंजन जोशी ने सख्त स्वर में कहा।

विजय मल्होत्रा, देविका और रोमी दीवार के साथ सटकर चुप्पी साधे बैठे थे।

"तुम मुझे सब कुछ बता क्यों नहीं देते? ये स्पष्ट क्यों नहीं करते कि प्रिया क्या करती थी?"

"मुझे क्या जरूरत है बताने की?" रंजन जोशी मुस्कुरा पड़ा—"धीरे-धीरे सब पता चल जायेगा।"

तभी रंजन जोशी के एक आदमी ने वहां प्रवेश किया।

"सर, वो कमरा तो हमने छान मारा है, काले चमड़े वाली फाइल या डायरी कहीं नजर नहीं आ रही।"

"वो मुझे हर-हाल में चाहिये। जैसे भी हो ढूंढो उसे। ये कमरा भी अच्छी तरह चैक करो। हमारे पास बहुत वक्त है। हमें जाने की जल्दी नहीं है।" रंजन जोशी ने कठोर स्वर में कहा।

वो बाहर निकल गया।

रंजन जोशी ने मोना चौधरी से कहा—

"अगर तुम्हें काले चमड़े वाली फाइल मिली है तो मेरे हवाले कर दो।"

"मैंने ऐसी किसी फाइल को देखा नहीं।"

"उक्ति कीमत भी मिल जायेगी।"

"मैंने देखा ही नहीं उस फाइल को।"

रंजन जोशी पुनः बैठा और विजय मल्होत्रा से बोला—

"मल्होत्रा! प्रिया ने वो फाइल तुम्हें तो नहीं दी, किसी

को देने के लिये?"

"नहीं। मेरे को ऐसा कुछ प्रिया ने नहीं दिया था।"

"उस फाइल का पैकेट बनाकर, किसी को देने के लिये दिया हो?"

"पिछले दस दिनों से प्रिया ने स्वयं कोई पैकेट नहीं दिया किसी को देने के लिए।" विजय मल्होत्रा ने कहा–"ऐसा कुछ होता तो मैं तुम्हें पहले ही बता देता।"

"बहुत वफादार है तू मेरा।" रंजन जोशी कड़वे स्वर में बोला– "एक बात तो बता।"

"क्या?"

"प्रिया की हत्या किसने की?"

"मुझे क्या पता? मुझे तो उसकी मौत के बारे में भी यहां आकर ही पता चला है।"

मोना चौधरी ने ड्रॉज में पड़े पैकेट में से सिगरेट निकाली और सुलगाकर बोली–

"प्रिया प्राइवेट जासूसी के धन्धे की आड़ में देश के महत्वपूर्ण रहस्य बाहरी लोगों को बेचती थी।"

रंजन जोशी ने माथे पर बल डालकर मोना चौधरी को देखा।

"तुम्हें कैसे मालूम?"

"तुम्हें पहले से पता होगी ये बात।" मोना चौधरी ने तीखे-से स्वर में कहा–"क्योंकि तुम प्रिया और जाफर शरीफ के बीच के बन्दे हो। तुम्हें क्यों न खबर होगी?"

"ज्यादा जुबान मत चलाओ। मेरी बात का जवाब दो। तुम्हें कैसे मालूम कि प्रिया देश के महत्वपूर्ण रहस्यों को खरीदने-बेचने का धन्धा करती थी।" रंजन जोशी ने सख्त स्वर में कहा।

"मुझे आज सुबह से कुछ फोन आये हैं।" मोना चौधरी बात टालती कह उठी–"फोन कर्ता से बात करके मुझे इस बात का एहसास हुआ कि प्रिया असल में क्या करती थी।"

"फोन करने वालों ने अपना नाम भी बताया होगा।"

"नहीं बताया।"

रंजन जोशी, मोना चौधरी को घूरने लगा।

"तुम मुझे स्पष्ट तौर पर बता क्यों नहीं देते कि प्रिया का मुख्य धन्धा क्या था?"

"तुम ये धन्धा करने के लायक नहीं हो।"

"कौन-सा?"

"प्राइवेट जासूसी का।" रंजन जोशी ने शब्दों को चबाकर कहा–"प्रिया तुमसे कहीं ज्यादा चालाक और समझदार थी, लेकिन किसी ने उसे मार दिया। खुद को बचा न सकी और तुम मुझे निहायत ही बेवकूफ लग रही हो। मैं जानता हूं कि तुम्हारे मरने की खबर मुझे बहुत जल्दी मिलेगी।"

मोना चौधरी गहरी सांस लेकर रह गई।

तभी नीचे बैठा विजय मल्होत्रा कह उठा–

"मुझे कब तक यहां बिठाये रखोगे? टांगें दर्द होने लगी हैं, जाने दो...।"

"चुपचाप बैठे रहो।"

मोना चौधरी ने रंजन जोशी से पूछा–

"तुम्हें कब पता चला कि प्रिया की हत्या हो गई है?"

"आज सुबह।"

"देर से पता चला। उसकी हत्या तो परसों रात हो गई थी।" मोना चौधरी ने कहा।

"अगर तुम्हारे पास काले लैदर वाली फाइल है तो मुझे दे दो। मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूंगा।" रंजन जोशी ने एकाएक कहा–"बदले में नोट चाहिये तो वो भी दे दूंगा।"

"विश्वास करो, मैं नहीं जानती कि तुम किस फाइल की बात कर रहे हो। मैंने उसे नहीं देखा।" मोना चौधरी ने कहा–"अगर वो फाइल तुम्हारे लिये इतनी खास थी, तो प्रिया को मत देते।"

"मैंने नहीं दी।" रंजन जोशी ने होंठ भींचकर कहा–"किसी ने प्रिया को दी थी फाइल कि मुझ तक पहुंचा

दे।"

"समझी...उसमें क्या था?"

रंजन जोशी ने मोना चौधरी को घूरा।

"क्या हुआ...इस तरह क्यों देख रहे हो...?"

"जल्दी मरोगी तुम। तुम्हारी हरकतें ये ही जाहिर कर रही हैं।"

तभी रंजन जोशी के आदमियों ने भीतर प्रवेश किया। वे इस कमरे की तलाशी में लग गये।

"उस कमरे में कुछ नहीं मिला?" रंजन जोशी ने पूछा।

"नहीं।"

कमरे को उधेड़ने का उनका काम चलता रहा।

इसी बीच गोपाल कार ठीक कराके लौट आया था। उसके भीतर आते ही उसे भी पकड़कर लाइन में नीचे बैठा दिया था। गोपाल झल्लाहट भरी उलझन में फंस गया।

"ये क्या हो रहा है?" गोपाल ने रोमी से पूछा।

"चुपचाप बैठा रह।"

"मैं अभी इन्हें सीधा करता...।"

"इस मिशन की इंचार्ज मोना है।" रोमी बोला—"मोना जब शान्ति से सारे हालातों का सामना कर रही है तो तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं। आराम से बैठे रहो।"

तभी विजय मल्होत्रा कह उठा—

"तुम किस मिशन की बात कर रहे हो?"

"गलत सुन लिया है तुमने। मैंने किसी मिशन की बात नहीं की।" रोमी ने बात टाली।

"तुमने कहा है अभी।"

"नहीं कहा।"

"तुमने अभी मिशन शब्द का नाम लिया था। तुम...।"

"मैं भी इनकी बातें सुन रही थी।" देविका बोली—"मैंने तो ये शब्द नहीं सुना।"

"नहीं सुना?"

"नहीं।" विजय मल्होत्रा ने मुंह दूसरी तरफ घुमाया और बड़बड़ा उठा—

"साले, मुझे बेवकूफ समझते हैं।"

"क्या बोले तुम?" देविका ने पूछा।

"मैं...।" विजय मल्होत्रा ने देविका को देखा—"सोच रहा था कि इस मुसीबत से कब निकलूंगा?"

❑❑❑

❑❑❑

शाम के साढ़े पांच बज चुके थे।

रंजन जोशी के आदमियों ने आफिस का एक-एक जर्रा देख लिया था।

काले लैदर वाली फाइल कहीं भी न मिली।

अब रंजन जोशी के यहां रुकने का कोई फायदा न था। वो उठा।

"जा रहे हो।" मोना चौधरी ने शांत स्वर में कहा।

"अगर वो फाइल तुम्हारे पास हुई तो देर-सवेर में मुझे पता चल जायेगा।"

"मेरे पास नहीं है। मैंने तो आज ही ये सब सम्भाला है और अजीब मुसीबतों में फंस गई।"

"पता चल जायेगा।"

रंजन जोशी अपने आदमियों के साथ वहां से चला गया।

"मैं भी चलता हूं।" विजय मल्होत्रा कह उठा।

"यहां बैठ जाओ।" मोना चौधरी ने कुर्सी की तरफ इशारा किया—"अभी तुमसे बात करनी है।"

"हो तो गई बात।"

रोमी ने विजय मल्होत्रा को पकड़कर कुर्सी पर बिठा दिया।

गोपाल कुछ पूछने लगा तो रोमी बोला—

"बाद में बात करना। पहले इससे निपट लें।"

"ये कौन है?"

"विजय मल्होत्रा। प्रिया का फील्ड असिस्टेंट। जासूसी के नाम पर उल्टे काम करता था।"

"मैं नहीं करता था।" विजय मल्होत्रा बोला—"प्रिया मुझे ये सब करने को कहती थी।"

"और तू नासमझ दूध पीता बच्चा था। तू उसका कहा हर काम कर देता था।"

"हां। ऐसा ही था।"

मोना चौधरी ने ड्रॉज में रखे प्रिया के पैकेट से सिगरेट निकाली। सुलगाई।

"तो तुम बता रहे थे कि प्रिया का दिया सामान तुम कभी किसी को सड़क पर डिलीवर करते। कभी फुटपाथ, तो कभी किसी रेस्टोरेंट में, लेकिन कभी तो उस पैकेट, लिफाफे को किसी के घर पर दिया होगा।"

"हां, दिया।"

"मैं घर जैसी जगह के बारे में जानना चाहती... ।"

"कोई फायदा नहीं।" विजय मल्होत्रा ने सिर हिलाकर कहा—"दो घरों में मैंने बारी-बारी दो पैकेट दिए थे और बाद में उनके बारे में जानने की कोशिश की कि वे कौन थे, लेकिन वे घर खाली करके चले गये थे।"

"खाली करके...किरायेदार थे वे?"

"हां...वो... ।"

तभी टेबल पर पड़े मोबाइल फोन की बैल बजी।

"हैलो... ।" मोना चौधरी ने मोबाइल उठाकर बात की।

"मैं रानी... ।"

"कहो... ।" मोना चौधरी के होंठ सिकुड़े।

"होटल ब्लैकहोल से वापसी के वक्त जिन लोगों ने तुम्हारा रास्ता रोका था, मैंने उनका पीछा करके ये जान लिया कि उनका ठिकाना कहां पर है।" रानी ने कहा।

"अच्छा किया, मैं... ।"

"अभी-अभी चार लोग तुम्हारे आफिस से निकले हैं।

क्या उनका पीछा करूं?"

"करो...जरूरी है।" मोना चौधरी के होंठों से निकला—"जिसने काला चश्मा पहन रखा है, वो मेरे लिए खास है।"

"ठीक है।" इसके साथ ही रानी ने फोन बन्द कर दिया था।

मोना चौधरी ने फोन टेबल पर रखा और विजय मल्होत्रा को देखा।

विजय मल्होत्रा के चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी।

"मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूं मोना।" वो बोला।

"पूछो।"

"तुम इस मामले में दिलचस्पी क्यों ले रही हो?"

"दिलचस्पी लेनी पड़ रही है।" मोना चौधरी कह उठी—"आज ही इस आफिस का काम सम्भाला है कि तीन बार खतरे में पड़ चुकी हूं। प्रिया के बहाने हर कोई मेरा गला दबा देना चाहता है। स्पष्ट है कि प्रिया के कामों की परछाईं मुझ पर पड़ रही है। देर-सवेर में मुझ पर घातक हमला भी हो सकता है।"

विजय मल्होत्रा सोचों में डूबा रहा।

"अभी आया था रंजन जोशी। तुमने देखा ही कि अपने आदमियों के साथ किस तरह मुझे घेर लिया। अगर मैं कुछ करती तो झगड़ा खड़ा हो जाता। गोलियां भी चल जातीं। हर बार तो मैं चुप नहीं रह सकती। तस्वीर में रंजन जोशी, जाफर शरीफ जैसे आतंकवादी के साथ है। ऐसे खतरनाक लोगों से मैं तभी अपना बचाव कर सकती हूं कि जब मुझे मालूम हो कि ये कहां से आते हैं और कहां चले जाते हैं। मैं इन लोगों का मकसद भी तो नहीं जानती।"

"रंजन जोशी काले चमड़े वाली फाइल तलाश कर रहा था। वह नहीं मिली।" रोमी बोला—"एक-दो दिन के बाद ये फिर आयेगा, उस फाइल को पूछने। यहां की दोबारा

तलाशी लेगा।"

"समझ में नहीं आता कि प्रिया ने क्या चक्कर फैला रखा था।" देविका बोली।

"अब तक जो हालात सामने आये हैं, उसे देखते हुए प्रिया का कोई कत्ल कर देता है तो ये मामूली बात हुई।" गोपाल ने कहा।

मोना चौधरी ने कश लिया और कह उठी–

"ये तो तय हो गया कि प्रिया जासूसी के धन्धे की आड़ में देश के रहस्य दुश्मनों को बेचती थी। जाफर शरीफ जैसे आतंकवादी के साथ खिंचवाई तस्वीर प्रिया की हरकतों को उजागर करती है।" मोना चौधरी पलभर के लिये ठिठकी, फिर कह उठी–"ये काम प्रिया अकेले नहीं कर सकती। प्रिया के कई साथी होंगे, जो बड़े-बड़े ओहदों पर बैठे उसकी सहायता करते होंगे। देश के रहस्य चुपचाप खिसका कर उसे देते होंगे, लेकिन प्रिया की मौत के बाद उन तक पहुंचना अब आसान नहीं रहा।"

"ठीक कहती हो... ।" देविका बोली।

"हमें अपने सवालों का जवाब तलाश करना होगा। अभी तक मेरे सामने दो ही लोग हैं जो मेरे सवालों का जवाब दे सकते हैं। जाफर शरीफ और रंजन जोशी। ये दोनों बता सकते हैं कि असल मामला क्या है?"

"दोनों ही खतरनाक हैं और अपना मुंह नहीं खोलेंगे।" गोपाल बोला।

तभी विजय मल्होत्रा कह उठा–

"मैं एक आदमी के बारे में बता सकता हूं, जो शायद जाफर शरीफ को जानता है।" विजय मल्होत्रा बोला।

"कौन?" विजय मल्होत्रा पर नजरें टिक गईं मोना चौधरी की।

"इस मामले में मेरा नाम नहीं आना चाहिये।"

"नहीं आयेगा।"

"मंगोलपुरी के चार ब्लॉक में रहमत बिला नाम का

कबाड़ी है। कबाड़ के नाम पर कारें, ट्रक, टैम्पो जैसी चीजें खरीदता है। काफी बड़ी जगह में उसने गोदाम बना रखा है। वर्कशॉप भी है, वाहन खरीद कर उन्हें ठीक करके भी बेचता है।''

''ये कबाड़ी रहमत बिला क्या जाफर शरीफ को पक्का जानता है?'' मोना चौधरी ने पूछा।

''मेरे ख्याल में जानता है। महीना भर पहले अखबारों में इस बात का शोर उठा था कि जाफर शरीफ को मंगोलपुरी में इसकी वर्कशॉप में देखा गया है। देखने वाला अखबार का एक रिपोर्टर था, जो कि उस वक्त अपनी ससुराल में मंगोलपुरी में मौजूद था। उसने देखा था जाफर शरीफ जैसे आतंकवादी को। बात खुलते ही रहमत बिला के गैराज पर अखबार वाले, टी.वी. वाले और पुलिस वाले भी पहुंच गये।''

''फिर?''

''तीन-चार दिन खासी पड़ताल रही रहमत बिला की। फिर पुलिस ने रहमत बिला को क्लीन चिट दे दी। मामला आया-गया हो गया। लोग इस मामले को भूल गये।'' विजय मल्होत्रा ने गहरी सांस ली—''इस घटना के बीस-बाइस दिन बाद अखबार का वो रिपोर्टर, जिसने जाफर शरीफ को रहमत बिला के गैराज में देखा था, एक ट्रक के नीचे आकर मर गया या फिर यूं कहो कि मारा गया।''

''ट्रक वाला नहीं पकड़ा गया?'' देविका बोली।

''नहीं। वो तो उसे कुचल कर ट्रक सहित भाग गया।''

''तुम कहना चाहते हो कि उसकी ज़ान रहमत बिला के इशारे पर ली गई।'' मोना चौधरी बोली।

विजय मल्होत्रा ने सहमति में सिर हिलाया। बोला—

''हां। तब उसकी मौत पर अखबार वालों ने रहमत बिला पर उंगलियां उठाई थीं। दो-तीन दिन शोर पड़ा। पुलिस ने रहमत बिला से थाने में पूछताछ की और उसे क्लीन चिट दे दी कि इस मामले से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि रहमत बिला ने ही उस अखबार वाले

को मारा। और अखबार वाले ने उसके गैराज पर जाफर शरीफ को पक्का देखा था।''

कुछ पलों के लिये वहां चुप्पी रही।

''रहमत बिला से बात की जा सकती है?'' रोमी बोला।

''हां। मिला जा सकता है उससे।'' मोना चौधरी ने सिर हिलाया।

विजय मल्होत्रा सबके चेहरों को देखता कह उठा—''मैं जाऊं?''

''हां। तुम जा सकते हो।'' मोना चौधरी बोली—''अगर कोई काम की बात हो तो बताना।''

''मुझे तो अब कोई दूसरा धन्धा देखना पड़ेगा। प्रिया से अच्छी कमाई हो जाती थी मुझे।''

''खैर मनाओ कि तुम बच गये।'' मोना चौधरी ने तीखे स्वर में कहा—''प्रिया क्या काम करती थी, ये तुम भी जान चुके हो। अगर वो पकड़ी जाती तो बचते तुम भी नहीं।''

''ऐसी बातें मत करो। डर लगता है। मैं जाऊं...तुम्हें असिस्टेंट की जरूरत तो नहीं? है तो मुझे नौकरी पर रख लो।''

''जब जरूरत होगी, तुम्हें फोन कर दूंगी।''

विजय मल्होत्रा चला गया।

''तुम लोग आज के दिन में पूरे आफिस की तलाशी नहीं ले सके?'' मोना चौधरी ने कहा।

''आधा दिन तो रंजन जोशी ने खराब कर दिया।''

''अभी रात होने में बहुत वक्त है। अच्छी तरह तलाशी लो यहां की। काले चमड़े की फाइल या डायरी मिले तो उस पर खास ध्यान रखना।''

वो तीनों पुनः काम पर लग गये।

मोना चौधरी का दिमाग तेजी से दौड़ रहा था।

होटल ब्लैकहोल का किस्सा।

रास्ते में उसे रोका जाना और धमकी देना कि प्रिया के आफिस से पीछे हो जाओ। रंजन जोशी के मुताबिक वो

उसके ही आदमी थे।

फिर विजय मल्होत्रा द्वारा लिफाफा भेजा जाना। जिसमें नेवी के सीक्रेट्स थे।

उसके बाद रंजन जोशी का अपने आदमियों के साथ आना कि काले चमड़े वाली फाइल को हासिल कर सके। कोई भी बात स्पष्ट नहीं थी, लेकिन बहुत कुछ हो रहा था, जबकि आज प्रिया की आई डिटेक्टिव एजेन्सी में उसका पहला दिन था। मोना चौधरी को पूरा विश्वास था कि अभी और भी बहुत कुछ होगा।

प्रिया के आफिस से अभी तक उस तस्वीर के अलावा खास कुछ नहीं मिला था, जिसमें वो रंजन जोशी और जाफर शरीफ के साथ दिखाई दे रही थी।

मोना चौधरी ने वॉल क्लॉक में वक्त देखा।

शाम के साढ़े छः बजने जा रहे थे।

[illegible] चौधरी ने सामने नजर आ रहे गोपाल से पू[illegible]

[illegible] रहती थी, उसके घर के बारे में कुछ जानते हो[illegible]

''नहीं।'' गोपाल ने कहा, फिर देविका और रोमी से ये बात पूछी।

उन्होंने भी इन्कार किया।

मोना चौधरी ने अपना मोबाइल फोन उठाया और विजय मल्होत्रा के मोबाइल के नम्बर मिलाये।

''हैलो।'' विजय मल्होत्रा की आवाज कानों में पड़ी—''वापस आ जाऊं क्या?''

''क्यों?''

''शायद तुम मुझे नौकरी पर रखने वाली हो?''

''नहीं। मैं प्रिया के घर का पता पूछना चाहती हूं।''

''समझा...उसका छोटा-सा फ्लैट जनकपुरी में है। चैक पोस्ट के पास 9 नम्बर फ्लैट।''

''मेहरबानी।''

"किसी और को नौकरी पर मत रख लेना। मुझे ही रखना।"

मोना चौधरी ने फोन बन्द करके टेबल पर रखा।

रोमी, देविका और गोपाल आफिस का जर्रा-जर्रा तलाशने में लगे थे। हर फाइल, हर अलमारी को अच्छी तरह देख रहे थे। परन्तु कोई भी काम की चीज हासिल न हो रही थी।

उस समय सात बजे होंगे, जब प्रिया वाला मोबाइल फोन बजा।

"हैलो।"

"कहां हो, दो दिन से तुमने फोन भी नहीं कियां?" उधर से मर्दाना आवाज सुनाई दी।

मोना चौधरी समझ गई कि ये प्रिय[illegible] [illegible]ास है।

"व्यस्त थी।" मोना चौधरी ने [illegible]।

"हैरानी है कि तुम मेरे लिये भी [illegible] अब तो फुर्सत में हो?"

"आफिस में हूं। अभी भी काम है।"

"काम को छोड़ो। टिप-टॉप पहुंचो। वहीं पर डिनर... ।"

"नहीं। मैं नहीं आ सकूंगी।" मोना चौधरी खांसी कि कहीं बात करने वाला ये न महसूस कर ले कि वो प्रिया से नहीं, किसी और से बात कर रहा है।

"तुम्हारी आवाज को क्या हुआ?"

"गला खराब है।"

"ओह, मैं आता हूं, तुम आफिस में ही हो ना?"

"हां।"

दूसरी तरफ से फोन रख दिया गया।

मोना चौधरी ने भी फोन बन्द किया। उसके होंठ सिकुड़े हुए थे।

"कौन था?" देविका ने पूछा।

"प्रिया का कोई खास लगता है। आशिक जैसा खास।"

"क्या बात हुई?"

"आ रहा है।" मोना चौधरी ने सोच भरे स्वर में कहा—"मेरे ख्याल में ये मुकेश वालिया होगा।"

"मुकेश वालिया?"

"हां, मिस्टर पहाड़िया ने बताया था कि मुकेश वालिया प्रिया के पास लम्बे समय तक बैठा रहता था। प्रिया के इससे अच्छे सम्बन्ध हैं। परन्तु ये सम्बन्ध क्यों हैं, बिजनेस है उनके बीच या दोस्ती है, नहीं पता।"

"आ रहा है तो पता चल ही जायेगा।"

"हमें ये ही सोचकर चलना है कि प्रिया के साथ इसके बिजनेस के सम्बन्ध हैं।" मोना चौधरी ने कहा।

"जरूरी तो नहीं?" देविका बोली।

जवाब में मोना चौधरी ने कुछ नहीं कहा। सोच के भाव चेहरे पर दिखाई देते रहे।

❑❑❑

❑❑❑

तब आठ बजने वाले थे, जब मुकेश वालिया वहां आया।

नये चेहरों को देखकर वो हैरान हुआ।

"तुम लोग कौन हो?" दरवाजे से भीतर प्रवेश करते ही उसने गोपाल और रोमी को देखा तो कह उठा।

"हम यहीं काम करते हैं।" गोपाल बोला।

"कब से?"

"आज से ही।"

"लगता है, प्रिया ने स्टाफ बदल लिया है। कहां है प्रिया?"

"भीतर है। आइये मैं आपको... ।"

"मैं चला जाऊंगा।" कहने के साथ ही मुकेश वालिया भीतरी दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

दरवाजे से भीतर प्रवेश करते ही वो ठिठका।

टेबल पार कुर्सी पर मोना चौधरी को बैठे देखकर

अचकचा उठा, फिर एक तरफ काम में व्यस्त देविका को देखा। उसके चेहरे पर उलझन ही उलझन थी।

"आओ।" मोना चौधरी मुस्कुराई—"रुक क्यों गये?"

मुकेश वालिया की निगाह पुनः आगे-पीछे, हर तरफ घूमी।

"कौन हो तुम?" मुकेश वालिया ने मोना चौधरी से पूछा।

"मोना...।"

"प्रिया कहां है?"

"वो यहां नहीं है।"

"यहीं होनी चाहिये। मेरी उससे फोन पर बात हुई थी।"

"तुमने मुझसे ही फोन पर बात की थी। मेरा गला खराब था।" मोना चौधरी मुस्कुराई।

मुकेश वालिया ने गहरी सांस ली।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"मुकेश वालिया।" वो आगे आया—"प्रिया कहां है, और ये लोग यहां क्या कर रहे हैं?"

"बैठ जाओ। क्या खड़े-खड़े ही बातें करोगे?"

मुकेश वालिया उलझन में फंसा कुर्सी पर आ बैठा। मोना चौधरी पैनी निगाहों से उसके चेहरे का निरीक्षण कर रही थी।

"कहां है प्रिया?"

"उसकी हत्या कर दी गई है।"

मुकेश वालिया चिहुंका।

"हत्या...कब...?"

"परसों रात...किसी ने।"

"किसने?"

"अभी ये पता नहीं चल सका।"

वो अजीब-सी नजरों से मोना चौधरी को देखने लगा, फिर बोला—

"प्रिया को दीवान चन्द ने मारा होगा।"

"दीवान चन्द?"

"हां। प्रिया ने सप्ताह भर पहले कहा था कि दीवान चन्द उसकी जान ले सकता है। दीवान चन्द से उसे जान का खतरा पहले से ही था। मुझे पूरा यकीन है कि दीवान चन्द ने ही प्रिया की जान ली है।" मुकेश वालिया तेज स्वर में कह उठा।

"दीवान चन्द है कौन?"

"करोल बाग में एंटीक वस्तुओं की दुकान है उसकी। लेकिन वो दो नम्बर के काम करता है।"

"दो नम्बर के काम?"

"हां, उसके सम्बन्ध कई चोरों के गिरोह से हैं। वो गिरोह मन्दिरों से पुरानी मूर्तियां चोरी करके दीवान चन्द को बेचते हैं और दीवान चन्द उन मूर्तियों को तगड़ी रकम पर विदेशियों के हाथों बेचता है। ठीक रकम मिले तो मूर्तियों को विदेश तक पहुंचा देता है।"

"तुम्हें कैसे मालूम?"

"प्रिया ने बताया था।"

"प्रिया का दीवान चन्द से क्या वास्ता था?"

"मालूम नहीं। ये बात मैंने प्रिया से पूछी थी, लेकिन उसने जवाब नहीं दिया था। इतना ही कहा कि काम के सिलसिले में वो दीवान चन्द से मिली थी, परन्तु उनमें कोई झगड़ा हो...।" कहते-कहते एकाएक ठिठका मुकेश वालिया, बोला—"तुम कौन हो? मैंने पहले तुम्हें कभी नहीं देखा। तुम्हारा नाम भी प्रिया के मुंह से नहीं सुना कभी।"

"प्रिया का ये सारा बिजनेस मैंने खरीद लिया है।"

"कब?"

"कल।"

"जबकि परसों उसकी हत्या हुई।"

"हां।"

"बहुत जल्दी दिखाई, ये बिजनेस खरीदने में। मेरे ख्याल में ये काम कोई खास फायदेमंद नहीं था।"

"अभी तो देख रही हूं कि ये काम फायदेमंद है या नहीं।"

"किससे खरीदा ये बिजनेस?"

"प्रिया के पति प्रदीप गोस्वामी से।"

"साला हरामी है वो!"

"जानते हो उसे?"

"नहीं, प्रिया बताती रहती थी उसके बारे में। प्रिया की मौत की बात सुनकर बहुत दुःख हुआ।"

"तुम्हारा उससे क्या सम्बन्ध था?"

"दोस्त थी मेरी। हम खाली वक्त साथ बिताया करते थे।"

"काले चमड़े वाली फाइल सम्भाल रखी है, जो प्रिया ने तुम्हें रखने को दी थी?" मोना चौधरी ने एकाएक कहा।

"काले चमड़े वाली फाइल...ऐसी तो कोई फाइल मुझे नहीं दी।"

"कोई पैकेट, कोई चीज रखने को दिया हो?"

"नहीं, लेकिन तुम क्यों पूछ रही हो?"

"यूं ही।" मोना चौधरी ने टेबल के ड्रॉज से तस्वीर निकाली और उसके सामने रखी—"इन्हें जानते हो?"

मुकेश वालिया ने तस्वीर पर नजर मारकर कहा—

"मैंने ये तस्वीर पहले देख रखी है और इन साहब से यहीं मिला था।" उसने जाफर शरीफ की तस्वीर पर उंगली रखी।

मोना चौधरी चौंकी।

"इस...इस आदमी से तुम यहीं मिले थे?" मोना चौधरी बोली।

"हां। इस आफिस में। मैं जब यहां आया तो प्रिया इसके साथ बैठी बातें कर रही थी। तब प्रिया ने मुझे कहा था कि ये उसके अंकल हैं। मैंने इसके साथ हाथ मिलाया था। क्यों?"

"अपने अंकल के बारे में प्रिया ने कोई और बात बताई?"

"नहीं। मेरे आने के कुछ देर बाद ही अंकल यहां से चले गये। मेरी मौजूदगी में दोनों के बीच कोई खास बातचीत नहीं हुई। लेकिन इस बारे में तुम इतना क्यों पूछ रही हो?"

मोना चौधरी ने तस्वीर लेकर ड्रॉज में वापस रखते हुए कहा।

"ये आदमी प्रिया का अंकल नहीं है, बल्कि खूंखार आतंकवादी जाफर शरीफ है।"

मुकेश वालिया चौंका।

"क्या कह रही हो?" उसके होठों से अजीब-सा स्वर निकला।

"सही कह रही हूं।"

"प्रिया ने मुझे झूठ बोला कि ये उसके अंकल हैं?" वो अविश्वास भरे स्वर में बोला।

"हां।"

"हैरानी है।"

"प्रिया का जाफर शरीफ से क्या वास्ता हो सकता है मुकेश वालिया?" मोना चौधरी ने पूछा।

"मुझे क्या पता?" उसने गहरी सांस ली।

"प्रिया करती क्या थी?"

"प्राइवेट जासूसी का काम करती थी।"

"असल में क्या करती थी?"

"असल में भी वो प्राइवेट जासूस ही थी।" मुकेश वालिया की निगाह मोना चौधरी पर टिकी—"तुम कहना क्या चाहती हो?"

"वो कोई और काम करती थी।"

"क्या?"

"प्राइवेट जासूसी के धन्धे की आड़ में वो देश के महत्वपूर्ण राज हासिल करके, उन्हें बेचती थी।"

मुकेश वालिया मोना चौधरी को देखता रहा।

"सुना तुमने....।" मोना चौधरी ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा।

"हां।" एकाएक उसने गहरी सांस ली।

"तुम ये बात जानते थे?"

"शक था मुझे कि वो कुछ गलत काम करती है।"

"क्यों शक हुआ?"

"वो मेरे पास होती तो किसी का फोन आने पर अजीब से जवाब देती थी फोन पर। ताकि मैं न समझ सकूं। मेरी मौजूदगी में आने वाले फोनों को वो अक्सर 'काट' दिया करती थी। या फिर मुझसे दूर जाकर, बहुत देर तक बात करती थी। मेरे साथ जाकर बड़े-बड़े होटलों या पार्कों में कई तरह के लोगों से मिलती और मुझे दूर ही रखती थी। मैंने कई बार उसे अंजाने लोगों के साथ पैकेटों...कागजों का लेन-देन करते देखा था। उसके पास हर वक्त ढेरों नोट रहते। कुल मिलाकर मुझे उस पर शक होने लगा कि वो गलत काम करती है।" मुकेश वालिया गम्भीर था।

"तुम प्रिया के क्या लगते हो?"

"कुछ नहीं। दोस्त हूं। दो साल से हमारी दोस्ती चल रही है। अच्छी कट रही थी।" मुकेश वालिया ने गम्भीर स्वर में कहा—"उसे मर्द की जरूरत रहती थी और मुझे औरत की। सप्ताह में दो रातें...शामें हम इकट्ठे ही बिताया करते थे। वो अच्छी लड़की थी। प्यार करना आता था उसे।"

"उसने कब कहा कि दीवान चन्द से उसे खतरा है?"

"आज से करीब पांच दिन पहले कहा था, लेकिन वो चिन्तित नहीं थी। हौंसले वाली थी वो।"

"तुम क्या करते हो?"

"गारमेंट का बिजनेस है। एक्सपोर्ट करता हूं कपड़े। आजकल धन्धा मंदा है।"

"प्रिया से आखिरी बार कब मिले?"

"पांच दिन पहले ही। लेकिन प्रिया के बारे में तुम इतनी पूछताछ क्यों कर रही हो?"

"उसके हत्यारे को ढूंढना है।"

"क्यों?" मुकेश वालिया के माथे पर बल पड़े।

"क्योंकि उसका पति प्रदीप गोस्वामी चाहता है।"

"ओह, वो क्या यहां आया था?"

"हां। आज ही आया था।"

"हैरानी है। जीते जी तो प्रिया को पूछा नहीं और अब उसकी मौत पर दर्द होने लगा।" मुकेश वालिया मुस्कुरा पड़ा—"अच्छी बात है। ढूंढो प्रिया के हत्यारे को, मुझे भी बता देना कि किस हरामी ने प्रिया को मारा।"

"दीवान चन्द के बारे में कोई और बात पता है?"

"नहीं।" मुकेश वालिया ने गर्दन हिलाई—"प्रिया ने मुझे इतना ही बताया था।"

"प्रिया ने अपने धन्धे के बारे में कभी कुछ और भी बताया होगा।"

"नहीं। वो अपने धन्धे की बात मुझसे नहीं करती थी। मेरे साथ सिर्फ मौज-मस्ती ही किया करती थी।"

"प्रिया ने कभी कोई और बात तुमसे की हो?"

"नहीं.... ।"

उनके बीच कुछ पल चुप्पी रही। फिर मुकेश वालिया गहरी सांस लेकर उठता हुआ बोला—

"जो भी हो, प्रिया की मौत का मुझे बहुत दुःख हुआ। मैं तो उसके साथ शाम बिताने आया था...और वो मर चुकी है।"

मोना चौधरी उसे देखती रही।

"मैं चलता हूं।" मुकेश वालिया बोला।

"अपना पता-ठिकाना बता दो।"

मुकेश वालिया ने अपना पता और फोन नम्बर बताया, फिर चला गया।

मोना चौधरी ने देविका को देखा।

"लगता तो नहीं कि ये गड़बड़ आदमी है।" देविका ने कहा।

"एक बार मिलने से पता नहीं चलेगा।" मोना चौधरी बोली—"जाने कौन सच्चा है और कौन झूठा!"

"तुम्हारे पास कई रास्ते हैं अब काम करने के।"

"हां।" मोना चौधरी सोच भरे स्वर में बोली—"रहमत बिला की कबाड़ी की दुकान...गैराज पर जाना है कि पता चल सके कि जाफर शरीफ के साथ उसका क्या रिश्ता है। प्रिया का घर चैक करना है कि वहां कुछ अपने काम का मिले या फिर चमड़े की जिल्द वाली फाइल मिले। साथ ही करोल बाग के दुकानदार एंटीक चीजें बेचने वाले दीवानचन्द के पास जाना है और टटोलना है कि प्रिया की हत्या के साथ उसका तो कोई वास्ता नहीं।"

"और ये सब एक ही दिन में सामने आया है।" देविका मुस्कुराई।

मोना चौधरी ने सोच भरे ढंग से सिर हिलाया।

"मुझे तो लगता है कि जैसे ये सब मेरे ही यहां आने के इन्तजार में थे।" मोना चौधरी बरबस ही मुस्कुरा पड़ी।

"इसका जवाब तो प्रिया ही दे सकती है कि उसने क्या मामले फैला रखे हैं।" देविका बोली।

"ये भी स्पष्ट है कि मिस्टर पहाड़िया ने मुझे सब कुछ नहीं बताया और प्रिया की जगह पर बिठा दिया।"

"इन बातों के बारे में मैं कुछ नहीं कहूंगी। क्योंकि मैं ज्यादा जानती नहीं।"

बहरहाल उनकी छानबीन चलती रही।

पूरा आफिस खंगाल डाला गया।

परन्तु मतलब का कुछ भी नहीं मिला।

वे जब आफिस बन्द करके चले तो रात के दस बज रहे थे। रोमी और गोपाल सुबह वक्त पर पहुंचने को कहकर अपने रास्ते पर चले गये। देविका और मोना चौधरी कार में बैठकर घर की तरफ चल पड़े। कार देविका ही चला रही थी।

तभी मोबाइल फोन बजा। मोना चौधरी ने बात की।

"आफिस का पहला दिन कैसा रहा?" मिस्टर पहाड़िया की आवाज कानों में पड़ी।

"खास बुरा नहीं रहा, लेकिन आपने प्रिया के मामले की सारी बातें मुझे नहीं बताईं।" मोना चौधरी ने कहा—"आप ने मुझे सिर्फ यही बताया कि शक के आधार पर उस पर नजर रखी जा रही थी कि वो देश के रहस्य हासिल करके किसी को बेचती है...कि उसका कत्ल हो गया, परन्तु... ।"

"तुम्हें आगे बढ़ने का रास्ता मिला?"

"हां।"

"तो मुझे भूलकर तुम आगे बढ़ो। देखो कि इस मामले में क्या है?"

"यानि कि मैं आपसे सवाल न पूछूं।"

"ऐसा ही समझ लो।"

"प्रिया का सम्बन्ध जाफर शरीफ जैसे आतंकवादी से था। वो उसे अच्छी तरह जानती थी।"

"मैंने ये सारा मामला तुम्हारे हवाले किया है बेटी। तुम सब कुछ जानो, मामले की तह तक पहुंचो और जो ठीक लगे, वो करो। इस काम में तुम अकेली नहीं हो। मेरे कई एजेन्ट तुम्हारे साथ हैं। यानि कि तुम जहां भी रहोगी, मेरे एजेन्टों से घिरी सुरक्षित रहोगी।"

"ऐसा क्यों?"

"मामला खतरनाक है।" मिस्टर पहाड़िया का स्वर गम्भीर हो गया—"यूं समझो कि मेरे एजेन्ट तो इस मामले को पहले से ही चोरी-छिपे देख रहे हैं, हमें कोई ऐसा चाहिये था कि जिसके कन्धे पर बन्दूक रखकर उसे खुले में भेज सकें कि दुश्मनों की निगाह उस पर टिक जाये। इसलिये तुम्हें खुले मैदान में भेज दिया। अब धीरे-धीरे सबकी निगाह तुम पर जा रही हैं, दुश्मन अब भटकना शुरू हो जायेगा।"

"लेकिन करना क्या है मुझे... ?"

"जो रास्ता मिले, आगे बढ़ो। प्रिया क्या करती थी,

उसका सम्बन्ध किससे था, इसी मुद्दे पर काम करो। जो हम चाहते हैं, वो काम खुद-ब-खुद ही पूरा होता चला जायेगा।''

मोना चौधरी समझ गई कि मिस्टर पहाड़िया उससे कुछ छिपा रहे हैं।

''क्या सोच रही हो बेटी?'' मिस्टर पहाड़िया की आवाज कानों में पड़ी।

''ये ही कि आप स्पष्ट बात नहीं कर रहे... ।'' मोना चौधरी ने कहा।

''इससे ज्यादा अभी तुम्हें कुछ नहीं कह सकता।''

''मैं उलझन में हूं कि... ।''

''काम करती रहो, उलझन खुद ही दूर होती चली जायेगी।'' मिस्टर पहाड़िया ने कहा और फोन बन्द कर दिया था।

मोना चौधरी गहरी सांस लेकर रह गई।

''क्या हुआ?''

''मिस्टर पहाड़िया अब जवान होते जा रहे हैं।''

''क्यों?''

''बातें छिपाने लगे हैं।''

देविका हौले से हंस पड़ी।

तभी फोन बजा।

''हैलो।'' मोना चौधरी ने तुरन्त बात की।

''रानी... ।'' उधर से रानी की आवाज आई—''कार को सड़क किनारे रोक लो, मैं तुम्हारे पीछे हूं।''

''ठीक है।'' मोना चौधरी ने फोन बन्द करके देविका से कहा—''कार रोक लो। पीछे रानी है।''

❑❑❑

❑❑❑

देविका ने कार रोकी तो उसी पल एक कार पीछे से आई और उनकी कार के आगे आ रुकी।

दोनों की निगाह उस पर कार टिक गई। देखते-ही-देखते कार का ड्राइविंग डोर खुला और रानी बाहर निकली।

उनकी कार के पास पहुंची।

''पीछे बैठ जाओ। आराम से बातें हो जायेंगी।'' मोना चौधरी ने कहा।

रानी पीछे वाली सीट पर बैठी और दरवाजा बन्द कर लिया।

''मैंने तुम्हें दिन में तब देखा था, जब गोपाल मेरे साथ था और कार रोकी गई थी मेरी।''

''हां। मैं तुम लोगों पर नजर रख रही थी। तब उन लोगों के पीछे गई थी मैं।''

''पता-ठिकाना देखा उनका?''

''हां। अशोक नगर के बाइस नम्बर मकान में वे पहुंचे। बाहर प्रॉपर्टी डीलर का बोर्ड लगा है। वो जगह ही उनका ठिकाना है।'' रानी ने शांत स्वर में कहा—''मैंने काले चश्मा वाले का पीछा किया, जो तुम्हारे आफिस से निकला था।''

''क्या रहा?''

''उसका नाम रंजन जोशी है। वो गुलाबी बाग के 4 नम्बर फ्लैट में रहता है। यहां से वो सीधा वहीं गया था। उसके तीनों साथी रास्ते में से ही अलग हो गये थे।''

''गुलाबी बाग में वो अकेला रहता है?''

''उस फ्लैट का दरवाजा एक युवती ने खोला था।''

''तुमने मालूम किया कि वो युवती कौन है?'' मोना चौधरी ने पूछा।

''मैंने सोचा ये काम तुम कर लोगी।''

मोना चौधरी कुछ चुप रह कर बोली—

''क्या तुम सुबह से मेरे पीछे हो?''

''हां। सुबह तुम होटल ब्लैकहोल गई थीं।''

''अन्दर गयी थीं?''

''बाहर ही थी। भीतर नहीं गई।''

''तीन-चार आदमियों को एक साथ बाहर निकलते देखा होगा?''

''हां, लेकिन तब मुझे नहीं मालूम था कि वो भीतर क्या

करके आये हैं।"

"अब कैसे पता चला?"

"हमारे एक एजेन्ट ने कामनी से पूछताछ की तो पता चला।"

"कोई और खास बात?"

"तुम्हारे लिये खतरा बढ़ रहा है।"

"जानती हूं।"

"रंजन जोशी आफिस में क्या तलाश कर रहा था? वो काफी देर तुम्हारे पास रहा।"

"उसे काले चमड़े वाली फाइल की तलाश थी। उसी को ढूंढने में उसके आदमियों ने सारा दिन बिता दिया। उसका कहना है कि वो फाइल उसने प्रिया को रखने को दी थी।"

"मुझे रंजन जोशी खतरनाक लगा है। उससे तुम सम्भलकर रहना।" बाहर निकलने के लिये रानी ने दरवाजा खोला।

"जिनका तुमने दिन में पीछा किया, वो रंजन जोशी के ही आदमी थे।"

"ये बात तुम्हें कैसे पता चली?"

"रंजन जोशी ने कहा।"

"क्या चाहते थे वो?"

"उनका कहना था कि मैं प्रिया का लिया आफिस बन्द कर दूं। इस रास्ते से हट जाने की धमकी दी थी मुझे।"

रानी ने कुछ नहीं कहा।

"सब बातों में उलझन ही उलझन है। क्या तुम मामले को स्पष्ट करोगी?"

रानी कार से बाहर निकलते हुए बोली—

"ऐसे ही लगी रहो। सब समझ में आ जायेगा। मैं भी कुछ खास नहीं जानती।"

"मामले का पता होता तो काम करने में आसानी होती।"

"इतना ही पता है कि प्रिया देश के राज अपने दम

पर हासिल करके, देश के दुश्मनों को बेचा करती थी। इस सारे मामलों में कौन-कौन लोग शामिल हैं, उनका पता लगाकर दुश्मनों की इस चेन को तोड़ना है।"

बाहर निकलकर रानी ने कार का दरवाजा बन्द किया।

"मुझे ये मेकअप उतारना है।"

"क्यों?"

"इस काम के लिये मुझे आफिस से बाहर निकलना होगा। तब कई लोग मुझे फौरन पहचान जायेंगे कि मैं आई डिटेक्टिव वाली हूं। ऐसे में मैं अपने असली चेहरे के साथ उनके सामने जाना चाहती हूं, ताकि जरूरत पड़े तो मेकअप वाले चेहरे में आई डिटेक्टिव में बैठकर खुद को छिपा सकूं।"

"उतार लेना मेकअप। मैंने तुम्हें बता दिया था कि कैसे उतारना है।"

"समस्या ये है कि जब मुझे मेकअप कराना होगा तो कई घण्टे खराब करने पड़ेंगे। तब जाने मेरे पास इतना वक्त होगा कि नहीं। उस स्थिति में तुम्हें भी तलाश करना पड़ेगा।"

"मैं एक मास्क बनाकर सब ठीक कर दूंगी।"

"मास्क?"

"हां। इसी चेहरे का रबड़ की झिल्ली का पतला-सा मास्क। वो जब तुम अपने चेहरे पर चढ़ा लोगी तो ठीक इसी तरह लगोगी।" रानी ने कहा।

"ये ठीक रहेगा। मास्क बनाकर तुम उसे सोभी तक पहुंचा देना। कब तक होगा ये काम?"

"कल शाम तक...।" रानी ने कहा और अपनी कार की तरफ बढ़ गई।

दोनों की निगाह रानी पर टिकी रही।

रानी कार सहित आगे बढ़ गई।

"तुम कितना जानती हो रानी को?" मोना चौधरी ने देविका से पूछा।

कार स्टार्ट करते हुए देविका ने कहा।

"जरा भी नहीं। इस काम को शुरू करने से पहले हम

सबको दस मिनट के लिये एक-दूसरे के सामने किया गया कि हम एक-दूसरे को पहचान लें कि हम एक ही मिशन पर काम कर रहे हैं।"

"रोमी, गोपाल भी थे तब?"

"हां। इनके अलावा और लोग भी थे।" देविका ने कार स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी।

"और लोग? वो क्या मिले?"

"नहीं... ।"

"इसका मतलब वो भी इसी मिशन पर काम कर रहे हैं, लेकिन सामने नहीं आये।"

देविका ने कुछ नहीं कहा।

"इस मिशन का कोड वर्ड क्या है...जानती हो?"

"हुक्म मेरे आका।"

मोना चौधरी सिर हिलाकर रह गई।

कार तेजी से दौड़े जा रही थी।

"अगर ये काम पहले ही पुलिस के हवाले कर दिया होता तो पुलिस ने कब का प्रिया को गिरफ्तार कर लेना था। वो मरने से बच जाती और पूछताछ भी हो जाती।"

"इन बातों का वक्त निकल चुका है। आगे जो नजर आ रहा है, उसके बारे में सोचो।"

"हम किधर जा रहे हैं?"

"घर।" देविका ने मोना चौधरी पर नजर मारी—"मैंने सुना है कि तुम बहुत खतरनाक हो।"

"किससे सुना है?"

"मिस्टर पहाड़िया से।"

"वो बूढ़े होते जा रहे हैं। दिमाग सठिया गया है। क्या मैं तुम्हें किसी तरफ से खतरनाक लगी?"

"हां।"

"जरा मुझे भी बताओ कि मैं कैसे खतरनाक लगी?" मोना चौधरी मुस्कुराई।

"आज दिन में कई तरह के हालात तुम्हारे सामने आये,

लेकिन मैंने तुम्हें विचलित होते नहीं देखा। ये ही बात तुम्हारे खतरनाक होने की तरफ इशारा करती हैं।" देविका ने गम्भीर स्वर में कहा।

मोना चौधरी ने कुछ नहीं कहा।

देविका ने उस पर नजर मारी।

मोना चौधरी ने पुश्त से सिर टिकाकर आंखें बन्द कर ली थीं।

❑❑❑

❑❑❑

वे उस घर में पहुंचे।

राधिका ने खाना तैयार कर रखा था। मोना चौधरी सबसे पहले नहाई, फिर जींस की पैन्ट और टॉप पहनकर बाल संवारे, ये देखकर सुरेन्द्र लाल ने पूछा—

"कहीं जा रही हो?"

"प्रिया के घर की तलाशी लेनी है। शायद वहां कुछ मिले।" मोना चौधरी ने कहा।

"इस वक्त जाओगी?"

"ऐसे कामों का वक्त रात को ही होता है।"

"मैं तुम्हारे साथ चलूंगी।" पास आती देविका कह उठी।

"नहीं। मैं अकेले ही जाऊंगी।" मोना चौधरी ने कहा।

"तुम्हारा अकेले जाना ठीक नहीं। दुश्मन बहुत खतरनाक है और उसकी अभी पहचान भी नहीं हुई।"

"मेरे बारे में फिक्र मत करें।"

उसके बाद चारों ने खाना खाया।

खाने के दौरान राधिका ने कहा—

"अगर तुम साथ में देविका को ले जाओ तो क्या बुरा है?"

"प्लीज, मेरी वजह से तुम्हें परेशानी नहीं होगी मोना चौधरी।" देविका कह उठी।

"ठीक है।" मोना चौधरी ने सिर हिलाया—"चलना

तुम भी साथ में।"

□□□

□□□

देविका ने सड़क के किनारे बने फ्लैटों के सामने कार रोक दी।

"इन्हीं फ्लैटों में 104 नम्बर फ्लैट प्रिया का है।" देविका बोली।

"मेरे ख्याल में वहां हमें पहले आना चाहिये था।" मोना चौधरी कार से निकलती कह उठी।

"क्यों?" देविका भी बाहर निकली।

"जो लोग प्रिया के आफिस तक किसी चीज की तलाश में पहुंच सकते हैं, वे प्रिया के फ्लैट पर भी अवश्य आये होंगे।" मोना चौधरी आगे बढ़ती कह उठी—"आओ।"

दोनों आगे बढ़ गईं।

104 नम्बर फ्लैट ढूंढने में उन्हें ज्यादा परेशानी न हुई। पहली मंजिल पर 104 नम्बर फ्लैट नजर आया। एक फ्लैट का दरवाजा उसके सामने था।

एक जीने पर दो फ्लैट बने हुए थे।

दरवाजे पर एक और जालीदार लोहे का दरवाजा लगा हुआ था। जिसमें कि मजबूत ताला था।

दरवाजे को खींच कर देखा। जो कि ताले में मजबूती से फंसा हुआ था।

"इस ताले को खोल पाना हमारे लिये सम्भव नहीं... ।" मोना चौधरी ने कहा।

"किसी खिड़की से भीतर जाने का रास्ता तलाश करते हैं।" देविका ने इधर-उधर देखा।

उस जीने की छत पर कम रोशनी का बल्ब जल रहा था। जिसमें वे थोड़ा-बहुत देख पा रहे थे।

तभी सामने के फ्लैट का दरवाजा खुला।

तीस बरस का युवक दिखा। हाथ में व्हिस्की का गिलास थाम रखा था।

उन दोनों को देखते ही बोला—

"हाय... ।"

"हाय... ।" मोना चौधरी मुस्कुराई।

"ओह, सॉरी। मैंने सोचा प्रिया आई है। तुम दोनों में तो कोई भी प्रिया नहीं।"

"प्रिया ने ही भेजा है हमें, लेकिन चाबी लेना भूल गये। अब जाने वो कब आती है या कल आती है।"

"चाबी? चाबी की फिक्र मत करो। मेरे पास है, ले लो।"

"तुम्हारे पास?"

"हां। प्रिया अपनी एक चाबी मेरे पास ही रखती है। उसका दोस्त या कोई पहचान वाला मेरे से चाबी ले लेता है। मैं अभी चाबी देता हूं।" कहकर वो भीतर चला गया।

"काम बन गया।" देविका धीमे से कह उठी।

मोना चौधरी आगे बढ़ी और उस युवक के फ्लैट के दरवाजे पर पहुंची। भीतर झांका।

ये छोटा-सा, साधारण-सा कमरा था।

तभी युवक दूसरे कमरे से निकला। पास पहुंचा। उसके एक हाथ में अभी भी व्हिस्की का गिलास था और दूसरे हाथ में दबी चाबी मोना चौधरी की तरफ बढ़ाई।

"लो, प्रिया के आने से पहले जाओ तो चाबी देती जाना।"

मोना चौधरी ने चाबी लेकर देविका को दी।

"तुम खोलो दरवाजा, मैं अभी आती हूं।"

देविका चाबी ले गई।

मोना चौधरी ने कदम बढ़ाया और कमरे में आ गई।

"अकेले हो?"

"हां।"

"मुझे नहीं पिलाओगे?"

"क्यों नहीं... ।" उसकी निगाह मोना चौधरी के वक्षों पर गई—"बैठो, मैं गिलास लाया।"

वो दूसरे कमरे में चला गया।
मोना चौधरी सोफा चेयर पर जा बैठी।
वो आया। बोतल, गिलास सब कुछ पकड़ रखा था। सारा सामान उसने टेबल पर रखा और मोना चौधरी के लिये गिलास तैयार करने लगा। नजरें रह-रह कर मोना चौधरी की छातियों की तरफ उठने लगती थीं। मोना चौधरी ने उसकी नजरों को ताड़ा और मुस्कुरा उठी।
"लो।" उसने मोना चौधरी की तरफ गिलास बढ़ाया।
"थैंक्स...।" मोना चौधरी ने गिलास थामते हुए कहा—"प्रिया को भी पिलाते होगे?"
"कभी-कभी, जब उसके पास फुर्सत हो...। जबकि उसके पास फुर्सत कम ही होती है।" वो मुस्कुराया।
"नाम क्या है तुम्हारा?"
"तुम मुझे गिल कह सकती हो।"
"क्या करते हो?"
"नौकरी करता था। दस दिन पहले छूट गई। दूसरी नौकरी तलाश कर रहा हूं।" उसकी निगाह पुनः मोना चौधरी की छातियों पर गई—"तुम्हारी पहचान हो तो तुम दिला दो।"
"देख कहां रहे हो?" मोना चौधरी कह उठी।
गिल ने सकपका कर उसकी छातियों से नजरें हटा लीं।
"मैंने तुम्हें देखने को मना नहीं किया। पूछा है।"
गिल ने गहरी सांस लेकर उसे देखा।
"मजाक अच्छा कर लेती हो। बहुत खूबसूरत हो तुम।"
"शुक्रिया...तो मुझे पाना भी चाहोगे?"
"इन्कार नहीं, अगर तुम्हें एतराज न हो।"
"सोचना पड़ेगा।" मोना चौधरी मुस्कुराई—"ये बताओ कि बीते दो-तीन दिनों में प्रिया से मिलने कोई आया?"
"हां। दो-तीन लोग आये थे। एक तो कल रात को आया। अपना कार्ड दे गया था।"
"कार्ड? दिखाओ।"
गिल दूसरे कमरे में गया और विजिटिंग कार्ड ले आया।

उस कबाड़ी, रहमत बिला का कार्ड था ये।
"ये प्रिया से मिलने आया था?"
"हां। मेरे ये कहने पर भी कि दो दिन से प्रिया यहां नहीं है, तो वो पन्द्रह मिनट तक बाहर ही खड़ा रहा। शायद किसी चीज का फैसला कर रहा था, फिर उसने मुझे कार्ड दिया कि प्रिया आये तो उसे दे दूं।"
"और कुछ कहा उसने?" उसका कार्ड अपनी जेब में रखते हुए पूछा मोना चौधरी ने।
"नहीं।"
"अकेला था वो?"
"मुझे तो अकेला ही लगा। कार पर आया था। मैंने उसके जाने पर कार की आवाज सुनी थी।
"और कौन आया प्रिया से मिलने?"
"कल दिन में दो अलग-अलग आदमी आये थे। मैं नहीं जानता उन्हें। उन्होंने अपने बारे में कुछ नहीं बताया। मैंने भी नहीं पूछा।" गिल ने एक ही सांस में गिलास खाली कर दिया—"लेकिन तुम प्रिया के बारे में इतनी बातें क्यों पूछ रही हो?"
"तुम मुझे पाना नहीं चाहते?" मोना चौधरी ने उसकी नशे में भरी आंखों में झांका।
"ह...हां, क्या तुम तैयार हो?"
"अभी सोच रही हूं।" मोना चौधरी ने थाम रखे गिलास में से घूंट भरा।
"मैं तुम्हारे पास आकर बैठ जाऊं?" गिल ने उठने की कोशिश की।
"नहीं, वहीं रहो, अभी मैंने सोचा नहीं है।"
उठते-उठते गिल फिर वहीं बैठ गया।
"प्रिया कहां गई हुई है? तुम तो कह रही थीं कि प्रिया ने तुम्हें भेजा है।" गिल एकाएक बोला।
"मैं पुलिस हूं।"
"पुलिस?" गिल हड़बड़ाया।

"विश्वास नहीं आया क्या?"

"लेकिन...पुलि...स...क्यों...?"

"किसी ने प्रिया की हत्या कर दी है।"

गिल उछल पड़ा।

"हत्या! प्रिया मर गई?" घबराहट में उसका मुंह खुला-का-खुला रह गया।

"क्या हो गया तुम्हें?"

"बहुत बुरी खबर सुनाई तुमने!"

"अपने पर काबू रखो और मेरी बातों का जवाब दो।"

गिल ने गहरी सांसें लीं। सम्भला, बोला—

"मैं नहीं जानता था कि पुलिस में तुम जैसी खूबसूरत युवतियां भी होती हैं।"

"अब तो देख ली...?"

"हां।"

"मैं प्रिया के हत्यारे को तलाश कर रही हूं, कुछ और बता सकते हो प्रिया के बारे में, जो...।"

"और कुछ नहीं जानता...जो जानता था...बता दिया।"

"प्रिया से मिलने और कौन-कौन आता था उसके पास?"

"प्रिया का दोस्त मुकेश वालिया आता रहता था। अक्सर रात को ही आता था और दोनों एक साथ ही रात बिताते थे। सप्ताह में दो-तीन दिन उनका ऐसा ही चलता था।" गिल ने कहा।

"बताते हुए तेरे को क्यों तकलीफ हो रही है? वो जो मर्जी करें।"

"मुकेश वालिया प्रिया से पैसे भी ऐंठता था।"

"तुम्हें कैसे पता?"

"एक रात दोनों के झगड़े की आवाजें आ रही थीं। मैंने दरवाजे पर कान लगा के सुना था। मुकेश वालिया उससे पैसे मांग रहा था और प्रिया उसे देना नहीं चाहती थी। इस

बारे में उनके बीच कुछ हाथापाई भी हुई थी।"

"तुमने देखा था?"

"आवाजों से महसूस किया था।"

"जब वो दोनों भीतर होते तो तुम अक्सर दरवाजे से कान लगाकर भीतर की बातें सुना करते थे।"

"किसने कहा?"

"मैंने पूछा है।"

"मेरे पास कोई और काम नहीं है जो मैं उन्हें सूंघता फिरूं?" गिल ने मुंह बनाकर कहा।

"नाराज मत होवो, मैंने सिर्फ पूछा है। खैर, तुम्हारा खर्चा कैसे चलता है, इस वक्त नौकरी तो है नहीं?"

"कुछ पैसे इकट्ठे कर रखे हैं। उन्हीं से काम चल रहा है, फिर नौकरी छूटे कौन-से चार महीने हो गये। दस-पन्द्रह दिन पहले तो छूटी है, मिल जायेगी। तुम तो मेरे बारे में ही पूछताछ करने लग गईं।"

मोना चौधरी ने व्हिस्की का मोटा घूंट भरा।

"पानी बहुत कम मिलाया है तुमने।"

"मैं ऐसे ही पीता हूं।" वो मुस्कुराया—"कड़वी लग रही होगी?"

"बहुत। एक पैग ही तीन के बराबर है। कोई और भी है, जो प्रिया से मिलने आता था?"

"सोमनी नाम की लड़की आया करती है। प्रिया उसे अपनी सहेली बताती थी। दस-पन्द्रह दिन में एक बार वो आ ही जाया करती थी। कभी सुबह आती तो कभी रात को।" गिल ने गहरी सांस ली।

"क्या हुआ?"

"बम चीज है सोमनी।" गिल पर व्हिस्की का नशा सवार होने लगा था—"वो हमेशा छोटी-सी स्कर्ट पहन कर आया करती है...और मैं उसकी टांगों को ही देखता रहता हूं।"

"किया कभी कुछ नहीं?"

"बम चीज है। डरता हूं कि कहीं हाथ लगाते ही फट गई तो मेरी खैर नहीं।"

"दरवाजे के बाहर बम को देखते हो और दरवाजा बन्द करके माचिस की तीली जलाने लगते हो। सारी जिन्दगी ऐसे ही कट जायेगी।" मोना चौधरी ने व्यंग से कहा।

"तो फिर क्या करूं?"

"बम को देखते ही माचिस की तीली निकाल लो।"

गिल, मोना चौधरी पर झपट पड़ा। उसे बांहों के घेरे में लेने की चेष्टा करने लगा।

"ये क्या कर रहे हो?"

"तुमने ही तो कहा है कि बम को देखते ही माचिस की तीली...।"

"मैं बम हूं?"

"बाई गॉड! तुम डबल बम हो। तुम्हें क्या पता...ये तो मुझे पता...।"

तभी देविका की आवाज वहां गूंजी—

"ये क्या हो रहा है?"

गिल हड़बड़ा कर मोना चौधरी से अलग हुआ। नशा उस पर हावी हुआ पड़ा था।

"बम से कम तो तुम भी नहीं।" उसे देखते ही गिल ने नशे भरे स्वर में कहा।

"क्या?" देविका हड़बड़ाई।

गिल हंस पड़ा।

"फ्लैट की हालत बहुत बुरी है।" देविका बोली—"कमरों में कहीं भी पांव रखने की जगह नहीं है। लगता है, किसी ने जमकर तलाशी ली है। सारा सामान बिखरा पड़ा है।"

"मुझे पहले ही ये अंदेशा था।"

"तलाशी ली है?" गिल बोला—"ये कैसे हो सकता है? दरवाजा बन्द है तो कोई भीतर कैसे जा सकता है?"

"खिड़की के रास्ते...।" मोना चौधरी ने हाथ में थाम रखा गिलास खाली करके टेबल पर रखा—"आओ।" देविका

से कहते हुए मोना चौधरी दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

दोनों सामने खुले दरवाजे यानि कि प्रिया के फ्लैट में प्रवेश कर गईं।

फ्लैट की हालत ऐसी बुरी थी कि देखते ही बनती थी। लगता था जैसे किसी ने फ्लैट से सुईं तलाश करने की चेष्टा की हो और वो उसे मिल न पाई हो।

कमरे के फर्श का थोड़ा-सा हिस्सा भी ऐसा न था कि जहां पांव रखा जा सके।

देविका ने पैरों से सामान इधर-उधर करके चलने-फिरने का थोड़ा-सा रास्ता बना लिया था।

मोना चौधरी ठिठकी-सी हर तरफ नजरें दौड़ाती रही।

"क्या कहती हो?" देविका ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"तलाशी लेने वाले को कोई खास चीज की तलाश थी।" मोना चौधरी ने नजरें दौड़ाते हुए कहा।

"जो कि नहीं मिली होगी।"

"लगता तो ऐसा ही है।"

मोना चौधरी ने तीन कमरों के उस फ्लैट को अच्छी तरह देखा।

पीछे वाले कमरे की खिड़की टूटी हुई झूल रही थी। फ्लैट में प्रवेश करने वाले इसी रास्ते से आये होंगे। उसने देविका को भी ये बात बताई। आखिरकार देविका बोली—

"क्या हमें जरूरत है फ्लैट की तलाशी लेने की?"

"जरूरत क्यों नहीं?" मोना चौधरी ने देविका को देखा—"हमें प्रिया के बारे में जानकारी चाहिये कि वो किन लोगों से मिलती थी और क्या-क्या करती थी। इस बारे में हमें मजेदार जानकारी नहीं मिल पा रही। जिसने तलाशी ली है, उसे जाने किस चीज की जरूरत रही होगी। हमें गम्भीरता से इस फ्लैट में पड़ी एक-एक चीज को देखना है।"

तभी गिल की आवाज गूंजी—

"तौबा! क्या हाल कर रखा है फ्लैट का?"

दोनों ने गर्दन घुमाई तो हाथ में गिलास लिए दरवाजे

पर गिल को खड़े देखा।

"किसने किया ये सब?"

"तुम जानो।" मोना चौधरी बोली—"दरवाजे की चाबी तो तुम्हारे पास थी।"

"तभी तो पूछ रहा हूं कि किसने किया ये सब? चाबी तो मेरे पास थी।" गिल ने सिर हिलाया।

"पीछे वाले कमरे की खिड़की से आने वाला भीतर आया।"

"चोर थे वे?"

"नहीं। चोर होते तो कीमती सामान कमरे में न बिखरा होता। वो ले गये होते।"

"सच। तुम ठीक कहती हो।"

"देविका, कमरे की तलाशी लो। मैं दूसरे कमरे को छानती हूं।" कहकर मोना चौधरी आगे बढ़ी।

"क्या ढूंढना है मुझे बताओ, मैं भी ढूंढता हूं।" गिल कह उठा।

मोना चौधरी ने उसकी बात की परवाह नहीं की और दूसरे कमरे में चली गई।

"क्या ढूंढना है?" गिल देविका के पास पहुंचा।

"मैं नहीं जानती।"

"नहीं जानतीं? कमाल है, फिर भी ढूंढ रही हो!"

मोना चौधरी एक कमरे की तलाशी लेती रही।

देविका इस कमरे की।

गिल उनके बीच, व्हिस्की का गिलास थामे यूं ही घूमता रहा।

करीब एक घंटा बीत गया।

तभी गिल ने एक जगह पड़ीं दो-तीन तस्वीरें देखीं तो झुककर उन्हें उठा लिया। अब तक वो काफी पी चुका था। नशे में उसका चेहरा लाल-सा होकर तपता लगने लगा था।

उनमें से एक तस्वीर देखते ही उसके होंठ सिकुड़ गये। वो तुरन्त दूसरे कमरे में मोना चौधरी के पास पहुंचा।

"सोमनी की तस्वीर दिखाऊं?" गिल ने कहा।

"किधर है?" मोना चौधरी ने फौरन उसे देखा।

"ये रही।" गिल ने तस्वीर आगे की—"उस कमरे सामान के पास पड़ी थी। साथ में प्रिया भी है।"

मोना चौधरी ने तस्वीर देखी। प्रिया के साथ एक युवती खड़ी थी। तस्वीर में भी उसने स्कर्ट पहन रखी थी। मोना चौधरी ने उसके चेहरे को गौर से देखा।

अगले ही पल चौंकी। उसकी आंखों में हैरानी उभरी।

"ये सोमनी है। प्रिया की सहेली। पांच-दस दिन में तो एक बार अवश्य प्रिया के पास आया करती थी।"

तभी देविका ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा—

"उस कमरे में कुछ नहीं मिला, जो हमारे लिये फायदेमंद हो।"

मोना चौधरी ने तो तस्वीर जेब में डाल ली। चेहरे पर अभी भी अजीब-से भाव ठहरे हुए थे।

तभी नशे में डूबा गिल कह उठा—

"तुम दोनों पुलिस वाली हो?"

"हां... ।"

"वर्दी कहां है?"

"हम बिना वर्दी के पुलिस वाले हैं। खुफिया पुलिस... ।" मोना चौधरी ने शांत स्वर में कहा।

"फिर ठीक है।"

उसके बाद दोनों तीसरे कमरे की तलाशी में लग गईं।

गिल मोना चौधरी के करीब आकर धीमे स्वर में बोला—

"वो सोमनी की तस्वीर, तुमने अपनी साथी से छिपाकर जेब में रख ली। उसका जिक्र भी अपने साथी से नहीं किया। उसे दिखाई भी नहीं?"

"तो?" मोना चौधरी ने उसे देखा।

"जरूर कोई बात है, मुझे तो बता दो कि वो तस्वीर किसकी है?" गिल का स्वर धीमा था।

"कल थाने बुलाऊंगी। वहां बताऊंगी।"

"थाने बुलाओगी...क्यों...?"
"पूछताछ करनी है।"
"थाने बुलाने की क्या जरूरत है। अभी पूछताछ कर लो।"
"जो पूछताछ का मजा थाने में आता है, वो यहां नहीं आता।" मोना चौधरी ने मुस्कुराकर कहा।
गिल ने उसे घूरा, फिर मुंह बनाकर दो कदम पीछे हट गया।
प्रिया के फ्लैट से उन्हें काम की कोई चीज नहीं मिली। सिवाय मोना चौधरी को सोमनी की उस तस्वीर के।

□□□
□□□

अगले दिन मोना चौधरी साढ़े आठ बजे नींद से उठी।
देविका तैयार हो रही थी।
"जल्दी करो।" देविका बोली—"हमने घंटे तक आफिस पहुंचना है।"
मोना चौधरी उसे कुछ पल देखती रही, फिर बोली—
"रात सोने में देर हो गई थी। सुस्ती आ रही है।"
"लेकिन हमें वक्त पर डिटेक्टिव एजेन्सी पहुंचना है।" देविका बोली—"रोमी और गोपाल वहां हमारा इन्तजार... ।"
"तुम पहले चली जाओ।" मोना चौधरी ने कहा—"मैं बाद में आती हूं।"
"तुम्हारे बिना वहां कुछ न होगा। तुम... ।"
"मैं आ रही हूं। तुम चलो।" मोना चौधरी ने कहा और बैड पर ही लेटी रही।
देविका को बात माननी पड़ी। वो चली गई।
मोना चौधरी ने सोमनी की तस्वीर निकाली और उसे देखने लगी। तस्वीर में प्रिया और सोमनी एक साथ थे। मोना चौधरी की निगाह सोमनी की तस्वीर पर टिकी रही।
कुछ देर बाद उसने तस्वीर रखी और मोबाइल फोन उठाकर नम्बर मिलाने लगी।

तभी सुरेन्द्र लाल ने भीतर प्रवेश किया।
"तुम्हें अब तक आफिस के लिये चल देना चाहिये था।" वो बोला।
"अभी मन नहीं है।" मोना चौधरी मुस्कुराई।
"ये क्या बात हुई?"
मोना चौधरी ने कुछ नहीं कहा।
वो खड़ा रहा।
"मेरे सिर पर मत खड़े होवो।" मोना चौधरी कह उठी—"मैं काम ही कर रही हूं, तुम जाओ।"
सुरेन्द्र लाल खामोशी से बाहर निकल गया।
तभी लाइन मिली।
"हैलो... ।" दूसरी तरफ से विजय मल्होत्रा की आवाज आई।
"कैसे हो?"
"ओह...तुम। मेरी नई मालकिन। क्या मेरे लिये कोई काम निकल आया?"
"अगर तुम करना चाहो तो... ।"
"क्यों नहीं! तुम मुझे काम दे रही हो तो मैं क्यों नहीं करूंगा? लेकिन मुझे मिलेगा क्या?"
"भूखे नहीं मरोगे।"
"वो तो मैं अब भी नहीं मर रहा। सवाल ये है कि अब जो खा रहा हूं, क्या तुम्हारा काम करके उस पर मक्खन रख के खा सकूंगा या मक्खन बगल में रखकर उसे देख-देख कर ही सूखा खाना खाना पड़ेगा?"
"ये तो तुम पर निर्भर करता है कि काम किस ढंग से करते हो।" मोना चौधरी मुस्कुराई।
"मेरा काम बढ़िया होता है। प्रिया से पूछ लो।"
"पूछने के लिये मुझे ऊपर जाना पड़ेगा और इतनी दूर जाने का मेरा इरादा नहीं है।"
"ओह! मैं भूल गया था। तुम निश्चिंत होकर मुझे कोई भी काम करने को कह सकती हो।"

"विजय मल्होत्रा!" मोना चौधरी का स्वर बेहद कठोर हो गया—"मुझे बढ़िया रिजल्ट चाहिये। कहीं बाद में तुमने दांत दिखाये कि ये काम नहीं हो सका या चूक गये तो तुम्हें छोड़ूंगी नहीं।"

"काम क्या है?" विजय मल्होत्रा की गम्भीर आवाज मोना चौधरी के कानों में पड़ी।

"किसी पर नजर रखनी है। चौबीसों घंटे की रिपोर्ट चाहिये।"

"अकेला आदमी चौबीस घंटे कैसे किसी पर नजर रख सकता है? लेकिन तुम फिक्र मत करो। मेरा एक असिस्टेंट है। यूं तो पान की दुकान लगाता है, लेकिन जासूसी नॉवल पढ़ने का उसे बहुत शौक है। एमरजेंसी में उसे कई बार अपने काम में इस्तेमाल कर चुका हूं। तुम शिकार का अता-पता बोलो।"

"इसके लिये तुम्हें मिलना पड़ेगा। कुछ समझाना भी है।"

"ठीक है। मैं तुम्हारे आफिस आ जाता... ।"

"कभी नहीं।" मोना चौधरी के होठों से निकला—"तुम मुझे हैली रोड पर मिलो। एक घंटे बाद।"

"ओ०के०। मैं चालीस मिनट में हैली रोड पर तुम्हें खड़ा मिलूंगा।"

मोना चौधरी ने फोन बन्द कर दिया।

चेहरे पर सोच के भाव दिखाई दे रहे थे।

तभी मोना चौधरी का फोन बजा। स्क्रीन पर मिस्टर पहाड़िया का नम्बर था।

"कहिये... ।"

"सुरेन्द्र लाल ने मुझे बताया कि तुम आफिस जाने के लिये तैयार नहीं हो रहीं।"

"उसे ये बात आपसे कहने की क्या जरूरत थी?" मोना चौधरी के होंठ सिकुड़े—"वो नकली परिवार का हैड बना बैठा है। उसके लिये इतना ही बहुत है।"

"उसे चिन्ता है कि तुम्हारी लापरवाही काम बिगाड़ न दे।"

"उसे अच्छी तरह समझा दीजिये कि मेरे कामों में इस तरह दखलअंदाजी न करे।"

"ठीक है। कह दूंगा।"

"मैं मेकअप उतार चुकी हूं और रानी ने आज शाम तक मुझे मेकअप के चेहरे वाला नकाब तैयार करके देना है। वो शायद इस वक्त मेरे ही काम में व्यस्त होगी।" मोना चौधरी ने कहा—"यानि कि आज की तारीख में आई डिटेक्टिव एजेन्सी में जाना कठिन ही है। अगर कोई खास बात होगी तो देविका, रोमी या गोपाल मुझे फोन पर बता देंगे।"

"हूं।" मिस्टर पहाड़िया का सोच भरा स्वर कानों में पड़ा—"कल क्या हुआ था?"

"बहुत कुछ हुआ था। टुकड़ों में बातें बयान नहीं कर सकती। कुछ बातें और हो जायें, फिर इकट्ठा ही बताऊंगी।" मोना चौधरी ने कहा और फोन बन्द कर दिया।

कुछ पलों तक वो वैसे ही बैड पर पड़ी रही।

तभी राधिका ने भीतर प्रवेश किया।

"गुड मॉर्निंग आंटी... ।"

"मॉर्निंग।" राधिका मुस्कुराई—"तुम्हारे लिये चने की दाल के परांठे बनाये हैं।"

"गुड। आप खाना बहुत अच्छा बनाती हैं।"

"मैं बहुत अच्छी कुक हूं। रूस में मैंने साढ़े चार साल कुक की नौकरी की। पूरा रेस्टोरेंट मेरे बनाये खाने के दम पर ही चलता था, लेकिन बहुत खतरनाक वक्त था वो मेरे लिए। उस रेस्टोरेंट में रूस की खतरनाक जासूसी संस्था के. जी.बी. के अधिकारियों की मीटिंग हुआ करती थी और मुझे उस वार्तालाप की रिकार्डिंग करनी होती थी।"

"काम में सफल रहीं?"

"हां, लेकिन ये आशंका हर वक्त सिर पर सवार रहती

थी कि अब पकड़ी जाऊंगी... लेकिन कभी नहीं पकड़ी गई। जब अपना काम करके चुपचाप हिन्दुस्तान आ गई तो तब उन के.जी.बी. वालों को शक हुआ था कि मैं उनके लिये जासूसी तो नहीं कर रही थी। परन्तु वो साबित नहीं कर सके।" राधिका ने कहा।

"यानि कि आपने अच्छा काम किया था?" मोना चौधरी मुस्कुराई।

"पकड़े गये तो बुरा काम। बच गये तो अच्छा काम।" राधिका हंसी।

मोना चौधरी बैड से उतरी।

"मैं तैयार होकर, चने की दाल के परांठे खाती हूं।" मोना चौधरी ने कहा।

□□□

□□□

दिन के ग्यारह बजने जा रहे थे।

मोना चौधरी ने सड़क के किनारे कार रोकी और इधर-उधर नजरें दौड़ाईं।

तभी एक पेड़ की ओट से निकलकर विजय मल्होत्रा पास आया।

"भीतर बैठो।" मोना चौधरी ने कहा।

विजय मल्होत्रा ने कार का दरवाजा खोला और मोना चौधरी की बगल वाली सीट पर बैठ गया।

मोना चौधरी ने कार आगे बढ़ा दी।

"मुझे कितनी तनख्वाह दोगी?"

"काम बढ़िया चाहिये, पैसे की परवाह न करो।"

"काम बढ़िया होगा। एकदम फिट। प्रिया पच्चीस हजार रुपया महीना देती थी।"

"मैं भी इतना ही दूंगी।"

"दस हजार पहले दे देना। हाथ बहुत तंग चल रहा है।" दोनों हाथ मलते हुए विजय मल्होत्रा बोला।

"दे दूंगी।"

"अभी... ।"

"अभी ले लेना।"

"ये हुई बात। अब ये बताओ कि किस पर नजर रखनी है? किसका पीछा करना है?"

मोना चौधरी, विजय मल्होत्रा को काम के बारे में समझाने लगी।

दोनों में धीमे-धीमे बात होती रही।

ये सब बीस मिनट तक चला।

इस दौरान मोना चौधरी ने कार सड़क किनारे रोक दी थी।

"सब समझ गये?" मोना चौधरी ने पूछा।

"समझ गया।" विजय मल्होत्रा ने गहरी सांस ली—"मेरे हिस्से खतरनाक काम ही आते हैं।"

"जासूसी का धन्धा है ये। इस धन्धे में हर कदम खतरनाक ही होता है।"

"दस हजार... ।"

मोना चौधरी ने जेब से पांच सौ के बीस नोट निकाले और उसे दिए।

"याद रखना। अगर तुम नजर में आ गये तो ये बात कभी भी सामने नहीं आनी चाहिये कि मेरे कहने पर तुम ये काम कर रहे हो।" मोना चौधरी ने एक-एक शब्द चबाकर सख्ती से कहा—"अगर मुंह खोला तो मैं तुम्हें गोली मार दूंगी।"

"मैं किसी को नहीं बताने वाला कि ये काम तुमने मेरे हवाले किया है।" उसके चेहरे को देखता विजय मल्होत्रा कह उठा—"कल तुमने मेकअप में अपनी खूबसूरती दबा रखी थी। आज तो तोप लग रही हो।"

"तोप?"

"हां। लगता ही नहीं कि तुम कल वाली ही हो।"

"तो पहचाना कैसे?"

"जासूस की नजरें हैं। पहचानूंगा कैसे नहीं?" विजय

मल्होत्रा ने नोट जेब में डालते हुए कहा।

"अब नीचे उतरो...काम पर लग जाओ... ।"

विजय मल्होत्रा तुरन्त कार का दरवाजा खोलकर नीचे उतरा।

"जब भी जरूरत समझो, मेरे मोबाइल पर बात कर लेना।"

विजय मल्होत्रा के सिर हिलाने पर मोना चौधरी ने कार आगे बढ़ा दी।

□□□

□□□

मोना चौधरी सीधा प्रिया के फ्लैट पर पहुंची। जहां रात देविका के साथ आई थी। सामने वाले फ्लैट में रहने वाले गिल से मिलना चाहती थी। गिल के फ्लैट का दरवाजा बन्द था।

मोना चौधरी ने गिल के फ्लैट की कॉलबेल पर उंगली रखी।

भीतर बैल बजने की आवाज आई।

परन्तु दरवाजा नहीं खुला।

मोना चौधरी ने पुनः बैल बजाई।

तभी मोना चौधरी को पीछे से आती कदमों की आहट सुनाई दी। उसने गर्दन घुमाकर देखा तो बुजुर्ग-सा व्यक्ति सीढ़ियां चढ़ रहा था। वो पास पहुंचा।

"यहां किससे मिलना है?" बुजुर्ग ने पूछा।

"गिल साहब से...।"

"गिल...?" बुजुर्ग ने अजीब-से स्वर में कहा—"यहां कोई नहीं रहता। साल भर से खाली है ये फ्लैट।" कहकर वो व्यक्ति ऊपर जाने के लिये पुनः सीढ़ियां चढ़ने लगा। उसका फ्लैट ऊपरी मंजिल पर था।

"रात को मैं यहां आई थी। गिल से मिली थी, इसी फ्लैट पर।"

बूढ़ा ठिठका।

पलटकर मोना चौधरी को देखा।

"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो ऐसा कह रही हो?" कहकर वो पुनः सीढ़ियां चढ़ने लगा।

"इस सामने वाले फ्लैट में प्रिया रहती है, वो... ।"

"आवारागर्द है। कभी देर रात आती है तो कभी आती ही नहीं।"

"आप जानते हैं उसे?"

"नहीं...तुम्हें किससे मिलना है। कभी इधर की बैल बजाती हो तो कभी उस आवारागर्द को पूछती हो।"

दो पल के लिये मोना चौधरी कुछ कह न सकी।

बूढ़ा पुनः सीढ़ियां चढ़ने लगा।

मोना चौधरी ने खुद को उलझन में फंसे पाया।

रात वो इस फ्लैट पर गिल नाम के युवक से मिली थी। उससे बातें कीं। उसकी दी व्हिस्की पी। उसने प्रिया के फ्लैट से बिखरे सामान में से सोमनी की तस्वीर उठाकर दी। और तो और, प्रिया के फ्लैट की चाबी भी उसके पास थी। परन्तु ऊपर के फ्लैट में रहने वाला बूढ़ा कहता है कि साल भर से खाली है ये फ्लैट। यहां कोई रहता ही नहीं। मोना चौधरी को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे और क्या नहीं!

अजीब-सी परेशानी सामने आ गई थी।

गिल कौन था, जो रात को इस फ्लैट में मिला?

गिल के पास प्रिया के फ्लैट की चाबी कहां से आ गई?

गिल ने सोमनी की तस्वीर उठाकर उसे क्यों दी? तब तक तो बात आई-गई हो चुकी थी, फिर गिल का धीमे स्वर में उससे कहना कि वो तस्वीर उसने अपने साथी (देविका) को क्यों नहीं दिखाई? ये बात करके गिल नाम का व्यक्ति उससे क्या कहना चाहता था?

मोना चौधरी के चेहरे पर गम्भीरता नजर आने लगी थी।

सवाल सामने थे, परन्तु जवाब न था।

गिल एकाएक ही रहस्यमय बन गया था उसके लिये।

ये फ्लैट खाली था, तो गिल यहां पर कैसे? और इधर

क्या उसके आने का इन्तजार कर रहा था? गिल के रूप में मोना चौधरी के सामने बड़ा-सा सवाल आ ठहरा था।

तभी उस बूढ़े की आवाज उसके कानों में पड़ी—

"तुम अभी तक गई नहीं?"

मोना चौधरी ने देखा, वो ऊपर से झांकता उसे ही देख रहा था।

"सच में इस फ्लैट में कोई नहीं रहता क्या?"

"तुम मुझे चोर लगती हो। मैं पुलिस को बुलाता हूं। भागना मत।"

"पीछे हो जा। गिर जायेगा। पूरा ढांचा खड़क जायेगा।" मोना चौधरी ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा।

"तेरी तो...अभी बताता हूं तेरे को...।" बूढ़ा भड़का।

मोना चौधरी गहरी सांस लेकर नीचे जाने के लिये सीढ़ियां उतरने लगी। फिर कुछ ही पलों बाद उसकी कार पर मंगोलपुरी की तरफ बढ़ रही थी, जहां रहमत बिला कबाड़ी का काम करता था।

परन्तु मोना चौधरी के मस्तिष्क में खटक रहा था गिल।

□□□

□□□

मंगोलपुरी की मेन रोड पर मौजूद था रहमत बिला का धन्धा।

पांच सौ गज की जगह थी। उस पर चारदीवारी कर रखी थी। एक कोने में शीशे लगा, आफिस टाइप जगह थी। बाकी जगह में गैराज टाइप, शेड लगाकर बनाया हुआ था। उसके भीतर जाने के लिये अलग से बारह फीट का फाटक बना हुआ था।

मोना चौधरी ने कार एक तरफ खड़ी की और उतरकर रहमत बिला के काले शीशे लगे आफिस की तरफ बढ़ गई। वहां पहुंच कर शीशे का दरवाजा धकेला और भीतर प्रवेश किया।

अच्छा-खासा आफिस बना रखा था। चौड़ा टेबल,

गद्देदार कुर्सियां, फर्श पर मखमली कारपेट और दीवारों पर वाल पेपर था। छत पर सीलिंग लगी हुई थी।

वहां चालीस बरस का व्यक्ति मौजूद था, जो कि आंखों पर चश्मा चढ़ाये, फाइल में कुछ लिखने में लगा हुआ था। उसने नजर उठाकर मोना चौधरी को देखा, फिर मुस्कुराया।

"यस मैडम! क्या बेचना है...कार...?"

"नहीं...।" मोना चौधरी मुस्कुराई और बैठ गई।

"तो आप...।"

"पहले पानी पिलाइये।"

"क्षमा चाहता हूं...।" वो उठा और कोने में रखे फ्रिज से पानी का गिलास भरा और उसके सामने रखा। वॉल स्टैण्ड पर रखा टी.वी. चल रहा था, परन्तु उसकी आवाज बन्द थी।

मोना चौधरी ने पानी पिया।

"रहमत बिला कहां है?"

"उनकी क्या जरूरत है? मैं उनका मैनेजर हूं। सामान का दाम तो मैं ही लगाता...।"

"अपने को बेचना है।"

"अपने को?" वो हड़बड़ाया, मोना चौधरी को ऊपर से नीचे तक देखा।

"क्या कीमत लगाते हो?"

"क्षमा कीजियेगा।" वो अपने को सम्भाल कर बोला—"यहां कबाड़ का काम होता है, ऐ-वन माल का नहीं।"

"घबरा गये।"

"आपने बात ही ऐसी की।"

"रहमत बिला से मिलना है मुझे। काम है।"

"बुलाता हूं। वो गैराज में है।" कहने के साथ ही वो केबिन में पीछे बने दरवाजे को धकेलकर चला गया।

दरवाजा खुलने पर मोना चौधरी को वहां खड़ी कारों और काम पर लगे लोगों की झलक मिली। ठोंका-पीटी की

आवाज भी आई। दरवाजा बन्द होते ही सब कुछ शांत पड़ गया।

पांच मिनट बाद ही दरवाजा खुला और पचास बरस के एक व्यक्ति ने भीतर प्रवेश किया।

वो लम्बा-चौड़ा और सेहतमंद था।

कमीज-पायजामा पहन रखा था। पेट आगे निकला हुआ था और चेहरे पर हल्की दाढ़ी थी। सांवला-सा रंग था। सिर के बाल छोटे-छोटे थे। मोना चौधरी को देखते ही बोला—

"स्वागत है आपका।"

जवाब में मोना चौधरी के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान उभरी।

रहम बिला कुर्सी पर फंसने के अंदाज में बैठा और कह उठा—

"आप मुझे याद कर रही थीं मैडम?"

"रहमत बिला आप ही हैं ना?"

"यकीनन मैं ही हूं...।"

मोना चौधरी ने जेब से कार्ड निकालकर सामने रखा।

"ये कार्ड आप कल कहीं छोड़ आये थे।"

रहमत बिला ने दो पल कार्ड को घूरा, फिर कह उठा—

"ये कार्ड मैंने मैडम प्रिया के लिये छोड़ा था।"

"किसके पास?"

"उसके सामने वाले फ्लैट में एक युवक दिखा था, उसे दिया था।" रहमत बिला शांत स्वर में बोला।

"गिल...वो अपने को गिल कहता था।"

"मैंने नाम नहीं पूछा।"

मोना चौधरी के चेहरे पर सोच के भाव आ गये।

"वो युवक कल आपको भी मिला और मुझे भी। परन्तु वहां रहने वाले कहते हैं कि वो फ्लैट साल भर से बन्द है। वहां कोई नहीं रहता। आपका क्या ख्याल है कि ये बात सच हो सकती है?"

"आप कौन हैं?" रहमत बिला ने पूछा।

"मोना...प्रिया का काम अब मैं सम्भालती हूं।"

"ओह! तो तुमने उसका बिजनेस खरीदा है।" रहमत बिला के होठों से निकला।

"हां।"

"मेरे पास क्यों आई हो?"

"ये पूछने कि क्या वहां गिल नाम का युवक सच में रहता है?"

"मैं नहीं जानता। मुझे वो दिखा और मैंने उसे अपना कार्ड दिया कि प्रिया के आने पर वो कार्ड उसे दे दे।"

"क्या काम था आपको प्रिया से?"

"कुछ भी हो, तुम्हें क्या?"

"कल तक नहीं पता था कि प्रिया की हत्या हो गई है?"

"नहीं। आज सुबह ही पता चला।"

"कैसे?"

"किसी ने बताया था। तुम्हें इससे क्या?" रहमत बिला बोला—"ये बेकार की बातें करके मेरा वक्त बरबाद मत करो। कोई काम की बात हो बोलो। मैं अधिकतर व्यस्त रहता हूं।"

"तो वहां सच में कोई रहता था, जिसे आपने अपना कार्ड दिया?"

"कितनी बार कहूं?"

मोना चौधरी को वो सच बोलता लगा।

परन्तु वो बूढ़ा भी सच बोलता लगा था।

यानि कि कहीं तो गड़बड़ है ही।

"कल मेरे पास आफिस में रंजन जोशी आया था।" मोना चौधरी की नजरें रहमत बिला के चेहरे पर टिक गईं

रहमत बिला की आंखें सिकुड़ीं।

"तो...?"

"वो काले चमड़े वाली फाइल की तलाश में था।"

"होगा।"

"आपको जरूरत है उसकी?"

रहमत बिला थोड़ा आगे को झुका, दोनों बांहें टेबल पर

फैलाई। नजरें मोना चौधरी पर थीं।

"तुम चाहती क्या हो?"

"रंजन जोशी को जानते हैं आप?"

"नहीं।"

"अभी तो आपने कहा कि तो? अगर आप नहीं जानते होते तो आपका सवाल होता रंजन जोशी कौन है?"

"मैं नहीं जानता रंजन जोशी कौन है।"

"पक्का... ।"

"पक्का... ।"

"फिर तो वो काले चमड़े वाली फाइल भी नहीं चाहिये होगी आपको?"

"क्या है उस फाइल में?"

"जब आपका फाइल से वास्ता नहीं तो फिर फाइल में कुछ भी हो, आपको क्या?" मोना चौधरी मुस्कुराई।

"तुम्हारे पास है फाइल?"

"हां, तो?"

"मैं समझ नहीं पा रहा कि तुम क्या कहना चाहती हो, क्या बात करना चाहती हो?"

"तुम रंजन जोशी को नहीं जानते। फाइल के बारे में नहीं जानते तो इन बातों को रहने दो। नई बात करें।"

वो टेबल पर हाथ फैलाये मोना चौधरी को देख रहा था।

"करो, नई बात करो।"

"जाफर शरीफ के क्या हाल हैं?"

रहमत बिला के माथे पर बल पड़े। चेहरा कुछ कठोर हुआ।

"जाफर शरीफ?" वो धीमे स्वर में बोला।

"वो ही आतंकवादी, जो कई बार यहां आ चुका है।" मोना चौधरी ने टिकाऊ स्वर में कहा।

"तुमने देखा जाफर शरीफ को यहां आते?"

"मैंने नहीं, किसी और ने देखा था।"

"गलत देखा, धोखा हुआ होगा उसे।"

"पुलिस भी इस मामले में तुम्हारे पीछे रही थी।"

"लेकिन पुलिस अब कहती है कि इस बारे में उससे गलती हो गई थी। जाफर शरीफ यहां नहीं आया।"

"और तुमने उस अखबार वाले को ट्रक के नीचे देकर मरवा दिया।"

वो एकटक मोना चौधरी को घूरने लगा, फिर बोला—

"तुम पागल हो जो मेरे पास आकर इस तरह की बातें करने लगी हो?"

"जाफर शरीफ को भी नहीं जानते तुम?"

"नहीं।"

"मैंने यूं ही प्रिया का बिजनेस नहीं खरीदा। प्रिया ने बहुत कुछ बता रखा है मुझे।"

रहमत बिला सीधा हुआ और कुर्सी की पुश्त से टेक लगा ली।

"क्या बताया प्रिया ने?"

"ये तो मैं नहीं बताऊंगी, लेकिन जो बताया, उसी की वजह से मैं तुम्हारे पास आई हूं।"

"क्यों आई हो?"

"तुम तो हर बात से इन्कार कर रहे हो। क्या बताऊं तुम्हें? चमड़े वाली फाइल के बारे में कुछ नहीं जानते। रंजन जोशी को नहीं जानते। जाफर शरीफ से तुम्हारा वास्ता नहीं. ..तो शायद प्रिया ने मुझे गलत बताया होगा।"

"स्पष्ट बात करो।"

"तुम भी कुछ स्पष्ट करो तो मैं तुमसे बात करूं।"

रहमत बिला कुछ चुप रहकर बोला—

"मैं न तो चमड़े की फाइल के बारे में कुछ जानता हूं, न रंजन जोशी के बारे में और न जाफर शरीफ के बारे में। तुम कहती हो कि जाफर शरीफ जैसा आतंकवादी मेरे यहां आया तो यहां बहुत लोग आते हैं। वो भी आया होगा, लेकिन मैं नहीं जानता उसे।"

"और प्रिया ने मुझे जो बताया, वो गलत था?"

"मुझे नहीं पता कि प्रिया ने तुम्हें क्या बताया था?"

"तुम प्रिया को किस हद तक जानते हो?"

"मैं उसके पास अपने किसी काम के सिलसिले में गया था। उसने मिलने के लिये मुझे अपने घर का वक्त दिया था।"

"क्या काम था प्रिया से?"

"वो प्राइवेट जासूस थी और मैं उससे अपने व्यक्तिगत काम्म के लिये मिलने गया था।"

"और वो काम नहीं बताओगे?"

"नहीं। वो बताना मैं जरूरी नहीं समझता।"

"प्रिया को किसने मारा जानते हो?"

"मैं कैसे जान सकता हूं? लेकिन तुम मेरे पास आकर खामखाह की छानबीन भरी बातें क्यों कर रही हो?"

"केस मिला है मुझे।"

"क्या?"

"प्रिया के हत्यारे को ढूंढने का।"

"समझा...किसने दिया ये काम तुम्हें?"

"उसके पति ने।"

रहमत बिला सिर हिलाकर रह गया।

मोना चौधरी उठ खड़ी हुई।

"चलती हूं मैं।"

"लेकिन तुम आई क्यों थी?"

"तुम्हें ये बताने कि मैं जानती हूं तुम जाफर शरीफ के साथी हो। तुम्हारे इन्कार करने से ये बात खत्म नहीं हो जाती।"

रहमत बिला ने अपने चेहरे पर हाथ फेरा।

"मेरे पास वो फाइल है, जिसे रंजन जोशी तलाश कर रहा है।" मोना चौधरी बोली।

रहमत बिला फौरन सीधा होकर बैठ गया।

"तुम्हारे पास है?"

"हां। चूंकि तुम कबाड़ खरीदते हो, इसलिये तुम्हारे पास

आई थी।" मोना चौधरी मुस्कुराई।

"दिखाओ फाइल।"

"देखने की जरूरत नहीं। बीच में जो है, वो तुम भी जानते हो और मैं भी। कीमत लगाओ उसकी।"

"क्या चाहती हो?"

"मेरे चाहने की छोड़ो। तुम कीमत बोलो, ताकि मुझे भी पता लगे कि तुम्हारे लिए वो कितनी कीमती है।"

कुछ खामोश रहकर रहमत बिला कह उठा—

"दस लाख तुम्हें अभी दे सकता हूं।"

"जाफर शरीफ से बात कर लेना। शायद उसे पता हो कि फाइल की कीमत क्या है?" मोना चौधरी ने कहा और दरवाजा धकेलकर बाहर निकली और कार की तरफ बढ़ गई।

रहमत बिला ने उसे बुलाने की कोशिश नहीं की।

❑❑❑

❑❑❑

मोना चौधरी वहां से सीधा गुलाबी बाग पहुंची, जहां रंजन जोशी का ठिकाना था।

4 नम्बर फ्लैट ढूंढने में उसे कोई कठिनाई नहीं हुई। उसने कॉलबैल पर उंगली रखी। भीतर बैल बजने की आवाज सुनाई दी।

मोना चौधरी जानती थी कि रहमत बिला के पास जाकर उसने खतरा मोल लिया है। परन्तु इसके बिना कोई दूसरा रास्ता भी न था। राख को छेड़ने से अंगारे बाहर निकलेंगे, रोशनी होगी और उसी रोशनी में उसे आगे बढ़ने का रास्ता मिलेगा।

लाख सोचने के बाद भी न समझ पा रही थी कि मिस्टर पहाड़िया ने उसे इस काम में धकेला क्यों... आखिर वो क्या चाहते हैं, क्या करवाना चाहते हैं उससे?

उसी पल दरवाजा खुला।

पच्चीस बरस की युवती खड़ी थी। कमीज-सलवार पहन रखा था। वो खूबसूरत थी। चेहरे पर मेकअप भी कर रखा

था। उसने सवालिया निगाहों से मोना चौधरी को देखा।

"रंजन जोशी किधर है?" मोना चौधरी ने सीधे पूछा।

"वो तो हैं नहीं।"

"मैंने पूछा है किधर है?"

"घंटे भर पहले गये... ।"

"तुम कौन हो?"

वो पलभर के लिये हिचकिचाई।

उसी पल मोना चौधरी ने उसे भीतर धकेला और खुद भी भीतर आकर दरवाजा बन्द किया।

"ये क्या कर रही हो?" वह कह उठी।

"चुप कर।" मोना चौधरी ने तीखे स्वर में कहा—"कुछ ही देर में यहां पुलिस आने वाली है।"

"पुलिस?" वो घबरा गई।

"हां। मैं रंजन को बताने आई थी कि पुलिस ने यहां की तलाशी लेनी है, कोई सामान हटाना हो तो हटा ले।"

"तुम कौन हो?"

"मैं लेडी कांस्टेबिल हूं। रंजन मुझे दस हजार रुपया महीना देता है कि ऐसी कोई गड़बड़ हो तो उसे पहले बता दूं। कहां गया है वो?"

"मैं नहीं जानती।"

"ये भी नहीं पता कि कब आयेगा?"

"न...नहीं... ।"

"तुम उसकी रखैल हो?"

"म...मैं उसकी दोस्त हूं।"

"मुझे बताओ, वो अपनी खास चीजें कहां रखता है? हमें फौरन उन चीजों को वहां से हटाना होगा।"

"मैं अभी रंजन को फोन... ।"

"पागलों वाली बात मत करो। पुलिस आ गई तो, मैं भी फंसूंगी। सामान हटाने के बाद रंजन को फोन करती रहना, वरना वो बुरा फंसेगा। पुलिस बहुत गुस्से में है। कहां रखता

है वो सामान...?" मोना चौधरी ने कठोर नजरों से उसे देखा।

"मैं नहीं जानती, लेकिन पीछे वाले कमरे में जो टेबल है, वो वहीं व्यस्त रहता है।"

"आओ।"

मोना चौधरी उस युवती के साथ पीछे वाले कमरे में पहुंची।

उस खाली कमरे में टेबल और दो कुर्सियां पड़ी थीं।

"तुम इधर ही बैठ जाओ कुर्सी पर, बाहर मत जाना। मैं सामान चैक करती हूं।"

उलझन में फंसी वो बैठ गई। बोली—

"तुम्हें पहले तो कभी नहीं देखा। पहले तो तुम यहां नहीं आईं?"

कागजों की छानबीन करती मोना चौधरी बोली—

"पुलिस वाले जितना दूर रहें, उतना ही अच्छा है।"

"रंजन ने कभी तुम्हारा जिक्र भी नहीं किया।"

"कब से हो रंजन के साथ?"

"दस महीने हो गये।"

"बहुत टाइम बिता लिया। अगले दो महीनों में वो तुम्हें लात मार कर बाहर कर देगा।"

"वो ऐसा नहीं करेगा।"

"मेरे सामने दो लड़कियों से तो वो ऐसा कर चुका है।" कागजों को चैक करती मोना चौधरी बोली।

उसने होंठ भींच लिए।

पांच मिनट में ही मोना चौधरी को वहां से कई तरह का सामान मिला।

कैमरे के पास ही सी.डी. पड़ी थी। वो उठाकर जेब में रख ली।

कुछ कागज और उसे काम के लगे, वो एक लिफाफे में भर लिए। एक डायरी मिली, वो भी रख ली।

वो युवती बेचैनी भरे अंदाज में बैठी उसे देख रही थी।

मोना चौधरी लिफाफा थामे खड़े होते हुए बोली—

"रंजन से मिलने कौन-कौन से लोग आते हैं यहां?"

"कई आते हैं। मैं तुम्हें कैसे बताऊं?"

मोना चौधरी ने जेब से निकालकर सोमनी और प्रिया वाली तस्वीर दिखाई।

"ये लड़कियां आती हैं?"

"ये दो बार आई है।" उसने सोमनी की तस्वीर पर उंगली रखी।

मोना चौधरी ने वो तस्वीर जेब में डाली और दूसरी तस्वीर जेब से निकाली। जिसमें जाफर शरीफ...प्रिया और रंजन जोशी दिखाई दे रहे थे।

"ये आदमी आया कभी यहां?" मोना चौधरी ने जाफर शरीफ की तस्वीर पर उंगली रखी।

"हां।" उसके होठों से निकला—"रात को ही तो आया था ये।"

"रात को?"

"हां। गुस्से में था। रंजन को किसी बात पर डांट रहा था। मैं तो दूसरे कमरे में थी। पन्द्रह मिनट रुका था, फिर चला गया। उसके बाद रंजन देर तक परेशान रहा। पीता रहा था।"

मोना चौधरी ने होंठ सिकोड़कर सिर हिलाया—

"मेरी सलाह मानो तो फूट लो। रंजन के साथ रहकर तुम मुसीबत मोल ले रही हो। कोई और मुर्गा फंसा लो।"

"क्या मतलब?"

"नहीं समझीं?"

"नहीं।"

"रंजन ठीक आदमी नहीं है। पुलिस यहां आई तो तुम्हें भी पकड़ लेगी। अब भी बात समझ में नहीं आई तो यहीं बैठी रहो। जब फंसोगी तो तब मेरी बात समझ में आ जायेगी।" कहकर लिफाफा थामे मोना चौधरी बाहर निकल गई।

□□□

□□□

मोना चौधरी वहां से सीधा अपने फ्लैट में पहुंची। मोना चौधरी दरवाजे के की-होल में चाबी लगा रही थी कि सामने वाले फ्लैट से नन्दराम निकलता दिखा। मोना चौधरी को देखते ही उसने सिर झुका लिया और आगे बढ़ा।

"नन्दराम जी।" मोना चौधरी को उसके व्यवहार पर हैरानी हुई।

नन्दराम की चाल कुछ धीमी हुई, परन्तु वो रुका नहीं।

"नन्दराम... ।" मोना चौधरी ने पुनः पुकारा।

नन्दराम ठिठका। पलटकर मोना चौधरी को देखा। चेहरे पर उदासीनता थी।

"क्या हुआ?" मोना चौधरी ने हैरानी से पूछा।

"ब्रेड लेने जा रहा हूं।" उसने लटके स्वर में कहा।

"तो इसमें मातमी सूरत बनाने की क्या जरूरत है?" मोना चौधरी का स्वर अजीब-सा था।

"मेरी बीवी आ गई है।"

"आ गई?" मोना चौधरी का चेहरा खुशी से चमक उठा।

"तुम क्यों खुश हो रही हो?"

"तुम्हारी तो पौ-बारह हो गई। अकेले बैठे सड़ते रहते थे। अब तो... ।"

"वैसा कुछ नहीं है।"

"क्यों?"

"तबीयत खराब है, पन्द्रह दिन का आराम बोला है डाक्टर ने।"

"कोई बात नहीं। सोलहवें दिन... ।"

"तो भी कोई फायदा नहीं।"

"क्यों?"

"सोलहवें दिन बॉस के साथ महीने के टूर पर जाना है, चाइना।"

"फिर तो सच में बुरा हुआ।"

"हर बार ही ऐसा होता है नी।"

मोना चौधरी ने दरवाजा खोला। दूसरे हाथ में रंजन जोशी के यहां से लाई लिफाफा पकड़े थी।

"सोलहवें दिन तुम आना नी।"

"क्यों?"

"ठण्डी बियर मारेंगे वड़ी। मैं फ्रिज में लगा के रखूंगा साईं।"

मोना चौधरी फ्लैट में गई और नन्दराम को मुस्कुराकर देखा।

नन्दराम भी मुस्कुराया।

"किसी और से बात करके रखना। मेरे पास इन बातों के लिये वक्त नहीं है।" मोना चौधरी ने कहा और दरवाजा बन्द कर लिया। फिर वो बैडरूम में पहुंची। लिफाफा बैड पर रखा।

लिफाफे में मौजूद कागजों को अच्छी तरह चैक करना चाहती थी, इस आशा के साथ कि कुछ हासिल होगा। जेब में रखी सी.डी. भी बैड पर रखी। उसके बाद बाथरूम में जाकर हाथ-मुंह धोया, फिर किचन से कॉफी बना लाई। दोपहर हो चुकी थी, परन्तु लंच का मन नहीं था।

कॉफी के अभी दो घूंट ही पिए थे कि मोबाइल फोन की बैल बजी।

मोना चौधरी ने स्क्रीन पर देखा। देविका का फोन था।

"कहो...।" मोना चौधरी ने कॉल अटैण्ड की।

"तुम आईं नहीं अभी तक?" देविका की आवाज कानों में पड़ी।

"अभी नहीं आ सकूंगी।"

"क्यों?"

"मेरे मेकअप का मास्क रानी बना रही है। शाम तक वो मास्क मुझे देगी। इस समय मैंने मेकअप उतार रखा है।"

"ओह!"

"कोई खास बात?"

"दो फोन आये थे, प्रिया को पूछ कर, फोन काट दिये गये।"

"रोमी और गोपाल क्या कर रहे हैं?"

"टाइम बिता रहे हैं, छानबीन कर रहे हैं कि शायद कोई काम की चीज मिले।"

"लगे रहो।" मोना चौधरी ने कहा और फोन बन्द कर दिया। चेहरे पर सोच के भाव थे।

कॉफी समाप्त करने के बाद मोना चौधरी लिफाफे में मौजूद कागजों को चेक करने लग गई।

❑❑❑

❑❑❑

मोना चौधरी को पता ही न चला कि दो घंटे कब और कैसे बीत गये।

उन कागजों में इस कदर खो गई थी।

आखिरकार मोना चौधरी ने कागजों को एक तरफ रखा और आंखें बन्द कर लीं।

इन कागजों से रंजन जोशी का चेहरा पूरी तरह उजागर हो गया था। वो जाफर शरीफ के खास आदमियों में से था। साथ ही गृह मंत्रालय से वास्ता रखते, देश के कई गोपनीय कागज भी मिले थे।

लेकिन मोना चौधरी अभी रंजन जोशी पर हाथ नहीं डालना चाहती थी। उस पर हाथ डालने का मतलब था, दूसरों का सावधान हो जाना और मामला धीमा होना।

मोना चौधरी की निगाह बैड पर रखी सी.डी. पर पड़ी।

अगले ही पल सी.डी. उठाई मोना चौधरी ने, डी.वी.डी. की तरफ बढ़ गई। उसने सी.डी. लगाई और चालू करके सामने आ बैठी। टी.वी. स्क्रीम पर धुंधले-धुंधले से दृश्य उभरे।

मोना चौधरी की निगाह स्क्रीम पर टिकी रही।

तभी फोन बजा।

"हैलो... ।" मोना चौधरी ने बात की।

"रहमत बिला का फोन आया था।" देविका की आवाज आई–"वो तुमसे बात करना चाहता था।"

"फिर?"

"मैंने बोला कि तुम नहीं हो यहां। वो तुम्हारे मोबाइल फोन का नम्बर मांग रहा था।"

"मत देना।"

"तुम क्या रहमत बिला से मिली थीं?" देविका ने पूछा।

"हां।"

"मुझे नहीं साथ ले गई?"

"जरूरत नहीं थी।" मोना चौधरी ने कहा और फोन बन्द कर दिया।

उसके बाद मोना चौधरी की निगाह पुनः स्क्रीन पर जा टिकी।

स्क्रीन पर अभी भी धुंधला-धुंधला सा नजर आ रहा था। परन्तु धीरे-धीरे वो स्पष्ट होने लगा।

पहाड़ को काटकर बनाये गये छोटे रास्ते में कुछ आदमी आते और जाते दिखे। वो सब खतरनाक लग रहे थे। ये भी स्पष्ट हो रहा था कि वो साधारण कैमरा न होकर खुफिया कैमरा था। जो कि कमीज पर या बांह के बटनों की जगह फंसा रखा था। क्योंकि तस्वीर कभी स्पष्ट दिखती तो कभी अस्पष्ट नजर आने लगती। कैमरा जिसने भी लगा रखा था, वो व्यक्ति आगे बढ़ता जा रहा था।

कदमों की आहटें ही सुनाई दे रही थीं।

वो रास्ता खत्म हो गया।

कैमरे वाला बायीं तरफ मुड़ा।

कुछ आगे जाकर वो एक कमरे के सामने ठिठका।

"रामसिंह... ।" आवाज आई।

मोना चौधरी ने फौरन आवाज पहचानी।

आवाज रंजन जोशी की थी।

"हां।" भीतर से आवाज आई–"आओ रंजन... ।"

रंजन जोशी भीतर प्रवेश कर गया।

स्क्रीन पर चालीस बरस के मूंछों वाले व्यक्ति का चेहरा चमका।

"तुम अभी तक यहीं हो?"

"काम में व्यस्त था, तुम क्या मीटिंग में जा रहे हो?"

"हां।"

"रुको, मैं भी साथ चलता हूं।"

रामसिंह का चेहरा कभी स्क्रीन पर नजर आता तो कभी नहीं।

"कौन-कौन आ रहा है मीटिंग में?" बैठने का अहसास हुआ रंजन जोशी के।

"तुम्हें नहीं पता?"

"अभी तो आया हूं मैं। सबसे पहले तुमसे ही मिला हूं। इस बार मेरे साथ सोमनी भी आई है।"

"सोमनी? उसकी क्या जरूरत थी आने की?"

"वो हमारे काम की है। आना चाहती थी, मैं ले आया। देख भी लेगी कि हम कितने ताकतवर हैं।"

"जाफर शरीफ को सोमनी के आने का पता है?"

"मैंने चलने से पहले ही जाफर को बता दिया था। जाफर ने इन्कार नहीं किया।"

"सोमनी ने यहां का रास्ता देख लिया होगा?"

"नहीं। एक खास जगह से, मैंने उसकी आंखों पर पट्टी बांध दी थी। इस पर सोमनी ने एतराज तो उठाया था, लेकिन मैंने उसे समझा दिया कि ऐसा करना जरूरी है। जाफर ने ऐसा करने को कहा है।"

"तो वो चुप हो गई?"

"हां।"

मोना चौधरी दिलचस्पी से बातें सुन रही थी। नजरें स्क्रीन पर टिकी थीं।

"तुमने बताया नहीं कि कौन-कौन आ रहा है मीटिंग में?"

"मैं, तुम, सोमनी, प्रिया, जाफर शरीफ, पड़ोसी देश का
मंत्री अब्दुल्ला और उसके साथ तीन आदमी हैं।"

"तीन आदमी?"

"हां।"

"कौन हैं वो?"

"खतरनाक लोग हैं वो तीनों, अभी इतना ही पता है।"
रामसिंह उठ खड़ा हुआ था। स्क्रीन पर अब रामसिंह के हाथ नजर आ रहे थे—"वो मंत्री अब्दुल्ला कुछ प्लानिंग लेकर आ रहा है।"

"किस बात की प्लानिंग?"

"ये तो मुझे भी नहीं पता।"

कुल पल वहां खामोशी रही।

"सोमनी कहां है?"

"मैं उसे कमरे में छोड़ आया था। बाहर गार्ड खड़ा है, वो उसे मीटिंग वाले कमरे में पहुंचा देगा।"

"चलें?"

"हां, वक्त हो गया है।"

दोनों बाहर निकले और आगे बढ़ने लगे।

स्क्रीन पर रास्ते के और दीवारों के दृश्य आने लगे।

स्पष्ट लग रहा था कि ये सारी जगह पहाड़ को काट कर बनाई गई है। या फिर पहाड़ प्राकृतिक तौर पर ही खोखला मिल गया होगा तो उसमें ठिकाना बना लिया।

उनके आगे बढ़ने की आवाज कानों में पड़ रही थी।

"प्रिया कहां है?" रंजन जोशी ने पूछा था।

"यहीं होगी। वो जब से आई है, मुझसे मुलाकात नहीं हुई।"

"प्रिया हमारा बहुत काम कर रही है।"

"नोट भी तो ले रही है।" रामसिंह ने कहा।

"बात अब नोटों की नहीं रही। प्रिया अब हमारे भीतर तक शामिल हो गई है। जितना कुछ हम जानते हैं, उतना ही वो जानती है। अब वो हमारा ही हिस्सा बन चुकी है।"

रामसिंह ने कहा—"वो हमारी बराबर की साथी है।"

"ठीक कहा तुमने।"

"लेकिन कभी-कभी जाने क्यों लगता है कि प्रिया धोखा दे सकती है।" रामसिंह ने कहा।

"क्यों लगता है ऐसा?"

"पता नहीं।" रामसिंह की गहरी सांस लेने की आवाज आई— "मैंने अपने अंदेशे से जाफर शरीफ को अवगत करा दिया था।"

चन्द पलों की खामोशी के बाद रंजन जोशी की आवाज सुनाई दी।

"जाफर क्या बोला?"

"चुप रहा। जवाब में प्रिया के बारे में कुछ भी नहीं कहा।"

"इसका मतलब जाफर भी शायद प्रिया के बारे में यही सोच रहा होगा।"

मोना चौधरी की दिलचस्पी चरम-सीमा पर पहुंचने लगी थी।

घोटाला गहरा है।

ये तो अब मोना चौधरी को स्पष्ट लगने लगा था।

"क्या मालूम?"

"उसका चुप रहना तो यही जाहिर करता है कि या तो वो तुमसे सहमत नहीं, या फिर पूरी तरह सहमत है।"

उनकी कोई आवाज नहीं आई।

जूतों की आवाजें बता रही थीं कि वे आगे बढ़ रहे हैं।

स्क्रीन पर दीवार रास्ते के ही अस्पष्ट से दृश्य आ रहे थे। कभी-कभार सामने से आते किसी का चेहरा कैद हो जाता खुफिया कैमरे में।

"तुमने प्रिया में ऐसा क्या नोट किया कि उस पर शक करने की सोच बैठे?" रंजन जोशी ने पूछा।

"पता नहीं। कभी वो बहुत अपनी लगती है तो कभी खटकने लगती है।" रामसिंह बोला।

"ये तो वजह न हुई।"

"पता नहीं, वजह हुई या नहीं।" रामसिंह की आवाज में गहरी सांस लेने के भाव थे।

"जाफर को अगर प्रिया पर शक होता तो वो इस मीटिंग में प्रिया को कभी न बुलाता।" रंजन जोशी बोला।

"जाफर किस तरह सोचता है, मैं नहीं जानता।"

"सोमनी के बारे में तुम्हारा क्या विचार है?" रंजन जोशी ने पूछा।

"तुम सबके बारे में, मेरे विचार ही क्यों पूछ रहे हो?"

"बात चली तो पूछ रहा हूं, वैसे भी तुम जाफर शरीफ के खास आदमी हो।"

"सोमनी अच्छा काम कर रही है।"

"जबकि मुझे सोमनी खटकती है।"

"क्यों?"

"वो मिलिट्री सीक्रेट सर्विस में काम करती है। वो जब भी चाहे हमें बरबाद कर सकती है।"

"लेकिन वो हमारी वफादार है।"

"गद्दारी की सोच दिमाग में आते देर नहीं लगती रामसिंह।"

"ऐसा है तो तुम उसे अपने साथ यहां क्यों लाये हो?"

रंजन जोशी की आवाज नहीं आई।

"खामोश क्यों हो गये?"

"तुम सब उस पर विश्वास करते हो, इसलिये साथ ताना पड़ा, बोलो क्या गलत किया?"

"नहीं, ठीक किया। हमें सोमनी पर भरोसा है।" रामसिंह का सुनाई देने वाला स्वर शांत था—"मेरे ख्याल में सोमनी हो या प्रिया! सब ठीक हैं। चूंकि हमारा धन्धा ही ऐसा है, इसलिये शक करना पड़ता है या हो जाता है।"

"मेरे ख्याल में तो सोमनी या प्रिया को यहां से दूर रखना चाहिये था। जैसे उनसे काम ले रहे थे, वैसे ही लेते रहते।"

"अब वो हमारे पुराने लोग हो गये हैं। बाकी बातें सोचने

के लिये जाफर है।"

"मुझे क्या... मैं तो अपना काम ठीक से करता हूं।" रंजन जोशी ने कहा।

कुछ देर बाद वे दोनों एक ऐसे बन्द दरवाजे के सामने रुके, जिस पर दो गनमैन खड़े थे। उन्होंने सैल्यूट मारा और दरवाजा खोलकर सावधान से खड़े हो गये।

रामसिंह और रंजन जोशी भीतर प्रवेश कर गये।

दरवाजा पुनः बन्द हो गया।

मोना चौधरी ने रिमोट उठाया और बटन दबाकर वी.सी.डी. को पॉज कर दिया।

स्क्रीन पर आते दृश्य वहीं रुक गये थे।

मोना चौधरी के सामने नई बातों का खुलासा हुआ था।

तेजी से दौड़ रहा था मोना चौधरी का दिमाग।

सोमनी... प्रिया... रंजन जोशी...तीनों ही जाफर शरीफ के लिये काम करते थे। ये बात तो सी.डी. देखने से पक्की हो गई थी, परन्तु रंजन जोशी अपनी कमीज पर खुफिया कैमरा लगाये, जाफर शरीफ की जासूसी क्यों कर रहा था?

मोना चौधरी के मस्तिष्क में खलबली पैदा हो गई थी।

मोना चौधरी सोचों में गुम किचन में पहुंची और पांच मिनट बाद कॉफी का मग लिए वापस आ गई। उसके चेहरे के भाव बता रहे थे कि वो सोचों में कहीं उलझी हुई है। उसने कॉफी का घूंट भरा और रिमोट उठाकर वी.सी.डी. को प्ले करने जा रही थी कि फोन की बैल बजी।

मोना चौधरी ठिठकी। रिमोट रखकर मोबाइल फोन उठाया।

"हैलो... ।" मोना चौधरी ने कॉलिंग स्विच दबाकर बात की।

"अभी रंजन जोशी का फोन आया था। वो गुस्से में था। तुम्हें पूछ रहा था।" देविका की आवाज कानों में पड़ी।

"और क्या कह रहा था?"

"उसका बात करने का ढंग ऐसा था, जैसे तुमने कोई

नुकसान कर दिया हो उसका। तुमसे बात करने के लिये वो मरा जा रहा था। उसका कहना है कि तुम उसके घर से जरूरी सामान ले गई हो।''

मोना चौधरी के होठों पर मुस्कान उभरी।

''वो तुम्हारा मोबाइल नम्बर मांग रहा था। मैंने नहीं दिया।''

''उसे लटकाते रहो। अभी नम्बर नहीं देना।''

''तुम क्या रंजन जोशी के घर गई थीं?''

''हां।''

''ओह, क्या लाईं वहां से?''

''अपना काम करो। ये तुम्हें बताना जरूरी नहीं।'' मोना चौधरी ने कहा और फोन बन्द कर दिया।

मोना चौधरी जानती थी कि रंजन जोशी शक के तौर पर उसे फोन कर रहा है कि वो आकर उसका सामान ले गई होगी। शक इसलिये कि रंजन जोशी ने जब उसे आफिस में देखा था, तो वो मेकअप में थी और जब उसके घर गई तो बिना मेकअप में थी। वहां मौजूद युवती ने उसे दूसरा हुलिया ही बताया होगा उसका।

फिर भी रंजन जोशी को शक होगा कि वो आई हो सकती है या किसी को भेजा हो सकता है उसने।

मोना चौधरी ने रिमोट उठाया और प्ले का बटन दबा दिया।

रुकी तस्वीरें, स्क्रीन पर पुनः जीवित हो उठीं।

करीब बीस फीट लम्बा-चौड़ा कमरा नजर आने लगा। तीव्र प्रकाश वहां फैला था। कमरे के बीचों-बीच बड़ी-सी गोल टेबल मौजूद थी और उसके गिर्द कई कुर्सियां पड़ी थीं। एक तरफ दीवार के साथ भी कुछ कुर्सियां और दीवान पड़ा था।

तभी स्क्रीन पर प्रिया और सोमनी दिखाई दीं।

दोनों टेबल के गिर्द कुर्सियों पर बैठी थीं।

''ओह सोमनी, तुम आ गईं।'' रंजन जोशी बोला—''मैं तो सोच रहा था कि तुम नहीं पहुंची होगी।''

''मैं आ गई...अभी आई।'' सोमनी ने कहा।

''हैलो प्रिया... ।''

प्रिया, रामसिंह और रंजन जोशी से मिली।

''जाफर साहब नहीं दिख रहे।'' रंजन जोशी ने पूछा।

''मैं भी आ गया।''

सबकी निगाह आवाज की तरफ घूमी।

वो पांच फीट का था।

शक्लो-सूरत से मामूली-सा दिखने वाला व्यक्ति, लेकिन कारनामें करने में बेहद खतरनाक। उसे देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वो खूंखार आतंकवादी हो सकता है। उसका दिमाग ऐसा था कि शैतान का घर हो। वो कब क्या सोचता है, पता ही नहीं चलता था। सामने वाले से ऐसे बातें करता था कि मिनटों में ही उसका दोस्त बन जाता था। कई रंगों में रंगा था जाफर शरीफ। यूं तो पाकिस्तानी नागरिक था जाफर, परन्तु सबसे यही कहता था कि वो कश्मीरी है। यहीं पैदा हुआ था और दस साल का था जब सीमा पार करके पाकिस्तान चला गया था। उसके मां-बाप अभी भी कश्मीर में रहते हैं।

''स्वागत है।'' प्रिया कह उठी—''आपके बिना तो सब सूना-सूना लग रहा था।''

''तभी तो मैं हाज़िर हो गया।'' जाफर शरीफ हंसा—''तुम कैसी हो सोमनी?''

''ठीक... ।''

''काम कैसा चल रहा है?''

''आपकी दुआ से सब बढ़िया।''

''मिस्टर पहाड़िया को शक तो नहीं हुआ कि तुम मेरे लिये काम करती हो?'' मुस्कुराते हुए जाफर शरीफ पूछ बैठा।

''नहीं, बिल्कुल भी नहीं।''

''लेकिन तुम ब्लू क्रॉस वाली फाइल नहीं ला सकीं, जो मिस्टर पहाड़िया के कब्जे में है।''

''उसे हासिल करने की कोशिश करना खतरनाक है

जाफर।'' सोमनी मुस्कुराकर बोली—''मिस्टर पहाड़िया ने उसे बहुत ही सुरक्षित रखा हुआ है। फिर भी मेरी कोशिश यही होगी कि वो मैं तुम्हें दे सकूं।''

''वो फाइल खास है। जल्दी ले जाओगी तो बहुत बढ़िया रहेगा।'' जाफर बोला।

''उसमें है क्या?'' रंजन जोशी ने पूछा।

मोना चौधरी को स्क्रीन पर किसी-न-किसी का चेहरा दिखाई दे जाता था।

इस सारी बातचीत को वो बहुत ही दिलचस्पी से सुन रही थी।

''अगले साल हिन्दुस्तानी मिलिट्री बॉर्डर पर क्या-क्या कदम उठाने हैं, वो सब कुछ फाइल में दर्ज है।''

''ओह... ।''

''अगर वक्त रहते इन बातों का पता चल जाये तो हम अपनी सुरक्षा के कदम पहले ही उठा लेंगे।''

''समझा... ।'' फिर रंजन जोशी सोमनी से बोला—''उस फाइल को लाने की तुम कोशिश क्यों नहीं करतीं?''

''कोशिश तो कर रही हूं, लेकिन आसान नहीं। मिस्टर पहाड़िया बहुत सतर्क आदमी हैं। वो मुझे पकड़ लेंगे। ऐसा काम करने का क्या फायदा कि मैं ही पकड़ी जाऊं और बाकी के काम रुक जायें।'' सोमनी ने गम्भीर स्वर में कहा—''फिर भी मेरी कोशिश पूरी है कि मैं ब्लू क्रॉस वाली फाइल को ला सकूं।''

जाफर शरीफ ने प्रिया को देखकर कहा—

''तुम्हारे क्या हाल हैं प्राइवेट जासूस साहिबा?''

''बढ़िया।'' प्रिया मुस्कुराई।

''तुम अच्छा काम कर रही हो।'' जाफर शरीफ ने कहा—''लेकिन तुमने मुझे उन एजेन्टों की लिस्ट हासिल करके नहीं दी, जो पाकिस्तान में जमे, देश की जड़ें खोखली कर रहे हैं।''

''मैं उन हिन्दुस्तानी एजेन्टों की लिस्ट हासिल करने की कोशिश कर रही हूं।''

''किससे?''

''डिफेंस में क्लर्क है। नारायण नाम है उसका। वो कहता है कि जासूसों की लिस्ट टाइप होने के लिये उसके पास आने वाली है। जब भी वो लिस्ट उसके पास आई, उसकी एक कॉपी वो मुझे देगा।''

''लालच क्या दिया है उसे?''

''वो कई बार मेरे साथ रात बिता चुका है।''

''इतना ही काफी नहीं, उसे दस-बीस लाख भी देना चाहिये। आजकल कुत्ते सिर्फ हड्डी में ही शांत नहीं होते।''

''वापस जाकर मैं नारायण से बात करूंगी।''

इसके बाद करीब मिनट भर चुप्पी रही।

जाफर शरीफ की आवाज पुनः सुनाई दी—

''प्रिया! मैंने तुम्हारे लिये कोई और काम सोचा है।''

''क्या?''

''बाद में बताऊंगा, लेकिन तुम जो काम करती हो, अपने धन्धे का सारा ब्यौरा अपने डुप्लीकेट को दे देना...वो... ।''

''डुप्लीकेट?'' प्रिया चौंकी।

''हां। अभी तुम्हें तुम जैसी प्रिया से ही मिलाऊंगा। पाकिस्तान से वो तैयार होकर आई है। कोई नहीं कह सकता कि वो प्रिया नहीं।''

''जाफर साहब! मेरे ख्याल में आप मुझ पर किसी तरह का शक कर रहे हैं।'' प्रिया ने एतराज उठाया।

''ऐसी तो कोई बात नहीं। तुम्हें मैं कोई बड़ा काम देना चाहता हूं। इसलिये ये किया जा रहा है।''

''अपनी जगह का जो काम मैं कर सकती हूं, वो कोई दूसरा कैसे कर सकता है? मेरे लिए अपना काम ही बड़ा है।''

''अभी तुम नहीं समझोगी। बाद में तुम्हें आराम से समझा दूंगा।''

"आप मुझे स्पष्ट बताइये कि मैंने ऐसा क्या कर दिया जो मेरी जगह मेरे डुप्लीकेट को बिठाया जा रहा है।" प्रिया बोली।

कुछ चुप्पी के बाद मोना चौधरी को जाफर शरीफ की आवाज सुना दी।

"असलम की याद होगी तुम्हें?"

"हां। महीना भर पहले आपने उसे मेरे पास भेजा था कि मैं उसे अपना असिस्टेंट बना कर रखूं और मैंने रखा भी, परन्तु कुछ दिन बाद ही एक कार की टक्कर में वो मारा गया।"

"ठीक कहा।" जाफर शरीफ ने गम्भीर स्वर में कहा—"लेकिन रामसिंह का ख्याल है कि उसे मारा गया है।"

"मारा गया?" प्रिया की नजरें रामसिंह पर ठहरीं—"किसने मारा?"

जाफर शरीफ ने ही जवाब दिया।

"तुमने मारा, ऐसा कहता है रामसिंह।"

"क्यों?"

"क्योंकि असलम को शक होने लगा था कि तुम हमसे किसी तरह की गद्दारी कर रही हो।"

"ये झूठ है।"

"हो सकता है झूठ हो।" रामसिंह बोला—"अभी हम सिर्फ शक पर ही चल रहे हैं। तभी तुम्हारा डुप्लीकेट तुम्हारी जगह पर भी जा रहा है और तुम हमारे पास कैद में रहोगी और पन्द्रह-बीस दिन में तुम्हारी डुप्लीकेट आसानी से जान लेगी कि तुम ईमानदारी से काम कर रही हो या बेइमानी से।"

कुछ खामोशी के बाद प्रिया की आवाज आई—

"मुझे कोई एतराज नहीं... ।"

तभी रंजन जोशी की आवाज सुनाई दी—

"रामसिंह! तुमने मुझे तो ऐसा कुछ नहीं बताया कि प्रिया पर शक किया जा रहा है?"

"बताने की जरूरत नहीं थी।"

जाफर शरीफ ने जेब से मोबाइल फोन निकाला और बात की।

"सुमेर, मेरे पास आओ।" कहकर फोन जेब में रख लिया।

प्रिया बेहद शांत बैठी थी कुर्सी पर।

तभी सोमनी उससे बोली—

"प्रिया, अगर सच में कोई बात है तो जाफर साहब से कह दो।"

"कोई बात नहीं है। जाफर साहब को अपनी तसल्ली कर लेने दो। बात इतनी आगे बढ़ गई है कि जाफर साहब अब मेरे कहे का यकीन नहीं करेंगे।" प्रिया के चेहरे पर शांत-सी मुस्कान उभरी।

जाफर शरीफ हौले से हंसकर बोला—

"यहां तुम आराम से रहोगी। कुछ दिन की ही तो बात है। वहां के सारे मामले अपने डुप्लीकेट को समझा देना कि तुम्हारी जगह लेने में उसे किसी तरह की परेशानी न आये।"

तभी एक तरफ का दरवाजा खुला और पांच लोगों ने भीतर प्रवेश किया।

एक पड़ोसी देश का मंत्री था। तीन अन्य आदमी थे और पांचवीं थी प्रिया की डुप्लीकेट। एकदम प्रिया। कद-काठी, चेहरा, बालों का स्टाइल। चलने-फिरने का ढंग।

प्रिया हैरानी से उस प्रिया को देखती रह गई।

"क्यों कैसी लगी अपनी डुप्लीकेट?" जाफर उसके चेहरे के भावों को देखकर हंस पड़ा।

"बहुत बढ़िया।"

उसी वक्त दूसरा दरवाजा खुला और तीस वर्षीय एक युवक ने भीतर प्रवेश किया।

"आओ सुमेर।" जाफर शरीफ बोला—"ये प्रिया है। अपना काम, इस डुप्लीकेट प्रिया को समझा देगी। इसके बाद प्रिया को कैद में रखना है। कैद का मतलब है, इसे बाहर नहीं जाने देना। किसी से बात नहीं करने देनी। बस, इसकी

अलावा प्रिया को कोई तकलीफ न हो।''

''ठीक है, जाफर साहब... ।''

इस आवाज को सुनते ही मोना चौधरी चौंकी।

''ले जाओ दोनों को... ।'' जाफर शरीफ ने कहा।

''आओ।'' सुमेर ने कहा।

फिर ऐसी आवाज आई जैसे सुमेर दोनों को लेकर बाहर निकल गया हो।

मोना चौधरी ने वी.सी.डी. पॉज कर दिया।

तस्वीरें स्क्रीन पर ठहर गईं।

मोना चौधरी धोखा नहीं खा सकती थी।

वो सुमेर की आवाज गिल की थी।

यानि कि सुमेर और गिल एक ही व्यक्ति थे।

मोना चौधरी कई पलों तक स्क्रीन को देखती रही।

नये रहस्य इस सी.डी. के द्वारा उसके सामने खुल रहे थे।

मोना चौधरी करीब पन्द्रह मिनट खामोश बैठी रही। जो हालात उसके सामने सी.डी. द्वारा आये थे, वो उन पर गौर कर रही थी। सोमनी का असली चेहरा, प्रिया की हकीकत, रंजन जोशी का खुलासा।

आखिरकार मोना चौधरी ने पुनः वी.सी.डी. चालू किया।

अस्पष्ट-सी तस्वीरें स्क्रीन पर उभरने लगीं।

''मानना पड़ेगा जाफर! बहुत सतर्क रहते हो।''

''जरूरी है मंत्री जी, वरना जाफर को तो लोग ही खा जायें।'' कहकर जाफर शरीफ हंसा।

''ये भी ठीक है। तुमने इसे यूं ही कैद किया है या विश्वास है कि ये दगाबाज है?'' मंत्री ने पूछा।

''दगाबाज है ये।'' जाफर शरीफ ने मुस्कुराकर कहा—''लेकिन प्रिया से प्यार से बात करना भी जरूरी है। क्योंकि कई बातें हैं जो सिर्फ वो ही जानती है, उसकी डुप्लीकेट को पता नहीं, जबकि उसकी डुप्लीकेट ने अब

उसकी जगह लेनी है तो वो बातें उसे पता होनी चाहियें।''

''यानि कि प्रिया बता देगी।''

''हां....।''

''न बताया तो?''

''दगाबाज है वो तो क्या हुआ, है तो अपने हाथों में, इसलिये उसे वफादारी दिखानी पड़ेगी।''

''यह भी खूब कही... ।''

फिर वो सब टेबल के साथ पड़ी कुर्सियों पर बैठे।

मोना चौधरी को उनके बैठने का एहसास हो रहा था।

फिर जाफर शरीफ की आवाज सुनाई दी।

''कहिये मंत्री जी, अचानक ही सीमा पार करके कश्मीर कैसे आना हुआ?''

''मेरे दोस्तों ने एक नया प्लान बनाया है, वो जंचा तो सोचा तुमसे कश्मीर मिला जाये।''

''कैसा प्लान, हमें भी बताइये।''

''यहां पर सब विश्वस्त ही हैं ना?''

''अपने ही हैं सब। कह दीजिये, जो कहना है।''

कुछ चुप्पी के पश्चात् मंत्री जी की आवाज आई—

''मिस्टर पहाड़िया... यानि कि इण्डियन मिलिट्री सीक्रेट सर्विस के चीफ अब हमारी राह में कांटे बिछाने लगे हैं। उसकी खास वजह ये है कि वो पुराने हैं और हमारे हथकण्डों से वाकिफ हैं। हम कदम उठायेंगे तो वो कदमों की काट सामने रख देते हैं।''

''हां, ये बात तो है। हमें कई बार शिकस्त का नुकसान खामखाह उठाना पड़ता है।'' जाफर शरीफ की आवाज थी।

मोना चौधरी तसल्ली से सारी बातचीत सुन रही थी।

''मिस्टर पहाड़िया अपने आप में चलता-फिरता कम्प्यूटर है।'' मंत्री जी ने कहा—''यानि कि उनके दिमाग में हिन्दुस्तान के इतने सीक्रेट भरे पड़े हैं कि अगर वो हाथ लग जायें तो सब कुछ हम जान लें।''

''बात तो ठीक है, क्या पता वो मुंह न खोले?'' जाफर

शरीफ ने कहा।

"पंछी जब पकड़ में आता तो पहले फड़फड़ाता है। तड़पता है, फिर थकता है, गहरी-गहरी सांसें लेने लगता है। उसके बाद धीरे-धीरे नखरे दिखाकर, आहिस्ता-आहिस्ता बातों का जवाब देने लगता है।" मंत्री जी मुस्कुरा कर कह रहे थे—"हमारे पाकिस्तान में पहुंच कर बड़े-बड़े मुंह खोल देते हैं।"

"मैं मिस्टर पहाड़िया की बात कर रहा हूं मंत्री जी।"

"कोई भी हो, मुंह खुल जायेगा।"

खामोश बैठी सोमनी कह उठी—

"मिस्टर पहाड़िया से बातें बाहर निकलवाना असम्भव है।"

मंत्री जी ने सोमनी को देखा।

"तुम कैसे कह सकती हो?"

"मैं मिस्टर पहाड़िया को बाखूबी जानती हूं। वो पत्थर से भी ज्यादा सख्त हैं।"

"तो तुम ही हो जो मिस्टर पहाड़िया के करीब हो?"

"हां...।"

"फिक्र मत करो। एक बार वो पाकिस्तान पहुंच जायें, मुंह खुलवाना हमारी जिम्मेवारी रही।"

"लेकिन मंत्री जी...।" बोला जाफर शरीफ—"मिस्टर पहाड़िया पर हाथ डालना आसान काम नहीं...।"

मंत्री ने अपने साथ के तीनों आदमियों को देखा।

"ये काम, मेरे साथ आये तीनों पाकिस्तानी शेर करेंगे।"

सबकी निगाह उन तीनों पर जा टिकी।

"ये तीनों ही खुफिया विभाग के एजेन्ट हैं। अकरम, बिलाल और काजी। इनका नेटवर्क पहले ही सारे हिन्दुस्तान में फैला है। दिल्ली में तो पाकिस्तान का नेटवर्क जरूरत से ज्यादा टाइट है। इस काम को ये तीनों अंजाम देंगे।"

"कोई खास प्लान है क्या?" जाफर शरीफ ने तीनों को देखा।

"हां।" काजी ने सिर हिलाया।

"क्या?"

"ये नहीं बता सकेंगे। माफी चाहते हैं।" अकरम ने कहा।

"कोई बात नहीं।" जाफर शरीफ मुस्कुराया—"वो प्लान ही क्या जो वक्तः से पहले खुल जाये।"

"काम कब शुरू करोगे?" रामसिंह ने पूछा।

"हम आ गये हैं तो काम भी शुरू हो जायेगा। या समझो शुरू हो गया।" बिलाल ने कहा।

"बढ़िया है। मेरे लायक कोई सेवा बताइये।" जाफर शरीफ बोला।

"रात हम यहीं रहेंगे और कल अपने काम के लिये दिल्ली रवाना हो जायेंगे।"

"जैसी आपकी इच्छा।"

मंत्री जी कह उठे।

"मैं तो इन तीनों को तुमसे मिलाने के लिये आ गया था। चाय-पानी हो गई है, अब मुझे भी सरहद पार छोड़ने का इन्तजाम करो, वहां मेरी वापसी का इन्तजार हो रहा है।"

"क्यों नहीं, मैं अभी इन्तजाम करवाता हूं।" जाफर शरीफ उठ खड़ा हुआ—"रामसिंह!"

"जी...।"

"मंत्री जी को अभी सरहद पार पहुंचाना है।"

"आधा घंटा लगेगा, मंत्री जी सरहद पार होंगे। आइये मंत्री जी।"

मंत्री और रामसिंह बाहर निकल गये।

वहां जाफर शरीफ, रंजन जोशी, सोमनी और वो तीनों रह गये।

"जाफर साहब! मेरा कोई काम न हो तो अपने कमरे में जाकर मैं कुछ आराम...।"

"हां-हां क्यों नहीं! कल फुर्सत पाकर तुम्हें बताऊंगा कि दिल्ली को बरबाद करने के लिये हमारी योजना क्या है?"

"मैं भी आराम कर लूं?" सोमनी बोली।

"बेशक...।"

रंजन जोशी और सोमनी, वहां से बाहर निकल कर तंग गैलरी में आगे बढ़ गये।

दोनों गम्भीर से थे।

"रंजन! प्रिया को इस तरह कैद कर लेना मुझे अच्छा नहीं लगा। क्या वो सच में गद्दार है?"

"जाफर कह रहा है तो अवश्य होगी, वरना वो जानबूझ कर ऐसा क्यों करेगा?"

"मुझे तो नहीं लगता।"

मोना चौधरी को स्क्रीन पर अस्पष्ट से हिलते हुए रास्ते नजर आ रहे थे।

"जाफर ने तुम्हारे मुंह से सुना तो उसे अच्छा नहीं लगेगा।"

"मैं तुमसे कह रही हूं।"

"मैं जाफर से कह सकता हूं कि तुम ऐसा कह रही हो।" रंजन जोशी बोला।

"मुझे विश्वास है कि तुम ऐसा कभी नहीं करोगे। क्योंकि हममें खास रिश्ता बन चुका है। और जाफर ने ये बात स्पष्ट तौर पर कह रखी है कि उसके लिये काम करने वाले आदमी औरत आपस में रिश्ता नहीं बनायेंगे। परन्तु तुमने बनाया मेरे साथ।"

"मैं तुमसे मजाक कर रहा था।"

"मैं भी तो मजाक कर रही थी। एक बात और कहना चाहती हूं।"

"क्या?"

"ये पाकिस्तानी एजेन्ट अकरम...बिलाल और काजी मिस्टर पहाड़िया पर हाथ न डाल पायेंगे। मिस्टर पहाड़िया खतरनाक आदमी हैं, वो हिन्दुस्तान की मिलिट्री सीक्रेट सर्विस के एजेन्ट हैं।" सोमनी बोली।

"हमें इस बारे में बात करने की जरूरत नहीं है। हमारा

उन तीनों से कोई वास्ता नहीं...।"

दोनों आगे बढ़ते जा रहे थे।

"ये आज तुमने कौन-सी कमीज पहनी हुई है।" एकाएक सोमनी बोली।

"क्यों?"

"ये मुझे जरा भी अच्छी नहीं लगती। तुम्हारी वो पीले फूलों वाली कमीज कहां है?"

"साथ लाया हूं, लेकिन तुम कब से मेरे कपड़ों का ध्यान रखने लगीं?" रंजन जोशी के स्वर में मुस्कुराहट थी।

ये सब सुनते हुए एकाएक मोना चौधरी के चेहरे पर अजीब से भाव आ गये थे।

"उस दिन से, जब हम दोनों ने रात बिस्तर पर गुजारी थी।" सोमनी भी मुस्कुराई।

"ठीक है, अगर तुम्हें पीले फूलों वाली कमीज पसन्द है तो वो ही पहन लेता हूं।"

"अभी।"

"ठीक है...अभी...पहन कर सो जाऊंगा।"

दोनों एक कमरे में आ पहुंचे।

"ये क्या कर रही हो?" रंजन जोशी की आवाज मोना चौधरी को सुनाई दी।

"तुम्हारी कमीज उतार रही हूं। पहले पीले फूलों वाली कमीज पहनो। उसमें तुम बहुत अच्छे लगते हो।"

मोना चौधरी समझ गई कि सोमनी उसकी कमीज इसलिये उतार रही है कि उस पर खुफिया कैमरा लगा है और उस कैमरे का रंजन जोशी को भी पता नहीं है।

स्पष्ट था कि सोमनी ने ही उसकी कमीज पर खुफिया कैमरा लगाया था।

एकाएक टी.वी. स्क्रीन में उभरती तस्वीरें गायब हो गईं और वहां झिलमिल-सी नजर आने लगी। मोना चौधरी ने टी. वी. ऑफ कर दिया।

बहुत खास सी.डी. थी ये।

कई चीजें उसके सामने आ गई थीं।

कई सवालों का जवाब बिना पूछे ही मिल गया था।

एकाएक मोना चौधरी की आंखों के सामने प्रिया का चेहरा चमका। जिस प्रिया की हत्या हुई है, क्या वो नकली प्रिया थी? असली प्रिया क्या जाफर शरीफ की कैद में है? प्रिया के सामने वाले फ्लैट में उसे गिल मिला था, यानि कि सुमेर1 सी.डी. में सुमेर की आवाज से स्पष्ट पहचाना था कि वो गिल की आवाज है। ऐसे में सुमेर उर्फ गिल वहां क्या कर रहा था?

सबसे बड़ा सवाल मोना चौधरी के सामने था कि ये सी.डी. कब की है?

क्योंकि मिस्टर पहाड़िया का अपहरण करने के लिये अकरम, बिलाल और काजी वहीं पर मौजूद थे। अभी तक मिस्टर पहाड़िया का अपहरण या फिर ऐसी कोई कोशिश होने की खबर उसने नहीं सुनी थी।

उन तीनों ने मिस्टर पहाड़िया के अपहरण की कोशिश हर-हाल में करनी थी।

और भी कई सवाल मोना चौधरी के सामने उभर रहे थे।

रह-रहकर मोना चौधरी की सोचें सोमनी पर जा टिकती थीं।

सोमनी जाफर शरीफ जैसे आतंकवादी के साथ काम कर रही थी, जबकि खुफिया कैमरा चुपके से रंजन जोशी की कमीज पर लगाकर, उन लोगों की बातें और चेहरे कैमरे में कैद कर रही थी। रंजन जोशी को जरा भी आभास नहीं था कि सोमनी, उसे कितने बड़े खतरे में डाल रही है। अगर जाफर शरीफ को रंजन जोशी की कमीज पर, कैमरा लगा होने के बारे में पता चल जाता तो उसने उसी वक्त रंजन जोशी को गोली मार देनी थी।

सोमनी चूमा-चाटी का लालच देकर रंजन जोशी को व्यस्त रखे हुए थी।

आखिर क्या चाहती है सोमनी?

मोना चौधरी ने मिस्टर पहाड़िया को फोन किया।

फौरन ही बात हो गई।

"कोई काम की बात पता चली?" मिस्टर पहाड़िया ने पूछा।

"बातें तो कई हैं, लेकिन आप जानना क्या चाहते हैं? प्रिया की जगह पर मुझे क्यों बिठाया, यह बात अभी तक आपने स्पष्ट नहीं की। ऐसे में मुझे क्या पता आप क्या जानना चाहते हैं?"

कुछ पल लाइन पर खामोशी रही।

"आप मुझसे कुछ छिपा रहे हैं।"

"कुछ नहीं, बहुत कुछ छिपा रहा हूं। मुझे तुम्हारी काबलियत पर भरोसा है कि प्रिया की जगह लेते ही सब कुछ तुम्हें समझ में आ जायेगा। बताने से तुम अपने निशाने से भटक सकती हो।"

"मैं फिर वही कह रही हूं कि मुझे तो सब समझ में आ रहा है, लेकिन मैं ये नहीं समझ पा रही कि मुझे इस्तेमाल करके आप क्या समझना चाहते हैं। आप क्या चाहते हैं?"

चन्द पलों की चुप्पी के बाद मिस्टर पहाड़िया की आवाज कानों में पड़ी—

"एक-दो दिन का वक्त दो मुझे, फिर तुमसे खुलकर बात करूंगा बेटी।"

"ठीक है। इस वक्त आप इतना जान लीजिये कि कुछ लोग आपका अपहरण करने के फेर में हैं।"

"कौन?"

"तीन पाकिस्तानी एजेन्ट हैं, जो इस वक्त दिल्ली में ही मौजूद हैं। उनके नाम हैं अकरम, बिलाल, काजी।"

"मैं सतर्क रहूंगा।"

मोना चौधरी ने फोन रख दिया।

सोमनी के बारे में मोना चौधरी चाहकर भी मिस्टर पहाड़िया को फोन पर नहीं बता पाई थी। मन में यही था

कि अभी बहुत कुछ है जानने को, वो भी जान ले।

मोना चौधरी ने वक्त देखा।

शाम के चार बज रहे थे।

मोना चौधरी उठी। वी.सी.डी. में से सी.डी. निकालकर जेब में ठूंसी और फ्लैट से बाहर निकल कर दरवाजे को लॉक किया। आगे बढ़ी कि ठिठक गयी।

सामने से नन्दराम आ रहा था। हाथ में ब्रेड पकड़ी थी।

"सैर हो रही है?"

"बीवी के लिए ब्रेड लेकर आया हूं।" उसने मुंह लटका कर कहा—"नाश्ता वो ब्रेड का ही करती है।"

"नाश्ता शाम को, चार बजे?" मोना चौधरी ने मुंह बनाया।

"उसकी सुबह तो रात को ही होती है। बॉस के साथ टूट पर जो रहती है।"

"तो यूं कहो कि बॉस ने आदतें बिगाड़ दी हैं।" मोना चौधरी मुस्कुराई—"तुम्हारी बीवी का घर रहना तुम्हें तो बहुत भारी पड़ रहा होगा। खूब सेवा हो रही है।"

"सेवा तो करनी पड़ेगी। आराम करने के लिये बैठता हूं, तो कहती है, घर से निकाल दूंगी।"

"फिर तो समझ ले तेरा काम हो गया। आज नहीं तो कल हो जायेगा।"

"आज रात मुझे फिल्म देखने भेज रही हे, वो भी जबरदस्ती।" नन्दराम बोला।

"क्यों?"

"साईं वो बॉस डिनर पे आ रहा है ना इसलिये। सुबह से सब्जियां बना रहा हूं रात के लिये। कहती है, जब बॉस डिनर के लिये आयेगा तुम घर पर नहीं रहना। इम्प्रेशन बुरा पड़ता है। कहती है रात को एक बजे घर आना।"

"बढ़िया है। मौज-मस्ती, बहार है।" मोना चौधरी मुस्कुराई और सीढ़ियों की तरफ बढ़ गई।

□□□

□□□

मोना चौधरी अपनी कार में बैठी ही थी कि फोन बजा।

"हैलो...।"

"मैं रानी। तुम्हारा मास्क तैयार है।"

"बहुत जल्दी तैयार कर लिया?"

"रात तक मास्क तुम्हें देने का वादा किया था। आधी रात से इसी काम पर लगी हुई हूं।"

"थैंक्स, कब दे रही हो मास्क। मैं सुबह से आफिस नहीं जा पाई।"

"एक घंटे बाद का कहीं का भी वक्त तय कर लो।"

"ठीक है। हम राजा गार्डन चौराहे पर मिलेंगे।"

"ओ०के०...कोई और काम की बात?"

"नहीं। अभी तो कुछ नहीं। प्रिया के मामले को टटोल रही हूं।" मोना चौधरी ने कहा।

"एक घंटे बाद राजा गार्डन चौक पर मिलेंगे।" रानी ने कहा और फोन बन्द हो गया।

मोना चौधरी फोन हाथ में लिये सोच भरे अंदाज में बैठी रही। अब उसके सामने काम करने के लिये रास्ते बहुत थे, लेकिन सोचना यह था कि वो किस रास्ते पर बढ़े।

पुनः फोन की बैल बजने लगी।

"रहमत बिला साहब तुमसे मिलने आये हैं।"

"कब?"

"बैठे हैं। वो आये और मैंने अभी फोन किया। आ रही हो या उन्हें बाद का वक्त दे दूं।"

"आ रही हूं। वो हरामी बंदा है, सतर्क रहना।" कहकर मोना चौधरी ने फोन बन्द किया और कार आगे बढ़ा दी।

रहमत बिला उसके पास आया है तो स्पष्ट है कि उसकी कही कोई बात रहमत बिला को लग गई, जिसकी वजह से उसे बात करने आना पड़ा।

□□□

□□□

मोना चौधरी आई डिटैक्टिव एजेन्सी के आफिस पहुंची।

गोपाल दरवाजे पर था।

"वो भीतर बैठा है।" गोपाल ने कहा।

मोना चौधरी दूसरे कमरे में पहुंची।

रहमत बिला कुर्सी पर जमा हुआ था। रोमी उसके पास ही बैठा था। देविका किसी फाइल को टेबल पर रखे देखने का बहाना कर रही थी कि मोना चौधरी को देखते ही बोली—

"गुड ईवनिंग मैडम!"

"गुड ईवनिंग।" मोना चौधरी ने सहज स्वर में कहा और टेबल के पीछे मौजूद कुर्सी पर जा बैठी।

रहमत बिला की शांत नजरें मोना चौधरी पर जा टिकीं।

रोमी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ था।

"कहो।" मोना चौधरी ने रहमत बिला से कहा—"कैसे आना हुआ?"

"मैं अकेले में बात करना चाहता हूं।"

"हम अकेले में ही हैं।"

"यहां तुम्हारे दो असिस्टेंट मौजूद हैं। तुम्हारे लिये ये अकेलापन हो सकता है, मेरे लिए नहीं।"

मोना चौधरी ने देविका और रोमी से कहा—

"तुम दोनों बाहर जाओ।"

रोमी ने अपनी जेब में हाथ डाला और मुट्ठी में बन्द कुछ निकाला। मोना चौधरी की टेबल का ड्रॉज़ खोला और उसमें रख लिया। वो माइक्रो फोन था, ताकि दूसरे कमरे में रहकर वो यहां होने वाली बातचीत सुन सके। टेबल के इस पार बैंठे रहमत बिला माइक्रो फोन नहीं देख सका।

"किसी चीज की जरूरत हो तो आवाज दे देना।" रोमी बोला और देविका के साथ बाहर निकल गया।

मोना चौधरी की निगाह रहमत बिला पर जा टिकी।

"कहो।"

"तुम चाहती क्या हो?" रहमत बिला शांत स्वर में बोला—"तुम मेरे पास क्यों आई थीं?"

"तुमने मेरी बात सुनी थी...याद है?" मोना चौधरी मुस्कुराई।

"याद है।"

"उससे तुम्हें इस बात का एहसास नहीं हुआ कि मुझे सब पता है, जो प्रिया को पता था।"

"हुआ...तभी तो तुम्हारे पास आया हूं।"

"जाफर शरीफ से बात हो गई तुम्हारी?"

रहमत बिला मोना चौधरी को देखने लगा।

"जाफर शरीफ से बात किए बिना तुम मेरे पास बात करने नहीं आ सकते।"

"तुम जरूरत से ज्यादा आगे बढ़ रही हो।"

"ऐसी ही आदत है मेरी... ।"

"तुम हो कौन?"

"मोना...।"

"मोना कौन?"

"तुम्हें ये जानने की जरूरत नहीं कि मैं कौन हूं, लेकिन मेरे कारण तुम लोगों का नुकसान नहीं होगा। मैंने नुकसान करना होता तो कर दिया होता। मैं अभी और भी बहुत कुछ जानती हूं, जो तुम्हें नहीं बताया।"

"और क्या?"

"मिस्टर पहाड़िया का अपहरण... ।"

रहमत बिला एकाएक सीधा होकर बैठ गया।

मोना चौधरी मुस्कुराई।

"मुझे पूरा विश्वास है कि तुम पहले से ही प्रिया पर नजर रखे, उसकी जासूसी कर रही थीं और उसके मरते ही तुमने तुरन्त उसका ये बिजनेस खरीदा और यहां बैठ गईं।" रहमत बिला कह उठा।

"शायद तुम ठीक कह रहे हो।"

"हकीकत में कौन हो तुम?"

"क्यों जानना चाहते हो मेरे बारे में?"

"तुम्हारे बारे में जाने बिना मैं आगे की बात तुमसे नहीं कर सकता। एक बात तो बताओ।"

"क्या?"

"प्रिया की हत्या तुमने की है?"

"मैंने?" मोना चौधरी ने मुंह बनाया—"मैं उसे क्यों मारूंगी?"

"क्योंकि तुमने उसका बिजनेस खरीदना था। उसकी जगह बैठना था।"

"ऐसा कुछ नहीं है। प्रिया की हत्या मेरे प्लान में कभी भी शामिल नहीं रही।"

"अपनी हकीकत बताओ।"

"पहले तुम कुछ खुलो, फिर मैं कुछ खुलूंगी।"

रहमत बिला मोना चौधरी को एकटक देखने लगा।

"चुप क्यों हो?" बोली मोना चौधरी।

"मुझे जाफर शरीफ ने तुमसे बात करने भेजा है।"

"तो मेरा ख्याल ठीक निकला।" मोना चौधरी मुस्कुराई—"तुमने खुलने में इतनी देर क्यों लगा दी? मैं तुम्हें अच्छी तरह समझा के आई थी कि मुझे मालूम है जाफर शरीफ से तुम्हारे सम्बन्ध हैं।"

"अपने बारे में बोलो। तुम मुझे कोई शरीफ औलाद नहीं लगतीं।" रहमत बिला बोला।

"मैं मोना चौधरी हूं।"

"मोना चौधरी...कौन मोना चौधरी?"

"किसी भी पुलिस वाले से मोना चौधरी के बारे में पूछ ले, वो तेरे को बता देगा।"

मोना चौधरी ने रहमत बिला की आंखें फैलती देखीं।

"तुम...तुम वो खतरनाक मोना चौधरी हो?"

"हां... ।"

रहमत बिला के चेहरे पर अभी तक अविश्वास के भाव थे।

"विश्वास नहीं आ रहा?" मोना चौधरी ने व्यंग से कहा।

"एकाएक सुना तो विश्वास आने में वक्त लगेगा। मुझे मालूम है तुम झूठ नहीं बोल रहीं।"

"कैसे मालूम है?"

"झूठे चेहरों को मैं फौरन पढ़ लेता हूं।" रहमत बिला ने पहलू बदला।

मोना चौधरी उसे देखती रही।

"प्रिया के मामले में तुम कैसे आ गईं?"

"तुम्हें बताना जरूरी है क्या? हम अभी दोस्त नहीं बने कि मैं तुम्हें सब कुछ बता दूं। अगर बाहर तुमने किसी को मेरी हकीकत बताई तो मैं तुम्हें छोड़ूंगी नहीं।"

रहमत बिला मुस्कुरा पड़ा।

"मैं भला क्यों बताऊंगा? तुम जैसे दोस्त तो किस्मत वाले को मिलते हैं। तुमने प्रिया की जगह क्यों ली?"

"क्योंकि पुलिस मेरे पीछे रहती हैं। हर समय पुलिस द्वारा पकड़े जाने का डर लगा रहता है। ऐसे में मुझे तो कोई आड़ चाहिये खुद को छिपाने के लिये। फिर प्रिया और उसकी हरकतें पहले ही मेरी निगाह में थीं। तभी किसी ने प्रिया का कत्ल कर दिया और मैंने उसका बिजनेस खरीदकर उसकी जगह सम्भाल ली।"

"पुलिस के पास तुम्हारी तस्वीर होगी। वो तुम्हें पहचान सकती... ।"

"पुरानी तस्वीर है। आसान नहीं है मुझे पहचानना।"

रहमत बिला ने सिर हिलाया।

"अब तुम कहो।"

"जाफर शरीफ ने मुझे कहा था कि अगर तुम काम की लगो तो तुम्हें साथ काम करने की ऑफर दे दूं।"

"बात नहीं जमेगी।"

"क्यों?"

"मुझे टुकड़ों पर पलने की आदत नहीं है। मैं शेर के मुंह से माल निकाल कर खाती हूं।"

"हमारे साथ काम करने में तुम्हें बहुत फायदा होगा। हमारा नेटवर्क बहुत तगड़ा है।"

"अच्छा!"

"हां। पूरे देश में हमारे लोग फैले हैं। वो सब हिन्दुस्तान को खोखला करते जा रहे हैं।"

"खूब!"

"पैसा पाकिस्तान से आता है। जितना चाहोगी मिलेगा।"

"करना क्या होगा?"

"जाफर शरीफ के लिये काम। जो तबाही वो कहेगा, वो फैलानी होगी।"

"तुम क्या करते हो?"

"मैं तो पाकिस्तान से आने वाले एजेन्टों को पनाह देता हूं। उन्हें अपने गैराज पर लगा देता हूं। कोई शक भी नहीं कर सकता। दो महीनों में उनका पहचान-पत्र और राशनकार्ड बनवा देता हूं कि हिन्दुस्तान में वो जहां टिकना चाहें, टिक जायें, उन्हें परेशानी न हो। जाफर मेरे काम से खुश है।"

"अरकम, बिलाल और काजी भी तुम्हारे पास आये थे?" मोना चौधरी ने पूछा।

"हां। जाफर ने उन्हें मेरे पास भेजा था। मैंने उनके पहचान-पत्र और राशन कार्ड भी बनवा...।" रहमत बिला कहते-कहते एकाएक ठिठका—"ये बात तुम्हें कैसे पता?"

"भूल गये तुम मोना चौधरी से बात कर रहे हो? मेरे दो आदमी जाफर के आदमियों में हैं।"

"ओह...।"

"वो मुझे सारी खबर देते रहते हैं।"

"तुम्हारे आदमी जाफर के आदमियों में फिट नहीं हो सकते।" रहमत बिला एकाएक विश्वास भरे स्वर में कह

उठा—"ये नामुमकिन है! ये तो हो सकता है कि जाफर के दो आदमियों को तुमने खरीद लियां हो।"

"एक ही बात है।"

"नहीं, बात में फर्क है मोना चौधरी।"

"उस रात तुम प्रिया से मिलने उसके फ्लैट पर गये थे।" मोना चौधरी कह उठी—"प्रिया के सामने वाले फ्लैट में मौजूद युवक को तुमने अपना कार्ड दिया था कि प्रिया को वो कार्ड दे दे, जब आये।"

रहमत बिला, मोना चौधरी को देखने लगा।

"मैंने तुमसे कहा था कि उसका नाम गिल है, जबकि हकीकत में वो सुमेर है... सुमेर। वो जाफर शरीफ का आदमी है। तुमने उसे जब कार्ड दिया तो पहचाना नहीं उसे?"

"मैं उसे नहीं जानता था कार्ड देने तक।" रहमत बिला होंठ भींचकर कह उठा—"जानता होता तो उस वक्त उसे वहां से उठा लाता। वो तो उसकी किस्मत अच्छी थी कि बच गया।"

"हुआ क्या?"

रहमत बिला ने होंठ भींच लिए।

"बताओगे नहीं?"

"सुमेर, जाफर शरीफ से गद्दारी करके भाग आया था। मेरे पास तस्वीर पहुंची सुमेर की कि इस गद्दार को तलाश करना है तो मुझे ध्यान आया कि रात को मैं इसे अपना कार्ड देकर आया था। मैं अगली सुबह ही अपने आदमियों के साथ प्रिया के सामने वाले फ्लैट में सुमेर को पकड़ने पहुंचा तो पता चला वो फ्लैट खाली है। वहां कोई नहीं रहता। ये बात प्रिया को भी पता होगी। तभी तो उसने सुमेर को वहां ठहरा दिया।"

"प्रिया को?"

"हां...।" रहमत बिला गहरी सांस लेकर बोला—"जिस प्रिया की हत्या हुई, वो असली प्रिया नहीं थी। असली प्रिया तो जाफर शरीफ के पास कैद थी, जो कि सुमेर के साथ जाफर

शरीफ के ठिकाने से भाग निकली थी।''

ये खबर प्रिया के लिए नई थी।

''अच्छा! ये बात मुझे नहीं पता थी। सुमेर ने जाफर शरीफ के साथ गद्दारी क्यों की?''

''मैं नहीं जानता... ।''

''और जाफर शरीफ ने प्रिया को अपनी कैद में क्यों रख लिया?'' मोना चौधरी ने पूछा।

''जाफर के मुताबिक वो गद्दार थी।''

''प्रिया?''

''हां।''

मोना चौधरी ने टेबल के ड्रॉज से पैकेट निकाला और सिगरेट सुलगा ली। चेहरे पर बेहद शांत भाव थे। रहमत बिला खामोश बैठा उसे देख रहा था।

''क्या किया था प्रिया ने? कैदी गद्दारी की?'' मोना चौधरी ने कश लेकर पूछा।

''ये मुझे नहीं पता। मेरा काम दूसरा है।'' रहमत बिला कह उठा—''बहुत बातें हो गईं अब। मैं कुछ ज्यादा ही तुम्हारे साथ खुल चुका हूं। काफी ज्यादा बातें तुम्हें बता दीं।''

जवाब में मोना चौधरी मुस्कुराई।

''अगर तुम हमारे साथ मिल जाओ तो हम दोनों को ही बहुत फायदा होगा। तुम खतरनाक हस्ती हो और हमारे कई कामों को तुम बहुत अच्छी तरह अंजाम दे सकती हो।''

''ये बात तो तुम ठीक कहते हो।''

''तो तुम्हारी हां समझूं? प्रिया की जगह लेने का सीधा मतलब है कि तुम जाफर शरीफ से सम्बन्ध चाहती हो।''

मोना चौधरी ने कश लिया और कह उठी—

''दीवान चन्द से तुम्हारा क्या वास्ता है?''

''दीवान चन्द?'' रहमत बिला की आंखें सिकुड़ीं।

''हां, जिसकी करोल बाग में एंटीक की शॉप है।''

रहमत बिला मोना चौधरी को घूरने लगा।

''क्या देख रहे हो?''

''तुम हमारे बारे में काफी कुछ जानती हो।''

''हां, जानती हूं। फिर भी तुमसे पूछ रही हूं कि दीवान चन्द तुम लोगों के लिये क्या करता है।''

''जाफर का एक गिरोह हिन्दुस्तान की दुर्लभ मूर्तियां चुराकर, दीवान चन्द को सौंपता है और उससे तगड़ी रकम लेता है। उस पैसे से हम हथियार खरीदते हैं।''

''हूं।''

''अब मैं तुम्हारी और किसी बात का जवाब नहीं दूंगा। बातें बहुत हो गईं।''

''मेरा भी यही ख्याल है कि बातें बहुत हो गईं।'' मोना चौधरी मुस्कुराई।

दोनों की आंखें मिलीं।

''मैं जाफर से कहूं कि तुम उसके लिये काम करने को तैयार हो? वो तुम्हें फोन कर ले।'' रहमत बिला बोला।

''जाफर को कुछ भी कहने की जरूरत नहीं। वो खुद ही मुझे फोन कर लेगा।''

''खुद ही...फोन कर लेगा?'' रहमत बिला की आंखें सिकुड़ीं।

''जाफर को पता है कि तुम मुझसे मिलने आये हो?''

''हां।''

''अब अगर जाफर को तुम नहीं मिलोगे तो वो तुम्हारे बारे में पूछने के लिये मुझे अवश्य फोन करेगा।''

''मैं नहीं मिलूंगा?'' रहमत बिला सतर्क-सा दिखने लगा।

उसी पल मोना चौधरी ने रिवाल्वर निकाली और रुख उसकी तरफ किया।

रहमत बिला चौंका।

''ये तुम क्या कर रही हो मोना चौधरी?'' उसके होठों से निकला।

तभी दरवाजा खुला और रोमी, देविका ने भीतर प्रवेश किया।

उनके हाथों में भी रिवाल्वरें थीं।

''इसे बाहर खड़ी मेरी कार तक पहुंचाओ।'' मोना चौधरी रहमत बिला को देखती एक-एक शब्द चबाकर कह उठी—''ये हरामी जाफर शरीफ के कहने पर देश के खिलाफ

मुझे खरीदने आया था।''

रोमी आगे बढ़ा और रहमत बिला की गर्दन पर रिवाल्वर की नाल रख दी।

रहमत बिला का चेहरा फक्क पड़ चुका था।

''ये...ये तुम क्या कर रही हो? अपराध की दुनिया में हम रिश्तेदार हैं।'' वो कह उठा।

''ऐसे रिश्तेदारों की मुझे जरूरत नहीं, जो दीमक की तरह मेरे घर को ही चाट जायें।''

''लेकिन...।''

''चुप रहो।''

''जाफर शरीफ तुम्हें छोड़ेगा नहीं। वो जानता है कि मैं तुमसे मिलने आया हूं।''

तभी देविका बोली–

''क्या करना है इसका?''

''खत्म करना है। ये खतरनाक आदमी है।'' मोना चौधरी दांत भींचे कह उठी–''सीमा पार से आये जाफर शरीफ के आदमियों को पनाह देकर ये उनके पहचान-पत्र और राशन कार्ड बनवाता है, ताकि वो हिन्दुस्तान में कहीं भी आराम से रहकर घातक वारदातों को अंजाम दे सकें।''

रहमत बिला का चेहरा फक्क था।

''बेहतर है, इसे कैद करके इससे भीतर के राज बाहर निकलवाये जायें।'' देविका ने पुनः कहा।

''इसे कैद करने से हमारे राज बाहर आ सकते हैं कि हमने इसे यहां कैद किया है।'' मोना चौधरी शब्दों को चबाकर कह उठी– ''नीचे खड़ी मेरी कार में डालो इसे और किसी सुनसान जगह ले चलो।'' कहने के साथ ही मोना चौधरी उठ खड़ी हुई–''मैं नीचे कार में जा रही हूं, इसे लेकर जल्दी आओ।'' वो बाहर निकल आई।

रोमी गर्दन पर नाल का दवाव बढ़ाकर गुर्रा उठा–

''चल उठ। वक्त से पहले मरना चाहता है तो ही रास्ते में शरारत करना।''

रहमत बिला की हालत बुरी थी। उसने तो सोचा भी न था कि ऐसा कुछ हो जायेगा।

❑❑❑

❑❑❑

पूरे रास्ते रहमत बिला बोलता रहा। माफी भी मांगता रहा और जाफर शरीफ के नाम पर धमकी भी देता रहा। जब ज्यादा बोलता तो रोमी रिवाल्वर की नाल और जोर से उसकी कमर में घुसेड़ देता तो कुछ पल के लिये वो चुप हो जाता।

मोना चौधरी ने बीस-पच्चीस मिनट बाद सुनसान जगह पर कार रोकी।

''देखो!'' रहमत बिला सूखे होठों पर जीभ फेरकर बोला–''तुम मुझे क्यों मार रही हो? म...मुझे छोड़ दो। मत मारो मुझे। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?''

''मेरी नजरों में तुम जाफर शरीफ से भी ज्यादा खतरनाक हो।'' मोना चौधरी ने दांत भींचकर कहा–''दिल्ली में आने वाले नये आतंकवादियों को तुम पनाह देते हो...और उनके पहचान-पत्र, राशन कार्ड बनाकर उन्हें आगे रवाना कर देते हो। देखने में मामूली, लेकिन ये बहुत ही खतरनाक काम है। तुम आतंकवादियों के पांव दिल्ली में जमाते हो और दिल्ली से बाहर भी। पहचान-पत्र और राशन कार्ड के दम पर वो कहीं भी रह सकते हैं।''

''ठीक है। मुझे माफ कर दो। अब मैं ऐसा नहीं करूंगा।'' रहमत बिला गिड़गिड़ाने के अन्दाज में बोला–''मुझे जाफर शरीफ ने कभी अपने जाल में फंसाया था, इसलिये उसके लिये काम...।''

''तुम क्या सोचते हो कि तुम्हारी बातों में मैं फंस जाऊंगी?''

''यकीन मानो। मैं सच...।''

तभी रोमी का हाथ रहमत बिला के गाल पर पड़ा। रहमत बिला छटपटा कर रह गया।

"अब चुप रहना।" रोमी गुर्राया।

मोना चौधरी कार का दरवाजा खोलते देविका से बोली।

"तुम ड्राइविंग सीट सम्भालो, हम अभी आते हैं।" मोना चौधरी बाहर निकली।

रोमी, रहमत बिला के साथ बाहर निकला।

मोना चौधरी उन दोनों के साथ सुनसान सड़क की ढलान उतर गई।

रहमत बिला पसीने-पसीने हो रहा था। मौत का खौफ उसके सिर पर सवार था।

"मुझे छोड़ दो। रहम करो मुझ पर। अब मैं कुछ नहीं करूंगा।"

उन दोनों के साथ मोना चौधरी पेड़ों के झुरमुट के पास जा रुकी।

"जाफर शरीफ का ठिकाना कहां है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"मैं तुम्हें सब बता दूंगा। तुम मुझे छोड़ दो। मेरी जान बख्श दो।" वो जल्दी से कह उठा।

"कहां है जाफर शरीफ का ठिकाना?" मोना चौधरी ने कठोर स्वर में पूछा।

"श्रीनगर से पहलगाम पहुंचो तो वहीं पर पास में ही है।"

"पता बोलो।"

"पता कोई नहीं है। उधर अब्दुल्ला चाय वाला है, उससे पूछ लेना जाफर के बारे में, वो अपना ही आदमी है।"

"और...?"

"और...और...जम्मू में। मेढा वाली गली...रामनगर।" रहमत बिला हड़बड़ा कर तेजी से बोल रहा था—"उस गली में हकीम साहब का मकान पूछ लेना। वो मकान भी जाफर शरीफ का ठिकाना है।"

"हकीम साहब कौन है?"

"कभी हुआ करते थे। उसके बाद मर-खप गये, परन्तु

उनके मकान को हकीम साहब के नाम से जानते हैं। वहां जाफर शरीफ के लोग ही रहते हैं। जाफर भी यदा-कदा वहां आता रहता है।"

मोना चौधरी ने रोमी से रिवाल्वर ली और नाल उसकी छाती पर रखी।

रहमत बिला की आंखें फैल गईं।

"मुझे मत मारो। एक बात और बताता हूं।"

"बता।"

"जाफर बहुत जल्दी सीरियल ब्लास्ट कराने वाला है दिल्ली में।"

"दिल्ली में... ।" मोना चौधरी के दांत भिंच गये।

मौत के डर से भर, फक्क चेहरा रहमत बिला ने हिलाया।

"कौन लोग कर रहे हैं ये कम?"

"म...मैं नहीं जानता।"

"कुछ और बताना भूल तो नहीं रहे?" मोना चौधरी ने दांत भींचकर कहा।

"मुझे छोड़ दो...मैं... ।"

तभी कानों को फाड़ देने वाला धमाका हुआ।

रहमत बिला की छाती पर रखी नाल में से गोली निकली और छाती के रास्ते उसकी पीठ से निकलकर दूर जा गिरी। रहमत बिला की आंखें फटती चली गईं।

रोमी गहरी सांस लेकर रह गया।

रहमत बिला कुछ पल तो खड़ा रहा, फिर उसके घुटने मुड़ने लगे। दोनों बांहें ढीली होकर नीचे को लटक आई थीं। धीरे-धीरे वो घुटनों के बल बैठा, फिर एक तरफ को लुढ़क कर गिर गया। वो मरा नहीं था, अभी भी जिन्दा था। सांसें ले रहा था। पलकें झपका रहा था।

मोना चौधरी ने दांत भींचकर रिवाल्वर वाला हाथ सीधा किया और उसके सिर का निशाना लेकर ट्रेगर दबा दिया। गोली ने उसके माथे में प्रवेश किया और दूसरी तरफ से

निकलकर जमीन में जा धंसी। रहमत बिला का शरीर शांत पड़ गया।

मोना चौधरी ने रिवाल्वर रोमी की तरफ उछाली और सड़क की तरफ बढ़ गई।

रोमी ने रिवाल्वर थामी। नाल गर्म थी।

❑❑❑

❑❑❑

रोमी, देविका की बगल में बैठा। मोना चौधरी पीछे वाली सीट पर। उसी पल देविका ने कार आगे बढ़ा दी कि तभी मोना चौधरी के फोन की बैल बजी।

मोना चौधरी के चेहरे पर अभी भी सख्ती छाई हुई थी।

"हैलो।" मोना चौधरी ने बात की।

"मैं यहां पहुंच चुकी हूं। पन्द्रह मिनट ऊपर हो गये हैं। तुम आ रही हो क्या?"

"रास्ते में हूं।" कहकर मोना चौधरी ने फोन बन्द कर दिया था।

मोना चौधरी ने फोन जेब में रखते हुए पूछा।

"तुम में से किसी के पास माइक्रोफोन है कि मेरी बातें सुन सके।"

"मेरे पास है।" देविका बोली।

"मुझे दे दो। अभी मैंने रानी से मिलना है। तुम दोनों बातें सुनना हमारी।"

रोमी और देविका की नजरें मिलीं।

"रानी ने ऐसा क्या कर दिया?" देविका माइक्रोफोन निकालकर पीछे बैठी मोना चौधरी को देते हुए बोली।

"मैंने कब कहा कि उसने कुछ किया है? मैंने तो बातें सुनने को कहा है।"

मोना चौधरी ने माइक्रोफोन थामा और जेब में डाल लिया।

"जाना किधर है?" देविका ने पूछा।

मोना चौधरी ने बता दिया।

❑❑❑

❑❑❑

रानी उसी लाल रंग की छोटी कार में थी।

मोना चौधरी उसके पास पहुंची। देविका और रोमी कुछ दूर थे और धीरे-धीरे पास आ रहे थे कि माइक्रोफोन की रेंज में आ सकें। बातें सुन सकें।

मोना चौधरी कार का दरवाजा खोलकर भीतर बैठी।

"हैलो...।" मोना चौधरी मुस्कुराई—"आज तो बहुत खूबसूरत लग रही हो।'

"सच?" रानी ने हंसकर कहा। वो जींस की पैन्ट और सुर्ख टॉप में थी—"जो भी हूं, तुमसे कम हूं।"

मोना चौधरी मुस्कुराती रही।

रानी ने एक छोटा-सा लिफाफा उसकी तरफ बढ़ाकर कहा—

"इसमें मास्क है। वो ही चेहरा है, जो तुम्हारा मेकअप में था।"

मोना चौधरी ने लिफाफे को देखा। शांत बैठी रही।

"लो...। बहुत मेहनत से मैंने वक्त पर इसे तैयार किया है। ये काम करना आसान नहीं।"

"क्या फायदा चेहरा बदलने का!" मोना चौधरी ने कहा।

"क्यों?" रानी के माथे पर बल उभरे।

"दुश्मन के लोग अपने ही घर में घुसे बैठे हैं। जो भी चेहरा बना लूं, दुश्मन को पता तो चल ही जाना है।"

रानी ने लिफाफे वाला हाथ पीछे कर लिया। मोना चौधरी को देखने लगी।

मोना चौधरी भी उसे ही देख रही थी।

"मैं समझी नहीं...तुम कहना क्या चाहती हो?" रानी कह उठी।

"तुम्हें क्या कहकर बुलाऊं, सोमनी या रानी?"

रानी जोरों से चिहुंक उठी।

चेहरे पर हैरानी उभरी।
एकटक वो मोना चौधरी को देखती रह गई।
"क...क्या कहा तुमने...?"
"सोमनी...।"
रानी बेचैन-सी दिखी।
"मुझे नहीं मालूम तुम क्या कह रही हो?"
"तुम्हें सब पता है। मैं तुम्हें सोमनी कह रही हूं, क्या ये तुम्हारा नाम नहीं है?"
"सोमनी...मेरा नाम?" रानी का चेहरा अजीब-सा हो रहा था।
मोना चौधरी ने 'हां' में सिर हिलाया।
दोनों लम्बे पलों तक एक-दूसरे को देखते रहे।
"मेरा नाम रानी है और मैं मिलिट्री सीक्रेट सर्विस की एजेन्ट हूं।" रानी ने शांत स्वर में कहा।
"तुम सोमनी हो। मैं ये बात इतनी पक्की तरह जानती हूं, जितनी पक्की तरह मुझे पता है कि मैं मोना चौधरी हूं।" मोना चौधरी ने एक-एक शब्द चबाकर उसकी आंखों में देखते हुए कहा।
"तुम्हारे कहने से क्या होता है, मैं...।"
"मेरे कहने से बहुत होता है, क्योंकि मैं कह रही हूं। क्या तुम्हें नहीं लगता कि मैं सच कह रही हूं?"
रानी ने चन्द पलों के लिये आंखें बन्द कीं, फिर खोल लीं।
मोना चौधरी के चेहरे पर जहरीली मुस्कान नाच उठी।
"रहमत बिला मिला था अभी मुझे।"
"ये कौन है?" रानी का स्वर इस बार शांत था।
"उसने मुझे सब कुछ बता दिया है। अब पूछो कि रहमत बिला कहां है?"
रानी मोना चौधरी को देखती रही।
"शूट करके आ रही हूं उसे। ये बात सिर्फ पैंतालिस मिनट पहले की है।"

"मुझे नहीं समझ आ रहा है कि तुम कैसी बातें कर रही हो?" रानी ने कहा।
"नहीं समझ में आ रहा?"
"नहीं...।"
"रंजन जोशी को भी तुम नहीं जानतीं?"
"मैं इस नाम के किसी आदमी को नहीं जानती।" रानी ने दृढ़ स्वर में कहा।
"क्या तुम मेरे साथ मिस्टर पहाड़िया के पास चलना पसन्द करोगी?"
"क्यों नहीं!" रानी ने फौरन कहा—"लेकिन सोमनी है कौन?"
"जाफर शरीफ की एजेन्ट।"
"तुमने कैसे सोच लिया कि वो मैं हूं?"
"कुछ वजह हैं और वो वजहें मैं अभी नहीं बताना चाहती।"
"मिस्टर पहाड़िया के सामने बताओगी?"
"ऐसा ही समझ लो।"
"रहमत बिला कौन है?"
"तुम बाखूबी जानती हो उसे।"
"हैरानी है, जिसे मैं नहीं जानती, उसे तुम जानती हो कि मेरा उससे सम्बन्ध है।"
मोना चौधरी मुस्कुराई।
"कहीं तुम्हें जाफर शरीफ ने खरीद तो नहीं लिया, जो तुम ऐसी बातें कर रही हो" रानी तीखे स्वर में कह उठी।
"ये भी हो सकता है।" मोना चौधरी हंसी—"तो मिस्टर पहाड़िया के पास चलें?"
"क्यों नहीं!" रानी ने कहा और अगले ही पल उसने फुर्ती से रिवाल्वर निकाल ली।
रुख मोना चौधरी की तरफ था।
मोना चौधरी के होंठ सिकुड़ गये।
"मोना चौधरी!" रानी ने बहुत सख्त स्वर में

कहा—"बहुत जल्दी तुमने ये सब जान लिया।"

"तुमने सोचा होगा कि मुझे पता नहीं चलेगा?"

"ठीक समझीं...सोचा तो मैंने यही था। अब ये रिवाल्वर पीछे कर लो, मैं... ।"

"तुम्हें खत्म करना जरूरी हो गया है मोना चौधरी।" रानी ने खतरनाक स्वर में कहा।

"मेरी जान लोगी?"

"लेनी ही पड़ेगी।"

"बहुत हिम्मत वाली हो।"

रानी का चेहरा खतरनाक भावों से भरा पड़ा था।

"तुम सोमनी कैसे बन गईं?"

"मैं सोमनी ही हूं। सोमनी शेख। कश्मीरी लड़की हूं।" उसने शब्दों को चबाकर कहा।

"खूब! तो तुम रानी नहीं हो?"

"मैं रानी नहीं, सोमनी हूं।"

"हैरानी है कि तुमने रानी की जगह कैसे ले ली?"

"रानी, मिस्टर पहाड़िया के बहुत नजदीक है। ये बात जाफर शरीफ बहुत पहले से जानता था। उसी ने मुझे रानी बनाने की प्लानिंग की। उसने मुझे तलाशा। क्योंकि मेरी कद-काठी हू-ब-हू रानी से मिलती है। चेहरे के नैन-नक्श भी बहुत हद मिलते हैं। मैं गरीब परिवार की थी। मेरे परिवार वालों को ढेर सारा पैसा दिया कि अब वो कश्मीर में शान से जिन्दगी बिता रहे हैं। मुझे पाकिस्तान भेज दिया ट्रेनिंग के लिये। पाकिस्तान वालों ने छः महीने में ही रानी की खूबियां मेरे में भर दीं। वो मेकअप में एक्सपर्ट थी। तो पाकिस्तान वालों ने मेरे को भी मेकअप में एक्सपर्ट बना दिया, ताकि कोई मुझ पर शक न कर सके। जाफर शरीफ रानी के बारे में जानकारियां पाकिस्तान भेजता रहा, जिनसे कि मुझे अवगत कराया जाता रहा। मैं रानी बन जाऊं, इसके लिये मुझे हर जरूरत की चीज सिखाई गई। वह बात बताई गई, जिसे जानने की मुझे जरूरत थी। उसके बाद पाकिस्तान में

ही मेरे चेहरे पर रानी का परमानेंट मेकअप किया गया जो कि दो साल से पहले किसी भी हालत में उतर नहीं सकता था। मेकअप में प्लास्टिक सर्जरी का भी इस्तेमाल किया गया। मैं पूरी तरह रानी चुकी थी। सोच से भी। दिमाग से भी और शक्ल से भी।"

"खूब... !"

"मैं रानी बनकर पाकिस्तान से कश्मीर वापस आ गई। ये इत्तेफाक ही रहा कि उन दिनों रानी छोटे से काम के लिये कश्मीर आई हुई थी। उसे पकड़ लिया गया। उसके बाद मैं रानी बनी, दिल्ली आ गई।"

"और किसी को शक नहीं हुआ कि तुम रानी नहीं, कोई और हो?"

सोमनी का चेहरा खतरनाक भावों से भरा पड़ा था।

"शक हो जाता, अगर मैं समझदारी और चालाकी से काम न लेती। इसके लिये मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी कि किसी को मुझ पर शक न हो। छोड़ो इन बातों को, ये तुम्हारे जानने लायक नहीं हैं।"

"रानी कहां है?"

"मैं नहीं जानती।"

"जाफर शरीफ की कैद में या उसकी हत्या की जा चुकी है?" मोना चौधरी ने पूछा।"

"मुझे कुछ नहीं मालूम।"

"तुम रानी बनी यहां के सीक्रेट, जाफर शरीफ को देती रहीं?"

"हां। और जाफर शरीफ उन सीक्रेट का सौदा पाकिस्तान से करता है।" सोमनी कठोर स्वर में बोली।

"बहुत हिम्मत वाली हो तुम।"

सोमनी मौत-सी नजरों से मोना चौधरी को देखती रही, फिर बोली—

"तुम्हें मुझ पर शक कैसे हुआ?"

"प्रिया कहां है?"

"प्रिया?" रानी की आंखें सिकुड़ीं—"तुम जानती हो कि उसकी हत्या हो गई है।"

"वो असली प्रिया नहीं थी।"

"क्या मतलब?"

"मैं जानती हूं कि वो पाकिस्तान वालों की दी नकली प्रिया है। जबकि असली प्रिया जाफर शरीफ की कैद में है।"

सोमनी हैरान होती दिखी।

"तुम तो बहुत कम समय में बहुत कुछ जान गईं।"

"मैं हूं ही ऐसी।"

सोमनी कुछ बेचैन दिखी।

"जो प्रिया मरी, वो नकली थी?" मोना चौधरी ने पूछा।

"हां...।"

"असली, जाफर शरीफ की कैद में है?"

"थी, वो भाग निकली। जाफर के एक आदमी ने गद्दारी की और प्रिया के साथ ही भाग गया।"

"जाफर का वो गद्दार आदमी सुमेर है?"

"हे भगवान...!" सोमनी की आंखें फैल गईं—"तुम...तुम तो हर बात जानती हो।"

"अंदाजा था मेरा। खैर, तो सुमेर, प्रिया को लेकर जाफर शरीफ के ठिकाने से भाग निकला।"

"हां।"

"ये कब की बात है?"

"दस दिन हो गये। यानि कि प्रिया की मौत से छः दिन पहले वो भाग निकले।"

सोमनी ने सिर हिलाया।

"क्या तुमने ये नहीं सोचा कि नकली प्रिया को, प्रिया ने मारा होगा।"

"क्या पता? तुमने रहमत बिला को मार दिया?"

"हां। उसे शूट करने के बाद तुमसे मिलने आ पहुंची।" मोना चौधरी ने कड़वे स्वर में कहा।

"तुम बहुत खतरनाक...।"

"ये नई बात नहीं है।"

"मैंने नहीं सोचा था कि तुम इस हद तक खतरनाक हो...।" सोमनी ने सूखे होठों पर जीभ फेरी। रिवाल्वर अभी भी उसके हाथ में दबी थी और नाल मोना चौधरी की तरफ थी।

"इस बात का अहसास तुम्हें तब होना चाहिये था, जब मिस्टर पहाड़िया ने मुझे इस खेल में सबसे आगे कर दिया।"

सोमनी गहरी सांस लेकर बोली—

"तुम्हें इन सब बातों का कैसे पता चला?"

"कुछ बातें तो सुमेर की मेहरबानी से। मेरे ख्याल में तब प्रिया भी उसके साथ ही होगी।"

"सुमेर...!" वो चौंकी।

"हां। तब मैं उसकी हकीकत नहीं जानती थी, लेकिन उसने मुझे तुम्हारी ऐसी तस्वीर दी, जिससे कि मुझे तुम पर शक हो जाये। दरअसल, तब वो मुझे मिला ही वो तस्वीर देने के लिये था।"

"मैं समझी नहीं।"

मोना चौधरी के चेहरे पर सोच के भाव छाये रहे।

"मैं तुम्हें समझाना भी नहीं चाहती, लेकिन इतना जान लो कि मुझे अधिकतर बातों का पता उस सी.डी. से चला जो मुझे रंजन जोशी के घर से मिली।"

"सी.डी.?" सोमनी की आंखें फैल गईं।

"वो सी.डी., जिसकी फिल्म तुमने रंजन जोशी की कमीज पर खुफिया कैमरा लगाकर उतरवाई थी और रंजन जोशी को तो क्या, जाफर शरीफ या अन्य किसी को खुफिया कैमरे का पता भी न चल सका था।"

सोमनी देखती रह गई मोना चौधरी को।

"क्या हुआ?"

"तुम चुड़ैल से कम नहीं हो।" उसके होठों से अजीब-सा स्वर निकला।

"तुमने वो सी.डी. की कॉपी रंजन जोशी को क्यों दी?"

सोमनी चुप हो गई।

"रंजन जोशी को वो सी.डी. देकर तुम क्या साबित करना चाहती थीं?"

"मैं...।" सोमनी ने लम्बी सांस ली—"इन कामों से छुटकारा पाना चाहती हूं।"

"तो...?"

"उसके लिये जरूरी था कि एक-दो को मैं अपने हक में तैयार करती। मैंने वो सी.डी. रंजन को देकर बताया कि उस सी.डी. से स्पष्ट ये लगता है कि जाफर शरीफ के ठिकाने पर तुम किसी के लिये जासूसी करते हो। खुफिया कैमरा लगाये वहां घूम रहे हो। मैंने उसे ये कहा कि वो सी.डी. कोरियर द्वारा किसी ने भेजी है।"

"तो...?"

"रंजन जोशी घबरा गया। उसके हाथ-पांव फूल गये। वो गिड़गिड़ाने लगा कि उसने कोई जासूसी नहीं की है। ये सी.डी. वाली बात किसी को न बताऊं।" सोमनी शांत गम्भीर स्वर में कह रही थी—"तो मैंने कहा कि मैं इन कामों से छुटकारा चाहती हूं। वो मेरी मदद करे कि मैं कैसे छुटकारा पा सकती हूं। क्योंकि जाफर शरीफ कभी भी नहीं चाहेगा कि मैं उसके काम छोडूं। इससे उसके रहस्य बाहर जाते हैं और उसके काम का मोहरा भी कम होता है। तब उसने कहा कि मैं अपने को दिल की बीमारी पैदा कर लूं...।"

"दिल की बीमारी?"

"हां, तब जाफर मुझे छोटे-छोटे काम करने को देने लगेगा और धीरे-धीरे मुझे भूल जायेगा।"

"जाफर से छुटकारा पाने की बहुत लम्बी योजना बनाई।"

"बहुत देर हो गई इन कामों को करते हो। अब आराम करना चाहती हूं।" सोमनी बोली—"लेकिन तुमने तो मेरे लिये मुसीबत खड़ी कर दी कि तुम सब जानती हो।"

मोना चौधरी कड़वे ढंग में मुस्कुराई।

"किसी और को भी बताई ये बात?"

"नहीं।"

"गुड! तब तो तुम्हारी मौत के साथ ये सब बातें छिप जायेंगी।" सोमनी कड़वे स्वर में कह उठी।

"तो तुम मुझे मार दोगी?"

"जरूरी है।"

"क्यों?"

"मेरा राज तुम जान गई हो। बात खुलने की देर है कि मिस्टर पहाड़िया मुझे कुत्ते की मौत मार देंगे। मेरा रहस्य खुलते देखकर जाफर शरीफ भी मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेगा।" सोमनी ने दांत भींचकर कहा—"जबकि मैं ये सब काम छोड़कर आराम की जिन्दगी बिताना चाहती हूं।"

"एक बात बताऊं...?"

"क्या?"

"तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं...मैं तो...।"

"मैं तुम्हें शूट करने जा रही हूं मोना चौधरी।" सोमनी फुंफकार उठी—"तुम जिन्दा रहीं तो मैं मुसीबत में...।"

"मिस्टर पहाड़िया के पास चलो। शायद वो ही कोई रास्ता बता दें तुम्हारे बचने का।"

"मुझे पागल मत समझो और मुझे फंसाने की चेष्टा न करो। तुम सच में बहुत तेज दिमाग की हो, वरना मैं तो हमेशा ये ही समझती थी कि मेरे बारे में कोई नहीं जान सकेगा कि मैं...।"

तभी सोमनी की तरफ का कार के दरवाजे का बन्द शीशा ठकठकाया गया।

सोमनी की गर्दन फौरन घूमी।

कार के बाहर विजय मल्होत्रा खड़ा था।

सोमनी सतर्क रही और रिवाल्वर को मोना चौधरी पर ताने रही। गुर्राई—

"हिलना मत!"

मोना चौधरी ने विजय मल्होत्रा को पहले ही खिड़की

पर आया देख लिया था।

सोमनी ने शीशा नीचे किया और विजय मल्होत्रा से तीखे स्वर में बोली–

"क्या है?"

"नमस्कार मैडम!" विजय मल्होत्रा हाथ जोड़कर बोला–"मैं आपको ये बताना चाहता हूं कि किसी पर गोली चलाना कानूनन गम्भीर अपराध है। इसके लिये धारा 302 और 304 के अलावा... ।"

"शटअप!" सोमनी ने खा जाने वाले स्वर में कहा–"दफा हो जाओ...मैं... ।"

"ठीक है...ठीक है। नाराज मत होइए।" विजय मल्होत्रा ने कमीज की जेब से रिवाल्वर की गोलियां निकालकर उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा–"खाली रिवाल्वर कैसे चलेगी? गोलियां तो डाल लीजिये।"

"क्या...खाली...?"

ठीक इसी पल मोना चौधरी ने पूरी शक्ति से घूंसा उसके रिवाल्वर वाले हाथ पर मारा तो रिवाल्वर पकड़ से छिटक कर कार में ही कहीं गिर गई।

सोमनी के होठों से गुर्राहट निकली।

वो मोना चौधरी पर झपटी।

तभी रोमी और देविका दौड़े-दौड़े पास आये। कार का पिछला दरवाजा खोलकर भीतर बैठे और मोना चौधरी से भूखी शेरनी की तरह लिपटी, सोमनी पर काबू पा लिया। उसे आगे से पीछे वाली सीट पर खींचा और अपने बीच बिठा लिया।

सोमनी गहरी-गहरी सांसें ले रही थी।

चेहरा फक्क पड़ चुका था।

रोमी और देविका को वहां देखकर उसकी हिम्मत टूट गई थी।

मोना चौधरी ने अपने अस्त-व्यस्त कपड़े ठीक किए।

"हमें तुम पर कभी भी शक नहीं हुआ कि तुम रानी

नहीं हो।" देविका कह उठी।

तभी आगे वाले खिड़की से विजय मल्होत्रा चेहरा भीतर करके बोला–

"मैडम जी! जो गोलियां मैंने आपको दिखाई थीं, वो मेरे रिवाल्वर की थीं, आपका रिवाल्वर तो भरा हुआ है।"

"साले...कुत्ते... ।" गुर्रा उठी सोमनी।

"ये तो काटती है।" विजय मल्होत्रा ने मोना चौधरी को देखा।

"तुम पास क्यों आ गये थे?" मोना चौधरी ने पूछा।

"तुम्हारे कहने पर मैं इसका पीछा कर रहा था। नजर रख रहा था।" विजय मल्होत्रा ने बताया–"जब तुम यहां पर इससे मिलीं तो तब भी ये मेरी नजर में थी। मैंने इसे रिवाल्वर निकालकर तुम पर तानते देखा, तो मुझे डर लगा कि अगर तुम मर गईं तो मेरे पैसे कौन देगा। इसलिये इसका ध्यान बंटाने के लिये पास आ गया।"

"ये तुम्हें गोली मार देती तो?"

"मैं तो भागने को तैयार खड़ा था।"

मोना चौधरी कार से निकली और ड्राइविंग सीट पर आ बैठी।

"तुम बहुत गलत कर रही हो मोना चौधरी।" सोमनी दांत किटकिटाते हुए गुर्रा उठी।

मोना चौधरी ने गर्दन घुमाकर सोमनी को देखा। मुस्कुराई।

"मैं तुम्हें छोड़ूंगी नहीं।"

"बच जाओ तो मुझे मार देना।" मोना चौधरी ने कार स्टार्ट करते हुए कहा, फिर विजय मल्होत्रा से बोली–"तुम जाओ, मैं तुम्हें आज या कल में फोन करूंगी।"

"भूल मत जाना।"

"अभी मुझे तुमसे काम है।"

"फिर ठीक है।"

मोना चौधरी ने कार आगे बढ़ा दी।

देविका और रोमी ने, रानी को अपने बीच फंसा रखा था। देविका ने अपनी रिवाल्वर निकालकर रानी की कमर में चुभते अंदाज में धंसा रखी थी।

"तुम दोनों अचानक कहां से आ गये?" रानी ने अब सम्भले स्वर में पूछा।

"हम माइक्रोफोन से तुम दोनों की बातचीत सुन रहे थे और पास ही में थे। कुछ पीछे।"

"ओह, तो मेरे लिये जाल पहले से ही तैयार था।" रानी बेदम-सी कह उठी—"कहां जा रही हो?"

"मिस्टर पहाड़िया के पास। इसका फैसला वो ही करेंगे। फोन करो उन्हें।"

रोमी ने फोन निकाला और मिस्टर पहाड़िया के नम्बर मिलाने लगा।

□□□

□□□

मिस्टर पहाड़िया के आफिस में सब मौजूद थे।

सोमनी उर्फ रानी एक कुर्सी पर बेबस-सी बैठी हुई थी और बारी-बारी सबको निहार रही थी। वो जानती थी कि वो फंस चुकी है, बच नहीं सकती।

मिस्टर पहाड़िया ने सिगरेट सुलगाई और गम्भीर निगाहों से रानी को देखा।

रोमी और देविका सतर्क खड़े थे।

मोना चौधरी कुर्सी पर बैठी थी।

कुछ पल पूर्व ही वे सब मिस्टर पहाड़िया के पास पहुंचे थे।

"बेटी...!" मिस्टर पहाड़िया ने कश लेकर चुप्पी तोड़ी—"मैं इतना तो जानता था कि मेरे चन्द खास एजेन्टों में कोई डबल एजेन्ट है, लेकिन वो रानी के रूप में है, ये मैंने नहीं सोचा था। लेकिन रानी पर, देविका पर और रोमी...गोपाल पर शक था मुझे। इसलिये इन्हें ही तुम्हारे गिर्द फैला दिया था मैंने।"

"शक हुआ कैसे?"

"सारी बात प्रिया से शुरू होती है और प्रिया पर ही आकर खत्म होती है।"

"वो कैसे?" मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

कुछ खामोश होकर मिस्टर पहाड़िया बोले।

"प्रिया मेरी एजेन्ट है।"

"आपकी एजेन्ट?" मोना चौधरी चौंकी।

रोमी और देविका की नजरें मिलीं।

सोमनी के चेहरे पर अजीब-से भाव आ ठहरे।

"हां। प्राइवेट जासूसी की आड़ में वो अपना मिशन पूरा कर रही थी। जाफर शरीफ का केस उसके हवाले किया था मैंने कि वो हमारे देश के भीतरी मामलों के लिये खतरा बनता जा रहा है। देश में होने वाले सीरियल ब्लास्टों को अधिकतर वो ही अंजाम देता है। देश के रहस्यों को गद्दारों से खरीद कर पाकिस्तान वालों को बेचता है, पाकिस्तान से आने वाले एजेन्टों को वो हिन्दुस्तान में टिकने में भरपूर सहायता के साथ उन्हें हथियार और पैसे देता है। सीधी-सी बात है कि जाफर शरीफ ने हमारे देश में आतंक फैला रखा है और लाख कोशिशों के बाद भी वो हमारे हाथों से दूर है।"

मोना चौधरी के होंठ सिकुड़े।

"तो प्रिया अपना काम कैसे कर रही थी?"

"दो-तीन साल पहले की बात है कि रहमत बिला हमारी नजरों में आया कि वो जाफर शरीफ का आदमी है, परन्तु ये बात भी हमें पता चली कि रहमत बिला सख्त इन्सान है। अगर उस पर हाथ डाला गया तो जाफर शरीफ के बारे में हमें कुछ भी नहीं बतायेगा। प्रिया मेरी बेहतरीन एजेन्ट है। उसके साथ मैंने बात की और रहमत बिला के सबूत उसके हवाले करते हुए जाफर शरीफ का केस भी उसके हवाले कर दिया। प्रिया ने बहुत सोच-समझ कर सारा खेल खेला और आई डिटैक्टिव एजेन्सी के नाम से जासूसी संस्था खोली। जरूरत के मुताबिक मेरी सहायता उसे बराबर मिलती रही।

फिर उसने रहमत बिला को फोन किया। उसके खिलाफ सबूतों के बारे में उसे बताया कि वो जाफर शरीफ जैसे आतंकवादी का साथी है। इस तरह प्रिया उसे ब्लैकमेल करने लगी।''

''उसने एतराज नहीं उठाया?''

''प्रिया ने उसे समझा दिया था कि अगर उसे कुछ हुआ तो दो घंटों में ही उसके खिलाफ सबूत पुलिस के पास पहुंच जायेंगे और वो किसी भी हाल में बच न सकेगा।''

सोमनी ने बेचैनी से पहलू बदला।

रोमी देविका सारी बात ध्यान से सुन रहे थे।

''फिर...?'' मोना चौधरी ने पूछा।

''प्लान के मुताबिक प्रिया ब्लैकमेलिंग की कीमत बढ़ाने लगी, जैसा कि हर ब्लैकमेलर करता है। छः महीनों में ही रहमत बिला, प्रिया से तंग आने लगा, परन्तु प्रिया को खत्म करने का खतरा भी मोल नहीं ले सकता था। प्रिया की इस बात को हवा में नहीं उड़ा सकता था कि अगर उसे मारा तो दो घंटे बाद सबूत पुलिस के पास पहुंच जायेंगे और पुलिस उसे पकड़ लेगी।'' मिस्टर पहाड़िया पलभर के लिये ठिठक कर बोले—''प्रिया की बढ़ती मांगों को देखकर रहमत बिला ने प्रिया से कहा कि वो चाहे तो उनका साथ देकर बहुत ज्यादा पैसे कमा सकती है। ये ही तो प्रिया का मकसद था। प्रिया जानती थी कि देर-सवेर में रहमत बिला उसे ऐसी ऑफर अवश्य देगा। उसकी हां के बाद प्रिया को रंजन जोशी से मिलाया गया। रंजन जोशी ने प्रिया को नोटों से भरा ब्रीफकेस तोहफे में दिया और उसे इस बात के लिये तैयार किया कि मिलिट्री, नेवी और एयरफोर्स के रहस्य जाफर शरीफ को दे। इसके लिये वो अपने एजेन्टों को तैयार करे और प्रिया ने बाकायदा अपना नेटवर्क फैलाना शुरू कर दिया। साथ ही वो मौका मिलने पर मुझे खबर कर दिया करती थी कि वो क्या कर रही है। उसका मकसद जाफर शरीफ तक पहुंच कर उसे खत्म करना था।''

''आपका मतलब है कि प्रिया सच में देश के रहस्यों को जाफर शरीफ तक भेजने लगी?'' मोना चौधरी बोली।

''हां। बड़ा काम करने के लिए छोटी कुर्बानियां करना जरूरी थीं। जाफर शरीफ का विश्वास हासिल करना जरूरी था कि वो अपने मिशन में कामयाब हो सके। इसी काम में प्रिया को डेढ़-दो साल हो गये। फिर वो वक्त भी आया कि जब जाफर शरीफ उसकी आई डिटैक्टिव एजेन्सी में आया। रंजन जोशी के साथ वो अचानक ही आ पहुंचा था। प्रिया के पास कैमरा था, उससे तीनों की तस्वीर भी ली। जाफर शरीफ ने प्रिया को शाबाशी दी, इनाम में कई लाख रुपये दिये कि वो ऐसे ही काम करती रहे। यानि कि प्रिया की योजना कामयाब होती जा रही थी। जाफर शरीफ उसके करीब आता जा रहा था। यानि कि जाफर शरीफ को खत्म करने का मौका उसे जल्दी ही मिलना था।''

मिस्टर पहाड़िया ने खामोश होकर गहरी सांस ली।

देविका, रोमी उन्हें ही देख रहे थे।

''उसके बाद कुछ खास हुआ क्या?'' मोना चौधरी आंखें सिकोड़े बोली।

''उसके बाद एकाएक प्रिया ने मुझसे दूरी बनानी शुरू कर दी। लगभग वो हर दूसरे दिन किसी तरह मुझे फोन करके, अपनी भाग-दौड़ की रिपोर्ट दिया करती थी; परन्तु उसने फोन करना बन्द कर दिया। मैं परेशान हो गया कि कहीं प्रिया को कुछ हो तो नहीं गया। परन्तु मुझे पता चला कि वो ठीक है। कई दिन बीत गये, प्रिया ने मुझे कोई फोन नहीं किया। आखिरकार कई दिनों की खामोश कोशिश के बाद मैं उससे फोन पर बात कर सका तो उसने सिर्फ इतना ही कहा कि उससे बात न करूं, ना ही अपने किसी एजेन्ट को उसकी असलियत बताऊं, क्योंकि मेरे एजेन्ट जाफर शरीफ द्वारा खरीदे हुए हैं। प्रिया के ये शब्द मेरे लिये झटके जैसे थे। मैं सोच भी नहीं सकता था कि मेरे एजेन्ट जाफर शरीफ के लिये काम करते हो सकते हैं। इस बात का भी मुझे विश्वास था

कि प्रिया गलत नहीं कह रही। मैंने अपने तौर पर अपने उन एजेन्टों को चैक किया जो उस वक्त प्रिया के आस-पास थे। परन्तु दस-बारह दिनों की चेष्टा के पश्चात् भी मैं किसी पर शक न कर पाया।''

''किसे चैक किया आपने?''

''रानी, गोपाल, रोमी, देविका...ये तब किसी-न-किसी रूप में प्रिया के आस-पास थे, लेकिन अब मैं सोचता हूं तो ये बात सामने आती है कि रानी को जाफर शरीफ ने सोमनी में बदल दिया था। इसे गद्दार समझकर प्रिया ने मेरे को रिपोर्ट देनी बन्द कर दी कि कहीं उस पर किसी को शक न हो जाये।''

''फिर...?''

''उसके बाद से मेरे और प्रिया में कम बातें होने लगीं। या यूं समझो कि प्रिया के फोन आने पूरी तरह ही बन्द हो गये थे, परन्तु मैं जानता था कि वो अपने मिशन पर लगी हुई है, लेकिन जब बहुत दिनों से प्रिया से कोई बात न हुई तो मेरा माथा ठनका। तब मैंने प्रिया को फोन किया। उसने बात की, लेकिन मुझे पहचाना नहीं उसने।''

''तब वो प्रिया नहीं, उसकी डुप्लीकेट होगी...।''

''हां, लेकिन मुझे क्या पता था कि क्या हो रहा है। इतना तो मैं समझ गया कि कहीं भारी गड़बड़ है। आखिरकार मैंने एक ही फैसला किया कि प्रिया को सामने लाकर उससे बात की जाये। इसके बाद मेरे इशारे पर मेरे एजेन्ट प्रिया को उठा ले आये। लेकिन ये जानकर मुझे हैरानी हुई कि प्रिया ने मुझे नहीं पहचाना। ऐसे में मुझे शक हुआ कि क्या वो प्रिया ही है। तब मैंने उसका चेहरा कई तरह के कैमिकलों से साफ करवाया तो उसका थोड़ा बहुत मेकअप साफ हुआ। पता चला कि वो प्रिया है ही नहीं। प्रिया कहां है या वो स्वयं कौन है, उसने नहीं बताया। मेरे एजेन्टों ने उसका मुंह खुलवाने की भरपूर चेष्टा कर ली। सफलता नहीं मिली और उसी रात उसने आत्महत्या कर ली।''

''कैसे?''

''उसके मुंह में जहर से भरा खोखला दांत था, जिसे कि खास ढंग से चबाने पर वो दांत टूट जाता है और उसमें भरा जहर मुंह में आ जाता है। इस प्रकार उसने आत्महत्या की।'' मिस्टर पहाड़िया ने गहरी सांस ली—''अब मेरे पास ऐसा कोई रास्ता नहीं बचा कि जिससे मैं प्रिया के बारे में जानकारी पा सकूं कि वो कहां है? किस हाल में है?''

सोमनी ने व्याकुलता से पहलू बदला। इधर-उधर देखा, शायद वो भाग जाना चाहती थी, परन्तु यहां के सब रास्तों से वाकिफ होने के बावजूद भी जानती थी कि यहां से भाग जाना सम्भव नहीं।

देविका और रोमी गम्भीरता से मिस्टर पहाड़िया की बात सुन रहे थे।

मोना चौधरी की निगाह मिस्टर पहाड़िया पर थी।

मिस्टर पहाड़िया ने कश लिया और सिगेरट ऐश-ट्रे में डालते कह उठे—

''फिर मुझे तुम्हारा ध्यान आया मोना चौधरी। क्योंकि कुछ दिन पहले ही तब मेरे बर्मा स्थित एजेन्टों ने खबर दी थी कि तुम बर्मा से हिन्दुस्तान आ पहुंची हो, तो उसी वक्त मैं तुमसे आकर मिला। तुम्हें याद होगा कि किसी काम का तुम्हारा मन न होने पर भी मैंने दबाव डालने के अंदाज में तुम्हें इस काम में धकेला था।''

मोना चौधरी ने 'हां' में सिर हिलाकर कहा—

''लेकिन आपने मुझे सारा मामला बताया नहीं, यही कहा कि प्रिया की हत्या हो...''

''हां, मैंने कुछ नहीं बताया था तुम्हें। दरअसल, मैं जानता था कि जब तुम प्रिया की जगह सम्भालोगी तो हर तरह के हालात तुम्हारे सामने आयेंगे। जाफर शरीफ के आदमी भी तुमसे बात करेंगे और उसके एजेन्ट भी। क्योंकि प्रिया का वास्ता इन्हीं लोगों के साथ तो था। ऐसे में सब कुछ मेरे सामने खुलता चला जायेगा तुम्हारे द्वारा।''

"और वो, जो प्रिया का पति बनकर मुझसे मिला था प्रदीप गोस्वामी, वो... ।"

"मेरा ही एजेन्ट था वो।"

"प्रदीप गोस्वामी को मैंने इसलिये इस मामले में डाला कि देविका, गोपाल, रोमी भी तुम्हारे पास थे और वहां होने वाली हर तरह की हरकत को इन्होंने देखना था। क्या मालूम था तब कि गद्दार कौन है। इसलिए मैंने प्रदीप गोस्वामी को इस मामले में डाला था कि हर कोई यही समझे कि प्रिया का कोई पति है। उससे ये बिजनेस खरीदा गया है, ताकि जब तुम प्रिया के लिये भागदौड़ करो तो कोई शक न करे।"

मोना चौधरी सिर हिलाकर रह गई।

मिस्टर पहाड़िया ने सोमनी पर निगाह मारी।

"अब वो चेहरा सामने आ गया, जिस पर प्रिया ने उंगली उठाई थी। जिसकी वजह से प्रिया ने मुझसे बात करनी बन्द कर दी कि कहीं इसे उसके डबल एजेन्ट होने का शक हो गया तो ये बात जाफर शरीफ तक पहुंच जायेगी।"

सोमनी दांत भींचे मिस्टर पहाड़िया को देखने लगी।

"आपके पास कोई ब्लू क्रॉस फाइल है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"हां।" मिस्टर पहाड़िया ने सिर हिलाया।

"ये उसे भी पाना चाहती थी।"

"अब नहीं पा सकेगी।" मिस्टर पहाड़िया की आंखों में कठोरता आ गई।

मोना चौधरी ने जेब से सी.डी. निकालकर दी।

"ये देख लीजियेगा, कई बातें स्पष्ट समझ में आ जायेंगी।"

मिस्टर पहाड़िया ने सी.डी. लेकर टेबल पर रखते हुए कहा—

"मेरे एजेन्टों में कौन गद्दार है, ये तो पता चल गया। परन्तु अब इससे भी बड़ी समस्या सामने आई है।" मिस्टर पहाड़िया ने होठों को भींचकर कहा—"भाग-दौड़ अभी खत्म

नहीं हुई।"

"कैसी समस्या?"

"प्रिया और रानी, दोनों ही मेरी बेहतरीन एजेन्ट हैं और दोनों ही लापता हैं।"

"मेरे ख्याल में दोनों मारी जा चुकी होंगी अब तक।" रोमी बोला—"जाफर शरीफ भला उन्हें क्यों जिन्दा रखेगा?"

"दोनों ही जिन्दा होंगी।" मोना चौधरी बोली।

"कैसे?" रोमी ने उसे देखा।

"जाफर ने प्रिया और रानी की जगह किसी और को बिठा रखा है। दोनों ही खतरे में आ सकती हैं, ये सोचकर जाफर ने उन्हें मोहरे के तौर पर कैद रखा होगा कि आड़े वक्त उनका इस्तेमाल करेगा।"

"ये भी हो सकता है।" देविका बोली।

मिस्टर पहाड़िया सोमनी की तरफ पलटे।

"रानी कहां है?"

"मैं नहीं जानती।" सोमनी ने शांत स्वर में कहा—"सिर्फ इतना पता है कि वो कश्मीर में थी, जब उसे पकड़ा गया। उसके बाद से उसके बारे में कोई खबर नहीं मिली। न ही मैंने किसी से पूछा।"

"प्रिया कहां है?"

"वो जाफर शरीफ के अड्डे पर कैद थी, परन्तु जिसकी निगरानी में वो कैद थी, उसी सुमेर के साथ भाग निकली। वो इसी शहर में है, परन्तु अभी तक जाफर शरीफ की पकड़ में नहीं आई। जाफर शरीफ के एजेन्ट यहां के चप्पे-चप्पे पर फैले उसकी तलाश कर रहे हैं, इसलिये वो खुलकर बाहर नहीं निकल पा रही। जाफर ने सबको कह रखा है कि प्रिया को देखते ही गोली मार दी जाये।"

"क्यों?"

"क्योंकि प्रिया के चेहरे को जाफर के कई आदमी, अपने एजेन्ट के तौर पर जानते हैं। कोई भी एजेन्ट धोखा खाकर प्रिया से किसी भी मामले की डील कर सकता है।"

सोमनी ने कड़वे स्वर में कहा।

मिस्टर पहाड़िया होंठ भींचकर रह गये।

"एक बात और भी आपके लिये खतरनाक है मिस्टर पहाड़िया।" मोना चौधरी बोली।

मिस्टर पहाड़िया ने मोना चौधरी को देखा।

"अकरम, बिलाल और काजी—ये तीनों पाकिस्तानी एजेन्ट हैं और इस वक्त दिल्ली में हैं। इनकी योजना क्या है, वो तो मैं नहीं जानती, लेकिन ये आपका अपहरण करके आपको पाकिस्तान ले जाना चाहते हैं।" मोना चौधरी ने कहा और सोमनी से पूछा—"ये सी.डी. कब तैयार करवाई थी तुमने...?"

"बताया तो दस-बारह दिन हो गये।" सोमनी ने विषैले स्वर में कहा।

मिस्टर पहाड़िया के चेहरे पर गम्भीरता के भाव नाच रहे थे।

तभी मोना चौधरी कह उठी—

"प्रिया के पास कोई खास फाइल भी थी।"

"खास फाइल?" मिस्टर पहाड़िया ने उसे देखा।

"हां। रंजन जोशी अपने आदमियों के साथ आफिस आया था और चमड़े की जिल्द वाली फाइल के बारे में पूछ रहा था। उस फाइल के लिये उसने सारा आफिस खंगाल डाला। कह रहा था कि प्रिया की हत्या होने से एक दिन पहले उसने वो फाइल प्रिया को दी थी।"

"वो कोई खास फाइल होगी?" मिस्टर पहाड़िया बोले।

"यकीनन...।" मोना चौधरी ने सिर हिलाया।

मिस्टर पहाड़िया ने सोमनी को देखा।

"क्या तुम बताना पसन्द करोगी कि वो कैसी फाइल है?" मिस्टर पहाड़िया ने पूछा।

सोमनी ने होंठ भींच लिये।

"नहीं बतायेगी...?" देविका कह उठी।

"बताऊंगी।" सोमनी के भिंचे होंठ खुले—"ये बात

बताने से कोई फर्क नहीं पड़ता। लैदर की जिल्द वाली फाइल में जाफर शरीफ के उन एजेन्टों के पते हैं, जो हिन्दुस्तान में काम कर रहे हैं।"

"वो फाइल प्रिया के पास कैसे आ गई?"

"प्रिया और सुमेर जब जाफर के ठिकाने से फरार हुए तो वो फाइल भी साथ लेते गये। सुमेर जानता था कि जाफर शरीफ वो फाइल कहां रखता है और वहां का कोड शायद उसने जान लिया था।"

"ओह...।" मोना चौधरी बोली—"तो वो फाइल प्रिया और सुमेर ले भागे थे, तो उसे ढूंढने रंजन उस आफिस में क्यों आ गया, जबकि रंजन जोशी भी जानता है कि प्रिया अपने उस आफिस में नहीं आयेगी। वहां उसे खतरा है।"

"रंजन जोशी उस फाइल के लिये पागल हुआ पड़ा है। जाफर शरीफ ने उस फाइल को तलाशने का काम रंजन को दिया है। ऐसे में रंजन बौखलाया-सा हर जगह पर उस फाइल को तलाश कर रहा है। इसी कारण वहां भी पहुंच गया होगा।"

"जाफर शरीफ इस वक्त दिल्ली में है ना?" मोना चौधरी बोली।

"तुम्हें कैसे मालूम?" सोमनी के होठों से निकला।

"कल रात वो रंजन जोशी के घर पर उससे मिला था।"

"जरूर मिला होगा! लेकिन हैरानी है कि ये बात तुम्हें कैसे मालूम?" सोमनी के होठों से निकला।

जवाब में मोना चौधरी खामोश रही।

मिस्टर पहाड़िया सोमनी की तरफ पलटे।

"तुम जानती हो कि अब तुम बच नहीं सकतीं।" मिस्टर पहाड़िया ने कहा—"बेहतर होगा, जाफर के बारे में मुंह खोल दो। उसका नेटवर्क बताओ। उसके आदमियों के बारे में बताओ कि वो कहां-कहां हैं?"

सोमनी के चेहरे पर खतरनाक मुस्कान आ ठहरी।

"मैं जानती हूं कि मैं बच नहीं सकती।" सोमनी कह

उठी– "और ये भी जानती हूं कि आप लोग मेरा कुछ बिगाड़ नही सकते।"

"क्या कहना चाहती हो?" मिस्टर पहाड़िया की आंखें सिकुड़ीं।

"मेरे दांतों में जहर भरा एक नकली दांत है, सामने नकली दांत। एक सैकिण्ड लगेगा उसे तोड़ने में।"

मिस्टर पहाड़िया के होंठ भिंच गये।

मोना चौधरी गहरी सांस लेकर रह गई।

"तुम्हें अपनी जान प्यारी नहीं?" रोमी ने पूछा।

"बहुत प्यारी है।" सोमनी ने उसी स्वर में कहा।

"तो मरने की बात क्यों करती हो?"

"मजबूरी है। जाफर शरीफ की एजेन्ट हूं मैं। यहां मेरा क्या हाल होगा, जानती हूं। अब ये जिन्दगी कुछ नहीं बची। ऐसे में अपने को जिन्दा क्यों रखूं?" सोमनी के मुस्कराहट भरे स्वर में सख्ती के भाव थे।

"सोमनी!" मिस्टर पहाड़िया ने गम्भीर स्वर में कहा–"तुम हमारा साथ दो, बदले में तुम्हें हर आराम मिलेगा।"

"थैंक्स मिस्टर पहाड़िया। मैं जानती हूं, अब मेरी किस्मत में क्या लिखा है। इसमें आपकी गलती नहीं है। दरअसल, मेरी राह ही ऐसी है कि पकड़े जाने पर अंजाम बुरा ही होता है।"

मिस्टर पहाड़िया और मोना चौधरी की नजरें मिलीं।

"तुम चाहती क्या हो?"

"मैं अपने को खत्म करने जा रही हूं।"

"नहीं...तुम...।"

"मुझे इस बात की खुशी है कि मैंने कश्मीर में रहने वाले अपने परिवार...भाई-बहनों को जाफर से इतना पैसा दिला दिया कि वे आराम से अपनी जिन्दगी बिता सकें। अब मुझे अपनी मौत का कोई अफसोस नहीं।"

"ठहरो...।" मिस्टर पहाड़िया बोले–"ये बात हमारे

हाथ में नहीं कि हम तुम्हें रोक सकें। क्योंकि जहर भरा दांत तुम्हारे मुंह में है। तुम्हारा ये सोचना भी ठीक है कि अब तुम्हारी जो जिन्दगी बची है, वो तकलीफों से भरी है। आतंकवादी की एजेन्ट होने के नाते अब तुम्हारे भाग्य में तकलीफें ही हैं, लेकिन मरने से पहले तुम अच्छा काम कर सकती हो।"

"क्या?"

"रानी के बारे में बता दो कि वो कहां...।"

"नहीं जानती। कुछ नहीं जानती।" इतना कहने के साथ ही सोमनी ने अपने जबाड़े को खास अंदाज में मोड़ा और दबा दिया।

अगले ही पल सोमनी के चेहरे पर अजीब-से भाव उभरे।

फिर उसका मुंह खुल गया।

आंखें फट-सी गईं।

खुले मुंह में जीभ पर सफेद-सा पदार्थ पड़ा नजर आने लगा, जो कि अब मुंह से बाहर गिरने लगा था।

"मर गई...।" देविका बोली।

"जहर भरा दांत चबा लिया...।" रोमी कह उठा।

मिस्टर पहाड़िया ने मोना चौधरी को देखा।

"पौटेशियम साइनाइड जैसा कोई जहर होगा नकली दांत में...।"

मोना चौधरी सिर हिलाकर रह गई।

❑❑❑

❑❑❑

मिस्टर पहाड़िया और मोना चौधरी बगल के रेस्ट रूम में थे।

देविका और रोमी, गोपाल के पास आफिस चले गये थे।

मिस्टर पहाड़िया के आफिस से सोमनी की लाश उठाकर, जगह साफ की जा रही थी। मोना चौधरी को सोमनी

की मौत का दुःख था। वो काबिल युवती थी, परन्तु डबल एजेन्ट थी। जाफर शरीफ जैसे आतंकवादी शरीफ युवक युवतियों को बहलाकर अपने कामों में फंसा लेते थे, जिनका अंजाम ये ही होता था।

"सोमनी अगर मुंह खोल देती तो हमें कई बातों का पता चल जाता।" मोना चौधरी ने कहा।

"मौत को गले लगाना उसकी मजबूरी थी।"

"क्यों?"

"अगर वो मुंह खोलती तो कश्मीर में मौजूद उसके परिवार वालों को जाफर शरीफ मार देता।"

"ओह, ये तो मैंने सोचा ही नहीं था...।" मोना चौधरी ने गहरी सांस ली।

मिस्टर पहाड़िया ने सिगरेट सुलगाकर टहलते हुए कहा—

"बेटी, हमारे लिये समस्याएं अब और भी ज्यादा हो गई हैं।"

"कैसे?"

"रहमत बिला को तुमने मार दिया। इधर सोमनी ने आत्महत्या कर ली। जाफर शरीफ अब चुप नहीं बैठेगा। पहले उसकी एजेन्ट प्रिया की मौत हुई। अब इन दोनों की। वो सोच सकता है कि ये सब तुम्हारा किया-धरा है।"

मोना चौधरी के होंठ सिकुड़े। बोली—

"रहमत बिला दिल्ली आने वाले नये एजेन्टों को पनाह देता था, फिर उन्हें तैयार करके आगे भेजता था। अब उसके लिये परेशानी होगी कि रहमत बिला की जगह पर किसी दूसरे को तैयार करे, जबकि रहमत बिला उसका पुराना आदमी था। जमा-जमाया धन्धा था उसका, जिसकी आड़ में वो ये सब कर लेता था।"

"रहमत बिला की लाश की जानकारी जल्दी ही जाफर शरीफ को हो जायेगी।" मिस्टर पहाड़िया ने कहा।

"तो मैं क्या करूं?"

"तुम्हें अपने आपको जाफर से बचाना है और उसे खत्म करना है। वो तुम पर शक कर सकता है।"

"कोशिश करूंगी कि मैं जाफर को खत्म कर सकूं।"

मिस्टर पहाड़िया के चेहरे पर गम्भीरता थी।

"जाफर के ठिकाने के बारे में पता है?"

"अंदाजा है कि कश्मीर में वो कहां है। इस बारे में रहमत बिला ने थोड़ा-सा मुंह खोला था।"

"कश्मीर जाओगी?"

"जाना पड़ेगा।"

"मेरी दो एजेन्ट, प्रिया और रानी को या तो जाफर ने मार दिया है या फिर उसे कैद रखा है।" शब्दों को चबाकर मिस्टर पहाड़िया ने कहा—"कोशिश करना कि तुम प्रिया और रानी को तलाश कर सको।"

"पक्का नहीं कहती कि ये काम कर पाऊंगी। क्या मालूम जाफर ने उनका क्या हाल किया है!"

"फिर भी कोशिश करना कि उन्हें तलाश कर सको।"

मोना चौधरी ने सोच भरे अंदाज में सिर हिला दिया।

"तुम्हारे इस मिशन पर, मेरे कई एजेन्ट काम कर रहे हैं।" मिस्टर पहाड़िया ने कहा।

"वो क्या करेंगे?"

"तुम्हारी सहायता। कभी भी, कहीं भी, वो तुम्हें मिल सकते हैं, इस मिशन का कोड वर्ड याद है तुम्हें?"

"हुक्म मेरे आका।"

"हां। जो इस कोड वर्ड का इस्तेमाल करे, तुम उस पर पूरा भरोसा कर सकती हो।"

"ठीक है। आपकी बात पूरी हो गई?"

"हां।"

"अब मैं ये कहना चाहती हूं कि पाकिस्तानी खुफिया विभाग, जाफर के माध्यम से आपके अपहरण की कोशिश में है। कभी भी आप परेशानी में घिर सकते हैं।"

"ये बात तुमने मुझे बता दी थी...मैं सावधान हूं।"

"आई.एस.आई. के एजेन्ट पूरी योजना बनाकर कभी भी आपको घेर सकते हैं। हो सकता है कि तब आप इतने बेबस हो जायें कि चाह कर भी कुछ न कर सकें। मैंने महसूस किया है कि वे लोग कमजोर नहीं हैं।"

"आई.एस.आई. कमजोर नहीं है। उन्हें कमजोर समझें तो ये भूल होगी हमारी... ।" मिस्टर पहाड़िया ने कहा।

"दूसरी बात... ।" मोना चौधरी ठिठक कर गम्भीर स्वर में कह उठी—"आपको प्रिया और गिल की तलाश करनी है।"

"गिल?"

"जी हां। गिल उर्फ सुमेर। प्रिया इसी सुमेर के साथ कश्मीर में, जाफर के इसी आदमी को सहारा बनाकर भाग निकली है। सुमेर का खुलासा तो उन दोनों से ही होगा, लेकिन एक बात आपको हमेशा याद रखनी चाहिये कि इन दोनों के पास लैदर की जिल्द वाली, जाफर शरीफ की फाइल है, जिन्हें ये जाफर की कस्टडी से लेते आये हैं। उस फाइल में जाफर के हिन्दुस्तान में फैले उन एजेन्टों के पते हैं, जो देश में आराम से कहीं बैठे हादसों को जन्म दे रहे हैं।"

मिस्टर पहाड़िया ने होंठ भींचकर कश लिया।

"इसलिये आपको सबसे पहले प्रिया और गिल उर्फ सुमेर की तलाश करनी है।" मोना चौधरी ने कहा—"इन दोनों को जाफर शरीफ के आदमी भी पागलों की तरह तलाश कर रहे हैं। यहां तक कि जाफर इसी सिलसिले में दिल्ली में मौजूद है। जाफर के प्रिया तक पहुंचने से पहले ही आपको प्रिया को ढूंढ निकालना है। उससे वो फाइल हासिल करनी है। उस फाइल के हाथ में आते ही जाफर शरीफ के कामों की कड़िया टूट जायेंगी, फिर वो इतना शक्तिशाली नहीं रहेगा। कानून उस फाइल के दम पर उसके आदमियों की धड़-पकड़ शुरू कर देगा।"

"मैं आज ही प्रिया और गिल की तलाश में एजेन्टों को फैला देता हूं।"

"ये बहुत जरूरी है।"

मिस्टर पहाड़िया ने कश लिया और बोले—

"रंजन जोशी का क्या करना है?"

मोना चौधरी के होंठ सोच भरे अंदाज में सिकुड़ गये।

"मेरे ख्याल में रंजन जोशी, जाफर शरीफ का खास आदमी है।"

"अवश्य है। मेरी दी सी.डी. देखेंगे तो सब समझ में आ जायेगा।"

"रंजन जोशी आसानी से हमारी गिरफ्त में आ सकता है।"

"उसे पकड़ने का फायदा क्या होगा?" मोना चौधरी ने पूछा।

"जाफर शरीफ अपने आदमी खोकर कमजोर होगा।"

"मेरे ख्याल में इससे जाफर को कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। रहमत बिला, सोमनी के बाद रंजन जोशी के नुकसान पर जाफर तिलमिला अवश्य पड़ेगा। परन्तु हमारा क्या फायदा होगा?"

"रंजन का मुंह खुलवाया जा सकता है।"

"उसके मुंह खोलने पर जाफर के दस-बीस आदमी पकड़े जायेंगे। दो-चार ठिकानों पर कब्जा हो जायेगा। मेरे ख्याल में इससे भी जाफर शरीफ को खास फर्क नहीं पड़ेगा। ऐसे लोगों को ऐसे नुकसानों की आदत हो चुकी है, जबकि मैं चाहती हूं कि जाफर शरीफ पर तगड़ी चोट की जाये।"

"क्या हो सकती है वो तगड़ी चोट?"

"वो ही तो समझ में नहीं आ रहा... ।"

"मेरे ख्याल में ये जाफर के लिये तगड़ी चोट ही है कि प्रिया की जगह उसने अपनी जो एजेन्ट रखी, वो मारी गई। रहमत बिला, उनके खास कामों को अंजाम देता था, वो मारा गया। सोमनी उसे खास खबरों की जानकारी देती थी, जो कि मिलिट्री सीक्रेट सर्विस में घुसी हुई थी, उसकी निगाहों

से वो अब ओझल हो गई। अब रंजन जोशी उसकी निगाहों से गायब हो जायेगा।''

मोना चौधरी मिस्टर पहाड़िया को देखती रही।

''क्या कहती हो?''

''जैसा आप ठीक समझें।''

''मेरे ख्याल में रंजन जोशी को पकड़ लेना ही बेहतर होगा।''

मोना चौधरी ने सिर हिलाकर कहा—

''बेहतर है, जो आप करेंगे। मेरी निगाहों में प्रिया को तलाश करना बहुत जरूरी है।''

''मैं समझता हूं। ये काम अभी शुरू हो जायेगा।''

''प्रिया को तलाश करते समय आपके और जाफर के एजेन्टों में टकराव भी हो सकता है।'' मोना चौधरी बोली।

मिस्टर पहाड़िया ने सिर हिलाकर कहा—

''तुम कब कश्मीर जाओगी?''

''आज रात तक रवाना हो जाऊंगी।''

''साथ में किसे ले जाना पसन्द करोगी?'' मिस्टर पहाड़िया ने पूछा।

''आपके किसी एजेन्ट को अपने साथ नहीं लूंगी।''

''क्यों?''

''सोमनी की हकीकत सामने आते ही इस काम में आपके एजेन्टों से दूर रहना ही पसन्द करूंगी।''

''इतना ज्यादा भी शक ठीक नहीं, मेरे एजेन्ट वफादार हैं।''

''मैं उन्हें गद्दार नहीं कह रही। मैं सतर्क रहकर ऐसा करने की सोच रही हूं।''

मिस्टर पहाड़िया ने कश लेकर शांत स्वर में कहा—

''श्रीनगर में हमारा खास एजेन्ट है अकबर शाह। तुम उस पर हर तरह से पूरा विश्वास कर सकती हो।'' कहने के साथ ही मिस्टर पहाड़िया ने अकबर शाह का पता बताया—''जरूरत पड़ने पर मिल सकती हो।''

मोना चौधरी ने सिर हिला दिया, फिर उठी—

''मैं चलती हूं। अभी मुझे कई काम करने हैं। फिर कश्मीर के लिये रवाना होना है।''

''जाफर शरीफ से सावधान रहना। वो दरिन्दे से भी ज्यादा खतरनाक है।'' मिस्टर पहाड़िया ने उसे सचेत किया।

❑❑❑

❑❑❑

वहां से बाहर आते ही मोना चौधरी टैक्सी में बैठी और अपने फ्लैट की तरफ चल पड़ी। चेहरे पर सोच के भाव छाये हुए थे। शाम के पांच बज रहे थे। आज रात किसी भी समय वो कश्मीर के लिये निकल जाने की सोच रही थी। मोना चौधरी को इस बात का अहसास था कि वहां खतरा है। जाफर शरीफ पर कश्मीर में हाथ डालना आसान बात नहीं है, लेकिन ये काम करना था मोना चौधरी ने।

हालांकि इस वक्त जाफर शरीफ दिल्ली में था। उस चमड़े की जिल्द वाली फाइल को तलाश करने में लगा हुआ था, जिसे प्रिया और सुमेर उसके ठिकाने से ले उड़े थे।

लेकिन मोना चौधरी जानती थी कि जल्द ही जाफर शरीफ वापस कश्मीर अपने ठिकाने पर पहुंचेगा और मोना चौधरी उससे पहले वहां पहुंचकर अपना जाल फैला लेना चाहती थी।

मोना चौधरी ने अपने अपार्टमेंट के सामने ही टैक्सी रुकवाई और बिल 'पे' करके गेट से भीतर प्रवेश कर गई। तेज-तेज कदमों से उस तरफ बढ़ने लगी, जिधर सीढ़ियां थीं। शाम होने की वजह से लोगों का आना-जाना ज्यादा ही जारी हो गया था।

''मोना जी...।''

नन्दराम की आवाज थी।

मोना चौधरी ठिठक कर पलटी।

नन्दराम सब्जी का थैला उठाये आ रहा था।

''तुम सब्जी ला रहे हो।'' मोना चौधरी कह उठी।

"देख लो...मेरी क्या हालत हो गई है!" सब्जी का थैला उठाये हांफता वो पास आ गया।

"बीवी का माल खाओगे तो यही होगा।"

"साईं मुफ्त में तो खाता नहीं। कपड़े धोता हूं। रोटी-सब्जी बनाता हूं। पूरा घर देखता हूं।"

दोनों सीढ़ियों की तरफ बढ़ गये।

उसके जवाब पर मोना चौधरी मुस्कुरा पड़ी थी।

"अब जाकर सब्जी बनाओगे?"

"हां नी, बोलती है पनीर ही बनाकर दूं। घिया-तोरी तो खाती ही नहीं। बॉस के साथ टूर पर रहकर उसकी खाने-पीने की आदत बिगड़ गई है। नये-नये मसालों का स्वाद लग गया है।"

सीढ़ियां आ गईं। दोनों ऊपर चढ़ने लगे।

"कल रात डिनर पर बॉस आया था?"

"आया होगा नी। मैं तो पैले ही बाहर चला गया वड़ी। रात को एक बजे आया है। हद हो गई!"

"क्या?"

"साईं वो बेल मार-मार के थक गया, वो दरवाजा ही न खोले। बोत मारा दरवाजे को, पड़ोसी बाहर आ गये, परन्तु वो नेई निकली। पूरी रात बाहर वॉचमैन के केबिन में मच्छरों के साथ बिताई।"

"दरवाजा क्यों नेई खोला?" मोना चौधरी पुनः मुस्कुरा पड़ी।

"पता नेई साईं। मैं तो दिन के आठ बजे उठा। भागा-भागा फ्लैट में गया तो दरवाजा खुला हुआ था। मेरे को देखते ही वो डांटने लगी कि मैंने रात को एक बजे आने को कहा था, तुम आये नहीं? कहां थे? बोलती है, मैं रात को किसी औरत के साथ था। कसम से मोना, उसके साथ रहा तो मैं पागल हो जाऊंगा।"

"तूने कहा नहीं कि मैं रात को आया था। बेल बजाई...दरवाजा खटखटाया...।"

"वो पागल है, उसे कुछ कहने का कोई फायदा नहीं।"

"और बॉस उसका...वो...।"

"कहती है वो रात को डिनर पर आया ही नहीं। उसका प्रोग्राम कैंसिल हो गया था। फोन आ गया था उसका।" नन्दराम के चेहरे पर उखड़े भाव उभरे—"जबकि कमरे में दो बियर की बोतल खाली पड़ी थीं। खाना खाया हुआ था। उसके बारे में कहने लगी कि वो सारा खाना मैंने खाया है। दोनों बियर मैंने पी हैं।"

"फिर तूने क्या कहा?"

"क्या कहना है? चुप रहने में ही भलाई है नी।"

मोना चौधरी का फ्लैट आ गया। चाबी निकालकर दरवाजा खोलते बोली—

"पनीर की सब्जी बनाओ और मजे करो।"

"मजे क्या करने हैं नी, इधर तो जिन्दगी ही खराब हो गई।"

मोना चौधरी ने दरवाजा खोला और भीतर प्रवेश करके दरवाजा बन्द कर लिया।

एकाएक चेहरे पर गम्भीरता आ गई थी।

जाफर शरीफ से टकराना आसान नहीं था, खास तौर से कश्मीर में।

साथ में कोई हो तो बेहतर था।

परन्तु इन हालातों में मिस्टर पहाड़िया के एजेन्टों को साथ में रखकर, किसी तरह का खतरा मोल नहीं लेना चाहती थी। क्या पता कौन, जाफर के लम्बे हाथों में खेल रहा हो!

मोना चौधरी ने फोन उठाया और महाजन को फोन किया।

लम्बी बेल जाने के पश्चात् उधर से राधा ने फोन उठाया।

"हैलो...।"

"कैसी हो राधा?" मोना चौधरी हाल पूछते हुए मुस्कुरा पड़ी थी।

"ओह, मोना चौधरी! मैं तो अच्छी हूं। तुम आईं नहीं बहुत दिनों से।" राधा की आवाज कानों में पड़ी।

"काम में व्यस्त थी।"

"तुम तो हर समय ही व्यस्त रहती..."

"तुम्हारे आलू के परांठों का क्या हाल है?"

"बनाने छोड़ दिये।"

"क्यों?" मोना चौधरी के होठों से निकला।

"आलू के परांठे खा-खा के नीलू निकम्मा हो गया है। हर वक्त घर में पड़ा रहता है। आलू के परांठे खाता रहता है। कहता हैं, बाहर जाऊंगा तो आलू के परांठे कहां से खाऊंगा। आज मैंने बनाये ही नहीं। सुबह से झगड़ा कर रही थी कि हर समय घर में बैठे रहते हो, कुछ काम करो।"

"फिर... ?"

"फिर क्या, कपड़े हाथ में देकर घर से बाहर निकाल दिया कि जाओ काम करो। आदमी हर वक्त सिर पर बैठा रहेगा तो कोई काम कैसे होगा? चार दिन से मैं नहाई नहीं।"

"क्यों?"

"वो नहाने दे तब ना, जब भी नहाने जाती हूं, नीलू पीछे-पीछे भीतर घुस आता है। मर्द घर में पड़ा रहेगा तो यही सब करेगा! और कोई काम तो उसे भी नहीं होगा।"

मोना चौधरी हंस पड़ी।

"हंसीं क्यों?" राधा की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम्हारी बात पर।"

"मैंने ऐसा क्या कह दिया जो तुम हंसने लगीं?"

"अब महाजन कहां है?"

"बोला तो बाहर निकला दिया। गया होगा कहीं!"

"कब आयेगा?"

"मैंने सांस ली है कि वो बाहर गया है, तुम उसके आने की पूछ रही हो।"

"जब आये तो कहना मुझे फोन करे।"

"ठीक है। कह दूंगी।"

मोना चौधरी ने लाइन काटी और पारसनाथ को फोन किया।

डिसूजा से बात हुई।

"पारसनाथ कहां है?"

"मालिक तो भाभी के साथ कश्मीर गये हैं।"

"कश्मीर... ।" मोना चौधरी सम्भली—"सितारा के साथ कश्मीर गया है?"

"जी हां।"

"कब?"

"कल शाम की फ्लाइट से।"

"कश्मीर में कहां रुकेगा...पता है कुछ?"

"नहीं...कोई काम हो तो मुझे बता...।"

मोना चौधरी ने फोन रख दिया।

(पारसनाथ की पत्नी **'सितारा' के बारे में** जानने के लिये पढ़ें अनिल मोहन का **पूर्वप्रकाशित उपन्यास 'मंत्र'**।)

महाजन जाने कहां था? उसे ढूंढ पाना आसान नहीं था।

पारसनाथ कल शाम ही सितारा के साथ कश्मीर गया था।

इन दोनों के अलावा ऐसा कोई नहीं था कि जिस पर वो विश्वास कर सके।

तभी फोन की बेल बजी।

"हैलो।" मोना चौधरी ने रिसीवर उठाया।

"नमस्कार... ।" विजय मल्होत्रा की आवाज आई—"मैंने सोचा याद दिला दूं कि आपने महीना होने पर बाकी का पन्द्रह हजार रुपया मुझे तनख्वाह के रूप में देना है, दस तो एडवांस ले चुका हूँ इसलिये कोई काम-वाम हो तो बता दीजियेगा।"

"तुम... ।" मोना चौधरी ने गहरी सांस ली।

"मैंने आज तुम्हारी जान बचाई थी।"

"शुक्रिया।"

"शुक्रिया होता रहेगा, मेरे को तो तनख्वाह से मतलब है।"

"जब महीना पूरा होगा, तनख्वाह मिल जायेगी।"

"ठीक है। तुम्हारा फोन नहीं आया तो मैं महीने बाद तनख्वाह के लिये फोन करूंगा...।"

विजय मल्होत्रा को कश्मीर ले जाया जा सकता है। ये ठीक लगा मोना चौधरी को।

"कश्मीर चलोगे?"

"श्रीनगर?"

"हां।"

"हनीमून के लिये?"

"चलो तो सही। जैसा वहां का मौसम हुआ, वैसा काम कर लेंगे।"

"ये भी ठीक है। कब चलना है?"

"रात को।"

"कैसे?"

"फ्लाइट से। साढ़े दस बजे श्रीनगर के लिये एक फ्लाइट है।"

"एयरपोर्ट पर ही मिलूं?"

"हां।"

"खर्चा-पानी तुम्हारा होगा। मेरा नहीं।"

"मेरा ही होगा। इस बारे में तुम्हें सोचने की जरूरत नहीं।"

"ये तो बोत बढ़िया हो गया। मैं साढ़े नौ बजे ही एयरपोर्ट पहुंच जाऊंगा।"

मोना चौधरी के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"कहां चली गईं?" विजय मल्होत्रा की आवाज कानों में पड़ी।

"यहीं हूं। मैं तुम्हें यह भी बताना चाहती हूं कि हम वहां काम पर जा रहे हैं।"

"खतरा है?"

"हां।"

"कोई बात नहीं। मेरी तनख्वाह बढ़ा देना। खतरे से मैं निपट लूंगा।"

"ठीक है। रात को एयरपोर्ट पर मिलेंगे।" मोना चौधरी ने कहा और फोन बन्द कर दिया।

□□□

□□□

नीलू महाजन, मारिया के बार में पहुंचा।

शाम के साढ़े पांच बज रहे थे। बार में इस वक्त दो चार बियर पीने वाले ही थे।

बार टेण्डर श्याम सिंह ने उसे देखते ही सलाम मारा।

महाजन उसके पास पहुंचा।

"बहुत दिनों बाद आये...।" श्याम सिंह कह उठा।

"हां।" महाजन इधर-उधर नजरें दौड़ाता बोला—"सब मजे में हैं?"

"मजे में हैं।"

"मारिया का ड्रग्स का धन्धा भी बढ़िया है?"

"पता नहीं।" श्याम सिंह हड़बड़ाता-सा कह उठा—"इस बारे में मारिया को पता होगा।"

महाजन मुस्कुराकर रह गया।

"पैग बनाऊं?"

"अभी मन नहीं है।"

"पीनी कम कर दी है क्या?"

"कम क्या, छोड़ ही दी। बीवी आ गई है घर में। बोतलें तोड़ देती है।" महाजन हंसा।

"कहां तोड़ती है, सिर पर या फर्श पर?"

"अभी तक तो फर्श पर ही तोड़ती है, आगे का पता नहीं।"

"बढ़िया है। सिर की बारी भी आ जायेगी। आज दोपहर में मारिया तुम्हें पूछ रही थी।"

"मुझे?" महाजन ने गर्दन घुमाकर श्यामसिंह को देखा—"वो भला मुझे क्यों पूछने लगी?"

"पता नहीं। पूछ रही थी तुम्हें। उधार तो नहीं देना तुमने?"

"मैं पीने में उधार नहीं करता। साली का दिमाग घूम गया होगा, जो मुझे पूछ रही थी।"

"बात करूं मारिया से?"

"कर... ।"

श्यामसिंह ने एक तरफ रखे फोन का रिसीवर उठाया और नम्बर मिलाने लगा।

"बार में ही है?"

"नहीं। तुम्हें पूछने के बाद चली गई थी। अब उसके आने का वक्त हुआ पड़ा है।" श्यामसिंह बोला।

लाइन मिलते ही श्यामसिंह ने कहा—

"मैडम, आप महाजन को पूछ रही थीं दिन में...।"

"हां...वो आया क्या?"

"जी हां...वो... ।"

"उसे रोक के रखो। मैं आधे घंटे में आ रही हूं।" इसके साथ ही उधर से मारिया ने फोन रख दिया था।

श्यामसिंह फोन रखते हुए बोला—

"मारिया आधे घंटे में आ रही है। तुम्हें रुकने को कहा है।"

"मैं क्या उसके बाप का नौकर हूं जो रुकूं...।"

"पैग तैयार कर देता हूं। वक्त कट जायेगा।"

"बाद में बिल आगे कर देगा।"

"एक बड़ा पैग तो मैं मुफ्त में भी बोतल से निकाल सकता हूं।" श्याम सिंह मुस्कुराया।

"फिर बना दे।"

श्यामसिंह पैग तैयार करने लगा।

"किस फेर में है मारिया? मेरे से आज तक उसके साथ काम का लेन-देन नहीं हुआ।"

"कुछ तो बात है ही। यूं ही तो तुमसे मिलने को रही... ।"

"देखता हूं साली को... ।"

श्यामसिंह गिलास उसके आगे सरकाते बोला—

"तेज है बड़ी, संभल कर रहना... ।"

"तेज हो या तीखी।" महाजन ने गिलास थामा—"मेरे कोई फर्क नहीं पड़ता।"

❑❑❑

❑❑❑

मारिया आई।

उसने चॉकलेटी रंग की, घुटनों तक स्कर्ट पहनी हुई थी और रेड कलर का टॉप। चालीस की थी वो, परन्तु इस समय बत्तीस से ज्यादा की न लग रही थी। सिर के बालों को क्लिप में बांध कर सजावटी चुटिया बना रखी थी। पांच फीट चार इंच उसकी लम्बाई थी।

महाजन से आज तक हैलो-हैलो ही हुई थी।

खास बातचीत कभी न हुई थी।

"हैलो!" वो पास आती महाजन से बोली—"बहुत दिनों बाद दिखे... ।"

महाजन ने गहरी निगाहों से देखा और कह उठा—

"जहाज पर सवार होकर आ रही हो?"

"क्यों?"

"हांफ रही हो।"

मारिया ने गहरी सांस ली।

"आओ, केबिन में बैठकर बात करते हैं।"

"बात?"

"काम है कुछ... ।"

महाजन ने सिर हिलाया और मारिया के साथ चल पड़ा।

भीतर कहीं जाकर मारिया का केबिन था। महाजन उसके केबिन में पहली बार आया था। छोटा-सा किन्तु अच्छा केबिन था। सजावट भी अच्छी थी।

"इतनी मेहरबानी क्यों?"

"मेहरबानी?" मारिया ने बैठते हुए महाजन को देखा।

"इस केबिन में तो तुम हर किसी को नहीं लाती होगी। फिर मुझे यहां लाने की मेहरबानी क्यों की?"

मारिया एकाएक गंभीर नजर आने लगी।

"क्या मैं तुम पे विश्वास कर सकती हूं?"

"मेरी शादी हो चुकी है।"

"वो बात नहीं है। धंधे की बात है।"

"पूरा विश्वास कर सकती हो।"

"सुना है तुम मोना चौधरी के खास पहचान वाले हो?"

महाजन ने उसे देखते हुए हौले से सिर हिलाया।

"तुम जो भी कहना चाहती हो, कह दो। तुम्हारा काम मेरे लायक होग तो ठीक, नहीं तो मैं इंकार कर दूंगा। परन्तु तुम्हारी बात बाहर नहीं जायेगी। मुझ पर विश्वास कर सकती हो।" महाजन ने कहा।

मारिया कुछ पल गंभीर निगाहों से उसे देखती रही, फिर बोली—

"बात बहुत खास है।"

"कहो तो... ।"

"जाफर शरीफ का नाम तो तुमने सुना होगा?"

"यह कौन है?"

"आतंकवादी... ।"

महाजन संभला।

"हां। सुना है। क्या कहना चाहती हो तुम... ?"

"मेरा कजन है सुमेर।" मारिया धीमे स्वर में कह उठी—"वो इस वक्त मुसीबत में है। वो किसी तरह जाफर शरीफ जैसे आतंकवादी के हाथों में जा फंसा और उसके लिये काम करने को मजबूर हो गया।"

"ऐसे कैसे मजबूर हो सकता है?" महाजन बोला।

"वो हुआ... । बीस साल का था जब दोस्त के साथ झगड़ा हुआ तो सुमेर ने ईंट उठाकर उसके सिर में मारी, जोकि उसके सिर में लगी। वो मर गया। जबकि सुमेर उसे मारना नहीं चाहता था। उसके मरते ही सुमेर डर कर भाग गया।

इधर-उधर भटकने के बाद ऐसे आदमियों से मिला जो जाफर के लिये काम करते थे। सुमेर ने उन्हें बताया कि उसके हाथों कत्ल हो गया था। इसलिये कानून के भय से डर कर भाग निकला। इस तरह सुमेर जाफर शरीफ तक पहुंच गया। उसके लिए काम करने लगा। ये तब की बात है, जब जाफर का नाम मशहूर नहीं हुआ था। छः-सात सालों में सुमेर, जाफर के लिये काम करता हुआ, उसका खास आदमी बन गया, परन्तु वो जाफर से अलग होना चाहता था। उसे ये सब काम पसन्द न थे, परन्तु जाफर के साथ जुड़ कर, उससे अलग हो पाना सम्भव ही नहीं है।"

महाजन की निगाह मारिया पर टिकी रही।

मारिया चुप रही।

"आगे बोलो... ।"

"अगर तुमने सब कुछ सुनकर मुझसे गद्दारी की तो?"

"तुम्हें मुझ पर विश्वास करना चाहिये।"

मारिया कुछ चुप रहकर फिर कह उठी—

"सुमेर, कश्मीर में जाफर शरीफ के साथ काम कर रहा था कि कई दिन पहले मिलिट्री की खुफिया एजेन्ट प्रिया को जाफर ने अपनी कैद में कर लिया है और उसकी डुप्लीकेट को एजेन्ट बनाकर वापस भेज दिया।"

"डुप्लीकेट?"

"मेकअप करके, प्रिया जैसा चेहरा बना दिया। जाफर के तार पाकिस्तान से जुड़े हुए हैं। सीमा पार आना-जाना उसका लगा ही रहता है, वहां के लोग भी जाफर के ठिकाने पर आते रहते हैं।"

"समझा।"

"जाफर ने प्रिया को कैद करके, सुमेर के अण्डर रखा, जबकि सुमेर और प्रिया कालेज में एक साथ ही पढ़ते थे। दोनों ने एक-दूसरे को पहचान लिया। सुमेर कॉलेज के वक्त से ही प्रिया को प्यार करता था, परन्तु प्रिया इस मामले में रिजर्व लड़की रही थी।" मारिया गम्भीर स्वर में कह रही

थी—"बहरहाल हुआ ये कि सुमेर प्रिया को जाफर शरीफ की कैद से बचाकर, निकल भागा। ठिकाने पर मौजूद जाफर शरीफ की छोटी-सी वाल्ट तिजोरी का कम्बीनेशन नम्बर समीर जानता था, निकलते वक्त उस तिजोरी से जाफर की एक फाइल और हीरों की थैली भी ले भागा...।"

"खूब...।"

"उस फाइल में जाफर शरीफ के हिन्दुस्तान में फैले हुए एजेंटों के नाम पते हैं, जो अपनी किसी-न-किसी साजिश में लगे, हिन्दुस्तान को बरबाद करने में लगे हैं।" मारिया ने बताया।

"बहुत खूब...।" महाजन के होंठ सिकुड़ गये।

"वो फाइल जाफर के लिये बहुत कीमती है।"

"जाहिर है।"

"वो फाइल अगर पुलिस के हाथ लग गई तो जाफर शरीफ के चल रहे सारे प्लान फेल हो जाएंगे। हिन्दुस्तान में फैले उसके सारे एजेंट या तो मारे जायेंगे या पकड़े जायेंगे।"

महाजन ने सहमति से सिर हिलाया।

"ऐसा न हो, इसके लिये जाफर शरीफ ने दिल्ली में अपने एजेंटों का बेहद सख्त घेरा डलवा दिया है। वो हर कीमत पर सुमेर और प्रिया को पकड़ना चाहता है। एक बार तो दोनों किस्मत से बचे। एक रेस्टोरेंट में दोनों खाना खा रहे थे कि जाफर के दो एजेंटों ने उन्हें देख लिया। तब दोनों जैसे-तैसे वेटरों की वर्दियां पहनकर वहां से भागने में कामयाब रहे।"

महाजन के चेहरे पर सोच के भाव नजर आ रहे थे। मारिया बेचैनी-सी दिखने लगी।

"खुद को मुसीबत में फंसा पाकर, कोई और रास्ता न देखकर सुमेर प्रिया को लेकर मेरे पास आ गया।"

महाजन मारिया को देखता रहा।

"तीन दिन से वह दोनों मेरे पास ही कहीं हैं।"

महाजन चुप रहा।

"अब तुम कहीं कुछ पैसे पाने के लालच में ये बात जाफर को मत बता देना।" मारिया कह उठी।

"मैं तुम्हें ऐसा लगता हूं?"

"सॉरी। मैं तुम्हें ठीक से जानती नहीं। फिर भी जो मन में था, वो कह दिया...।" मारिया ने गहरी सांस लेकर कहा।

महाजन ने कुछ नहीं कहा।

मारिया बेचैन नजरों से उसे देखती रही फिर बोली—

"तुमने कुछ कहा नहीं...।"

"क्या कहूं?"

"मैं इस मामले में तुम्हारी सहायता चाहती हूं। मुझे पता है तुम मोना चौधरी के साथ बड़े-बड़े काम करते हो। ऐसे खतरों में कूद जाते हो। मैं अकेली इस मामले को संभाल नहीं पा रही...।" मारिया ने कहा।

"तो तुम चाहती हो कि ये मामला मैं संभालूं...?"

मारिया ने सहमति से सिर हिलाया।

"एक मोटा-ताजा, मुफ्त वाला पैग पिलाओ।" महाजन बोला।

मारिया उठी और केबिन में एक तरफ रखी बोतल, गिलास और काजू की प्लेट उठाकर टेबल पर रखी, फिर खुद बैठ गई। महाजन होंठ सिकोड़ कर कह उठा—

"अपने लिये सामान केबिन में ही रखती हो।"

"मैं नहीं पीती। परन्तु तुम जैसे खास के लिए इंतजाम रखती हूं।" मारिया ने बेचैनी से कहा।

महाजन ने अपने लिए मोटा पैग बनाया।

घूंट भरा। लम्बी खामोशी के बाद बोला—

"क्या चाहती हो तुम? प्रिया-सुमेर को सुरक्षित करूं या जाफर शरीफ के एजेंटों को दूर रखूं?"

"दोनों काम करने हैं।"

"और वो फाइल, जिसमें जाफर के हिन्दुस्तान में फैले एजेंटों के पते हैं?"

"उसे...उसे भी किन्हीं सुरक्षित हाथों में पहुंचाना है।"

"मेरे ख्याल से इस मामले में सबसे जरूरी चीज वो फाइल है, पहले उसे सुरक्षित हाथों में पहुंचाना होगा। जाफर शरीफ के आदमी उसी फाइल के लिये पागल हुए पड़े हैं। जब उन्हें पता चलेगा कि वो फाइल भारत सरकार के पास पहुंच गई है, तो तब हमला करने की अपेक्षा, अपने बचाव के लिये दौड़ने लगेंगे।"

"ये तुम जानो। इन सब बातों को मैं नहीं जानती।"

"फाइल कहां है?"

"मैं नहीं जानती। प्रिया और सुमेर को पता होगा...।" मारिया ने व्याकुलता से कहा।

"उस फाइल को लेकर तुम भी तो पुलिस के पास जा सकती हो।" महाजन बोला।

"कभी नहीं!"

"क्यों?"

"मैंने ऐसा किया तो ये बात फौरन आम हो जायेगी कि ये काम मैंने किया है। जाफर के आदमी मुझे मार देंगे।"

"हूं। ये भी ठीक है। तुम चाहती हो कि ये काम मैं करूं, लेकिन ये खतरनाक काम है।"

"तो?" मारिया ने व्याकुलता से पहलू बदला।

"मुझे काम की कीमत क्या मिलेगी?"

"क्या चाहते हो?"

"मैं तो बहुत कुछ चाहता हूं। मेरे चाहने को छोड़ो। ये बताओ कि तुम काम की कीमत क्या दे सकती हो?"

मारिया के होंठ भिंच गये।

"खुद को मत मेरे सामने पेश कर देना।" महाजन फौरन कह उठा।

"क्यों...क्या मैं खूबसूरत नहीं हूं?" मारिया एकाएक मुस्कुरा पड़ी।

"होगी। लेकिन कीमत मैं नोटों में लेता हूं।"

"चिंता मत करो। खुद को पेश करने का मेरा कोई इरादा नहीं है। मैं इतनी सस्ती नहीं हूं।" मारिया ने

कहा—"क्या तुम इस बारे में प्रिया से या सुमेर से बात करना चाहोगे?"

"मुझे भला क्या एतराज हो सकता है!" महाजन ने घूंट भरा।

"मैं तुम पर पूरा भरोसा कर रही हूं। कहीं तुम जाफर के साथ मिलकर धोखा मत दे देना।"

"बार-बार ये बात मत कहो। मैं ऐसा नहीं हूं...। वो दोनों कहां हैं?"

"कहीं पर हैं! मेरे साथ चलो।"

महाजन गिलास खाली करके कह उठा—

"बढ़िया कीमत मिलेगी तो मैं ये काम करूंगा। मुफ्त में शराब पीना-पिलाना अलग बात है, ऐसे काम मुफ्त में नहीं होते।"

मारिया ने कुछ नहीं कहा और उठ खड़ी हुई।

महाजन ने गिलास खाली किया और उठ खड़ा हुआ।

❑❑❑

❑❑❑

पचास मिनट कार चलाने के पश्चात् मारिया दिल्ली की सीमा पर बने डी.डी.ए. फ्लैटों पर पहुंची। महाजन बगल में बैठा था। परन्तु इस बीच उनमें खास बात नहीं हुई थी।

"यहां रखा है उन्हें?" महाजन ने पूछा।

"हां। यहां मेरा एक खाली, बंद फ्लैट है। इस फ्लैट के बारे में किसी को नहीं पता। इसलिये दोनों को यहां रखना ही ठीक समझा। यहां पर बहुत कम आबादी है।" मारिया ने बताया।

शाम गहरी होनी शुरू हो गई थी।

कुछ ही देर में अंधेरा हो जाना था।

मारिया ने सुनसान पड़े फ्लैटों के पास कार रोकी।

दोनों नीचे उतरे। मारिया ने कार के पीछे सीट पर पड़ा एक लिफाफा उठाया।

"इसमें क्या है?"

"उन दोनों के लिये खाना।"

इसके बाद वे सीढ़ियां चढ़कर पहली मंजिल पर पहुंचे और दरवाजा खटखटाया।

भीतर से कुछ आहटें उभरीं। फिर युवती की आवाज आई—

"कौन है?"

"मारिया... ।"

तुरन्त ही दरवाजा खुला, युवती का चेहरा दिखा, फिर पूरा दरवाजा खुल गया। दोनों भीतर प्रवेश कर गये। दरवाजा पुनः बंद हो गया।

महाज़न ने देखा कि वो सत्ताइस-अट्ठाइस बरस की युवती थी। उतनी ही उम्र का युवक था वहां। दोनों की निगाहें उस पर टिक गई थीं। वो युवक सुमेर ही था।

कमरे में कोई फर्नीचर नहीं था। साफ-सफाई कर रखी थी।

बैठने, सोने का इन्तजाम फर्श पर ही था।

सुमेर की निगाह मारिया पर जा टिकी।

"ये कौन है?"

"नीलू महाजन, मोना चौधरी का साथी... ।"

"मोना चौधरी का साथी?" सुमेर चौंका—"तुम... ।"

"साथी नहीं, दोस्त।" महाजन बोला।

"कुछ दिन पहले ही मैं मोना चौधरी से मिला था।" सुमेर ने कहा।

"मोना चौधरी से?" महाजन चौंका।

"हां, तब मैंने उसे अपना नाम गिल बताया था और..."

"इस मामले में पहले से ही मोना चौधरी है?" महाजन ने बात काट कर कहा।

सुमेर ने सिर हिला दिया।

महाजन ने प्रिया को देखकर कहा—

"तुम मिलिट्री खुफिया विभाग से हो?"

"हां... ।"

"मिस्टर पहाड़िया को जानती होगी?"

"वो मेरे चीफ हैं।"

"ओह... ।" महाजन को अब मामला कुछ समझ में आने लगा—"मिस्टर पहाड़िया ने मोना चौधरी को इस मामले में लिया होगा?"

"वो दोनों एक-दूसरे को जानते हैं?" प्रिया ने पूछा।

"हां... ।"

"तो हो सकता है चीफ ने मोना चौधरी को इस मामले में लिया हो। मैं स्पष्ट कुछ नहीं जानती।"

तभी मारिया कह उठी—

"बैठकर आराम से बात की जाये तो ठीक रहेगा।" साथ ही लिफाफा उसने प्रिया को दिया—"इसमें खाना है, खा लो।"

प्रिया ने लिफाफा ले लिया।

कुछ मिनट बाद ही प्रिया और सुमेर खाना खा रहे थे। मारिया और महाजन पास ही बैठे थे। खाने के दौरान उनमें बातें भी हो रही थीं और प्रिया ने सारी बात... सारा मामला बताया महाजन को।

महाजन गम्भीरता से हर बात सुन रहा था।

"जब मैं सुमेर के साथ दिल्ली पहुंची तो मुझे पता चला कि मेरा आफिस किसी और ने खरीद लिया है। उसका नाम मोना है। फिर पता चला कि रानी, गोपाल, देविका और रोमी भी उसके साथ काम कर रहे हैं। मैं समझ गई कि चीफ ने ही कोई प्लानिंग की है, उसी पर काम हो रहा है। परन्तु मैं सामने न आ सकती थी। क्योंकि रानी असल में रानी न थी, जाफर शरीफ की एजेन्ट थी। इसके साथ ही मुझे शक हुआ कि कहीं जाफर ने अन्य किसी को भी न खरीद रखा हो। फिर पता चला कि मोना मेरी हत्या की तफ्तीश कर रही है। मैं समझ गई कि वो चीफ के कहने पर, ऐसा कुछ तलाश कर रही है कि जाफर तक पहुंच सके। ऐसे में मैं समझ गई

कि मोना देर-सवेर में मेरे फ्लैट पर भी जायेगी। मैं चाहती थी कि मोना, सबसे पहले रानी को पहचाने कि वो डबल एजेन्ट है, मैंने सुमेर को समझाकर, अपने सामने वाले फ्लैट पर भेज दिया। अपने फ्लैट की चाबी भी बता दी कि वो कहां पर छिपा रखी है और फ्लैट के भीतर कहां पर रानी की और मेरी तस्वीर पड़ी है, जो कि मोना को वहां आने पर उसे सौंपनी है, ये कहकर कि वो सोमनी है।"

"ऐसा क्यों?" महाजन ने पूछा।

"मैं चाहती थी कि मोना सोमनी पर शक करे। तब सब कुछ उसके सामने आ जायेगा।"

"और सुमेर ने ऐसा किया?"

"हां। जिस दिन दोपहर को इसने सामने वाले फ्लैट पर कब्जा किया, उसी रात ही मोना वहां पर, देविका के साथ आई। सुमेर को जैसा काम मैंने कहा, वैसा ही इसने किया। इधर मोना सुमेर की बातों से इस शक में पड़ गई कि रानी में कोई गड़बड़ है। तब तक हम नहीं जानते थे कि मोना ही मोना चौधरी है। सुमेर मोना चौधरी को चेहरे से जानता था।"

"कैसे?"

"जाफर ने हिन्दुस्तान की अण्डरवर्ल्ड की खास हस्तियों की तस्वीरों की फाइल बना रखी है। जोकि उसके सारे एजेंट जानते हैं। इसी वजह से सुमेर ने मोना चौधरी को पहचाना था। उसके बाद सुमेर वापस मेरे पास आ गया, हालांकि तब जाफर भी मिला सुमेर से, परन्तु तब जाफर सुमेर को पहचान नहीं सका था। लेकिन अगले ही दिन हम मुसीबत में पड़ गये। जाफर के आदमियों ने हमें एक रेस्टोरेंट में लंच करते देख लिया था। तब हम दोनों कठिनता से वहां से बच कर भागे।"

प्रिया खामोश हुई।

सुमेर कह उठा—

"हमारे लिये जाफर की तरफ से खतरा बढ़ रहा था।

कोई और रास्ता न पाकर मुझे मारिया बहन की सहायता लेनी पड़ी तो मारिया ने हमें यहां छिपा दिया।"

महाजन अब लगभग सारे हालातों से वाकिफ हो गया था।

कई पलों तक वहां चुप्पी रही।

उन्होंने खाना खा लिया था। बाहर अंधेरा हो जाने की वजह रोशनी जला दी गई।

"तुम...।" महाजन ने सुमेर से पूछा—"प्रिया को जाफर के यहां से लेकर क्यों भागे?"

"दो वजहें थीं।" सुमेर गंभीर स्वर में कह उठा—"पहली तो यह कि साल भर से मैं कोई तरकीब लड़ा रहा था कि किसी तरह जाफर शरीफ से छुटकारा पा सकूं। दूसरी वजह प्रिया मेरे सामने आ गई, जिसे मैं कालेज के जमाने से चाहता था। प्रिया की वजह से आनन-फानन मुझे वहां से भाग जाने का फैसला लेना पड़ा...।"

"आनन-फानन क्यों?"

"जाफर शरीफ प्रिया के बारे में नया फैसला सुना सकता था कि प्रिया को पाकिस्तान भेज दिया जाये। क्योंकि हिन्दुस्तान के पकड़े गये अधिकतर खुफिया एजेंटों को वो पाकिस्तान भिजवा देता था। पाकिस्तान वाले उससे भीतरी बातों की पूछताछ करके, बाद में उसकी हत्या कर देते हैं।" सुमेर ने बताया—"मैं नहीं चाहता था कि प्रिया का भी यही हाल हो। इसलिये मैंने प्रिया को वहां से भगा ले जाने का तुरंत फैसला ले लिया था।"

"हूं...।"

कुछ पल चुप्पी रही वहां।

"अब तुम दोनों क्या चाहते हो?" महाजन ने पूछा।

"तुम हमारे लिये क्या कर सकते हो?" प्रिया बोली।

"जो तुम कहो।"

"जाफर शरीफ की खास फाइल सुमेर ले भागा है। मैं चाहती हूं, वो फाइल चीफ तक पहुंच जाये।"

"फाइल कहां है?"

"काश्मीर में।"

"काश्मीर में?" महाजन की आंखें सिकुड़ीं—"क्या वो तुम्हारे पास नहीं है?"

"हमें फाइल काश्मीर में ही छिपानी पड़ी।" सुमेर बोला—"हमें इस बात का खतरा था कि कहीं दिल्ली पहुंचने से पहले ही ज़ाफर के आदमी हमें पकड़ न लें। अगर पकड़ लें तो उस फाइल को पाने की चाह में हमारी जान न ले सकें।"

"समझा...।"

"अब वो फाइल काश्मीर में किसी के पास है।"

"मतलब कि मैं फाइल वहां से लेकर, मिस्टर पहाड़िया तक पहुंचा दूं?"

"हां।"

"मुझे क्या मिलेगा? खतरे वाला काम है। जाफर शरीफ है इस मामले में। काम के बदले नोट-माल तो मिलना चाहिये।"

प्रिया और सुमेर की नजरें मिलीं।

"इस फाइल के साथ-साथ, जाफर की तिजोरी से मैंने हीरों की थैली भी निकाली थी।" सुमेर बोला—"वो फाइल और हीरों की थैली काश्मीर में ही किसी के पास है। वो हीरे तुम ले लेना।"

"जिसके पास फाइल और हीरे हैं, वो मुझे दोनों चीजें क्यों देगा?"

"मैं तुम्हें पत्र लिखकर दे देता हूं। वो पत्र उसे दिखाओगे तो वो दोनों चीजें तुम्हें दे देगा।"

"ठीक है।"

"हम आशा रखें कि तुम हमें धोखा नहीं दोगे?" सुमेर बोला।

"पूरा विश्वास रखो मुझ पर। आसमानी विजली मुझ पर गिर जाये तो जुदा बात है, वरना तुम लोगों का काम हर हाल में होकर रहेगा।" महाजन ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

मारिया ने पैन-कागज निकालकर सुमेर को दिया।

"उस आदमी के नाम पत्र लिखो, जिसके पास फाइल और हीरों की थैली है।" मारिया बोली।

"तुम्हें विश्वास है इस पर?" सुमेर ने पूछा।

"विश्वास है, तभी ले आई हूं इसे यहां।"

सुमेर पत्र लिखने लगा।

□□□

□□□

लेकिन महाजन को इन हालातों पर अभी पूरा विश्वास न था।

मारिया ने महाजन को रात नौ बजे अपने बार के बाहर छोड़ा तो महाजन ने वहां से सबसे पहले मोना चौधरी को उसके फ्लैट पर फोन किया।

बेल होती रही। परन्तु उधर से किसी ने उठाया नहीं।

घंटाभर वो इसी कोशिश में लगा रहा। आखिरकार उसने मिस्टर पहाड़िया को फोन किया। ज्यादा देर नहीं लगी। मिस्टर पहाड़िया से बात हो गई।

"मैं महाजन बोल रहा हूं।"

"पहचान लिया...कहो...।"

"मोना चौधरी आपका काम कर रही है?" महाजन ने पूछा।

"हां।"

"वो मुझे कहीं मिल नहीं रही। मैं उससे बात करना चाहता हूं।" महाजन ने कहा।

"वो मिलेगी भी नहीं। दिल्ली में नहीं है।"

"ओह...।" महाजन के चेहरे पर सोच के भाव उभरे—"मैं आपसे मिल सकता हूं।"

"बिना वजह नहीं...।"

"प्रिया से अभी मिला हूं मैं।"

दो पलों के लिये लाइन पर खामोशी आ गई।

"मेरे बंगले पर आ जाओ।" मिस्टर पहाड़िया की

आवाज कानों में पड़ी।

"मैं नहीं जानता कि आपका बंगला कहां है?"

मिस्टर पहाड़िया ने अपना पता बताया और फोन बंद कर दिया।

□□□

□□□

मिस्टर पहाड़िया ने फोन रखा और सिगरेट सुलगा ली। चेहरे पर गम्भीरता के भाव नजर आ रहे थे। नीलू महाजन, प्रिया से मिला है, ये हैरत वाली बात थी। जबकि प्रिया की तलाश में उनके एजेन्ट फैल चुके थे। महाजन को अगर प्रिया का पता है तो ये उनके लिये अच्छी बात थी।

अभी-अभी लौटे थे वे अपने बंगले पर।

काम से दो-तीन घंटे की फुर्सत मिली थी तो यही सोचा कि नहा-धो कर खाना खाकर वो फिर आफिस पहुंच जायेंगे। प्रिया के मामले ने उन्हें व्यस्त कर डाला था।

इस वक्त रात के साढ़े नौ बज रहे थे।

मोना चौधरी काश्मीर के लिये निकल गई होगी या जाने की तैयारी कर रही होगी। इन्हीं विचारों में उलझे कुर्सी पर जा बैठे। बदन पर दिन वाले ही कपड़े थे। फोन सुनने के बाद मन में यही आया कि पहले महाजन से बात कर लें, उसके बाद ही अपने कामों में लगेंगे।

तभी कमरे में एक नौकर आया।

भोला और राधे कल गांव गये थे, पन्द्रह दिन के लिये। तो अपनी जगह वे दो दूसरे नौकरों को छोड़ गये थे। कह गये थे कि गांव से आये दोनों उनके भाई हैं।

मिस्टर पहाड़िया ने नौकर को देखा।

तभी दूसरा नौकर भीतर आ पहुंचा।

मिस्टर पहाड़िया, इससे पहले कुछ कहते, पहले वाले नौकर के हाथ में रिवाल्वर दिखाई दी। वे चौंके। अगले ही पल उनकी आंखें सिकुड़ती चली गईं।

"हैलो मिस्टर पहाड़िया!" वो रिवाल्वर हिलाकर कड़वे स्वर में कह उठा—"मजे ले रहे हैं।"

"बहुत मजे कर लिए।" दूसरे नौकर ने भी रिवाल्वर निकाल ली—"हिन्दुस्तान भी खूब घूम लिया। अब तेरे को पकिस्तान घुमाते हैं। लाहौर देखना, वो बहुत अच्छा शहर है। देखा है कभी?"

मिस्टर पहाड़िया का चेहरा कठोर होने लगा। वो उठ खड़े हुए।

"तो तुम दोनों पाकिस्तानी एजेन्ट हो?" शब्दों को चबाकर मिस्टर पहाड़िया ने कहा।

"ठीक पहचाना। तभी तो पाकिस्तान ले चलने की बात कह रहे हैं।"

"मेरे नौकरों को कैसे पटाया?"

"पांच-पांच लाख दिए उन्हें कि वो अपनी जगह हमें यहां रखवा दें।" वो हंसा।

"क्या नाम हैं तुम्हारे?" मिस्टर पहाड़िया ने कहा—"अकरम, बिलाल या काजी?"

वो दोनों चौंके।

"तुम...तुम हमारे नाम कैसे जानते हो?" उनके होठों से निकला।

"नाम नहीं बताया तुम दोनों ने अपना?"

दोनों के चेहरों पर एकाएक खतरनाक भाव नाचने लगे थे।

"काजी हूं मैं और ये बिलाल...।"

"अकरम कहां है?"

"वो बंगले में आ चुका होगा। हमें हैरानी है कि तुम्हें हमारे नाम पता हैं।"

"मुझे पहले ही खबर मिल चुकी थी कि तुम लोग मेरे अपहरण की कोशिश में हो।"

काजी और बिलाल की नजरें मिलीं।

"लेकिन तुम लोग मेरा अपहरण नहीं कर सकते।"

मिस्टर पहाड़िया ने कश लिया—"बल्कि खुद को कैद समझो... ।"

"क्यों?" काजी गुर्रा उठा—"हमें फंसाने का कोई खास इंतजाम किया है क्या?"

"बंगले पर मेरे आठ कमाण्डोज फैले हुए... ।"

"वो सब बेहोश हैं।"

"बेहोश?"

"हां। उन्हें तीव्र बेहोशी वाली चाय दी गई। जिसे पीते ही अपने होश खो बैठे... ।" बिलाल कड़वे अंदाज में हंसा—"दो ने चाय नहीं पी तो उनके सिर पर चोटें मार कर बेहोश कर दिया। इस वक्त वे सब बंगले के पीछे बने सर्वेंट क्वार्टर में बंद पड़े हुए हैं। दो-तीन घंटे से पहले उन्हें होश नहीं आने वाला।"

"और दो-तीन घंटों में... ।" काजी कहर से बोला—"तुम कहां-के-कहां पहुंच जाओगे...।"

मिस्टर पहाड़िया ने बारी-बारी दोनों को देखा।

"तो तुम दोनों मेरा अपहरण करके, मुझे पाकिस्तान ले जाओगे?" मिस्टर पहाड़िया बोले।

"अकरम भी बाहर आया पड़ा है। हम तीनों तुम्हें यहां से ले जायेंगे। आगे तुम्हारा अलग से इंतजाम हुआ पड़ा है। वे लोग तुम्हें काश्मीर पहुंचायेंगे और हम साथ ही होंगे।"

मिस्टर पहाड़िया एकाएक खुद को घिरा महसूस करने लगे थे।

"हाथ ऊपर... ।" काजी हाथ में दबी रिवाल्वर हिलाकर बोला।

मिस्टर पहाड़िया ने चट्टान-सी सख्त कठोर निगाहों से काजी को देखा।

"हाथ ऊपर, सुना नहीं?" बिलाल गुर्राया।

मिस्टर पहाड़िया ने सिगरेट ऐश ट्रे में डाली और दोनों हाथ ऊपर कर लिए।

"काजी... ।" बिलाल रिवाल्वर संभाले मिस्टर पहाड़िया

की तरफ बढ़ते हुए बोला—"ये शरारत करे तो गोली मार देना... ।"

"चिन्ता मत कर...तू मेरा निशाना देखना।"

तभी उनके कानों में हार्न की आवाज पड़ी।

"अकरम आ गया... ।" काजी कह उठा।

"बस चलते हैं।" पास पहुंच चुके बिलाल ने खतरनाक स्वर में मिस्टर पहाड़िया से कहा—"हिलना मत।"

मिस्टर पहाड़िया को इंतजार था अब महाजन के आने का।

इस वक्त में एकमात्र महाजन ही था, जिससे वो कुछ आशा रख सकते थे।

बिलाल ने उनकी तलाशी ली और रिवाल्वर बरामद करके अपनी जेब में रखी और धीरे-धीरे पीछे हटता चला गया। तो काजी बोला—

"अच्छी तरह देख लिया और कोई हथियार नहीं?"

"नहीं। सिर्फ रिवाल्वर ही थी।"

"बाहर अकरम, कार में इंतजार कर रहा है।"

"पता है।" बिलाल रिवाल्वर हिलाकर मिस्टर पहाड़िया से बोला—"प्रिया पहुंची तेरे पास?"

"नहीं।"

"उसके पास फाइल थी, क्या वो तेरे पास भिजवा दी?"

"नहीं।"

तभी काजी झल्ला के बोला—

"तू क्या समझता है कि ये तेरे को सही जवाब देगा?"

"तो मैं कौन-सा इसके जवाब को सच मान रहा हूं? ये कह रहा है, मैं सुन रहा हूं। मेरा कुछ घिसा क्या?"

अगले ही पल काजी आगे बढ़ा और रिवाल्वर मिस्टर पहाड़िया की कमर में लगा दी।

"बाहर चल। बाहर अकरम कार लिए हमारा इंतजार कर रहा है।"

"तुम बहुत बड़ी गलती कर रहे हो मुझ पर हाथ डाल

कर... ।" मिस्टर पहाड़िया कठोर स्वर में बोले।

"गलती करना हमारी आदत है। बाहर चल।" उसने रिवाल्वर की नाल का दबाव बढ़ाया।

मिस्टर पहाड़िया ने कदम आगे बढ़ा दिया।

□□□

□□□

अकरम कार लिए पोर्च में खड़ा था।

वो सतर्क था। उसकी निगाह हर तरफ घूम रही थी। पोर्च में और बंगले के कई हिस्सों में रोशनियां हो रही थीं। वो जानता था कि बिलाल और काजी ने यहां मौजूद कमाण्डोज पर काबू पा लिया है। काजी का फोन आने के बाद ही, वो कार लेकर भीतर आया था। परन्तु ये भी जानता था कि कभी भी, कोई गड़बड़ हो सकती है।

अब तक बिलाल और काजी को मिस्टर पहाड़िया के साथ बाहर आ जाना चाहिये था।

अकरम पुनः हार्न बजाने लगा कि ठिठका।

गेट पर किसी कार की हैडलाइट पड़ी थी।

उसका दिल धड़का।

क्या कोई इधर आया है?

चंद पलों के बाद हैडलाइट को गेट से हटकर दूर जाते देखा तो उसने राहत की सांस ली। अपनी नजरें वो वहां से हटाने ही वाला था कि तभी गेट पर किसी को खड़े देखा, फिर आवाज सुनी।

"कोई है?" वो महाजन की आवाज थी।

अकरम के होंठ भिंच गये।

ऐसे मौके पर किसी का आना, बड़ी मुसीबत से कम नहीं था।

"कोई है?"

अकरम को वो भीतर बढ़ता दिखा।

एकाएक अकरम ने ऊंचे स्वर में कहा—

"इधर आ जाइये साहब... ।"

फिर महाजन को उसने अपनी तरफ आते पाया।

महाजन पास पहुंचा।

अकरम चेहरे पर मुस्कुराहट उभार लाया—

"आइये साहब।"

"तुम कौन हो?"

"ड्राइवर हूं, साहब भीतर हैं।" अकरम ने सामान्य स्वर में कहा।

"गेट पर कोई नहीं है?"

"दरबान वहीं था, जाने कहां चला गया... ।"

महाजन के चेहरे पर शक उभरा हुआ था।

"गेट से भीतर भी पहरा होना चाहिये। लेकिन कोई भी दिखाई नहीं दे रहा।"

"मुझे क्या पता! मैं तो नौकर हूं। मालिक भीतर हैं, पूछ लीजिये... ।"

"मालिक?"

"ज...जी।"

"तुम किससे तनख्वाह लेते हो?"

"मालिक से... ।" अकरम को जो समझ में आया कह दिया।

"जबकि तुम्हें सरकार से तनख्वाह मिलनी चाहिये।" महाजन ने सतर्क स्वर में कहा—"मुझे गड़बड़ लग रही है प्यारे!",

उसी पल अकरम के हाथ में रिवाल्वर चमक उठी।

महाजन चौंका।

"तूने ठीक सोचा कि गड़बड़ है।" अकरम दांत भींचे कह उठा—"गलत मौके पर आया।"

दो पल के लिये तो महाजन ठगा-सा रह गया। इस सब बातों की उसे जरा भी आशा न थी।

"ये सब क्या हो रहा है?" महाजन संभला।

"तेरे बाप को यहां से काश्मीर उठा ले जा रहे हैं। फिर वहां से पाकिस्तान।"

"क्या मतलब?"

"अब भी मतलब नहीं समझा तो... ।"

यही वो वक्त था जब बिलाल और काजी, मिस्टर पहाड़िया को लेकर बाहर निकले।

"तुम लोग पाकिस्तानी एजेंट हो?"

"हां... तभी तो तेरे बाप को पाकिस्तान ले जाने के लिए उठा रहे हैं।"

महाजन के होंठ भिंच गये।

बिलाल और काजी मिस्टर पहाड़िया को लिए भीतर आ पहुंचे।

महाजन और मिस्टर पहाड़िया की नजरें मिलीं।

"प्रिया ने जाफर शरीफ के बारे में मुझे जो बताया है, वो सच है?" महाजन ने एकाएक पूछा।

"हां... ।" मिस्टर पहाड़िया बोले।

"अबे चुप... ।" अकरम गुर्राया।

"ये जाफर शरीफ की बात कर रहा है।" बिलाल ने कहा।

"जाफर प्रिया की तलाश में दौड़ा फिर रहा है।" काजी बोला—"और ये कह रहा है कि इसने प्रिया से बात की है।"

तभी अकरम रिवाल्वर हिलाकर गुर्राया—

"कहां है प्रिया?"

"मुझे क्या पता तुम किस प्रिया की बात कर रहे हो? मैं तो अपनी बहन के बारे में... ।"

"साला हमें बेवकूफ बनाता है?" काजी गुर्राया।

"ले चलो इसे भी साथ। काश्मीर में इसे जाफर के हवाले कर देंगे।" अकरम दांत किटकिटा कर कह उठा।

"लेकिन जाफर तो दिल्ली में है।"

"काश्मीर से उसे खबर भिजवा देंगे। आ जायेगा वो... ।"

"हाथ ऊपर... ।" अकरम रिवाल्वर हिलाकर गुर्राया—"उधर घूम जा।"

महाजन समझ गया कि बचने का रास्ता नहीं है। ये बात भी उसके मस्तिष्क में थी कि वो भी तो काश्मीर जाने की तैयारी कर रहा है। इनके साथ चला जाये तो क्या बुरा है?

"जो मैंने कहा है, वो कर! वरना गोली मार दूंगा।"

महाजन ने हाथ ऊपर किए। घूमा।

अकरम तुरंत आगे बढ़ा और महाजन के सिर पर रिवाल्वर की नाल की जोरदार चोट मारी।

महाजन की आंखों के सामने लाल-पीले तारे नाचे और नीचे लुढ़कता चला गया।

अकरम ने महाजन के बेहोश शरीर को उठाकर किसी तरह कार में डाला। काजी और बिलाल मिस्टर पहाड़िया को लेकर कार में बैठे तो अकरम ने कार बंगले के बाहर ले जाकर दौड़ा दी।

□□□
□□□

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा श्रीनगर पहुंचे तो रात के बारह बजने जा रहे थे। मौसम में पर्याप्त ठण्डक थी। एयरपोर्ट इस वक्त शांत था।

कुछ ही देर में चैकिंग के पश्चात् वो एयरपोर्ट से बाहर निकले। मौसम बता रहा था कि रात को किसी भी वक्त बरसात हो सकती है। तेज-ठण्डी हवा चल रही थी। कुछ लाइटें इधर-उधर फैली तीव्रता से रोशन हो रही थीं। सामने ही लगी खाली टैक्सी मिल गई।

"आइये साहब... किधर चलना है?" टैक्सी ड्राइवर बोला।

"याकूब नगर... ।" मोना चौधरी बोली।

"बैठिये... ।"

वे टैक्सी में बैठे, तो फौरन ही टैक्सी आगे बढ़ गई। ठण्डक की वजह से शीशों पर गीलापन सा आ रहा था, जिसे ड्राइवर पास में कपड़ा रखे बार-बार शीशा साफ कर

लेता था। कड़क सर्दी का एहसास होने लगा था अब।

"तुम पहले आये हो श्रीनगर?" मोना चौधरी बोली।

"एक-दो बार... ।" विजय मल्होत्रा ने कहा।

"काम से या घूमने?"

"दोनों काम ही हो जाते थे।" कहने के बाद विजय मल्होत्रा ने टैक्सी ड्राइवर से पूछा—"यहां आतंकवाद कैसा चल रहा है?"

"ठीक है। चलता रहता है।" टैक्सी ड्राइवर ने कहा।

"तुम्हें डर नहीं लगता?"

"लगता तो है, लेकिन परिवार भी तो पालना है। वो अपना काम करते हैं और हम अपना। लेकिन साहब जी, पहले तो ऐसा कुछ नहीं हुआ, लेकिन अब बहुत गलत बात होने लगी है।" टैक्सी ड्राइवर कह उठा।

"क्या?"

"यहां आने वाले टूरिस्ट तो हमारे लिये भगवान के बराबर हैं। वो आते हैं तो हमारा घर चलता है। इसके अलावा तो काश्मीर में कोई और काम है नहीं। टूरिस्ट आयेंगे तो काश्मीर फले-फूलेगा। आतंकवादियों को ये बात किधर पसन्द आई। उन्होंने टूरिस्टों को बम से उड़ाना शुरू कर दिया। इससे लोग डर जायेंगे और काश्मीर नहीं आयेंगे। ऐसा हुआ तो हम परिवार कैसे पालेंगे? कितने साल तो सूखे बैठे रहे, अब जाकर लोग आना शुरू हुए हैं।"

"सरकार कुछ नहीं करती?"

"करती है। सरकार भी करती है। लेकिन सरकार को क्या पता कि सामने से आते इंसान के पास बम है और वो बम फोड़ने जा रहा है। किसी के मन की बात तो जान नहीं सकती सरकार।" टैक्सी ड्राइवर ने कहा।

"स्थानीय लोगों को सरकार का साथ देना चाहिये। तभी कुछ हो... ।"

"देते हैं लोग...साथ भी देते हैं। लेकिन वो लोग मौका पाकर, साथ देने वाले व्यक्ति के पूरे परिवार को खत्म कर

देते हैं। अब ऐसे में कौन साथ दे और कितना साथ दे। परिवार तो सबको ही प्यारा है।"

तभी मोटी-सी पानी की बूंदें टैक्सी की विण्ड शील्ड पर गिरीं।

"लो, बरसात भी आ गई।"

मोना चौधरी धुंध भरे शीशे से बाहर देखने का प्रयत्न कर रही थी।

"जाफर शरीफ के क्या हाल हैं?" विजय मल्होत्रा ने पूछा।

"जा...जाफर?" टैक्सी ड्राइवर हड़बड़ा उठा।

"वो आतंकवादी... ।"

"चुप रहो जी, मेरे से ऐसी बातें मत करो। मैं गरीब टैक्सी चलाने वाला... ।"

"सुना है जाफर शरीफ बहुत खतरनाक है।"

"मुझे क्या पता... । आपने याकूब नगर जाना है ना?" वो बात बदलते कह उठा।

"हां... ।"

"आप कौन हैं, दिल्ली से आये हैं?" टैक्सी ड्राइवर कह उठा।

"हम सेबों का बिजनेस करते हैं। बागों को ठेके पर उठाते हैं।" विजय मल्होत्रा ने कहा।

"काश्मीर के सेबों का भी जवाब नहीं। जो भी खाता है दीवाना हो जाता है। कहां के बाग आपने ठेके पर उठाये हैं?"

"मैं तो तनख्वाह पाने वाला नौकर हूं। मैडम ही सेबों के बाग ठेके पर उठाती हैं। इनसे पूछ लो।"

मोना चौधरी खामोश थी।

ड्राइवर फिर नहीं बोला।

बरसात में तेजी आने लगी थी। बूंदें तेजी से शीशों पर पड़ने लगी थीं। ड्राइवर ने वाइपर चला दिए थे। गाड़ी पर पानी की बूंदें गिरने की आवाज सुनाई दे रही थी।

"अब सर्दी बढ़ जायेगी।" ड्राइवर बोला।

"सुना।" विजय मल्होत्रा, मोना चौधरी से कह उठा—"सर्दी बढ़ रही है और मैं गर्म कपड़े नहीं लाया। ठण्ड में मेरी तबीयत बिगड़ जाती है। मुझे स्वेटर, जैकिट ले देना।"

"ले लेना।"

"सुबह पहला काम यही करना है।"

टैक्सी याकूब नगर पहुंची।

"यहां कहां जाना है?"

मोना चौधरी को यहां के रास्तों की पहचान नहीं थी।

कार के शीशे से बाहर भी कुछ नजर नहीं आ रहा था।

"यहीं रोक दो।" मोना चौधरी बोली।

"वहां रोकता हूं। वहां बरसात से बचने के लिये शेड बना हुआ है।" टैक्सी ड्राइवर ने एक शेड के पास टैक्सी रोकी।

विजय मल्होत्रा ने एयरबैग संभाला और टैक्सी का दरवाजा खोलते हुए तुरंत चार फीट दूर मौजूद शेड के नीचे जा खड़ा हुआ। बरसात तेज हो रही थी।

"कितना किराया हुआ?"

"हुक्म मेरे आका...।" टैक्सी ड्राइवर ने धीमे स्वर में कहा।

मोना चौधरी चौंकी।

"मेरी बात सुनो।" टैक्सी ड्राइवर बोला—"यहां से सौ कदम आगे जाने पर एक गली बायीं तरफ जा रही है। सड़क किनारे बनी सीढ़ियों को चढ़ना पड़ेगा, फिर वो गली दिखेगी। उस गली में घुसते ही बायीं तरफ का पांचवां मकान अकबर शाह का है।"

मोना चौधरी ने गहरी सांस ली। फिर बोली—

"तुम्हें पता था मैं आ रही हूं...।"

"चीफ का मैसेज आया था।"

"मुझे पहचाना कैसे?"

"हुलिये से...।"

"यहां के और लोग भी मेरे आने के बारे में जानते हैं?" मोना चौधरी ने गंभीर स्वर में पूछा।

"चीफ के खास एजेंट ही तुम्हारे आने के बारे में जानते हैं।"

"उनमें से कोई भी जाफर शरीफ के लिए काम करता हो सकता है?"

"मेरे ख्याल से तो ऐसा कुछ नहीं है।"

"दिल्ली में मैं डबल एजेंटों से भुगत कर आई हूं।"

"ओह! मेरे लिये सेवा?"

"कुछ नहीं। क्या हम पर नजर रखी जायेगी?"

"तुम कहो तो...।"

"हम पर नजर रखने की कोई जरूरत नहीं।"

"ऐसा ही होगा।"

"तुम्हारा नाम?"

"बशीर...। कहो तो मैं अपना फोन नम्बर दे दूं। जरूरत पड़ने पर मुझे फोन कर सकती हो।"

"दो...।"

बशीर ने कमीज के ऊपर की जेब से कार्ड निकाल कर मोना चौधरी को दिया। जिसे मोना चौधरी ने जेब में डालते हुए, दरवाजा खोला और बाहर निकल कर शेड के नीचे जा पहुंची।

"बहुत देर लगा दी?" विजय मल्होत्रा बोला।

"किराया दे रही थी।"

"मुझे क्या पता क्या हो रहा था, मैं देख तो नहीं रहा था।" विजय मल्होत्रा ने गहरी सांस ली।

सामने खड़ी टैक्सी आगे बढ़ गई।

"जाना कहां है?"

मोना चौधरी ने आगे की तरफ नजर मारी। जिधर के लिये बशीर ने कहा था।

"उस तरफ उठी हुई दीवार के बीच सीढ़ियां हैं। सीढ़ियां चढ़कर हम एक गली में पहुंचेंगे।"

"उसी गली में जाना है?"

"हां... । आओ।"

"इतनी तेज बरसात। भीगना पड़ेगा। सर्दी भी लग सकती है।"

□□□
□□□

अकबर शाह पचास बरस का व्यक्ति था।

गालों पर सफेद खुली दाढ़ी थी। सिर के बाल तेल लगे छोटे थे। सवा पांच फीट की लम्बाई थी उसकी। देखने में साधारण-सा लगता था। परिवार में उसकी पत्नी थी और जवान होती दो लड़कियां थीं। मध्यमवर्गीय घर था उसका।

उसी ने ही दरवाजा खोला था।

"हुक्म मेरे आका!" मोना चौधरी ने धीमें स्वर में कहा।

"आओ... ।" वो पीछे हट गया।

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा ने भीतर प्रवेश किया।

दरवाजा बंद करने के पश्चात् अकबर शाह उन्हें एक कमरे में ले गया।

"भीगे हुए हो। कपड़े बदल लो।" उसने कहा—"उधर बाथरूम है।"

तभी पैंतालिस बरस की एक औरत ने दुपट्टा लिये भीतर प्रवेश किया।

"ये मेरे मेहमान हैं।" अकबर शाह ने अपनी पत्नी से कहा— "इनके लिये अदरक वाली चाय बनाओ और उसके बाद खाने-पीने का इंतजाम करना... ।"

"इन्हें कपड़े चाहिये तो मेरी अलमारी से निकाल देना।"

"फिक्र मत करो। वो मैं सब ठीक कर दूंगा।"

मोना चौधरी कह उठी—

"चाय के साथ ब्रेड हो तो वो ही दे दीजियेगा। और कुछ बनाने की जरूरत नहीं... ।"

"ब्रेड से मेरा क्या होगा।" विजय मल्होत्रा ने धीमें स्वर में मोना चौधरी के कान में कहा।

"रात का डेढ़ बज रहा है।" मोना चौधरी ने दबे स्वर में कहा—"इस वक्त किसी को तकलीफ देने की जरूरत नहीं। सुबह पेट भरके खा लेना। हम यहां पिकनिक मनाने नहीं आये।"

"भूखा मारोगी।" विजय मल्होत्रा बोला—"सुबह मुझे जैकिट और स्वेटर खरीद देना। मैं ठण्ड नहीं सह सकता।"

अकबर शाह अपनी पत्नी के साथ बाहर निकल गया था।

"ये है कौन?"

"मेरी पहचान वाला है।"

"तुमने इसे मिलने पर 'हुक्म मेरे आका' कहा।"

"हम मजाक में एक-दूसरे से ऐसा ही कहते हैं। कपड़े बदलो, नहीं तो सदी लग जायेगी।"

□□□
□□□

चाय और ब्रेड खाने के दौरान मोना चौधरी की अकबर शाह से बात हुई। विजय मल्होत्रा भी पास में बैठा था। अकबर शाह की पत्नी वहां मौजूद नहीं थी।

"मेरे आने की आपको खबर थी?" मोना चौधरी बोली।

"हां। चीफ का फोन आया था।" अकबर शाह ने शांत स्वर में कहा।

"जाफर शरीफ के ठिकाने पर जाना है मैंने।"

"मैं नहीं जानता कि जाफर का ठिकाना किधर है?" अकबर शाह बोला।

"कुछ पता तो होगा?"

"नहीं। जाफर सतर्क रहने वाला आदमी है। उसके चंद खास लोग ही उसके ठिकाने के बारे में जानते हैं।"

"जाफर का ठिकाना पहलगांव के आस-पास कहीं है।"

"होगा, मुझे खबर नहीं... ।"

चाय का घूंट भरते मोना चौधरी के चेहरे पर सोच के भाव थे।

"तुम मेरी क्या मदद कर सकते हो?"

"हथियार...बारूद और आदमियों का इंतजाम करा सकता हूं। गाड़ी का इंतजाम करा सकता हूं। गाइड चाहिये तो वो मिल जायेगा। ठिकाने का इंतजाम करा सकता हूं।"

"मैं यहां नहीं रह सकती?"

"नहीं। किसी को यहां रखने का रिस्क नहीं ले सकता। तुम्हें रहने को जगह मिल जायेगी। सुबह नाश्ते के बाद मेरा आदमी तुम्हें दूसरी जगह ले जायेगा।" अकबर शाह ने कहा।

"मैं होटल में ठहरना पसन्द करूंगी।"

"होटल में रहकर, तुम जाफर की निगाहों में आ जाओगी। भारी खतरा है उसमें।"

"परवाह नहीं। मैं होटल में रहूंगी।"

अकबर शाह चुप रहा।

"रिवाल्वरें और फालतू राउण्ड हमें चाहिये।" मोना चौधरी बोली।

"अभी मिल जायेंगे। इतना सामान तो मैं अपने पास रखता ही हूं।"

"सुबह, नाश्ते तक हम यहां रह सकते हैं?"

"हां। बाहर बरसात बहुत तेज हो रही है। सर्दी बढ़ गई। ऐसे में भीतर रहना ही ठीक होगा।"

"जाफर की कोई खबर?"

"वो परेशान है। क्योंकि सुमेर, मिलिट्री की एजेंट के साथ उसके ठिकाने से भाग निकला है और जाते-जाते जाफर की सीक्रेट फाइल भी तिजोरी से लेता चला गया है।" अकबर शाह बोला।

"तुम्हें ये कैसे पता?"

"मेरे दो आदमी जाफर के लिये काम करते हैं।"

"उन्हें ठिकाना पता होगा जाफर का?"

"नहीं। वो सिर्फ फील्ड का काम संभालते हैं। जाफर के ठिकाने से उन्हें काम के आदेश मिल जाते हैं।"

"उस फाइल में क्या है, जिसे सुमेर ले भागा है?"

"जाफर के हिन्दुस्तान में फैले एजेंटों के पते।" अकबर शाह ने मोना चौधरी की आंखों में देखा—"अगर वो फाइल हिन्दुस्तान सरकार के हाथ लग गई तो जाफर की आतंकवादी गतिविधियां रुक जायेंगी। सब एजेंटों की गिरफ्तारी हो सकती है। उन्हें अपनी जगह से भागना पड़ेगा। जो काम वो कर रहे हैं, वो भी छोड़ने पड़ेंगे। जाफर के लिये सबसे बड़ी समस्या तो ये है कि उन एजेंटों में आधे एजेंट तो पाकिस्तान के सरकारी एजेंट हैं। ऐसे में पाकिस्तान सरकार भी उस का जीना दूभर कर देगी। हथियार और पैसा वो पाकिस्तान से भी लेता है।"

विजय मल्होत्रा के चेहरे पर गम्भीरता के भाव थे।

"कुछ वक्त पहले जाफर ने काश्मीर में रानी को पकड़ा था?"

"सुना था। चीफ ने बताया भी था।" अकबर शाह शांत स्वर में बोला।

"वो कहां है?"

"नहीं मालूम। उसके बाद उसकी कोई खबर नहीं मिली। या तो उसे मार दिया गया है, या उसे पाकिस्तान भेज दिया गया है, ताकि उसका मुंह खुलवा कर, काम की बातें जानी जा सकें।"

"ये भी हो सकता है कि रानी जाफर की कैद में हो?"

"हो सकता है। परन्तु चांस कम है। जाफर बहुत व्यस्त रहता है और आदतन वो कम ही किसी को अपनी कैद में रखता है। कैद में रखने लायक लोगों को वो मार देना पसन्द करता है या पाकिस्तान सरकार के हवाले कर देता है, अगर वो पाकिस्तान के काम के हों तो। मेरे ख्याल से तो रानी को अब तक जिंदा नहीं होना चाहिये।"

मोना चौधरी होंठ भींच कर रह गई।

"ये अपना आदमी है?" अकबर शाह ने विजय मल्होत्रा को देखा।

"जब तक मेरे साथ है, अपना ही है।" मोना चौधरी ने विजय मल्होत्रा पर निगाह मारी।

"मतलब कि चीफ का आदमी नहीं है।"

मोना चौधरी कुछ नहीं बोली।

"जाफर इस वक्त कहां है?"

"सुना है दिल्ली में है। लेकिन इस बात पर कभी यकीन न करना कि वो फलां-फलां जगह पर है। उसका कुछ पता नहीं चलता कि कब वो कहां पहुंच जाये। उसे हर जगह मौजूद समझो तो बेहतर होगा।"

"यहां जाफर का बहुत डर माना जाता है।"

"वो है ही ऐसा। दरिन्दा है। खतरनाक है।" अकबर शाह शांत था।

"जाफर के बारे में और क्या जानकारी देना चाहते हो मुझे?" मोना चौधरी ने कहा।

"उससे बचकर रहो। उसके आदमी और वो खुद भी कहीं भी मौजूद हो सकता है।" अकबर शाह ने उठते हुए कहा—"रात बहुत हो गई है, अब आराम कर लो। बाकी बात सुबह करेंगे।"

अकबर शाह कमरे से चला गया।

वहां दोनों के लिये पर्याप्त बिस्तरे मौजूद थे।

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा अपनी-अपनी रजाई में घुस गये।

"तुम्हारा क्या कोई चीफ है?" विजय मल्होत्रा ने पूछा।

"नहीं।"

"तो फिर चीफ की क्या बातें हो रही थीं?"

"ये बातें तुम्हारे काम की नहीं हैं।"

"ठीक है, ये तो बताओ कि उस फाइल की क्या बात हो रही थी, सुमेर वाली बात... ।"

"प्रिया को जाफर ने कैद कर लिया था और सुमेर जाफर

का आदमी है, जो प्रिया को लेकर ठिकाने से भाग... ।"

"ये प्रिया वो ही है, जो मुझे मोटी तनख्वाह देती थी?"

"हां... ।"

"तो जो मरी, वो प्रिया कौन थी?"

मोना चौधरी ने गर्दन घुमाकर विजय मल्होत्रा को घूरा।

"मेरे पास इतना वक्त नहीं है कि तुम्हारी बातों का जवाब देती रहूं। धीरे-धीरे सब समझ जाओगे।"

"ठीक है। ये तो बता दो कि उस फाइल में क्या है?"

"अकबर शाह ने बताया था। सुना ही होगा तुमने... ।"

"सुना था। लेकिन तुम ये मत भूल जाना कि काश्मीर आने के मुझे अलग पैसे तुमने देने हैं।"

"याद है। लेकिन सवाल कम पूछो मुझसे... ।"

"अब जो समझ में नहीं आयेगा, वो तो पूछूंगा ही। तुम्हारे साथ हूं। इन बातों की मुझे कभी भी जरूरत पड़ सकती है।"

"जाफर शरीफ का चेहरा देखा है?"

"तस्वीर देखी है।"

"तो उसका चेहरा याद रखो। अगर वो कभी सामने आया और हम उसे पहचान न पाये तो वो हाथ से निकल जायेगा।"

"साला, खतरनाक मामला है।"

"नींद ले लो। रात के तीन बजने वाले हैं। सुबह उठना भी है।" मोना चौधरी ने कहा और आंखें बंद कर लीं। परन्तु सोचों में यही सब बातें घूमती रहीं और आंख लग गई।

❑❑❑

❑❑❑

अगले दिन मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा, नाश्ते के पश्चात् अकबर शाह के घर से निकले और गली से निकलकर, सड़क पर जाने के लिये सीढ़ियों की तरफ बढ़ गये।

मोसम बेहद ठण्डा था। रात हुई बरसात की वजह से जगह-जगह पानी खड़ा हुआ था। कोहरा इतना था कि दस फीट दूर देख पाना भी कठिन था। वो सीढ़ियां उतरकर सड़क पर पहुंचे। कोहरे की वजह से दस फीट दूर की सड़क साफ नजर नहीं आ रही थी।

"मुझे स्वेटर, जैकिट और टोपी ले देना, वरना मैं सर्दी से मर जाऊंगा।" विजय मल्होत्रा कह उठा—"इतनी सर्दी में तो व्हिस्की की बोतल भी चाहिये, लेकिन वो मैं खुद ही खरीद लूंगा।"

मोना चौधरी की निगाह कोहरे में कुछ आगे खड़े किसी वाहन पर पड़ी।

वे उस तरफ बढ़ गये।

पास पहुंचने पर देखा वो टैक्सी थी। जाने क्यों मोना चौधरी को लगा कि वो बशीर की ही टैक्सी है। मोना चौधरी ने टैक्सी की बॉडी थपथपाई तो पीछे का दरवाजा खुला। बशीर का चेहरा दिखा, जो कि नींद से भरा हुआ था। उन दोनों को देखते ही बोला—

"आईये। मैं तो कब से आप लोगों का इंतजार ही कर रहा था। सोचा कि रात बिताने के बाद, सुबह तो कहीं जाना ही होगा, इसलिए रात में यहीं टैक्सी में ही सो गया।" वो बाहर निकला।

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा पिछली सीट पर बैठे। दरवाजा बंद कर लिया। एयरबैग विजय मल्होत्रा ने संभाल रखा था। वो कह उठा—

"अजीब-सा नहीं है टैक्सी वाला?"

भीतर बैठते बशीर ने ये शब्द सुने तो वो कह उठा—

"ये काश्मीर है। यहां सवारी लेने के लिये सारी रात सर्दी में पड़े रहना मामूली बात है।" टैक्सी स्टार्ट करते हुए कह उठा—"ये बताइये कि काश्मीर में क्या-क्या देखना चाहते हैं आप?"

"होटल चलो।" मोना चौधरी बोली।

"होटल?" बशीर ने गर्दन घुमाकर मोना चौधरी को देखा।

"कोई भी सुरक्षित होटल... ।"

बशीर टैक्सी आगे बढ़ाता कह उठा—

"यहां तो कोई भी सुरक्षित होटल नहीं है। कहीं भी गड़बड़ हो सकती है। लाल चौक चलते हैं। वो भीड़-भाड़ वाला इलाका है। बस अड्डा भी पास ही है। रौनक रहती है वहां। सवारी भी हर वक्त मिल जाती है।"

रास्ते में खास बात न हुई।

पन्द्रह मिनट में ही वे लाल चौक आ गये।

एक जगह टैक्सी रोकता बशीर बोला—

"वो रहा सामने कुमार होटल। चले जाइये। बड़ा होटल है। कमरे बहुत हैं। भाव-मोल कर लीजियेगा। मैं यहीं कहीं खड़ा मिलूंगा। जब भी बाहर आयें, नजर घुमा लीजियेगा।"

मोना चौधरी ने विजय मल्होत्रा से कहा—

"तुम जाकर कमरा बुक कराओ। मैं आती हूं।"

बैग संभाले वो टैक्सी से निकलकर होटल की तरफ चला गया।

मोना चौधरी ने बशीर से पूछा—

"मुझे जाफर शरीफ की तलाश है।"

"जानता हूं... ।"

"उसके ठिकाने के बारे में कुछ जानते हो?" मोना चौधरी का स्वर गम्भीर था।

"नहीं। अकबर शाह ने कुछ नहीं बताया?"

"वो जानता है?"

"मुझे नहीं मालूम। मैंने इसलिये पूछा कि शायद वो जानता हो।"

"वो कहता है कि इन बातों की उसे खबर नहीं। तुम्हें भी नहीं पता?"

बशीर ने इंकार में सिर हिलाया।

"पहलगांव के पास है कहीं बशीर का ठिकाना।"

"ये बात मैंने पहले कभी नहीं सुनी। तुम होटल में जा रही हो?"

"हां।"

"जाओ, ये बात मैं पता करने की चेष्टा करता हूं। तुम कब बाहर आओगी?"

"दो-ढाई घंटे तक।"

"मैं यहीं मिलूंगा। नजर घुमा लेना। इस बारे में कुछ पता करता हूं।"

मोना चौधरी टैक्सी से बाहर निकली और होटल की तरफ बढ़ गई।

❑❑❑

❑❑❑

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा जब होटल से बाहर निकले तो दिन के दस बज रहे थे। धुंध साफ हो चुकी थी, मौसम थोड़ा-सा खुल चुका था। परन्तु सर्दी का घेरा अपनी जगह कायम था।

मोना चौधरी ठिठकी और बशीर की तलाश में नजरें दौड़ाने लगी। इधर-उधर बिखरी खड़ी कई टैक्सियां किनारों पर खड़ी नजर आ रही थीं। चौक के बीचों-बीच ट्रैफिक पुलिस वाला खड़ा इधर-उधर देखता सुस्ता रहा था। लोग आ-जा रहे थे। पास ही जिस तरफ बस अड्डा था, उस तरफ लोगों का आना-जाना ज्यादा लग रहा था। सड़क गीली थीं और कई जगह पानी खड़ा हुआ था।

"तुम क्या देख रही थीं?" विजय मल्होत्रा कह उठा।

मोना चौधरी चुप-सी नज़रें दौड़ाती रही।

"जो भी करो, लेकिन पहले मुझे जैकिट और स्वेटर खरीद दो। ठण्ड में मैं मर जाऊंगा।" वो बोला।

मोना चौधरी ने हजार रुपया निकाल कर उसे दिया।

"ये लो, जैकिट-स्वेटर खरीद कर यहीं आ जाना।"

"तुम भी साथ चलो... ।"

"मुझे यहां काम है, जब तुम आओगे तो मैं यहीं पर मिलूंगी।"

विजय मल्होत्रा ने सिर हिलाया और एक तरफ बढ़ गया।

मोना चौधरी नजरें घुमाती आगे बढ़ी और एक तरफ से बशीर आता दिखा।

"तुम्हारा साथी कहां गया है?" पास आते ही उसने पूछा।

"स्वेटर खरीदने गया है। तुम बोलो... जाफर के ठिकाने का पता किया?"

"किया... लेकिन कुछ भी पता नहीं चल सका।"

मोना चौधरी के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"मैंने अपने दो आदमियों को पता करते रहने को बोल दिया। कुछ पता चला तो वो मुझे बता देंगे।"

मोना चौधरी कुछ नहीं बोली।

"क्या तुम्हें कुछ नहीं पता?"

"इतना ही पता लगा है कि जाफर का ठिकाना पहलगांव के पास कहीं है।" मोना चौधरी ने उसे यह न बताया कि वह अब्दुल्ला चाय वाला है। वो जाफर के ठिकाने के बारे में जानता था (ये बात मोना चौधरी को रहमत बिला ने बताई थी)।

"तो पहलगांव चलते हैं, शायद वहां से कुछ पता चले।"

"विजय को आ लेने दो... ।"

"वो क्या अपना आदमी है?"

"जब तक मेरे साथ है, वो अपना ही आदमी है।"

"मतलब कि चीफ का आदमी नहीं है?"

"नहीं। वो मेरा आदमी है।"

"इस काम में बाहरी आदमी का साथ होना क्या ठीक है?"

"वो बाहरी नहीं है। मेरा आदमी है। उसकी जिम्मेवारी मेरी है।" मोना चौधरी ने कहा।

दोनों अपनी बातों में व्यस्त थे।

वहां से कुछ दूर एक टैक्सी के पीछे खड़ा विजय मल्होत्रा इन्हें ही बातें करता देख रहा था। चेहरे पर सोच के भाव थे। जब देखा कि उनकी बातें खत्म-सी हो रही हैं तो वहां से निकल कर उनकी तरफ बढ़ने लगा।

विजय मल्होत्रा पास पहुंचा।

"स्वेटर जैकिट नहीं लाये?" मोना चौधरी उसे देखते ही बोली।

"बढ़िया नहीं लगी।"

"मुझे बताते।" बशीर कह उठा—"मैं बढ़िया दुकान पर ले चलता। कोई बात नहीं, अब चलो। पहलगांव के रास्ते पर ही आती है वो दुकान। तुम्हें भी सर्दी लग रही होगी।" वो मोना चौधरी से बोला—"आओ।"

□□□
□□□

डेढ़ घंटे बाद वे पहलगांव पहुंचे।

रास्ते में स्वेटर-जैकिट भी खरीदे थे। मोना चौधरी ने ब्राउन कलर की जैकिट पहन रखी थी, जो कि गले तक बंद थी। जैकिट में उसका रूप और निखर आया था।

विजय मल्होत्रा ने नीचे स्वेटर और ऊपर जैकिट के अलावा सिर पर टोपी पहनी थी।

बशीर ने जहां टैक्सी रोकी, वहां से आगे जाने का रास्ता नहीं था।

"यहां तक ही टैक्सी आती है। यहां से आगे बर्फ का रास्ता है। बर्फ में पैदल चला जाता है या पिट्ठू लिया जाता है। ये पहलगांव है, यहां से आगे ऊपर चढ़कर खिलनमार्ग आता है।"

वो तीनों टैक्सी से बाहर निकले।

ये अच्छी-खासी रौनक वाली जगह थी। सड़क के दोनों तरफ चाय की दुकानें या फिर खाने-पीने के रेस्टोरेंट बने नजर आ रहे थे। सर्दी होने पर भी यहां भीड़ थी। टूरिस्ट लोगों

की एक बस आई हुई थी, जिसकी वजह से रौनकी माहौल हो रहा था।

विजय मल्होत्रा सब तरफ नजरें दौड़ाने के बाद बशीर को देखने लगा था।

बशीर ने विजय मल्होत्रा को देखकर पूछा।

"क्यों भाई, तू मुझे क्यों देख रहा है?"

"सोच रहा हूं कि काश्मीर में जिंदगी बिताना कितना अच्छा है।" विजय मल्होत्रा मुस्कुराया।

"बहुत अच्छा है।" बशीर ने मुंह बनाया—"अगर पास में ढेर सारे नोट हों। अगर ये सोचो कि काश्मीर में रह कर कमाओ और खाना है तो बहुत कठिन है। यहां कोई कमाई नहीं है।"

तब तक मोना चौधरी की निगाह उस रेस्टोरेंट के बोर्ड पर टिक चुकी थी जहां पर लिखा था 'अब्दुल्ला की चाय'। काफी बड़ी दुकान थी वो। मोना चौधरी समझ गई कि रहमत बिला ने इसी चाय वाले का जिक्र किया था कि ये जाफर शरीफ का ठिकाना जानता है।

विजय मल्होत्रा मोना चौधरी की नजरें पहचान कर बोला—

"चाय पीने का इरादा है?"

"सोच रही हूं।"

"चलो, मेरा मन भी चाय का कर रहा है। यहां सर्दी ज्यादा है।" विजय मल्होत्रा बोला।

वो आगे बढ़े तो बशीर भी बढ़ा।

विजय मल्होत्रा ठिठका।

"तुम कहां जा रहे हो?"

"मैं तुम लोगों के साथ...।" उसने कहना चाहा।

"देख भाई!" विजय मल्होत्रा बोला—"तू टैक्सी वाला है, टैक्सी वाला ही बन कर रह। इस तरह हमारे साथ-साथ चाय की दुकान के भीतर आने की जरूरत नहीं है। दो-चार बातें करनी होती हैं हमें।"

बशीर मुस्कुरा पड़ा।

"तू यहीं ठहर। कोई सवारी मिले तो बेशक लेकर चले जाना। हमें दूसरी टैक्सी मिल जायेगी। हमारी चिंता करने की जरूरत नहीं। सवारी ना मिले तो वहां से दो रुपये की चाय पी लेना। पैसे मैं दूंगा।"

"ठीक है।" बशीर मुस्कुराया।

मोना चौधरी आगे पहुंच चुकी थी।

विजय मल्होत्रा पास पहुंचा उसके।

"क्या हुआ?"

"होना क्या है!" विजय मल्होत्रा बोला—"हमारे साथ आ रहा था। मैंने उसे रोक कर समझा दिया कि वो टैक्सी वाला है, वो ही बनकर रहे। ज्यादा हमारे बीच घुसने की जरूरत नहीं है।"

सड़क पार करके वे अब्दुल्ला की चाय की दुकान के पास आ पहुंचे थे।

"मैंने ठीक कहा ना उसे?"

"ठीक कहा।"

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा ने चाय की दुकान में प्रवेश किया।

वो काफी बड़ी और पुरानी चाय की दुकान थी। दुकान के भीतर लकड़ी के बैंच और लकड़ी के ही टेबल रखे हुए थे। भीतर सर्दी कम महसूस हो रही थी। एक तरफ चाय बनाने की बड़ी-सी अंगीठी मौजूद थी। वहां बड़े बर्तन में चाय बनाई जा रही थी। एक लड़का गिलास तैयार कर रहा था। बड़े से थाल पर रखते हुए। दो अन्य लड़के भी अपने-अपने कामों में व्यस्त थे।

बीस के करीब लोग वहां बैठे थे। दो-तीन को छोड़कर सब स्थानीय थे।

कुछ चाय पी रहे थे। कुछ यूं ही बैठे थे।

बाहर निकलने वाले रास्ते पर टेबल-कुर्सी रखे पचपन

बरस का एक आदमी बैठा आंखों पर चश्मा चढ़ाये अखबार पढ़ने में व्यस्त था।

विजय मल्होत्रा ने वहां से बाहर सड़क पार देखा।

बशीर उसे टैक्सी के पास ही खड़ा दिखा।

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा बैंच पर बैठ गये।

पांच-सात मिनट बाद ही लड़का उनके सामने चाय रखने आ गया।

"सुनो।" लड़का जाने लगा तो मोना चौधरी ने टोका।

वो ठिठका।

"अब्दुल्ला कहां है?"

"वो रहा।" उसने अखबार पढ़ते व्यक्ति की तरफ इशारा किया और चला गया।

"तुमने अब्दुल्ला के बारे में क्यों पूछा?" विजय मल्होत्रा ने मोना चौधरी को देखा।

"यूं ही, मुझे ये चाय की दुकान पसन्द आ गई।"

"तो उसको पूछने की क्या जरूरत है?"

मोना चौधरी ने अपना चाय का गिलास उठाया और खड़ी होती बोली—

"तुम यहीं बैठो, मैं अब्दुल्ला से मिलकर आती हूं।" कहकर मोना चौधरी आगे बढ़ गई।

विजय मल्होत्रा ने बाहर नजर मारी।

सड़क पार उसे टैक्सी तो खड़ी दिखाई दी, परन्तु बशीर नजर न आया। वो वहीं बैठा बशीर की तलाश में हर तरफ नजरें घुमाने लगा।

□□□

□□□

"हैलो...।" मोना चौधरी पास पहुंच कर ठिठकी और बोली।

उसने अखबार से नजरें हटाईं और मुस्कुरा कर मोना चौधरी को देखा।

"हैलो...।"

मोना चौधरी ने पास पड़ा छोटा-सा स्टूल खींचा और उस पर बैठती बोली–

"मेरी सहेली ने मुझे कहा कि पहलगांव जाऊं तो अब्दुल्ला के यहां से चाय जरूर पिऊं... ।"

"ये तो मेरी खुशनसीबी है कि आप मेरे गरीबखाने पर आईं... ।" अब्दुल्ला अखबार एक तरफ रख कर सीधा बैठता बोला–"आप कहां सें तशरीफ लाई हैं? मेरा मतलब है कौन-से शहर से?"

"दिल्ली... ।"

"खूब...दिल्ली तो दिल वालों की जगह है। मैंने अपनी बेटी दिल्ली में ब्याही है।"

"ये तो अच्छी बात है...कहां पर ब्याहा है उसे?"

"अब तो अमरीका चली गई है।"

"ये तो और भी अच्छी बात है। आप कब से हैं काश्मीर में?" मोना चौधरी ने पूछा।

"यहीं पैदा हुआ। सब काश्मीर अपना ही है।"

"बहुत अच्छी जगह है।"

"हां। मेरा मन यहां से जाने का करता ही नहीं। कुदरत ने धरती पर अगर कहीं अपने नजारे बिखेरे हैं तो वो काश्मीर ही है। धरती का स्वर्ग यूं ही नहीं कहते इसे। आपने देख लिया होगा काश्मीर?"

"अभी नहीं, रात ही आई हूं।"

"तो काश्मीर देखिये। मेरे लायक कोई सेवा हो तो बताइयेगा।" अब्दुल्ला ने कहा।

"दिल्ली में, रहमत बिला मिला था।"

अबदुल्ला चौंका। संभला।

मोना चौधरी की निगाह एकटक उसके चेहरे पर थी।

"क्या हुआ–आप एकाएक परेशान क्यों हो गये?"

"परेशान–नहीं तो...।" अब्दुल्ला सम्भल कर बोला–"क्या नाम लिया आपने?"

"रहमत बिला...कबाड़ी, पुरानी कारों को ठोक-पीट

कर नया करता है, फिर उन्हें बेचता है।"

अब्दुल्ला का चेहरा अब पहले की तरह शांत था।

"मैं तो नहीं जानता इस रहमत बिला को।"

"रहमत बिला ने मुझे तुम्हारे बारे में बताया था कि तुमसे मिल लूं... ।"

"क्यों? मैंने तो उसका कोई उधार नहीं देना।"

"उसने कहा था कि तुम मुझे जाफर शरीफ का पता बता दोगे। उसका ठिकाना इधर ही कहीं है।"

"जाफर शरीफ... ।" अब्दुल्ला धीमे से बोला–"नाम सुना हुआ लगता है।"

"आतंकवादी है।"

"हां, आतंकवादी...काश्मीर में उसका नाम है।" अब्दुल्ला ने मोना चौधरी को देखा।

"कहां है जाफर का ठिकाना?"

"मुझे क्या पता?"

मोना चौधरी के चेहरे पर कड़वे भाव फैल गये।

"बहुत हो गया अब्दुल्ला... ख़ैरियत चाहता है तो जाफर के बारे में बता... ।"

अब्दुल्ला ने मोना चौधरी की आंखों में झांका।

"मैंने कभी जाफर को देखा नहीं... ।"

"मिला भी नहीं?"

"नहीं... ।"

"उसे जानता भी नहीं होगा?"

अब्दुल्ला ने इंकार में सिर हिलाया।

"ये जगह मेरे आदमियों ने घेर रखी है, गोली सीधी तेरे सिर में लगेगी।"

अब्दुल्ला ने विजय मल्होत्रा की तरफ देखा।

नजरें मिलते ही विजय मल्होत्रा मुस्कुराया।

अब्दुला ने अपनी निगाह पुनः मोना चौधरी के चेहरे पर टिका दी। वो पूरी तरह शांत और निश्चिंत नजर आ रहा था। चेहरे पर किसी तरह का कोई भाव नहीं था।

"बोल, मरना चाहता है?" मोना चौधरी ने खतरनाक स्वर में कहा।

"मुझे नहीं पता तुम क्या कह रही हो। तुम्हारी कही किसी बात से मेरा वास्ता नहीं है।"

"मेरे ख्याल में तुम सिर में ही गोली खाना चाहोगे। मेरा एक इशारा होते ही गोली चल जायेगी।"

"अल्लाह की मर्जी... ।" अब्दुल्ला मुस्कुराया।

मोना चौधरी ने उसे घूरा।

"तुम कौन होती हो मुझे मारने वाली? ऊपर अल्लाह बैठा है। जब मेरे कर्म उसे भारी लगेंगे तो वो मुझे उठा लेगा।"

मोना चौधरी के दांत भिंच गये।

"तुम्हारी चाय ठण्डी हो गई है। नई बनवा दूं... ।" अब्दुल्ला ने उसके हाथ में थमे गिलास को देखा।

मोना चौधरी ने गिलास टेबल पर रख दिया।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"मोना चौधरी... ।"

"पुलिस में हो या खुफिया में?"

"कहीं भी नहीं हूं। अपराधों की सरताज मोना चौधरी हूं। नाम तो सुन रखा होगा।"

"नहीं सुना... ।"

"नाम सुनने की शुरूआत कभी तो होनी थी, आज हो गई अब्दुल्ला।" मोना चौधरी गुर्राकर कह उठी—"बहुत बड़ी दौलत मिल सकती है तुम्हें जाफर शरीफ के ठिकाने के बारे में बताने के लिये... ।"

"जो बात मैं नहीं जानता, वो तुम्हें कैसे बता सकता हूं?"

"सोच लो, अच्छी तरह विचार कर लो। मैं फिर आऊंगी।"

अब्दुल्ला के होठों पर मुस्कान उभरी।

मोना चौधरी उसे खा जाने वाली निगाहों से देखती रही।

तभी बशीर दुकान में आया। पास पहुंचा।

"मेमसाब!" बशीर बोला—"ऊपर जाने के लिये घोड़ों का इंतजाम करूं? घोड़े वाला सौ रुपये लेगा।"

मोना चौधरी ने अपना चेहरा ठीक करते हुए बशीर को देखा—

"नहीं।" मोना चौधरी ने कहा।

अब्दुल्ला की निगाह बशीर पर जा टिकी थी।

"कैसे हो अब्दुल्ला?"

"मेमसाहब को ठण्डी जगह घुमाओ। दिमाग गर्म हो रहा है इनका।" अब्दुल्ला बोला।

बशीर ही-ही-ही करके रह गया।

विजय मल्होत्रा भी उठकर पास आ पहुंचा था।

"मैं फेर आऊंगी अब्दुल्ला... ।"

"आना।"

"यहां की चाय सच में बहुत अच्छी है।"

मोना चौधरी, विजय मल्होत्रा और बशीर के साथ बाहर निकल गई।

अब्दुल्ला कुछ पल उन्हें देखता रहा, फिर टेबल पर रखे फोन का रिसीवर उठाया और नम्बर मिलाने लगा। दो बार में जाकर लाइन मिली।

"हैलो... ।"

"मोना चौधरी काश्मीर आ पहुंची है।" अब्दुल्ला ने कहा।

"मालूम है।" उधर से कहा गया।

"वो जानती है कि मैं जाफर के बारे में जानता हूं। मेरे पास आई थी ठिकाने के बारे में पूछने?"

"तुम्हारे बारे में उसे कैसे पता चला?"

"रहमत बिला ने बताया... ।"

"हरामी ने मरने से पहले मुंह खोला होगा। अब गई मोना चौधरी?"

"फिर आने को कह गई है।"

"उसकी परवाह न कर।"

"मोना चौधरी के साथ गाइड के तौर पर मैंने... ।"

"उसकी बात मत कर। वो सब हमें पता है। फोन बंद कर दे। कोई खास बात हो तो बताना।"

अब्दुल्ला ने रिसीवर वापस रख दिया।

❑❑❑

❑❑❑

"अब्दुल्ला से क्या बात हो रही थी?" बशीर ने पूछा।

मोना चौधरी चुप रही।

"मेरे से बात करके तुम्हें फायदा ही होगा।" बशीर पुनः बोला।

विजय मल्होत्रा रह-रहकर बशीर को देखने लगता था।

"अब्दुल्ला जाफर शरीफ के ठिकाने के बारे में जानता है।" मोना चौधरी ने कहा।

"ओह... । तुम्हें कैसे पता?"

"पता है।" मोना चौधरी ने दांत भींचकर कहा।

"खबर पक्की है?"

"हां। एकदम पक्की... ।"

बशीर ने जेब से उसी पल मोबाइल फोन निकाला।

"क्या कर रहे हो?" मोना चौधरी ने टोका।

"अपने आदमियों को फोन कर रहा हूं। वो अब्दुल्ला को उठा ले जाने का इंतजाम करेंगे। उसके बाद आसानी से अब्दुल्ला का मुंह खुलवा लेंगे कि जाफर का ठिकाना कहां है।" बशीर ने कहा।

"अभी ऐसा कुछ भी करने की जरूरत नहीं।"

"क्यों?"

"मैं अब्दुल्ला को सब समझा आई हूं कि मुझे सब पता है, वो शांत नहीं बैठेगा। अब देखना ये है कि वो मेरे खिलाफ क्या कदम उठाता है। पहला मौका मैं उसे देना चाहती हूं।" मोना चौधरी ने कहा।

"इससे खतरा ज्यादा बढ़ जायेगा।" बशीर बोला—"ये जाफर जैसे आतंकवादी का मामला है।"

"देख लेंगे।"

"बशीर ठीक कहता है कि, हमें अब्दुल्ला को कुछ करने का मौका नहीं देना चाहिये।" विजय मल्होत्रा तुरंत तेज स्वर में कह उठा—"काश्मीर में जाफर शरीफ की चलती है, वो हमें चींटी की तरह मसल सकता है।"

"मैंने कहा है कि पहला मौका मैं जाफर शरीफ को देना चाहती हूं।"

"इस मौके-मौके में मैं मर गया तो...?"

"तुम चाहो तो इसी वक्त मुझसे अलग हो सकते हो।"

"यूं क्यों नहीं कहतीं कि तुम मुझे तनख्वाह देना नहीं चाहतीं।"

मोना चौधरी ने कुछ नहीं कहा।

"तुम समझाओ इसे... ।"

"मोना चौधरी ज्यादा समझदार है।" बशीर ने कहा।

"लेकिन तुम कौन हो?" पूछा विजय मल्होत्रा ने।

"बशीर... ।"

"बशीर तो हो, लेकिन तुम हो कौन? मोना चौधरी इस तरह खुलकर तुमसे कैसे बात कर रही है?"

"इसी से पूछो... ।"

विजय मल्होत्रा ने मोना चौधरी से कहा—

"तुम बताओ।"

"ये अपना ही आदमी है।"

"वो ही 'हुक्म मेरे आका' की तरह?" विजय मल्होत्रा ने पूछा।

मोना चौधरी ने सहमति से सिर हिला दिया।

विजय मल्होत्रा, बशीर को देखने लगा।

बशीर के चेहरे पर गम्भीरता थी। वो कह उठा—

"मेरी मानो तो अब्दुल्ला को उठा लेना ही ठीक है।"

"नहीं। अभी अब्दुल्ला को छूट दो।"

"छूट-छूट में हमारी जान भी जा सकती है।" बशीर ने कहा।

"वो ही तो मैं कह रहा हूं।" विजय मल्होत्रा बोला।

"एक ही बात को बार-बार मत कहो।"

बशीर ने मोबाइल फोन जेब में डाल लिया, फिर विजय मल्होत्रा से बोला–

"तू बार-बार मुझे क्यों देखता है?"

"तेरे को क्या?"

"मेरे को परेशानी होती है। तेरी नजरें मुझ पर ही टिकी रहती हैं।"

"तो क्या हो गया! मैं तेरे को कुछ कहता तो नहीं... ।"

बशीर ने मुंह बनाया और मोना चौधरी से बोला–

"अब क्या करना है?"

"अकबर शाह का फोन नम्बर है तुम्हारे पास?"

"हां।" बशीर ने कहा और मोबाइल फोन निकालते हुए पूछा–"बात करनी है उससे?"

मोना चौधरी ने हां में गर्दन हिला दी।

बशीर ने अकबर शाह का नम्बर मिलाया और बात हो गई।

मोना चौधरी ने बात की।

"मैं ऐसे किसी आदमी के बारे में जानना चाहती हूं, जिसे जाफर के बारे में पूरी खबर हो।"

"मैं सीधे तौर ऐसे किसी आदमी को नहीं जानता।" अकबर शाह की आवाज कानों में पड़ी।

"सीधे तौर पर न सही, वैसे ही किसी का नाम-पता-ठिकाना बताओ। जानकारी दो।"

"नाम है गुलाम मोहम्मद... ।"

"पता?"

"गुलजार नगर, 40 नम्बर मकान में रहता है।"

"है क्या ये?"

"साल पहले इलैक्शन हारा था। यूं जाफर शरीफ के साथ सम्बन्ध है इसका। जाफर के लिये कोमल भावनायें इस्तेमाल करता है। अपने भाषणों में अक्सर कहता है कि

जाफर सैनिक है, जो कि काश्मीर के लोगों के लिये लड़ाई लड़ रहा है। गद्दार लोग उसे आतंकवादी कह कर पुकारते हैं।" अकबर शाह ने कहा।

"समझ गई... ।"

"लेकिन गुलाम मोहम्मद से मिलना, तुम्हारे लिये खतरे से खाली नहीं मोना चौधरी। उससे मिलते ही जाफर के आदमी तुम्हारे पीछे पड़ जायेंगे। कहीं भी तुम्हें गोलियों से भून देंगे।"

"यही तो मैं चाहती हूं कि जाफर सामने आये। उसके आदमी दिखें।" मोना चौधरी ने दांत भींचकर कहा।

"मेरे ख्याल से तुम जाफर को समझने में भारी भूल कर रही हो।"

"मैं जाफर की ताकत को कम नहीं आंक रही। मुझे उसके शक्तिशाली होने का एहसास है।"

"अब मैं क्या कहूं! तुम ज्यादा समझदार हो।"

मोना चौधरी ने फोन बंद करके बशीर को थमा दिया।

"क्या हुआ?" विजय मल्होत्रा ने पूछा।

"गुलाम मोहम्मद से मिलेंगे हम... ।"

"वो जो गुलजार नगर में रहता है।" बशीर उसी पल कह उठा।

"तुम जानते हो इसे?" मोना चौधरी ने बशीर को देखा।

"इतना ही जानता हूं कि गुलाम मोहम्मद, गुलजार नगर में रहता है और सुनने में आता रहता है कि उसके सम्बन्ध जाफर से हैं। दोनों दोस्त हैं शायद। सुना ही है।"

"उसी के पास जाना है।"

"क्या करने?"

"वो जाफर का पता बतायेगा।"

बशीर गम्भीर हो उठा—

"ये गलत होगा।"

"क्यों?"

"गुलाम मोहम्मद से मिलोगी तो जाफर पूरी तरह

सावधान हो जायेगा और हमारी मौत का इंतजाम कर देगा। ये तो शेर के मुंह में हाथ देने वाली बात हो गई।''

''शेर के मुंह में हाथ दिए बिना, शेर के दांत भी तो नहीं गिने जा सकते!'' मोना चौधरी ने खतरनाक स्वर में कहा—''तुम्हारे साथ जाने की जरूरत नहीं। मैं अकेली ही गुलाम मोहम्मद से मिलने जाऊंगी।''

''तुम क्या सोचती हो कि वो तुम्हें जाफर का पता बता देगा?'' बशीर बोला।

''नहीं बतायेगा तो मरेगा!'' मोना चौधरी फुंफकार उठी।

बशीर ने विजय मल्होत्रा से कहा—

''तुम ही समझाओ इसे... ।''

''मैं क्या समझाऊं! मैंने तो तनख्वाह लेनी है। ये जो करना चाहेगी, मैं तो कहूंगा कि ठीक कर रही है।''

''तनख्वाह तो तभी देगी जब ये जिन्दा रहेगी।'' बशीर झल्लाया।

''मेरी बात मोना चौधरी की समझ में... ।''

तभी मोना चौधरी कह उठी—

''तुम दोनों मेरे साथ नहीं जाओगे। मैं अकेली ही गुलाम मोहम्मद से मिलूंगी।''

''मैं तो वैसे भी तुम्हारे साथ नहीं जा सकता।'' बशीर ने गम्भीर स्वर में कहा—''काश्मीर में ही काम करना है मुझे और बड़े मगरमच्छों से मैं पंगा नहीं ले सकता। गुलाम मोहम्मद के मामले में मैं पीछे ही रहूंगा।''

''मैं तुम्हारे साथ जाऊंगा मोना चौधरी। क्योंकि काश्मीर में मैं कुछ भी कर दूं, मुझे किसी का डर नहीं।''

बशीर गम्भीर स्वर में कह उठा—

''आओ, तुम दोनों को गुलजार नगर के रास्ते तक छोड़ दूं... ।''

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा टैक्सी में बैठे।

बशीर ने ड्राइविंग सीट संभाली और टैक्सी आगे बढ़ा दी।

मोना चौधरी ने अब्दुल्ला के चायखाने पर नजर मारी। अब्दुल्ला उसे इधर ही देखता नजर आया। मोना चौधरी के होंठ भिंचते चले गये।

□□□

□□□

बशीर एक वीरान सड़क पर टैक्सी रोकता हुआ बोला—

''इस सड़क पर सीधे चले जाओ। करीब एक किलोमीटर चलना पड़ेगा। तब गुलजार नगर शुरू हो जायेगा। वहां से किसी से भी गुलाम मोहम्मद का घर पूछ लेना।''

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा टैक्सी से बाहर निकले।

''मैं साथ जरूर चलता।'' बशीर बोला—''लेकिन गुलाम मोहम्मद जैसे इंसान के सामने पड़कर, मैं अपने को मुसीबत में नहीं डालना चाहता। चीफ का सख्त आदेश है कि मैं कभी भी किसी भी नजरों में न आऊं... ।''

''मुझे तुम्हारी जरूरत भी नहीं... ।''

''तू मुझे क्यों देखे जा रहा है?'' बशीर ने एकाएक विजय मल्होत्रा से कहा।

''तुझे क्या, मेरी मेर्जी... ।'' कहकर विजय मल्होत्रा दूसरी तरफ देखने लगा।

''अगर तुम सही-सलामत वापस आ सकीं तो मैं तुम्हें कहीं भी मिल लूंगा।'' बशीर ने गम्भीर स्वर में कहा।

मोना चौधरी, विजय मल्होत्रा के साथ उस सड़क पर आगे बढ़ गई।

टैक्सी में बैठा बशीर कुछ पल तक सोच भरी सिकुड़ी निगाहों से उन्हें जाते देखता रहा। इस बीच विजय मल्होत्रा ने एक बार पलटकर पीछे देखा तो, बशीर ने हाथ निकालकर हिला दिया। फिर बशीर ने जेब से मोबाइल फोन निकाला और नम्बर मिलाने लगा।

❑❑❑
❑❑❑

उस पहाड़ी सड़क को तय करने के बाद, मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा, गुलजार नगर पहुंचे। इतना रास्त तय करने में उन्हें पैंतालिस मिनट लग गये थे। वहां से उन्होंने गुलाम मोहम्मद का घर पूछा और पन्द्रह मिनट बाद ही वे गुलाम मोहम्मद के घर के सामने खड़े थे।

वो अच्छा-खासा बंगला था।

चारदीवारी बारह फीट ऊंची थी। उतना ही ऊंचा फाटक। दीवार के भीतर तरफ लम्बे-लम्बे पेड़ लगे हुए थे और दीवार पर फूलों की रंग-बिरंगी बेलें चढ़ी हुई थीं। फाटक के बाहरी तरफ लकड़ी का एक केबिन बना हुआ था और पास ही में दो गनमैन बैठे थे।

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा उनके पास पहुंचे।

मोना चौधरी उनसे कह उठी—

"नमस्कार... । हम दिल्ली से आये हैं। अखबार वाले हैं। गुलाम साहब का इन्टरव्यू लेना चाहते हैं।"

"मुलाकात का वक्त लिया है?" एक गनमैन ने पूछा।

"नहीं... ।"

"तो मुलाकात नहीं हो सकती... ।"

"एक बार गुलाम साहब से बात तो कर लो। हमारा अखबार काश्मीर पर लिखने जा रहा है। सब नेताओं का इन्टरव्यू तो ले लिया। अगर गुलाम साहब का बीच में जिक्र न हुआ तो गुलाम साहब को बुरा लगेगा। सिर्फ पन्द्रह-बीस मिनट ही बात करनी है हमें गुलाम साहब से...। एक बार पूछ लो।"

तभी दूसरा वॉचमैन उठते हुए बोला—

"मैं पूछता हूं... ।" कहकर वो लकड़ी के केबिन में प्रवेश कर गया।

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा शांत खड़े रहे।

"दिल्ली में कैसा मौसम है?" दूसरे गनमैन ने बात करने के लहजे से पूछा।

"बुरा। गर्मी बहुत है।" विजय मल्होत्रा ने कहा।

मोना चौधरी ने देखा केबिन के भीतर वो गनमैन फोन पर बात कर रहा था।

"इतनी गर्मी में दिल्ली के नेता कैसे रह सकते हैं?" उस गनमैन ने पुनः पूछा।

"रहते कहां हैं, कोई शिमला भाग जाता है कि वहां उद्घाटन करना है। कोई विदेश भाग जाता है, ये जानने के लिये कि दिल्ली की सड़कों की सफाई कैसे करनी है, तो कोई काश्मीर का हाल जानने के लिये इधर आ खिसकता है।"

"सरकारी काम हैं, ऐसे ही होते हैं।" गनमैन मुस्कुरा कर कह उठा।

तभी दूसरा गनमैन केबिन से बाहर निकलते बोला—

"आपकी किस्मत अच्छी है कि साहब आप लोगों से मिलने को तैयार हो गये हैं। परन्तु उन्होंने कह दिया कि वे ज्यादा वक्त नहीं देंगे।" आगे बढ़कर उसने काले फाटक का एक पल्ला खोला, बोला—"बजरी की सड़क पर सीधे चले जाइये। कुछ आगे कार खड़ी हैं। वहीं से बंगले के भीतर जाने का दरवाजा है।"

"मेहरबानी भाई साहब... ।" मोना चौधरी ने कहा।

दोनों भीतर प्रवेश कर गये।

गनमैन ने फाटक पुनः बंद कर दिया था।

❑❑❑
❑❑❑

फाटक से घूमती हुई लाल बजरी की पांच फीट चौड़ी सड़क, सौ फीट आगे बंगले के पोर्च में जाकर खत्म हो गई थी। वहां दो कारें खड़ी थीं और सामने ही बरामदा पार करके, बंगले का मुख्यद्वार था। इसके अलावा वहां खूबसूरत लॉन और फलदार वृक्ष भी लगे हुए थे। बहुत अच्छा माहौल था।

वे दोनों बरामदे तक पहुंचे कि दरवाजे पर थुलथुल-सा

नौकर दिखा। बाल बिखरे से थे। बगल में टोपी दबा रखी थी, जैसे अभी उतारी हो। कंधे पर गमछा डाल रखा था।

"आइये आइये...।" वो टोपी को सिर पर रखता स्वागत भरे अंदाज में बोला—"साहब ने मुझे बोला कि दो मेहमान आये हैं, उन्हें भीतर ले आओ...तो मैं दौड़ा चला आया।"

"गुलाम मोहम्मद साहब की बात कर रहे हैं आप?" विजय मल्होत्रा बोला।

"ये उन्हीं का बंगला है तो वो ही मिलेंगे। आइये... ।"

"कितने नौकर हैं बंगले में?" मोना चौधरी ने पूछा।

"दो—एक मैं एक शौकत... ।"

"बस?"

"बस जी, बस। एक साहब का ही तो खाना बनाना है और बंगले की साफ-सफाई करनी है। काम ही कितना है...।"

नौकर दोनों को भीतर ले गया।

अच्छा खासा ड्राइंगरूम था। बहुत ही मन से सजाया गया था।

"बैठिये। मैं साहब को बुलाता हूं।"

"कहां हैं गुलाम साहब?"

"बैडरूम में। ये उनके आराम करने का वक्त है। इस वक्त वे किसी से मिलते नहीं, लेकिन आपसे मिल रहे हैं।"

"उनसे पूछ लीजिये कि हम उनके बैडरूम में भी इंटरव्यू ले सकते हैं। कहें, तो हम वहीं आ जायें।"

"अभी पूछ लेता हूं।" कहते हुए नौकर चला गया।

मोना चौधरी की आंखों में खतरनाक चमक लहरा रही थी।

"मल्होत्रा... ।" मोना चौधरी धीमे स्वर में बोली।

"हां... ।"

"मैं किसी भी तरह के रियायत के मूड में नहीं हूं।"

विजय मल्होत्रा ने मोना चौधरी को देखा।

"अगर गुलाम मोहम्मद ने मुंह न खोला तो मैं उसे शूट कर दूंगी।"

"उसे मेरे हवाले कर देना। मैं उसका मुंह खुलवाऊंगा।"

आसपास देखती मोना चौधरी ने धीमे स्वर में कहा—"घर में दो नौकर हैं। तुम रिवाल्वर के दम पर गुलाम को बिठाकर रखना, मैं नौकरों के हाथ-पांव बांध कर आऊंगी।"

विजय मल्होत्रा ने सिर हिला दिया।

तभी वो नौकर आ पहुंचा।

"आइये। मालिक बैडरूम में ही आपसे मिलेंगे।" नौकर बोला।

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा नौकर के पीछे-पीछे चलते ऊपर की मंजिल पर बैडरूम में पहुंचे।

वहां रजाई में लिपटा बैड पर गुलाम मोहम्मद मौजूद था। पांच-पौने पांच फीट का महसूस हो रहा था वो। कनपटियों पर बाल थे। सिर गंजा था। चेहरे से वो मजबूत किस्म का लग रहा था।

मोना चौधरी ने दरवाजा बंद किया।

विजय मल्होत्रा ने रिवाल्वर निकालकर गुलाम मोहम्मद की तरफ कर दी।

"ये क्या?" गुलाम मोहम्मद के होठों से निकला।

नौकर भी हक्का-बक्का रह गया।

मोना चौधरी ने रिवाल्वर निकाली और आगे बढ़कर नौकर की कमर से लगा दी।

"मुझे क्यों मार रहे हो?" नौकर घबराकर बोला।

"चलो।" मोना चौधरी गुर्राई—"मुझे वहां ले चलो, जहां दूसरा नौकर है।"

"ह...हां चलो... ।"

मोना चौधरी उस नौकर के साथ बाहर निकल गई।

विजय मल्होत्रा की निगाह गुलाम मोहम्मद पर जा टिकी।

"क्या चाहते हो?" गुलाम मोहम्मद ने माथे पर बल डाल कर पूछा।

"हमारे पास वक्त कम है। जो पूछें, उसका फौरन जवाब देना।" विजय मल्होत्रा खतरनाक स्वर में बोला।

"कौन हो तुम लोग?"

"सवाल मैं पूछूंगा, तुम नहीं।"

"बोलो... ।"

"जाफर शरीफ का ठिकाना कहां है?" विजय मल्होत्रा का चेहरा कठोर हो गया था।

वो देखता रहा गया विजय मल्होत्रा को।

"ये पहला और आखिरी सवाल है, जिसका जवाब मुझे चाहिये। बता... ।"

गुलाम मोहम्मद के चेहरे पर कड़वी मुस्कान उभरी—

"तू क्या सोचता है कि तू पूछेगा और मैं बता दूंगा?"

तभी विजय मल्होत्रा आगे बढ़ा और रिवाल्वर की नाल का वार उसके गालों पर किया। वो कराहकर छटपटा उठा। होठों के कोनों से खून की लकीर बाहर को बह निकली। उसने उठना चाहा।

"यहीं बैठा रह। वरना गोली मार दूंगा।"

वो वहीं टिका रह गया।

तभी मोना चौधरी ने भीतर प्रवेश किया और खामोश-सी खड़ी हो गई।

"बताना तो तेरे को पड़ेगा ही। ऐसे नहीं तो ऐसे बतायेगा!" विजय मल्होत्रा गुर्रा उठा—"बता, जाफर शरीफ का ठिकाना कहां पर है? यही जानने हम तेरे पास आये हैं।"

उसने होंठ भींच लिए।

विजय मल्होत्रा का घूंसा उसके गाल पर पड़ा। वो तीव्रता से कराह उठा। मुंह में खून भरा थूक आया जो उसने एक तरफ थूक दिया।

"बोल... ।"

"मैं कुछ नहीं बताऊंगा।" उाने दांत भींचकर कहा।

"नहीं बतायेगा?"

"न... हीं... ।"

विजय मल्होत्रा पास पहुंचा और रिवाल्वर की नाल, उसकी छाती पर रख दी।

"अब बतायेगा?"

"नहीं... ।"

"गोली मार दूं?"

"अल्लाह ने चाहा तो मुझे गोली जरूर लगेगी। अल्लाह नहीं चाहेगा जो कुछ भी नहीं होगा। सब कुछ तुम्हारी मर्जी पर नहीं है। ऊपर मालिक बैठा है। मर्जी तो उसकी चलती है।" उसने कठोर स्वर में कहा।

"मैं मजाक नहीं कर रहा... ।" विजय मल्होत्रा के स्वर में मौत के भाव थे—"गोली मार दूंगा।"

वो व्यंग भरे स्वर में हंसा।

विजय मल्होत्रा के चेहरे पर दरिन्दगी नजर आने लगी थी।

"तो जाफर के बारे में तू नहीं बतायेगा कहां है उसका ठिकाना?"

"नहीं। कभी नहीं बताऊंगा।"

"मैं गोली मारने जा रहा हूं।" विजय मल्होत्रा की तर्जनी उंगली का दबाव ट्रेगर पर कस गया।

"मार दे।"

"अपने मालिक को याद कर ले। अब तू मरने जा रहा है।"

विजय मल्होत्रा के चेहरे के भाव देखकर, उसने अपनी आंखें बंद कर लीं। जैसे उसे पूरा यकीन था कि उसे गोली मार दी जायेगी और गोली मार दी गई।

कानों को फाड़ देने वाला धमाका हुआ और उसके सीने में गोली छेद बनाती चली गई। उसके शरीर को तीव्र झटका लगा और शांत पड़ता चला गया। आंखें फटी-सी रह गईं थीं उसकी। •

"आओ... ।" मोना चौधरी जल्दी से बोली—"गोली की आवाज सुनकर फाटक पर खड़े दोनों वॉचमैन भीतर आ रहे होंगे। हमें पीछे से निकलना होगा।"

अगले ही पल दोनों कमरे से बाहर निकलते चले गये।

❑❑❑

❑❑❑

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा को जिधर का रास्ता मिला, उधर ही दौड़ते चले गये। जाने किन-किन गलियों, किन रास्तों से निकल कर वो किधर पहुंचे।

करीब पन्द्रह मिनट बाद वे रुक कर गहरी-गहरी सांसें लेने लगे।

इस समय वे जहां खड़े थे, वो सुनसान-सी जगह थी। इक्का-दुक्का मकान बने नजर आ रहे थे। पास ही से घना जंगल शुरू हो रहा था। देवदार और चीड़ के पेड़ हर तरफ नजर आ रहे थे। सर्दी तगड़ी थी, परन्तु दौड़ते रहने की वजह से उन्हें ठण्ड का कम ही अहसास हो रहा था।

उन्होंने सांसें संयत कीं।

"अजीब आदमी था गुलाम मोहम्मद... ।" विजय मल्होत्रा बोला—"उसने मरना पसन्द किया, पर मुंह नहीं खोला।"

मोना चौधरी की निगाह आस-पास जा रही थी।

"अभी खतरा टला नहीं है।" मोना चौधरी ने कहा—"वे लोग हमें तलाश करते इधर आ सकते हैं।"

"वो दो थे, मेरे ख्याल से बंगले में ही होंगे। पुलिस को खबर की होगी।"

"हमारे हुलिये के आधार पर पुलिस हमें ढूंढना शुरू कर देगी।" मोना चौधरी ने कहते हुए ऊपर की तरफ देखा। वहां से हार्न की आवाज कानों में पड़ी थी। अवश्य वहां सड़क थी—"उधर सड़क लगती है। ऊपर चलते हैं। हम वहां से निकल सकते हैं।"

"आओ... ।"

दोनों कच्चे पहाड़ जैसी जगह को पकड़-पकड़ कर ऊपर चढ़ने लगे। बीच-बीच में पेड़ भी खड़े हुए थे। फिर भी वो जगह खतरनाक थी। लड़खड़ाने का मतलब था, सीधे नीचे लुढ़क जाना।

सीधी चढ़ाई को थोड़ा-सा ही चढ़ने पर उनकी सांस फूलने लगी थी।

आधे घंटे बाद वो पहाड़ी चढ़ कर ऊपर पहुंचे।

मोना चौधरी का ख्याल ठीक था कि वहां सड़क थी।

ऊपर पहुंच कर उन्होंने चैन की सांस ली।

"हमें अपना हुलिया बदलना होगा। पुलिस हमें तलाश करेगी।" मोना चौधरी बोली।

"होटल में बैग पड़ा है। मेरे कपड़े उसमें हैं।"

"उन कपड़ों में भी पहचाने जाने का खतरा है। हमें स्थानीय लोगों की तरह कपड़े पहनने होंगे। पुलिस बाहर से आये लोगों में हमें तलाश करने की चेष्टा करेगी, इस तरह हम पुलिस से बच सकेंगे।"

तभी एक दिशा से टैक्सी आती दिखी।

"टैक्सी आ रही है।"

मोना चौधरी की निगाह भी उस तरफ उठ गई।

टैक्सी पास आई।

विजय मल्होत्रा ने उसे रुकने का इशारा किया। टैक्सी रुकी। भीतर बशीर था।

"जल्दी बैठो।" वो व्याकुल-सा कह उठा—"तुम लोगों ने गुलाम मोहम्मद को मार दिया क्या?"

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा टैक्सी में बैठे।

टैक्सी तेजी से आगे बढ़ गई।

"तुम्हें कैसे पता?"

"गोली की आवाज तो दूर तक आई थी। मैंने भी सुनी थी। उसके बाद गुलाम मोहम्मद के बंगले के बाहर लोगों की भीड़ जमा होनी शुरू हो गई थी। मैं तो दूर था। आते-जाते लोगों से पता लगा कि किसी ने गुलाम मोहम्मद की हत्या

कर दी। मैंने पुलिस जीप को भी उधर जाते देखा।"

मोना चौधरी बाहर देखने लगी।

विजय मल्होत्रा ने गहरी सांस ली।

"उसे मारने की क्या जरूरत थी?" बशीर बोला।

"साला मुंह नहीं खोल रहा था, गोली चलानी पड़ी... ।" विजय मल्होत्रा ने कहा।

"ओह! मुंह नहीं खोला?"

"नहीं।"

"जाफर शरीफ के ठिकाने के बारे में नहीं पता चला?"

"नहीं।"

"मैं तो सोच रहा था कि पता चल गया होगा। अब भागदौड़ खत्म हो गई होगी। लेकिन बात वहीं-की-वहीं रही।"

"साला बड़ा ढीठ था।"

"गोली मारने से अच्छा था, उसे उठा लाते। तबीयत से फिर उससे पूछताछ करते।"

"कैसे लाते, बाहर दो गनमैन थे।"

टैक्सी तेजी से भागी जा रही थी।

"अब कहां जाना है?"

"हमें हुलिया बदलना है।" मोना चौधरी बोली—"हम स्थानीय लोगों की तरह कपड़े पहनना चाहते हैं।"

"समझा, पुलिस से बचना चाहते हो।"

"हां।"

"ठीक सोचा। पुलिस अवश्य तुम लोगों की तलाश में भागदौड़ करेगी।" बशीर बोला—"मैं स्थानीय लोगों के रूप में तुम दोनों को ऐसा बना दूंगा कि तुम लोग खुद को भी पहचान न पाओगे।"

❑❑❑

❑❑❑

पारसनाथ अपनी पत्नी सितारा के साथ बीते दो दिन से कश्मीर में था। (सितारा के बारे में जानने के लिये पढ़ें अनिल मोहन का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'मंत्र'**)।

सितारा कश्मीर में आकर बहुत खुश थी।

दोनों इस वक्त अपने होटल के कमरे की बॉलकनी में खड़े प्रकृति के नजारे का आनन्द ले रहे थे। सामने चौड़ी सड़क थी, जहां से वाहन आ-जा रहे थे और उसके पार दूर-दूर तक हसीन वादियों का नजारा। ऊंचे-नीचे बर्फ से ढके पहाड़। पहाड़ों के बीच में निकलती सड़कें, जैसे सांप ने बल खाया हो। उन पर जाते, वाहन चींटियों की तरह लग रहे थे।

तीव्र ठण्डी हवा चल रही थी।

सितारा पारसनाथ की बांहें थामें उससे सटी हुई कह रही थी—

"ये धरती कितनी सुन्दर है। मैं जहां से आई हूं, वहां तो इतनी सुन्दरता नहीं थी।"

"ये जगह वैसे भी सुन्दर है। कश्मीर है ही ऐसा।"

"कश्मीर ही नहीं, दिल्ली भी अच्छा है। तुम मुझे अपने साथ ले आये, कितना अच्छा हुआ।" सितारा की आवाज में भावुकता आ गई—"वहां मैं तीन जन्मों से तुम्हारे आने का इंतजार कर रही थी। अगर तुम मुझे अपने साथ न लाते तो मैं कुएं में कूद कर जान दे देती।"

"तुमने तीन जन्मों तक मेरा इंतजार किया।" पारसनाथ प्यार भरे स्वर में बोला—"उसका फल तो तुम्हें मिलना ही था।"

"तुम मिल गये... ।"

"तुम मेरी पत्नी हो। पहले जन्म में तुम्हें छोड़कर, मैंने बहुत बड़ी गलती की।"

"अब तो तुम पिताम्बरी के दीवाने भी नहीं हो सकते। देवराज चौहान ने पिताम्बरी को खाक में मिला दिया।" सितारा ने हंसकर कहा। (पिताम्बरी के बारे में जानने के लिये अनिल मोहन का पूर्वप्रकाशित उपन्यास **'मंत्र'** पढ़ें)

पारसनाथ ने सितारा को देखा और मुस्कुराकर कह उठा—

"बीती बातें सब भूल जाओ। अब हमारी नई जिन्दगी

शुरू हो चुकी है।"

"हां परसू, ये हमारा नया जीवन है।"

तभी बॉलकनी में खड़े पारसनाथ की निगाह उस सफेद मारुति पर जा टिकी, जो कि बहुत तेजी से इस तरफ आ रही थी और चलते-चलते वो लहरा उठती थी।

पारसनाथ की आंखें सिकुड़ीं।

ड्राइवर खतरनाक ढंग से कार चला रहा था। स्टेयरिंग जरा-सा बहकता तो कार सैंकड़ों फीट नीचे खाई में गिर सकती थी। पारसनाथ की निगाह उस कार पर टिकी रही।

फिर वही हुआ, जो पारसनाथ सोच रहा था।

कार बहकी। सामने से आते ट्रक से टकराने लगी। सफेद मारुति के ड्राइवर ने फुर्ती से कार को घुमाया कि टक्कर न हो। परन्तु वो दोबारा कार को संभाल कर सीधा न कर सका।

कार सड़क के किनारे लगे पत्थर से टकराई।

तेज आवाज उभरी।

सितारा की निगाह भी तब तक कार पर पड़ गई थी।

"ओह, ये क्या?"

सड़क के किनारे के पत्थर से टकराने के बाद वो कार आधी नीचे और आधी ऊपर रह कर लटकने लगी थी। बीच में बैठा ड्राइवर जब हिलता तो कार झूलने लगती।

"वो...वो नीचे गिर जायेगा।" सितारा चीखी।

"तुम यहीं रुको, मैं अभी आया।" कहकर पारसनाथ बॉलकोनी से निकलकर कमरे के बाहर की तरफ दौड़ा।

फौरन ही वो होटल से बाहर निकला।

परन्तु ठिठक गया।

कार अब वहां न खड़ी थी, अलबत्ता उधर तीन-चार लोग खड़े दिखाई दे रहे थे।

पारसनाथ भागा-भागा उनके पास पहुंचा।

"कार कहां है?"

"नीचे गिर गई... ।" एक ने गम्भीर स्वर में कहा।

"बुरा हुआ।" होंठ भींचे पारसनाथ ने कहा और नीचे झांका।

परन्तु उबड़-खाबड़ पहाड़ी होने के कारण नीचे कुछ न दिखा।

तभी पारसनाथ को नीचे जाने का रास्ता दिखा। रास्ता ऐसा कि वो लोगों के वहां से बराबर नीचे आते-जाते रहने की वजह से बन गया था।

पारसनाथ जल्दी से वहां पहुंचा और संभल कर नीचे उतरने लगा। खतरनाक ढलान थी। बहुत संभल कर नीचे उतरना पड़ रहा था। नीचे लुढ़क जाने का मतलब था कि पता नहीं क्या अंजाम हो।

कुछ नीचे उतरने के पश्चात् पारसनाथ ठिठका।

वो सफेद मारुति कार नजर आ गई, जो तीन पेड़ों के तनों के बीच फंसी अटकी पड़ी थी। अगर वो पेड़ न होते तो वो मारुति अब तक जाने कितनी नीचे पहुंच चुकी होती।

कार के भीतर किसी के हिलने का एहसास हो रहा था।

ड्राइवर जिन्दा था।

पारसनाथ ने वो रास्ता छोड़ा और संभलकर धीरे-धीरे कार की तरफ बढ़ने लगा। रह-रहकर उसे पहाड़ी पर उगी झाड़ियों को थामना पड़ता कि गिर न जाये।

पन्द्रह मिनट की मेहनत के पश्चात् वो कार के पास जा पहुंचा।

परन्तु ठिठक गया।

कार इस स्थिति में पेड़ों के बीच अटकी हुई थी कि कभी भी वहां से निकलकर पुनः नीचे लुढ़क सकती थी। कार के भीतर मौजूद व्यक्ति को बचा लेना आसान न था।

"हैलो... ।" पारसनाथ ने पुकारा—"जिन्दा हो?"

कार के भीतर का व्यक्ति हिला।

कार भी हिली।

पारसनाथ फौरन कह उठा—

"ज्यादा मत हिलो। कार नीचे लुढ़क पायेगी।"

परन्तु कार वाले ने उसके शब्दों की परवाह नहीं की, फिर उसका चेहरा खिड़की पर दिखा। उसके सिर से बहते खून ने चेहरे को पूरी तरह रंग दिया था। वो गहरी-गहरी सांसें ले रहा था। उसकी आंखें बंद हो रही थीं।

"क्या तुम पिए हुए हो?" पारसनाथ ने पूछा।

उसने इंकार में सिर हिलाया।

"घबराओ मत। मैं तुम्हें बचा लूंगा। ज्यादा हिलना मत। वरना कार गिर जायेगी।"

पारसनाथ उससे सिर्फ तीन कदमों की दूरी पर था।

"तुम... ?" उसने थरथराते स्वर में कहा—"तुम कौन हो?"

"मैं पारसनाथ हूं। पत्नी के साथ कश्मीर घूमने आया हूं। तुम्हारी कार को गिरते देखा तो यहां आ पहुंचा।"

"सुनो, मेरी बात ध्यान से सुनो।" उसने थरथराते स्वर में कहा—"मैं काश्मीर स्थित हिन्दुस्तानी मिलिट्री सीक्रेट सर्विस का एजेंट हूं। समझ गये मेरी बात?"

पारसनाथ मिलिट्री सीक्रेट सर्विस का नाम सुनकर चौंका।

"सीक्रेट सर्विस के चीफ तो मिस्टर पहाड़िया हैं।"

उसके घायल चेहरे पर चौंकने के भाव आये।

"त...तुम उन्हें जानते हो?"

"नहीं। सीधी पहचान नहीं है उनसे। मेरा एक दोस्त उन्हें जानता है।" पारसनाथ ने कहा।

चंद पल उसने गहरी सांसें लीं।

"मैं तुम्हें यहां से निकालने का इंतजाम करता... ।"

"पागल मत बनो। मुझे गोली लगी हुई है। मैं गिरने पर बुरी तरह घायल हो गया हूं।"

"फिर भी मैं तुम्हें बचा लूंगा।"

"पहले मेरी बात सुनो।" उसने थके स्वर में कहा। पारसनाथ ने अपनी निगाह उसके होठों पर टिका दीं।

"मेरा नाम बशीर खान है।"

"बशीर?" पारसनाथ के होंठ हिले।

"हां। काश्मीर में मिस्टर पहाड़िया का काम करता हूं। परसों दिन में मिस्टर पहाड़िया का मैसेज आया कि उनकी एक एजेंट कश्मीर पहुंच रही है। किस प्लेन से पहुंच रही है, ये भी बताया। उस एजेंट का नाम मोना चौधरी था और... ।"

"मोना चौधरी?" पारसनाथ चिहुंक उठा।

"क्या हुआ?"

"ये मेरी वो ही दोस्त है, जो मिस्टर पहाड़िया को जानती है।" पारसनाथ ने कहा।

बशीर खान कुछ पल खामोश रहा।

"फिर?" पारसनाथ कह उठा।

"मोना चौधरी, जाफर शरीफ के लिये कश्मीर आ रही थी। जाफर की कैद में मिस्टर पहाड़िया की एजेंट है, उनके लिये आ रही थी।" बशीर ने गहरी सांस लेते हुए कहा—"और वो... ।"

"जाफर शरीफ कौन है?"

"माना हुआ आतंकवादी... ।"

"ओह, नाम सुन रखा है।" पारनाथ ने सिर हिलाया।

कुछ पल चुप रहकर वो पुनः बोला—

"परन्तु जाफर शरीफ के हाथ बहुत लम्बे हैं। सच में वो बहुत खतरनाक है। उसके आदमी हर जगह मौजूद रहते हैं। उसे मिस्टर पहाड़िया की सारी योजना की खबर मिल गई।"

"जाफर का कोई आदमी मिस्टर पहाड़िया के बीच होगा?" पारसनाथ बोला।

"हां। तभी तो जाफर ने खुद मुझे ढूंढा। पकड़ लिया... ।"

"तुम्हें?"

"हां।" ये कहकर बशीर ने गहरी-गहरी सांसें लीं। उसे अब थकान होने लगी थी। फिर आंखें खोलीं और धीमे स्वर

में कह उठा– "जाफर ने मुझे कैद कर लिया और सारी जानकारी हासिल करने की चेष्टा करने लगा कि मोना चौधरी से मिलना कैसे है मैंने। क्या कोड-वर्ड है, मुझे कहां तक ये सारा मामला पता है।"

"क्या करना चाहता था जाफर ये सब जानकर?"

"वो अपने किसी आदमी को बशीर बनाकर मोना चौधरी के सामने पेश करना चाहता था। मोना चौधरी ने पहले कभी मुझे तो देखा नहीं था कि वो जाफर की चाल को पहचान जाती।"

"फिर?"

"मैंने जब मुंह नहीं खोला तो जाफर ने मुझे मेरे परिवार की धमकी दी कि वो उन्हें खत्म कर देगा। मेरे परिवार में पत्नी और तीन बच्चे हैं। उसकी इस धमकी के आगे टूट गया। मैं जानता था कि जाफर सब कुछ करने की हिम्मत रखता है। किसी की जान ले लेना तो उसके लिये मामूली खेल है। फिर इस बारे में मैं जो भी जानता था, जाफर को बता दिया। सब कुछ जानकर जाफर ने मुझे अपनी कैद में डाल दिया। दो दिन बाद अचानक मुझे वहां से भागने का मौका मिला तो मैं भाग निकला। परन्तु देख लिया गया। एक गोली मुझे लगी। लेकिन मैं रुका नहीं, क्योंकि अब जाफर के हाथों पड़ने का मतलब है मौत!" कहते हुए वो रुका और गहरी-गहरी सांसें लेने लगा। वो अब थक रहा था।

पारसनाथ के चेहरे पर गंभीरता नाच रही थी।

वो पुनः बोला–

"मोना चौधरी खतरे में है। उसका मिशन खतरे में है। मेरे रूप में मोना चौधरी को जाफर का कोई आदमी मिला होगा। वो कभी भी मोना चौधरी की जान ले सकते हैं। हो सके तो मोना चौधरी को खतरे से आगाह कर दो।"

"मोना चौधरी है कहां?" पारसनाथ का खुरदरा चेहरा कठोर-सा नजर आने लगा।

"मैं नहीं जानता, लेकिन मोना चौधरी ने अकबर शाह

से मिलना था।"

"अकबर शाह?"

"मिस्टर पहाड़िया का ही एजेंट है ये। कश्मीर में है।"

"उसका पता बताओ।"

बशीर ने थके से अंदाज में अकबर शाह का पता बताया।

अब बशीर की आंखें बंद-सी होने लगी थीं।

"तुम्हें डाक्टर की जरूरत है।" पारसनाथ एकाएक व्याकुलता से कह उठा।

बशीर ने उसे देखा। चुप रहा।

पारसनाथ ने आस-पास निगाह दौड़ाई।

परन्तु कुछ समझ में न आया कि कैसे बशीर को बचाये।

तीन पेड़ों के बीच कार फंसी थी पहाड़ी पर। कार के हिलने का मतलब था, कार का नीचे लुढ़क जाना। इतनी ही बात होती तो खैर थी। पारसनाथ खुद खतरनाक स्थिति में मौजूद था। जरा-सा बैलेंस बिगड़ा तो वो खुद भी नीचे लुढ़क सकता था। ऐसे में बशीर को बचाने के लिए आगे बढ़ना ठीक नहीं था। बशीर की स्थिति ठीक नहीं लग रही थी। वो काफी घायल लग रहा था।

परन्तु पारसनाथ भी यूं हार मानने वालों में से नहीं था।

बशीर को वो हर हाल में बचा लेना चाहता था।

तभी पारसनाथ को अपने पीछे आहट मिली।

वो फौरन पलटा।

एक आदमी, पहाड़ी पर संभलता-सा उसी की तरफ बढ़ता उसकी तरफ आ रहा था। वो काफी पास आ पहुंचा था। पारसनाथ को अपनी तरफ देखते पाकर कह उठा–

"जिन्दा है या मर गया?"

"जिन्दा है।"

"क्या कह रहा है?"

"खुद को बचाने के लिये कह रहा है।"

"तो बचा लो... ।"

"कैसे बचाऊं...यहां पर स्थिति खतरनाक है। कार कभी भी नीचे लुढ़क सकती है।" पारसनाथ बोला।

वो पारसनाथ के बेहद करीब आकर ठिठका।

उसने बशीर को देखा।

पारसनाथ ने एकाएक बशीर के चेहरे पर घबराहट फैलती देखी।

तभी ऊपर से सड़क की तरफ से आवाज आई—

"क्या हुआ?"

"पेड़ों में कार के साथ अटका पड़ा है।" वो व्यक्ति, मुंह ऊपर करके गला फाड़ के बोला।

"निपटा के आ जा ऊपर... ।"

पारसनाथ खामोशी से खड़ा रहा। वो सब सुन-समझ रहा था। परन्तु खुले रूप में वो मामले में दखल देकर, जाफर के आदमियों को अपने पीछे नहीं लगाना चाहता था।

पारसनाथ ने पास खड़े आदमी को रिवाल्वर निकालते देखा तो कह उठा—

"ये क्या कर रहे हो?"

उसने तीखी निगाहों से पारसनाथ को देखा—

"यहां का नहीं लगता तू, कश्मीर घूमने आया है?" स्वर में तीखापन था—"तो कश्मीर घूम। परदेस में आकर, लोकल मामलों में टांग नहीं फंसाते, समझा क्या?"

चुप रहा पारसनाथ। इसके साथी ऊपर सड़क पर भी थे।

उसने रिवाल्वर सीधी की और ट्रेगर दबा दिया।

गोली चलने का तेज धमाका हुआ और गोली बशीर के माथे पर जा लगी।

उस व्यक्ति ने रिवाल्वर की नाल में फूंक मारी और रिवाल्वर जेब में रख ली।

"तुम्हें पुलिस पकड़ लेगी।" पारसनाथ ने शांत स्वर में यूं ही कहा।

"कश्मीर में, जाफर के आदमियों पर पुलिस ने हाथ

डालकर मरना है क्या?" कहकर वो पलटा और पहाड़ को थामता धीरे-धीरे वापस जाने लगा।

पारसनाथ ने बशीर को देखा।

बशीर की गर्दन एक तरफ लुढ़की पड़ी थी। चेहरा खून से भरा था। वो मर चुका था।

पारसनाथ को बशीर की मौत का अफसोस था। चाहकर भी उसे बचा न सका था।

अब उसकी सोचों में मोना चौधरी और जाफर घूम रहे थे। मोना चौधरी खतरे में थी। उसे बचाना जरूरी था और अकबर शाह ही बता सकता था कि मोना चौधरी कहां मिलेगी?

□□□

□□□

पारसनाथ होटल में पहुंचा तो सितारा कह उठी।

"क्या हुआ?"

पारसनाथ ने सारी बात बता दी।

"ओह, फिर तो मोना चौधरी खतरे में है।"

"हां।" पारसनाथ ने अपने खुरदरे चेहरे पर हाथ फेरा।

"उसे बताओ कि उसके पास जो बशीर नाम का आदमी है, वो जाफर का आदमी है।" सितारा बोली।

"लेकिन ढूंढूं कहां मोना चौधरी को?"

"अकबर शाह को भूल गया परसू.... । उससे जाकर पूछ, लेकिन उसे मामला मत बताना। क्या पता, यहां पर कौन किससे मिला हुआ है।" सितारा ने अपने विचार जाहिर किए।

पारसनाथ के चेहरे पर छोटी-सी मुस्कान उभर आई।

"क्या हुआ?"

"तूने ठीक कहा कि असल बात अकबर शाह को न बताऊं... ।" कहकर पारसनाथ ने जेब से मोबाइल फोन निकाला और मिस्टर पहाड़िया का फोन नम्बर मिलाने लगा।

ये उनके आफिस का नम्बर था।

कुछ ही पलों बाद उधर बेल होने लगी।

फिर रिसीवर उठाया गया।

"हैलो।"

"मिस्टर पहाड़िया से बात करनी है।"

"आप कौन?"

"पारसनाथ... ।"

"काम बता दीजिये। इस वक्त वो आफिस में मौजूद नहीं हैं।" दूसरी तरफ से कहा गया।

"वो जहां हैं, वहां का नम्बर दे दीजिये। जरूरी बात है, मैं अभी उनसे करना चाहता हूं।"

"सच बात तो ये है कि दो दिन से हमें भी उनकी खबर नहीं कि वो एकाएक कहां गायब हो गये।"

पारसनाथ के होंठ भिंच गये।

"हैलो... ।" उधर से आवाज आई।

"सुन रहा हूं।"

"आप जो भी कहना चाहते हैं, मुझे बता दीजिये। वे जब आयेंगे, आपका मैसेज उन्हें दे दिया जायेगा।"

"मैं फिर फोन करूंगा।" कहकर पारसनाथ ने फोन बंद कर दिया।

"नहीं मिले?" सितारा ने पूछा।

"नहीं। मैं अकबर शाह से मिलने जा रहा हूं, तुम होटल में ही रहना।" पारसनाथ ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मेरी फिक्र न कर परसू, जब भी वापस आयेगा, मैं इंतजार करती मिलूंगी।" सितारा बोली।

❑❑❑

❑❑❑

पारसनाथ, बशीर के बताये पते पर पहुंचा।

दरवाजा थपथपाया।

दूसरी बार थपथपाने पर दरवाजा खोला गया। अकबर शाह ही खड़ा था सामने।

"फरमाइये?" अकबर शाह ने सामान्य स्वर में कहा।

"हुक्म मेरे आका।" पारसनाथ ने बशीर से पता चले

कोड-वर्ड का इस्तेमाल किया।

अकबर शाह की आंखें सिकुड़ीं। फिर वो सामान्य हो गया।

"भीतर आइये।"

अकबर शाह, पारसनाथ को अपने छोटे से ड्राईंगरूम में ले गया। वे बैठे।

"नाम क्या है आपका?" अकबर शाह ने पूछा।

"पारसनाथ... ।"

"ऊपर से खबर नहीं थी कि आप आयेंगे।"

"अचानक आना पड़ा।"

"मैं क्या सेवा कर सकता हूं।"

"मोना चौधरी से मुझे जरूरी काम है। अभी मिलना चाहता हूं मैं।"

अकबर शाह कुछ पल पारसनाथ को देखता रहा, फिर बोला—

"रात वो मेरे पास ही थी, परन्तु अब उसके ठिकाने के बारे में नहीं जानता।"

"मुझे उससे जरूरी मिलना है।"

"मैं कुछ नहीं कर सकता।"

"उसकी जान खतरे में है। खबर देनी है उसे।"

"तब भी मैं कुछ नहीं कर सकता। क्योंकि मैं नहीं जानता कि वो किधर है।" अकबर शाह का स्वर शांत था।

पारसनाथ की निगाह अकबर शाह पर ही टिकी थी।

"वो यहां आयेगी?" पारसनाथ ने पूछा।

"मेरे ख्याल में, मेरे पास उसे कोई काम नहीं। आ जाये तो जुदा बात है।"

"मिले तो कहना, पारसनाथ कश्मीर में है। जरूरी काम है।"

"आपका ठिकाना?"

पारसनाथ ने अपने होटल के बारे में बताने के लिये मुंह खोला कि चुप कर गया। क्या पता यहां कौन जाफर

का आदमी है। बशीर की हालत देखकर वो सतर्क हो चुका था।

"मेरा कोई ठिकाना नहीं है।"

"तो मोना चौधरी मिली तो उसे क्या बताऊंगा कि तुम किधर हो... ।" अकबर शाह बोला।

"इतना ही बता देना कि मैं यहां हूं... । उसे तलाश कर रहा हूं।" पारसनाथ ने कहा।

अकबर शाह ने सिर हिलाया।

"कोई जानकारी हो कि वो कहां हो सकती है?"

"पता नहीं। यूं वो शायद पहलगांव के आस-पास होगी। मेरे आदमी ने बताया था कि वो वहां देखी गई है।"

"ये बात तुमने पहले क्यों न बताई... ।"

अकबर शाह खामोश रहा।

पारसनाथ उठ खड़ा हुआ।

"शायद वो किसी होटल में ठहरी हो। उसके साथ विजय मल्होत्रा भी है।"

"विजय मल्होत्रा, ये कौन है?"

"मैं नहीं जानता कि वो मोना चौधरी का क्या लगता है। लेकिन वो साथ है। उसके बारे में तुम्हें इसलिये बताया कि होटलों में तुम अकेली मोना चौधरी को ढूंढोगे तो, तलाश में परेशानी होगी। दो को ढूंढोगे तो जल्दी मिलेगी वो। परन्तु मैं दावा नहीं करता कि वो किसी होटल में ही ठहरी होगी। वो कह रही थी कि होटल में रुकेगी।"

"मेहरबानी।" पारसनाथ ने कहा और अकबर शाह से विदा लेकर बाहर निकल आया।

❑❑❑

❑❑❑

पारसनाथ जब होटल पहुंचा तो शाम हो चुकी थी। अंधेरा घिर चुका था। साढ़े सात बज रहे थे।

सितारा उसे देखते ही बोली—

"काम हुआ...अकबर शाह से बात हुई?"

"हां। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।" बैठता हुआ पारसनाथ कह उठा।

सितारा ने रूम सर्विस में इन्टरकॉम द्वारा कॉफी लाने को कहा।

"क्या बात हुई अकबर शाह से?"

पारसनाथ ने सारी बात बताई।

"हूं।" सितारा सोच भरे स्वर में बोली—"फिर तो मोना चौधरी को होटलों में ढूंढना चाहिये।"

"सारा दिन वो ही तो करता रहा हूं।"

"नहीं मिली?"

"कश्मीर बहुत बड़ा है, कुछ घंटों में जितने होटल देख पाया, देखे, वो नहीं मिली।"

"साथ में कौन है उसके?"

"क्या मालूम, जब मिलेगी तो पता चलेगा।"

सितारा चुप हो गई। चेहरे पर सोच के भाव थे।

वेटर कॉफी दे गया।

पारसनाथ ने घूंट भरा।

"मोना चौधरी की जान खतरे में है।" सितारा ने गम्भीर स्वर में कहा—"जाफर शरीफ का कोई आदमी बशीर बना, उसके साथ है। मोना चौधरी उसे मिलिट्री सीक्रेट सर्विस का एजेंट समझ रही है। मौका मिलते ही वो मोना चौधरी को मार देगा।"

पारसनाथ ने कॉफी का कप थामे पहलू बदला।

"पहलगांव में देखा मोना चौधरी को?"

"वो कोई छोटी जगह नहीं है कि वहां मोना चौधरी हुई तो नजर आ जायेगी।"

"समझी... ।" सितारा ने सिर हिलाया—"यहां पर अगर होटलों में किसी को ढूंढना है तो शाम के बाद उसे ढूंढना चाहिये। दिन में तो कोई भी होटल में नहीं रुकेगा।"

पारसनाथ ने सितारा को देखा।

वो ठीक ही तो कह रही थी।

"गलत कहा मैंने क्या?" उसे अपनी ओर देखते पाकर सितारा ने पूछा।

"नहीं। ठीक कहा है तुमने।" पारसनाथ ने सिर हिलाया—"तलाश करने का काम शाम के बाद ज्यादा बेहतर है।"

"तो अब चलें?"

"तुम...?"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूं, क्या हर्ज है?"

"ठीक है, चलो...।"

उसके बाद पारसनाथ ने कॉफी समाप्त की और मोना चौधरी की तलाश में बाहर निकल गये।

❑❑❑

❑❑❑

दिल्ली से जम्मू और जम्मू से कश्मीर।

मिस्टर पहाड़िया और महाजन को बांधकर ऐसे ट्रक में डाला गया, जिसके पीछे की तरफ और ऊपर सामान डाला गया था, परन्तु बीच की जगह इस तरह खाली थी कि उन्हें वहां रखा जा सके।

पूरे चौबीस घंटे का सफर था।

जिस्म टूटकर रह गया था।

बाकी की कसर ट्रक के हिचकौलों ने पूरी कर दी थी।

रास्ते में सिर्फ दो बार उन्हें खाने को मट्ठिया दी गईं। ताकि भूख उन्हें सताये नहीं।

जब उन दोनों को होश आया था तो खुद को इसी तरह ट्रक के सफर में ही पाया था।

दोपहर बाद से उन्हें ठण्डक-सी महसूस होने लगी तो उन्होंने अंदाजा ये ही लगाया कि वे कश्मीर पहुंचने के रास्ते में हैं। महाजन ने खुद को पहली बार मिस्टर पहाड़िया के इतने करीब पाया था।

मिस्टर पहाड़िया से उसे ये पता चल गया था कि ये लोग पाकिस्तानी एजेंट हैं और उन्हें सीमा पार पाकिस्तान

ले जाना चाहते हैं, ताकि उनके मुंह से राज की बातें निकलवाई जा सकें।

"मुझे ये लोग जाफर शरीफ के हवाले करेंगे?" महाजन बोला।

"हां। क्योंकि जाफर शरीफ को प्रिया की तलाश है।" मिस्टर पहाड़िया ने गम्भीर स्वर में कहा—"प्रिया और सुमेर जाफर की वो फाइल ले भागे हैं, जिसमें उन सब एजेंटों के पते हैं, जो हिन्दुस्तान में जमे हुए हैं।"

महाजन खामोश हो गया। उसने मिस्टर पहाड़िया को ये बात न बताई कि प्रिया और सुमेर ने वो फाइल भागते वक्त कश्मीर में ही किसी के पास छोड़ दी थी। जिसके बारे में दोनों ने उसे बताया ही नहीं, बल्कि उसके नाम का पत्र भी सुमेर ने लिखकर उसे दिया है। ताकि वो उसे फाइल दे दे।

इन लोगों ने महाजन की तलाशी में रिवाल्वर वगैरहा तो जब्त कर ली थी, परन्तु कागज जेब में ही रहने दिया था। अगर वे कागज खोलकर पढ़ लेते तो फाइल का सारा मामला ही खुल जाता।

महाजन ने मिस्टर पहाड़िया को ये बात इसलिये नहीं बताई कि अगर उनकी बातें कोई सुन रहा हो तो, बात न खुले। चुप रहने के पीछे, इसके अलावा कोई और बात न थी।

"ये लोग यही सोचते हैं कि मुझे प्रिया का ठिकाना पता है।" महाजन ने जानबूझकर कहा।

"हां।"

"लेकिन मुझे कुछ नहीं पता।"

मिस्टर पहाड़िया ने अंधेरे में महाजन को घूरा, फिर खामोश रह गये।

अब उन्हें सर्दी का बेहद एहसास होने लगा था कि रह-रहकर जिस्म भी कांप उठता था। हवा में खुशनुमा महक-सी महसूस होने लगी थी। ट्रक भी अब रह-रह कर

ीमा हो जाता।

"शायद हम कश्मीर पहुंच गये हैं।"

"अवश्य पहुंच गये हैं।" मिस्टर पहाड़िया की आवाज में विश्वास के भाव थे—"कल रात से ही ट्रक बराबर चल रहा है। दिल्ली से कश्मीर का सड़क के रास्ते, चौबीस घंटे का सफर है और इतना वक्त लगभग पूरा हो गया है।"

महाजन के होंठ भिंच गये।

"अब खतरा हमारे सिर पर है।" मिस्टर पहाड़िया ने कहा।

"हां। अब हमें अलग कर दिया जायेगा। मुझे जाफर के पास, आपको सरहद के पार... ।"

अंधेरे में मिस्टर पहाड़िया के चेहरे के भाव नहीं दिखे।

"हमें कुछ करना चाहिये।" मिस्टर पहाड़िया ने कहा।

"इनकी कैद में क्या कर सकते हैं हम?"

"ट्रक से जब हमें निकाला जायेगा तो तब मौका तलाश करने की जरूरत होगी।"

महाजन ने कुछ नहीं कहा।

ट्रक की रफ्तार बेहद मध्यम हो गई थी। लगता था जैसे मंजिल पर पहुंच रहा हो। तभी जैसे लोहे का पुराना-सा गेट खुलने और ट्रक के भीतर जाने की आवाज आई।

फिर एक आदमी का ऊंचा स्वर कानों में पड़ा—

"रागी आ गया...रागी... ।"

"कैसे आना हुआ रागी का?"

"कीमती शिकार लाया हूं।"

"कैसा शिकार... ?"

"अभी पता चल जायेगा।"

ट्रक चींटी की चाल चलता रुक गया।

ड्राइवर वाला दरवाजा खुला और चलाने वाला बाहर कूदा।

"क्या ठण्ड है कश्मीर की...गर्मी का कोई इंतजाम है कि नहीं?"

"चिन्ता मत कर रागी। पूरा इन्तजाम है। ये बता, कौन से शिकार लाया है तू दिल्ली से?"

"क्यों जानना है तेरे को?"

"यूं ही... ।"

"यूं ही मत पूछा कर, मर जायेगा कभी यूं ही...यूं ही में... ।"

"अच्छा मजाक करता है।"

"मजाक नहीं कर रहा मैं। बंदा बन जा, काम से मतलब रखा कर।"

"काम?"

"शिकारों को बाहर निकाल। बंधे पड़े हैं, फिर भी सतर्क रहना। बड़े हॉल में डाल दे। हम भी वहीं बैठेंगे। दारू चलेगी। तब तक शिकारों के मालिक आ जायेंगे, फिर मेरा काम खत्म।"

□□□

□□□

बड़ा हाल!

लकड़ी का बना बीस फीट चौड़ा और पच्चीस फीट लम्बा कमरा था। जिसमें एक तरफ ट्रकों के पुर्जे रूपी कबाड़ रखा हुआ था। उसी के पास ही महाजन और मिस्टर पहाड़िया को डाल दिया गया। दोनों के चेहरे थकान से निचुड़े हुए थे। बंधे-बंधे उनका बुरा हाल हो गया था।

परन्तु वे वहां मौजूद लोगों को देख रहे थे।

रागी को उन्होंने आवाज से पहचाना। वो चालीस बरस का साढ़े पांच फिट का पतला-सा आदमी था। जिसकी नाक लम्बी थी। चेहरा भी लम्बा था। उसके चेहरे की रंगत बता रही थी कि बेहद सर्दी में रहने की आदत है उसे। उसके अलावा वहां छः आदमी थे।

दो बोतलें उन्होंने खोल रखी थीं।

घेरा बनाकर वे बैठे थे। बीच में आग जला ली थी। सबके हाथों में व्हिस्की के भरे गिलास थे और अलाव के पास

रखे एक थाल में मांस के टुकड़े पड़े थे।

"रास्ते में किसी ने तलाशी नहीं ली ट्रक की?"

"दिल्ली से आते ट्रक की तलाशी कौन लेता है। जाते वक्त जरूर ट्रक में नजर मारते हैं। वैसे भी आधे से ज्यादा पुलिस वाले मेरे को जानते हैं। सबसे अपनी बनी हुई है। ट्रक थपथपाकर कह देते है जा रागी।" कहते हुए वो हंस पड़ा—"जब जरूरत पड़ती है तो उन्हें नोट दे देता हूं।"

उस व्यक्ति ने पुनः महाजन और मिस्टर पहाड़िया पर नजर मारी।

"किसका माल है ये?"

"अकरम, बिलाल, काजी का।" रागी ने भी दोनों को देखा—"तीनों पाकिस्तान के आदमी हैं और जाफर को अच्छी तरह जानते हैं। इनमें से एक जाफर का है और दूसरा पाकिस्तान का है।"

"कब आयेंगे वे तीनों इन्हें लेने?"

"कभी भी आ सकते हैं। उन्होंने मुझे कहा था कि हम भी ट्रक के साथ ही चल रहे हैं।"

"फिर तो आते ही होंगे।"

तभी महाजन कह उठा—

"तुम लोग हमसे डरते हो?"

"क्यों हमें क्यों डरेंगे?" वो आदमी बोला।

"फिर हमें खोल दो। ठण्ड में हमारी जान निकली जा रही है। चौबीस घंटे हो गये हमें इस तरह बंधे हुए। तुम्हारे पास बैठकर हम भी दो घूंट पी लेंगे तो कुछ आराम मिल जायेगा। भला होगा।"

उस व्यक्ति ने रागी को देखा।

"नहीं...।" उसकी नजरों का मतलब समझ कर रागी ने गर्दन हिलाई—"इन्हें खोलना ठीक नहीं।"

"कल के बंधे पड़े हैं। दो पैग पिलाकर पुनः बांध देंगे।"

"कभी नहीं। ये ऐसे ही बंधे-बंधाये मर जायें तो खैर है।" रागी ने शुष्क स्वर में कहा—"अगर हमारी कैद से भाग

निकले तो हमें जिन्दा नहीं छोड़ा जायेगा। दिल्ली से इन्हें यहां तक लाने के लिये मुझे डेढ़ लाख दिया गया है।"

"डेढ़ लाख...।"

"हां। इसी से समझ जाओ कि शिकार कितने कीमती हैं। जो डेढ़ लाख दे सकते हैं, वो लापरवाही होने पर मेरे टुकड़े भी कर सकते हैं। मैं किसी तरह का रिस्क नहीं लेना चाहता।"

"मैं तो हाथ-पांव सीधे करने की बात कर रहा हूं... और तुम भागने की बात कहने लगे।" महाजन बोला।

रागी ने कठोर नजरों से महाजन को देखा।

"बेशक तुम इसी तरह मर जाओ, उसमें मेरी जान की खैर है। लेकिन तुम्हें खोलूंगा नहीं।"

"बुरा ही सोचोगे मेरा।" महाजन बोला।

जवाब में उन्होंने कुछ नहीं कहा और वे गप्पें मारते पीने में मस्त हो गये।

"सतर्क है वो रागी।" मिस्टर पहाड़िया ने कहा—"हमें खोलकर खतरा मोल नहीं लेगा।"

"और हाथ-पांव बंधे रहने पर हम कुछ कर नहीं सकते।"

रात खिसकती रही।

उनके गिलास खाली होते रहे। मस्ती जवान होती रही।

तब रात का एक बज रहा होगा, जब बाहर किसी वाहन की आवाज आई। वो सब नशे में धुत थे। फिर भी होश में थे। परन्तु रागी ने अपने पीने पर बहुत काबू रखा हुआ था।

"बाहर कोई है।"

"मैं देखता हूं।" रागी उठा और बाहर निकल गया।

महाजन और मिस्टर पहाड़िया की नजरें मिलीं।

"वे आ गये लगते हैं।" महाजन बोला।

"शायद...।" मिस्टर पहाड़िया के होंठ हिले।

दो मिनट बाद ही रागी ने वापस, भीतर प्रवेश किया।

उसके साथ बिलाल, अकरम और काजी थे।

"महफिल जमी हुई है।" बिलाल हंस कर बोला।

"आपका ही इंतजार था।" रागी कह उठा।

तीनों की निगाहें मिस्टर पहाड़िया और महाजन पर जा टिकीं।

"खूब! तो हमारे शिकार यहां आराम कर रहे हैं।" अकरम कह उठा।

"बहुत संभाल के लाया हूं आपकी अमानत को।"

"रास्ते में कोई परेशानी हुई?"

"नहीं। सब ठीक रहा।

"हमारे हाथ-पांव तो खुलवा दो।" महाजन कह उठा।

"चिन्ता मत करो। सब कुछ खुलेगा, लेकिन थोड़ी देर बाद।" काजी कड़वे लहजे में बोला।

"ये जो भी हो रहा है, बहुत गलत हो रहा है।" मिस्टर पहाड़िया ने कठोर स्वर में कहा।

अकरम हंसा।

"तुम्हें तो हम पाकिस्तान की सैर करायेंगे। लाहौर देखा है कभी?"

"वहीं पैदा हुआ था।"

"अब तो लाहौर बहुत खूबसूरत बन गया है। लाहौर घूमने का मजा तो अब है।"

"मुझे भी लाहौर दिखा दो।" महाजन बोला।

"तुम्हें, जाफर अपने गले लगायेगा। प्रिया के बारे में पूछेगा तुमसे कि वो कहां है। क्योंकि तुम जानते हो, वो कहां है।"

"मैं नहीं जानता।"

"ये बात जाफर से कहना।"

तभी काजी पलटकर रागी से बोला—

"इन दोनों को उठाकर, बाहर खड़ी हमारी जीप में डालो... ।"

उसके बाद रागी के इशारे पर दो आदमियों ने मिस्टर

पहाड़िया और महाजन को कंधे पर डाला और बाहर ले गये। बाहर की तीव्र सर्दी जैसे बदन को चीरती चली गई।

हर तरफ कोहरा बिखरा हुआ था। आधी रात हो रही थी। घुप्प अंधेरा था। कहीं कोई बल्ब जल रहा था तो कोहरे की वजह से वो अपनी रोशनी न फेंक पा रहा था।

ठण्ड से शरीर का खून जमता-सा महसूस हो रहा था।

बाहर खुली जीप खड़ी थी।

दोनों को जीप के पीछे वाले हिस्से में डाल दिया गया।

उसी पल महाजन को ऐसा लगा जैसे उसकी कलाइयों के बंधन ढीले हो गये हों।

पीठ पीछे बंधे महाजन ने हाथों को हिलाया तो एक कलाई, बंधनों के बीच में से आजाद हो गई। वो समझ गया कि जिस डोरी से उसकी कलाइयां बांधी गई थीं, वो खुल गई हैं।

महाजन ने दूसरा हाथ भी डोरियों से आज़ाद किया।

उस वक्त जीप के पास कोई नहीं था। उन्हें लाने वाले दोनों आदमी भीतर चले गये थे।

मिस्टर पहाड़िया उसके हाथों को आजाद पाकर चौंके।

"हम यहां से फरार हो सकते हैं।" महाजन अपने पांवों के बंधन खोलते हुए बोला—"मौका अच्छा है।"

"जल्दी करो... ।"

तभी उनके कानों में करीब आते कदमों की आहटें पड़ीं।

"वे आ रहे हैं।"

अगले ही पल महाजन हाथ पीछे करके ऐसे पड़ गया, जैसे बंधा हो।

काजी की आवाज उनके कानों में पड़ी—

"हमें तुम जैसे की जरूरत हमेशा रहती है रागी।"

"मैं तो नौकर हूं आपका... ।"

"हमारे लोग आते ही रहते हैं इस पार। उन्हें तुम्हारा पता दे दूंगा।"

"मेरा धंधा तो आपसे ही चलता है। ट्रक ले रखा है।

साल में दो महीने का तो सेबों का काम होता है। बाकी के दस महीने खाली बैठना पड़ता है तो बहुत बुरा लगता है।"

"अब तुम्हें खाली नहीं बैठना पड़ेगा।"

"मेहरबानी आपकी। बुरा न मानें तो एक बात कहूं?" रागी ने कहा।

वे जीप के पास आकर रुक गये। अकरम, बिलाल काजी और रागी।

"कहो... ।"

"जाफर के पास ही मुझे लगवा दीजिये। सुना है, वो अपने आदमियों को अच्छा पैसा देता है।"

"काम भी बढ़िया लेता है।"

"वो तो मैं कर ही दूंगा।"

"ठीक है। जाफर को तुम्हारे बारे में बता देंगे।"

"मेहरबानी होगी... ।"

"चलें... ।" बिलाल बोला।

"हां। रात बहुत ज्यादा हो गई है। सर्दी इतनी है कि शरीर का खून जम रहा है।"

"आओ... ।" काजी जीप की स्टेयरिंग सीट पर जा बैठा।

तभी रागी कह उठा—

"मेरा मेहनताना तो दे दीजिये... ।"

"ओह...याद ही न रहा।" अकरम ने कहते हुए जैकिट की जेब में हाथ डाला और पांच सौ की तीन गड्डियां उसे दीं।

"पूरे डेढ़ हैं?" पूछा रागी ने।

"हां... ।"

"असली हैं ना? कहीं पाकिस्तान में छपे नोट तो नहीं हैं?" रागी कह उठा।

"चिन्ता मत करो। ये नोट पाकिस्तान वाले नहीं हैं।" फिर दोनों काजी के साथ अलग सीट पर जा बैठे। जीप आगे बढ़ गई।

इतनी सर्दी में खुली जीप में, पड़े थे वो। बुरा हाल होने लगा।

तभी बिलाल ने गर्दन घुमाकर उन दोनों को देखा।

"मजा आ रहा है?" बिलाल हंसा।

"सर्दी जोरों की लग रही है।" महाजन कह उठा।

"आध घंटे की बात है। उसके बाद तो आराम-ही-आराम है।" कहकर बिलाल सामने देखने लगा।

महाजन सावधानी से अपने पैरों के बंधन खोलने लगा।

जीप की रफ्तार सामान्य थी।

बिलाल, काजी और अकरम जरूरत से ज्यादा निश्चिंत नजर आ रहे थे।

"कितनी आसानी से हम मिस्टर पहाड़िया को ले आने में कामयाब रहे...।" काजी जीप चलाता कह उठा।

"सब उन नौकरों की मेहरबानी है, जो मिस्टर पहाड़िया के यहां काम कर रहे थे। किसी को पता ही न चला कि हमने उन नौकरों को पटा लिया है और घर के भीतर आ जमे हैं।"

"मिस्टर पहाड़िया ने तो सोचा भी न होगा कि कभी ऐसा भी हो सकता है।"

तभी मिस्टर पहाड़िया कह उठे—

"ठीक कहते हो। गलती मेरी ही थी कि मैंने साधारण नौकर रखे थे। मिलिट्री की तरफ से मुझे खानसामा मिलते हैं, परन्तु उन्हें नहीं रखा। वो होते तो तुम कामयाब न हो पाते।"

जवाब में वे तीनों हंस पड़े।

बिलाल बोला—

"अब तुम कभी भी हिन्दुस्तान वापस न पहुंच सकोगे। अपनी जिन्दगी का अन्तिम वक्त पाकिस्तान में ही बिताओगे।"

मिस्टर पहाड़िया ने कुछ न कहा।

महाजन ने अपने पांवों के बंधन खोल लिए थे। अब वो आजाद था। परन्तु लम्बे समय तक बंधे होने की वजह

से शरीर में अकड़न आ चुकी थी। जीप में इतनी जगह न थी कि अपने हाथ-पैरों को हिला पाता।

उसके बाद महाजन सावधानी से मिस्टर पहाड़िया के बंधन खोलने लगा। उनके बंधन इतने सख्त हो चुके थे कि खोलना कठिन हो रहा था। ऊपर से कड़कती सर्दी, फिर महाजन के हाथ, बंधे रहने की वजह से अभी ठीक से काम न कर रहे थे। परन्तु महाजन को पता था कि थोड़ा वक्त ज्यादा अवश्य लगेगा, परन्तु मिस्टर पहाड़िया के बंधन खोल देगा। बिलाल ने कहा तो था कि आधे घंटे की बात है, यानि इतना वक्त था उनके पास।

"अब तो तुम्हारी तलाश दिल्ली में जोरों की हो रही होगी पहाड़िया?" अकरम ने कहा। एकाएक पीछे देखा।

महाजन को इतना वक्त न मिला कि अपनी हरकत छिपा पाता।

फिर भी महाजन ने अपने हाथ पीठ पीछे करने की फुर्ती दिखाई।

वहां अंधेरा था।

परन्तु अकरम की नजरों से हिलता हाथ न छिप सका।

आंखें फैलती चली गईं अकरम की।

"रो...को...।" अकरम चिल्लाया—"उसके हाथ खुले हुए हैं। मैंने देखा है।"

अगले ही पल काजी ने ब्रेक लगा दी।

महाजन समझ गया कि मामला गड़बड़ हो गया है।

"भाग जा...।" मिस्टर पहाड़िया ने दांत भींच कर कहा।

महाजन के पास अब दूसरा कोई रास्ता न था। मिस्टर पहाड़िया को वहीं छोड़कर भागना था और वो जीप से कूद कर भाग खड़ा हुआ।

अकरम, बिलाल, काजी फुर्ती से जीप से नीचे उतरे। उनके हाथों में रिवाल्वरें चमकीं।

इससे पहले कि वे गोली चला पाते, आगे मोड़ था।

महाजन वहां से मुड़ता चला गया।

"उसके पीछे जाओ।" काजी गुर्राया—"पकड़ो उसे, या गोली मार दो। जिन्दा न बचे।"

अकरम और बिलाल महाजन के पीछे दौड़ पड़े।

सर्द रात के सन्नाटे को उनके कदमों की आवाजों ने तोड़ दिया।

वे दोनों भी उस मोड़ से ओझल हो गये।

काजी रिवाल्वर थामें मिस्टर पहाड़िया के पास आया।

उसने बंधन चैक किए।

बंधनों को ठीक पाया।

"तेरे हाथ-पांव खुल जाते तो तू भी भाग जाता?" काजी ने तीखे स्वर में कहा।

"जरूर भाग जाता।" मिस्टर पहाड़िया ने शांत स्वर में कहा—"पांच-सात मिनट का वक्त मिल जाता तो मेरे बंधन खुल जाते।"

"किस्मत खराब रही तेरी।" काजी खतरनाक स्वर में हंस पड़ा—"लेकिन बचेगा वो भी नहीं। समझ ले, वो तो मर गया।"

"तू जानता है उसे?" मिस्टर पहाड़िया का स्वर शांत था।

"महाजन है वो...।"

"उसके नाम के अलावा और क्या जानता है उसके बारे में?"

काजी ने मिस्टर पहाड़िया को घूरा।

"क्या कहना चाहता है तू?"

"वो हाथों में आने वाली चीज नहीं है। एक बार तो वो धोखे से तुम्हारे हाथों में फंस गया था, जैसे कि मैं धोखे से तुम्हारे हाथों में आ फंसा। ऐसे खुशनसीब मौके बार-बार नहीं मिलते।

"अभी पता चल जायेगा।" काजी दांत किटकिटा उठा।

□□□
□□□
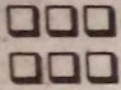
महाजन पूरी ताकत से सड़क पर भाग रहा था।

ये चढ़ाई वाली सड़क थी। भागने में दम ज्यादा लग रहा था और रास्ता कम तय हो रहा था। वो जानता था कि पीछे जरूर वे लोग आयेंगे। और उसका ख्याल ठीक निकला।

ज़ल्दी ही पीछे से भागते कदमों की आवाजें आने लगीं।

यहां सड़क पर घुप्प अंधेरा था। कोई रोशनी न थी। महाजन के लिए रास्ता भी नया था। ऐसे में कई बार उसे भागने के लिये, रास्ता देखने के लिये, अपनी रफ्तार कम करनी पड़ती।

आखिरकार महाजन को अंधेरे की वजह से रुकना पड़ा। आगे ठीक से रास्ता नजर न आ रहा था। घने कोहरे ने जैसे आंखों की रोशनी छीन ली हो, कुछ ऐसा हाल हो रहा था उसका। आसमान में भी घना कोहरा ठहरा हुआ था। ऐसे में चन्द्रमा का दिखाई देना असम्भव बात थी। सब कुछ काला-काला ही था हर तरफ।

ठिठकते ही महाजन सड़क किनारे खड़े पेड़ की ओट में जा पहुंचा।

दूसरा कोई रास्ता न था।

दौड़ते कदमों की आवाजें पास आती जा रही थीं।

चढ़ाई पर भागते वक्त महान की जो सांसें उखड़ी थीं, वो संयत होने लगीं।

मिनट भर ही बीता होगा कि वे दोनों दिखे। दोनों के हाथों में दबी रिवाल्वरों का भी एहसास हो गया था उसे। भागते हुए वे उसके सामने से निकल गये।

महाजन ने अंधेरे में भी उन्हें पहचान लिया कि वे बिलाल और अकरम हैं। एकाएक महाजन की आंखों में हिंसक भाव आ गये थे। चेहरा खतरनाक भावों से भर उठा था।

महाजन उन्हें देखते हुए पेड़ के पीछे से निकलने की

सोच ही रहा था कि ठिठक गया।

सड़क पर पन्द्रह कदम आगे जाकर वे दोनों ठिठक गये थे।

उनकी आवाजें उसे स्पष्ट सुनाई दे रही थीं।

"रुकता क्यों है।" बिलाल बोला—"वो भाग जायेगा।"

"मेरे ख्याल से वो यहीं कहीं है। छिप गया है। अब उसके कदमों की आवाज सुनाई नहीं दे रही।"

"बेवकूफ वो आगे निकल गया है।"

"नहीं।" अकरम के स्वर में दृढ़ता के भाव थे।

"मैं आगे जा रहा हूं।" बिलाल ने कहा और रिवाल्वर थामे सड़क पर आगे दौड़ता चला गया।

अकरम रिवाल्वर थामे अब वहीं खड़ा रहा। नजरें हर तरफ घूमने लगीं।

महाजन उसे ही देख रहा था और जानता था कि वो उसे नहीं देख पायेगा। अंधेरा और ऊपर से कोहरा। दोनों ही बातें अब उसके छिपने में सहायता करने लगी थीं।

अकरम अपनी जगह से हिला और उसकी तलाश में सड़क के किनारों पर नजरें दौड़ाते हुए जरा-जरा करके इस तरफ आने लगा। उसके कदमों में सतर्कता थी।

चंद पल बीते कि महाजन से उसकी दूरी मात्र पांच कदमों की रह गई थी।

महाजन चीते की भांति घात लगाये उसे देख रहा था।

वो दो कदम और पास आ गया।

महाजन के लिये सुनहरी अवसर था।

परन्तु महाजन की नजर अकरम पर न होकर उसके हाथ में दबी रिवाल्वर पर थी। रिवाल्वर की जरूरत थी उसे और फिर महाजन ने शेर की तरह झपट्टा मारा अकरम पर।

अकरम कुछ न समझ सका।

महाजन का हाथ उसके हाथ में दबी रिवाल्वर पर पड़ा और रिवाल्वर झपट ली।

अकरम चंद पलों के लिये हक्का-बक्का रह गया। फिर

महाजन को देखा।

"अब बोल... ।" महाजन दांत पीस कर गुर्रा उठा।

"म...मुझे मत मारना...मैं... ।"

"क्यों तू मेरे ताये का लड़का है जो तुझे न मारूं?" महाजन ने विषैले से स्वर में कहा और ट्रेगर दबा दिया।

उस सुनसान, नमी भरे वातावरण में फायर की आवाज फैलती चली गई।

गोली अकरम के चेहरे पर कहीं लगी और वो गिर गया।

महाजन ने ये देखने की जरूरत न समझी कि वो जिन्दा है या मर गया। गोली की आवाज को सुनकर बिलाल जल्दी ही यहां पहुंचता होगा।

अगले ही पल महाजन पुनः पेड़ की ओट में हो गया।

जरा-सा वक्त ही बीता था कि सड़क पर बिलाल भागता हुआ वहां पहुंचा।

"अकरम..." उसने पुकारा।

शान्ति। कोई जवाब नहीं।

बिलाल एकाएक सतर्क हो गया।

"अकरम! कहां है तू... । तूने गोली चलाई?"

कोई जवाब नहीं।

बिलाल का दिल धड़क उठा।

गड़बड़ है।

रिवाल्वर थामें बिलाल की निगाह हर तरफ घूमने लगी। इतनी सर्दी में भी उसे अपना गला सूखता महसूस हो रहा था। अंधेरे ने उसके डर को बढ़ा दिया था।

बिलाल महाजन की हद से बाहर नहीं था। वो चाहता तो बिलाल को आसानी से निशाना बना सकता था। परन्तु आराम से पेड़ की ओट में खड़ा, आने वाले वक्त का इंतजार करने लगा।

"अकरम... ।" इस बार बिलाल का स्वर काफी ऊंचा था।

जवाब में चुप्पी रही।

फिर महाजन ने बिलाल को, सड़क पर गिरे अकरम के शरीर की तरफ बढ़ते पाया। बिलाल को शायद वहां किसी के होने का अहसास हो गया था। अकरम के शरीर के पास पहुंच कर वो ठिठका। सतर्क निगाहों से हर तरफ देखा, फिर झुककर, नीचे पड़े व्यक्ति को पहचानने की चेष्टा करने लगा।

यही वो वक्त था कि महाजन पेड़ की ओट से निकल कर दबे पांव उसके पीछे पहुंचा और रिवाल्वर की नाल उसकी कमर से लगा दी। बिलाल के शरीर को कांपते महसूस किया उसने।

"रिवाल्वर फेंक... ।" महाजन गुर्राया।

"तुम... ।"

"रिवाल्वर फेंक... ।" महाजन पुनः गुर्राया।

उसने रिवाल्वर गिरा दी।

"तेरे को किसी ज्योतिषी ने नहीं बताया कि तेरी मौत विदेश में होगी?"

"वि...देश...में?" बिलाल का स्वर कांपा।

"ये विदेश ही तो है तेरे लिए। तू पाकिस्तानी है...और इस वक्त हिन्दुस्तानी की जमीन पर मरने जा रहा है।"

"मुझे मत मारो... ।" उसकी आवाज में भय से भरा कम्पन था।

"शेर को कैद करने से पहले, उसका पिंजरा तैयार कर लेना चाहिये था। ये गलती कर दी तुमने।"

"मुझे मत मारो...मैं तुम्हें बहुत पैसे दूंगा...मैं तुम्हें... ।"

उसी पल महाजन ने ट्रेगर दबा दिया।

गोली की तेज आवाज उभरी।

उसकी पीठ में धंसती गोली किसी हड्डी में जा फंसी थी।

बिलाल के होठों से पीड़ा भरी चीख निकली और उछल कर वो पेट के बल नीचे जा गिरा। रात के इस सुनसान

वातावरण में उसकी चीख, शरीर में जमते सर्द लहू को भी गर्म कर सकती थी। इतनी बुरी तरह चीखा था वो।

महाजन ने आस-पास नजरें घुमाईं।

सब ठीक था।

वो जानता था कि काजी जीप के पास, मिस्टर पहाड़िया की निगरानी में खड़ा होगा। यहां नहीं आयेगा। इस वक्त मिस्टर पहाड़िया को बचा सकता था वो। काजी वहां पर अकेला रह गया था।

महाजन ने उसके सिर का निशाना लेकर पुनः ट्रेगर दबा दिया।

वो शांत पड़ गया। उसका चीखना-तड़पना बंद हो गया था।

महाजन पलटा और तेजी से वापस जाती सड़क पर दौड़ा।

अगले ही पल ठिठक गया।

ऊपर की तरफ से कोई वाहन आ रहा था। वाहन की हैडलाइट चमक रही थी और वो पल-प्रति पल पास आती जा रही थी। महाजन के दांत भिंच गये। गलत मौके पर, वो वाहन इस तरफ आ निकला था। सड़क के बीचो-बीच अकरम और बिलाल की लाशें पड़ी थीं। इसी सड़क पर कुछ आगे काजी जीप के पास खड़ा था।

महाजन उसी पल सड़क के किनारे पड़े बड़े से पहाड़ी पत्थर की ओट में जा बैठा।

पास आ चुका था वो वाहन।

महाजन ने हैडलाइट से पहचाना कि वो कार थी।

कार की हैडलाइट में सड़क पर पड़ी लाशें चमक उठीं। फिर वो कार लाशों से दस कदम पहले रुक गई। उसकी हैडलाइट में वो पत्थर भी चमक रहा था, जिसके पीछे महाजन था।

महाजन ने तुरंत अपना सिर पीछे कर लिया, वरना कार वाले उसे देख लेते।

❑❑❑
❑❑❑

कार में पारसनाथ और सितारा थे।

मोना चौधरी की तलाश में वो होटलों को चैक करके आ रहे थे। आधी रात तक, इस तरह भटकने के बाद भी उन्हें मोना चौधरी का पता न चला था।

कश्मीर के सैकड़ों होटलों में से वो सिर्फ 30-35 होटल ही देख पाये थे। अब वे अपने होटल को लौट रहे थे कि सड़क पर पड़ी लाशें देखकर वे चौंके।

"परसू!" सितारा कह उठी—"यहां तो लोग मरे पड़े हैं।"

"हूं।" पारसनाथ की सिकुड़ी निगाह हर तरफ घूमने लगी।

कार की हैडलाइट में सबकुछ स्पष्ट नजर आ रहा था।

"अब क्या करें?" सितारा बोली।

पारसनाथ ने कार की हैडलाइट की रोशनी में देख लिया था कि वहां कोई नहीं है।

"मैं लाशों को एक तरफ करता हूं ताकि हम यहां से जा सकें।"

"ये भी ठीक है।"

पारसनाथ दरवाजा खोलकर कार से बाहर निकला और आगे बढ़कर लाशों को छुआ तो चौंक पड़ा। कड़कती सर्दी में भी लाशें पूरी तरह गर्म थीं।

यानि कि अभी-अभी ही ये मरे हैं।

तो मारने वाले भी पास ही होंगे।

पारसनाथ लाशों को सड़क के किनारे करते हुए आस-पास नजरें घुमाने लगा। दोनों लाशों को उसने सड़क किनारे कर दिया। उसका जरा भी इरादा नहीं था, इस मामले में उलझने का। वो यहां से निकल जाना चाहता था। तभी सितारा खिड़की के बाहर सिर निकालकर कह उठी—

"परसू! उस बड़े से पत्थर के पीछे कोई छिपा है। मैंने अभी उसका सिर देखा है।"

पारसनाथ की निगाह उस पत्थर की तरफ उठी।

उधर महाजन के कानों में भी सितारा का स्पष्ट स्वर पड़ा था। वो हैरान हुए बिना नहीं रह सका था कि सितारा और पारसनाथ यहां...कश्मीर में?

महाजन पत्थर की ओट से निकल आया।

उसने पारसनाथ को कार की तरफ बढ़ते देखा।

उसी पल सितारा की आवाज पुनः कानों में पड़ी—

"परसू, देख तो! मुझे धोखा तो नहीं हो रहा! ये तो नीलू है। तेरा यार...देख-देख...।"

सितारा के शब्द सुनते ही पारसनाथ ठिठक गया था। फौरन पलटा, महाजन को देखा तो उस के खुरदरे चेहरे पर अविश्वास के भाव आ ठहरे। महाजन उसकी तरफ ही बढ़ रहा था।

"नीलू है ना ये...।"

उसके पास पहुंचने पर पारसनाथ गहरी सांस लेकर बोला—

"तुम्हें यहां देखकर मुझे हैरानी हो रही है।"

"मुझे भी हैरानी तो है ही...।"

"इन्हें तुमने मारा है?"

"हां। पाकिस्तानी एजेंट हैं ये। मेरा और मिस्टर पहाड़िया का अपहरण करके, हमें कश्मीर लाये थे...मुझे बचने का मौका मिला तो मैं भाग निकला। वक्त कम है, जल्दी आओ, मिस्टर पहाड़िया को बचाना है।"

"कहां हैं वो?"

"इसी सड़क पर, वो सामने मोड़ के उस पार। कार में बैठो...।"

पारसनाथ ने जल्दी से ड्राइविंग सीट संभाल ली।

महाजन पीछे बैठा। कार आगे बढ़ गई।

मोड़ मुड़ने के बाद आगे के रास्ते पर उन्हें कोई न मिला।

काजी ने शायद खतरा भांप लिया था और मिस्टर पहाड़िया के साथ, जीप ले भागा था।

"यहां तो कोई भी नहीं है।" बोला पारसनाथ।

महाजन गहरी सांस लेकर रह गया।

"तुम कहां ठहरे हो?"

"होटल...।"

"मैं भी वहीं चलूंगा। थका हुआ हूं, नींद लेना चाहता हूं।" महाजन बोला।

पारसनाथ ने कार आगे बढ़ा दी।

"नीलू!" सितारा बोली—"मोना चौधरी कश्मीर में है।"

"बेबी, यहां?" चौंका महाजन।

"हां। हम उसे ही ढूंढ रहे थे। लेकिन वो मिली नहीं।"

महाजन की निगाह पारसनाथ पर जा टिकी।

"क्या चक्कर है?"

पारसनाथ महाजन को, बशीर वाली बात बताने लगा।

सब कुछ सुनने के बाद महाजन ने दिल्ली की सारी बात बताई। प्रिया की भी, जाफर की उस फाइल की भी। दोनों एक-दूसरे के सामने पूरी तरह खुल गये।

"इसका मतलब बेबी की जान खतरे में है।" महाजन बोला।

"हो सकता है, अब तक वो मुसीबत में फंस गई हो। जाफर ने उसे अपने कब्जे में ले लिया हो। मोना चौधरी जिसे मिस्टर पहाड़िया का एजेंट बशीर मान रही है, वो जाफर शरीफ का आदमी है।" पारसनाथ बोला—"नकली बशीर उसे आसानी से कहीं भी ले जाकर कैद कर सकता है।"

"भारी खतरे वाली बात है। बेबी की कोई खबर नहीं मिली?" महाजन चिन्तित हो उठा।

"नहीं।"

"कश्मीर में तो होटल बहुत हैं।" महाजन ने पारसनाथ को देखा।

"हां।"

"क्या पता वेबी होटल में न ठहरी हो। कोई और ठिकाना ढूंढ लिया हो उसने।"

"ये भी सम्भव है।"

"वो वापस भी तो जा सकती है।" सितारा बोली।

"नहीं।" पारसनाथ ने सिर हिलाया—"मेरे ख्याल से जाफर शरीफ उसे वापस नहीं जाने देगा।"

"तेरी बात सही है।"

"मेरे ख्याल से तो मोना चौधरी अब तक जाफर के कब्जे में पहुंच चुकी होगी। इतनी देर उसे जाफर क्यों खुला छोड़ेगा।"

"कुछ भी हो सकता है।" महाजन के दांत भिंचते चले गये।

"मिस्टर पहाड़िया भी खतरे में हैं।" पारसनाथ बोला।

"हां। उन्हें पाकिस्तान ले जाया जा सकता है।" महाजन कह उठा—"एक बार वे पाकिस्तान पहुंच गये तो फिर उन्हें वापस लाना आसान काम नहीं होगा। शायद उस स्थिति में उन्हें वापस लाया ही न जा सके।"

दोनों खामोश हो गये।

पारसनाथ अंधेरे में भरे पहाड़ी रास्ते में सावधानी से कार चला रहा था।

कार में कई पलों तक चुप्पी रही।

सितारा उनकी बातों में कम ही दखल दे रही थी।

"मेरे सामने सबसे महत्वपूर्ण काम इस वक्त उस फाइल को हासिल करने का है, जिसके पीछे जाफर मरा जा रहा है। जिसे प्रिया और सुमेर ने किसी के पास रखा हुआ है और मुझे उस व्यक्ति के बारे में मालूम है।"

"तुम कल वो फाइल हासिल करो। मैं मोना चौधरी के साथ-साथ कल जाफर के बारे में भी जानकारी लेता हूं।" कहते हुए पारसनाथ की आवाज में ढेर सारी कठोरता भर आई थी।

"जाफर को पता है कि अगर वो फाइल किसी के हाथ लग गई तो हिन्दुस्तान में फैला उसके आदमियों का सारा नेटवर्क खत्म हो जायेगा। क्योंकि उन सबके पते उस फाइल में दर्ज हैं।" महाजन ने होंठ भींचकर कहा।

"हमें नहीं मालूम कि जाफर शरीफ का मामला कब और कहां शुरू हुआ। मिस्टर पहाड़िया ने मोना चौधरी को कब इस मामले में लिया। लेकिन हमें जो पता है, उसी के आधार पर ही आगे बढ़ना होगा।" पारसनाथ बोला।

जल्दी ही वो होटल आ गया, जहां पारसनाथ और सितारा ठहरे हुए थे।

❑❑❑

❑❑❑

सुबह मोना चौधरी की आंख खुली तो साढ़े सात बज रहे थे। करवट बदलते ही उसकी निगाह खिड़की पर पड़ी, जिसे खोले विजय मल्होत्रा खड़ा था। वो बाहर देख रहा था।

"बंद करो खिड़की।" मोना चौधरी कह उठी—"कमरा ठण्डा हो जायेगा।"

विजय मल्होत्रा खिड़की बंद करके पलटा, मुस्कुरा कर बोला—

"मैं सोच रहा था।"

"क्या?"

"अगर मैं हनीमून पर आया होता तो कितना अच्छा रहता।"

"हनीमून...मेरे साथ?" मोना चौधरी ने उसे घूरा।

"हनीमून तो हनीमून होता है, किसी के साथ भी हो।"

"लगता है तुम तनख्वाह नहीं लेना चाहते।" मोना चौधरी मुस्कुरा पड़ी।

"हनीमून का तनख्वाह से क्या मतलब?"

"गहरा मतलब है। मेहनताने के रूप में एक ही चीज मिल सकती है। दो नहीं...।"

"तुम्हारे साथ हनीमून का मेरा कोई इरादा नहीं है।

तुमसे तनख्वाह ही लूंगा। मैंने अपना परिवार पालना है। पैसे की मुझे सख्त जरूरत है।" विजय मल्होत्रा मुंह बनाकर कह उठा।

"चाय के लिये बोलो... ।"

विजय मल्होत्रा ने इंटरकॉम पर चाय का आर्डर दिया और कुर्सी खींचकर पास आ बैठा।

"मौसम कैसा है?"

"बेहद ठण्डा। खिड़की पर मेरे हाथ जम रहे थे और नाक सुन्न हो गई थी।"

मोना चौधरी कुछ नहीं बोली।

"आज का क्या प्रोग्राम है?"

मोना चौधरी ने विजय मल्होत्रा को देखा।

"हमारे काम की रफ्तार धीमी है।" विजय मल्होत्रा ने गंभीर स्वर में कहा—"कल का पूरा दिन बीत गया और हम जाफर शरीफ के बारे में कोई भी खबर नहीं पा सके।"

"शायद बशीर ने कुछ पता किया हो।"

विजय मल्होत्रा ने कुछ नहीं कहा।

"आज अब्दुल्ला से मिलूंगी... ।"

"पहलगांव? चाय वाला?"

मोना चौधरी ने सहमति में सिर हिला दिया।

"जरूरी तो नहीं, कि वो जाफर के बारे में जानता हो।"

"वो जानता है।" मोना चौधरी की आवाज में विश्वास के भाव थे।

विजय मल्होत्रा मोना चौधरी को देखने लगा।

"उसकी बातों से स्पष्ट तौर पर सहमति झलक रही थी जाफर को जानने की... ।"

"अगर ऐसा है तो उसके ठिकाने पर तुम्हें किसी भी कीमत पर नहीं जाना चाहिये... ।"

"हमारे पास इतना वक्त नहीं कि उसकी टोह में इधर-उधर वक्त बरबाद करते रहें। उसके पास ही जाना पड़ेगा। तुम बाहर ही रहना। भीतर सिर्फ मैं जाऊंगी।" मोना

चौधरी ने कहा।

"मैं भी साथ चलूं तो क्या हर्ज है?" विजय मल्होत्रा ने पूछा।

"तुम्हारा बाहर रहना ही ठीक रहेगा। जरूरत पड़ी तो वहां आकर तुम मेरी सहायता कर सकते हो।"

विजय मल्होत्रा ने कुछ न कहा।

तभी दरवाजे पर थपथपाहट हुई।

विजय मल्होत्रा ने दरवाजा खोला तो बाहर वेटर को पाया। जो कि हाथों में ट्रे में चाय लिए खड़ा था। ट्रे में आज का अखबार भी पड़ा हुआ था।

"थैंक्स।" विजय मल्होत्रा ने उसके हाथ से ट्रे लेते हुए कहा और दरवाजा बंद कर लिया।

वापस आकर उसने ट्रे बेड पर रखी और केटल से चाय कपों में डालने लगा।

मोना चौधरी ने अखबार उठा ली।

पहले पन्ने पर नजर पड़ते ही मोना चौधरी उठ बैठी।

"क्या हुआ?" विजय मल्होत्रा ने चाय का कप भरते हुए कहा।

मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ चुकी थीं। नजरें अखबार पर थीं।

विजय मल्होत्रा ने केटल रखी और बोला—

"चाय ले लो... ।"

"हमने कल नेता गुलाम मोहम्मद की जान कितने बजे ली थी?" मोना चौधरी ने पूछा।

"शाम के चार बजे होंगे, क्यों?"

"छः बजे गुलाम मोहम्मद श्रीनगर, लाल चौक पर बढ़ती महंगाई को लेकर, जनता के सामने भाषण दे रहा था।"

"ये कैसे हो सकता है।" हक्का-बक्का रह गया विजय मल्होत्रा।

"अखबार में देख लो... ।" मोना चौधरी ने अखबार उसकी तरफ कर दी।

विजय मल्होत्रा ने अखबार देखी।

श्रीनगर की लोकल अखबार थी। पहले आधे पेज पर गुलाम मोहम्मद की तस्वीर और उसके दिए गये भाषण का जिक्र था।

विजय मल्होत्रा अचकचा उठा।

"तो हमने किसे मारा?" विजय मल्होत्रा ने नजरें उठाकर उसे देखा।

"जिसे भी मारा, वो गुलाम मोहम्मद नहीं था।" मोना चौधरी बोली।

"नहीं था तो वो कह सकता था कि वो गुलाम मोहम्मद नहीं है। लेकिन उसने खुद को माना कि वो गुलाम मोहम्मद है, तभी तो हम उससे जाफर शरीफ का पता... ठिकाना पूछते रहे और नहीं बताने पर उसे गोली मारी।"

"इस मामले में तो सारा पेंच है कि उसने खुद को गुलाम मोहम्मद क्यों बताया?"

दोनों की नजरें मिलीं।

"ये काम गुलाम मोहम्मद तब कर सकता है कि जब उसे पता हो कि हम उसे मारने आ रहे हैं।"

"उसे पता हो तो वो गनमैनों से कहकर हमें खत्म करने की कोशिश भी तो कर सकता है।"

"सोचा जाये तो गुलाम मोहम्मद को कैसे पता चल सकता है कि हम वहां पहुंच रहे हैं। ये बात हमी तीन को पता थी। मैं, तुम और बशीर। हम दोनों से तो बात बाहर निकली नहीं।"

"बशीर से भी बात बाहर नहीं निकल सकती।" मोना चौधरी ने कहा।

"वो तुम्हारा विश्वास वाला बंदा है न?" विजय मल्होत्रा ने पूछा।

"हां।"

"तो हमसे गलत आदमी मारा गया।"

दोनों की नजरें मिलीं।

"मुझे सच में हैरानी हो रही है कि हमारे हाथों गलत आदमी मारा गया।" मोना चौधरी ने गंभीर स्वर में कहा—"अजीब बात तो ये है कि अंत तक उसने हमें क्यों नहीं कहा कि वो नेता गुलाम मोहम्मद नहीं है।"

विजय मल्होत्रा ने बेचैनी से पहलू बदला।

"मेरे ख्याल से मरने वाले को जानबूझकर गुलाम मोहम्मद बनाकर हमारे सामने पेश किया गया।" मोना चौधरी बोली।

"ऐसा कैसे हो सकता है?"

"मैं नहीं जानती, लेकिन ऐसा ही हुआ है।" मोना चौधरी ने होंठ सिकोड़ कर अजीब से स्वर में कहा।

बातों के दौरान दोनों चाय पी रहे थे।

एकाएक कुछ रुककर मोना चौधरी बोली—

"क्यों ना गुलाम मोहम्मद से मिला जाये?"

"क्या कह रही हो?" विजय मल्होत्रा चौंककर बोला—"अब तक तो वो सावधान हो गया होगा।"

"मेरे ख्याल से उससे मिलना चाहिये। कोई नई बात पता चलेगी। लेकिन पहले अब्दुल्ला से मिलेंगे।"

"गुलाम मोहम्मद से मिलने के बारे में, फिर सोच लेना।"

"तुम पूरी अखबार चैक करो। क्या गुलाम मोहम्मद के यहां मरने वाले का जिक्र, अखबार में है?"

विजय मल्होत्रा ने पूरी अखबार देखने के बाद कहा—

"उसके घर पर मरने वाले का जिक्र अखबार में नहीं है।"

"तुम्हें ये बात अजीब नहीं लगी मल्होत्रा?"

"लगी तो... बहुत अजीब लगी। नेता के यहां हत्या हुई। हमने की, लेकिन किसी को हवा भी नहीं लगी।"

"एक और है, जिसे पता है कि मैं गुलाम मोहम्मद के पास जाऊंगी।"

"और कौन?"

"अकबर शाह... । उसी ने तो मुझे गुलाम मोहम्मद का पता दिया था।"

विजय मल्होत्रा, मोना को देखता रहा। बोला कुछ नहीं।

"क्या कहते हो?" मोना चौधरी बोली।

"पता नहीं। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा, लेकिन इस बार हम बशीर को नहीं बतायेंगे कि हमारा क्या प्रोग्राम है।"

"बशीर को...क्यों?" मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

"तुम अकबर शाह को चैक करने की सोच रही हो तो बशीर को भी चैक करना चाहिये।"

"ठीक है, मुझे कोई एतराज नहीं।"

"ये बात मुझे ठीक नहीं लगती कि बशीर हमारे साथ चिपका रहता है।" वो बोला।

मोना चौधरी कुछ पल विजय मल्होत्रा को देखती रही, फिर बोली।

"बशीर, मिलिट्री सीक्रेट सर्विस का एजेंट है।"

"ओह! और अकबर शाह?"

"वो भी... ।"

"और तुम?"

"मैं मिलिट्री सीक्रेट सर्विस की भाड़े की टट्टू हूं। नोट लिए, काम किया... ।"

विजय मल्होत्रा का चेहरा शांत रहा। कुछ नहीं कहा। फिर उठते हुए बोला—

"आठ बज रहे हैं। हमें तैयार होकर निकल चलना चाहिये।"

❑❑❑

❑❑❑

मोना चौधरी बाथरूम में थी।

विजय मल्होत्रा चलने के लिये तैयार हो चुका था। इस वक्त वो खिड़की खोले फैले कोहरे में नजरें दौड़ा रहा था। सामने की धुंधली सड़क पर से, कभी-कभार ही कोई राहगीर निकलता दिखाई देता था। कड़कती सर्दी में अभी श्रीनगर

की जिन्दगी का दिन शुरू नहीं हुआ था। एकाएक उसने जेब से मोबाइल निकाला और नम्बर मिलाने लगा। दूसरी तरफ बेल हुई तो उसने गर्दन घुमाकर बाथरूम के बंद दरवाजे को देखा।

"हैलो... ।" दूसरी तरफ से आवाज आई।

"मैं हूं... ।"

"ओह आप! कश्मीर आये आपको वक्त हो चुका है, लेकिन आपने हमसे बात नहीं की?"

"जरूरत नहीं पड़ी।"

"कहिये... ।"

"पहलगांव...अब्दुल्ला का चाय का होटल... ।"

"जानता हूं।"

"वहीं मिलना। होटल के सामने। जब तक मैं तुम्हारे पास न आऊं, तुम मेरे पास न आना।"

"समझ गया... ।"

"दो को और साथ ले आना। सामान पास होना चाहिये। जरूरत पड़ सकती है।"

"सामान तो हमेशा ही अपने पास रहता है।"

"वहां पहुंचो।" विजय मल्होत्रा ने कहा और फोन बंद करते हुए पलटा।

मोना चौधरी बाथरूम के दरवाजे के बाहर, तौलिया लपेटे खड़ी उसे देख रही थी।

विजय मल्होत्रा मुस्कुराया।

"दिल्ली, घर पर बात कर रहा था। बीवी बता रही थी कि आजकल छोटा बहुत तंग करने लगा है।"

"काम के वक्त कभी भी घर पर फोन नहीं करते। इससे काम का ध्यान बंट जाता है। क्योंकि अब तुम काम के बारे में कम और छोटे के बारे में ज्यादा सोचोगे।" मोना चौधरी ने शांत स्वर में कहा।

"काम की तरफ मेरा पूरा ध्यान है।"

"मुंह उधर करो। मुझे कपड़े पहनने हैं।"

विजय मल्होत्रा ने मुंह घुमा लिया।

मोना चौधरी बैड के पास आ पहुंची, जहां कपड़े पड़े थे। उसने तौलिया हटाया और कपड़े पहनने लगी। परन्तु सोच भरी निगाह विजय मल्होत्रा पर ही टिकी थी।

"मल्होत्रा...।" मोना चौधरी बोली—"इधर मत देखना।"

"कहो...।"

"बशीर...अकबर शाह की जमात में तुम भी तो शामिल हो सकते हो।" मोना चौधरी ने कहा।

"तुम मुझ पर धोखेबाजी का इल्जाम लगा रही हो। मुझे फोन करते देखा, इसलिये...।"

"मैं मजाक कर रही थी, गुस्सा मत करो...घूम सकते हो अब...।" मोना चौधरी एकाएक मुस्कुराई।

विजय मल्होत्रा घूमा।

"नाश्ता कर लिया जाये या बाहर ही कहीं किया जाये?" मोना चौधरी ने पूछा।

"बाहर ही करेंगे।" विजय मल्होत्रा, मोना चौधरी की आंखों में झांकते कह उठा।

❑❑❑

❑❑❑

वे दोनों बाहर निकले तो एक तरफ बशीर की टैक्सी खड़ी दिखी।

वे टैक्सी के पास पहुंचे।

बशीर सीट पर अधलेटा-सा पड़ा था। उन्हें देखते ही फौरन उठ बैठा। दांत फाड़कर मुस्कुराया।

"तुम...।" विजय मल्होत्रा टैक्सी का दरवाजा खोलकर पीछे वाली सीट पर बैठता हुआ बोला—"शायद रात भर से ही यहां हो?"

"सेवक हूं। हर वक्त हाजिर हूं।"

"तुम्हारा घर-बार नहीं है क्या?"

"काम-धंधे के सामने घर-बार को पीछे छोड़ना पड़ता

है। तुम्हारा भी तो है।"

"हां।"

"फिर भी तुम कश्मीर में हो।"

मोना चौधरी भी भीतर बैठ चुकी थी।

बाहर कड़ाके की सर्दी थी।

"यहां सूर्य नहीं निकलता?" विजय मल्होत्रा ने पूछा।

"इन दिनों कम ही निकलता है।" बशीर ने जवाब दिया। फिर मोना चौधरी से बोला—"कहां चलना है?"

"पहलगांव...।"

बशीर ने टैक्सी स्टार्ट की और आगे बढ़ा दी।

"जाफर के बारे में तुमने कुछ पता किया?"

"पता किया, लेकिन कुछ भी मालूम नहीं हुआ। जाफर बहुत सावधान रहने वाला बंदा है। उसके आदमी भी बहुत पक्के हैं।"

विजय मल्होत्रा की नजरें बशीर पर जा टिकी थीं।

सड़कों पर भीड़ नहीं थी। टैक्सी सामान्य गति से आगे बढ़ती जा रही थी।

"आज का अखबार देखा?" मोना चौधरी बोली।

"नहीं...।" टैक्सी चलाते बशीर ने इंकार में सिर हिलाया—"भूल गया। आज तो गुलाम मोहम्मद की मौत की खबर छपी होगी।"

"नहीं छपी...।"

"कोई बात नहीं। कल के अखबार में छप जायेगी।"

"हमने शाम चार बजे गुलाम मोहम्मद को मारा था।" मोना चौधरी ने कहा—"और छः बजे गुलाम मोहम्मद ने लाल चौक पर बढ़ती महंगाई को लेकर भाषण दिया। अखबार में उसकी तस्वीर सहित खबर छपी है।"

बशीर ने अचकचा कर टैक्सी सड़क के किनारे रोकी और गर्दन घुमाकर मोना चौधरी को देखा।

"क्या मतलब...तुम कहना चाहती हो कि गुलाम मोहम्मद जिन्दा है।" बशीर अजीब से स्वर में बोला।

"हां। वो जिंदा ही है।"
"ओह, फिर तुम दोनों ने कल वहां किसे मार दिया?"
"वो अपने को गुलाम मोहम्मद ही कह रहा था। अंत तक वो गुलाम मोहम्मद ही बना रहा।"
"ओह...ये कैसे हो सकता है। लगता है तुम लोग गुलाम मोहम्मद के यहां गच्चा खा गये।"
"कल जब हम वहां पहुंचे तो वहां कोई तो गड़बड़ थी ही। मैं इस तरह गच्चा खा जाने वाली नहीं हूं।"
बशीर, मोना चौधरी को देखता रहा। बोला कुछ नहीं।
"खड़े क्यों हो...चलो...।" मोना चौधरी बोली।
बशीर ने उसी पल, विजय मल्होत्रा को देखकर कहा।
"क्या बात है?"
"क्या बात है?" विजय मल्होत्रा बोला।
"तुम कल भी मुझे टकटकी बांधे देखते रहे थे। मैंने तुम्हें टोका भी था और आज भी तुम मुझे देखे जा रहे हो।"
"तेरे को तकलीफ होती है क्या?"
"हां।"
"होती रहे। तेरा चेहरा मुझे अच्छा लगता है, इसलिए देखता हूं।" विजय मल्होत्रा मुस्कुरा पड़ा।
बशीर ने मोना चौधरी से कहा।
"इसे कहो कि इस तरह मुझे मत देखे...।"
मोना चौधरी ने कुछ नहीं कहा।
बशीर ने टैक्सी स्टार्ट की और आगे बढ़ा दी।
"तेरा बाप दिल्ली भी रहा है क्या?" विजय मल्होत्रा बोला।
"क्यों?"
"दिल्ली में मेरा दोस्त है। उसकी शक्ल ठीक तेरे से मिलती है।" विजय मल्होत्रा ने कहा।
"मेरा बाप कभी दिल्ली नहीं रहा। तेरे दोस्त की मां ने कश्मीर का फेरा लगाया होगा।"
टैक्सी आगे बढ़ गयी।

□□□
□□□

पारसनाथ, सितारा और महाजन, रात देर से अवश्य सोये, परन्तु सुबह जल्दी उठ गये थे। उठने के बीच ज्यादा बात नहीं हुई थी। 'बैड टी' लेने के पश्चात वे चलने के लिये तैयार हुए।
"तेरा क्या प्रोग्राम है?" पारसनाथ ने पूछा।
"रात ही बता दिया था कि मैं सबसे पहले वो फाइल लूंगा जो सुमेर ने किसी के पास रखी है।" महाजन ने कहा।
"मोना चौधरी को तलाश करके बशीर के बारे में आगाह करना बहुत जरूरी है।" पारसनाथ गम्भीर लहजे में बोला।
"ये काम तुम न करो। बेबी को तलाश करो।"
"क्या पता वो अब तक खतरे में घिर गई हो या जाफर के हाथों में फंस गई हो...?" सितारा कह उठी।
"हां। कुछ भी हो सकता है।" पारसनाथ ने सिर हिलाया।
महाजन का चेहरा सख्त हो उठा।
"मेरे ख्याल में मैं आधा दिन व्यस्त रहूंगा।" महाजन बोला—"तब तक मेरे हाथ में फाइल आ जायेगी। उसके बाद मैं भी तुम्हारे साथ, बेबी की तलाश में रहूंगा। मिस्टर पहाड़िया को भी जाफर के हाथों से निकालना है।"
"नीलू!" सितारा बोली—"अभी-अभी एक बात मुझे समझ में आई है।"
"कहो भाभी...।"
"प्रिया और सुमेर से तुम दिल्ली में मिले?"
"हां...।"
"तो उनसे क्यों न पूछा कि कश्मीर में जाफर का ठिकाना कहां है? सुमेर तो जानता ही होगा ठिकाने के बारे में...।"
"कैसे पूछता...तब तो मुझे भी मामले का पता न था

कि क्या हो रहा है।"

"ये भी ठीक है।"

"लेकिन तुमने अच्छी राह दिखाई।" महाजन कह उठा—"बीच में मारिया है। मारिया को फोन करके जाफर के ठिकाने के बारे में जानकारी ली जा सकती है। वो सुमेर से बात करके मुझे बता सकती है।"

"इस वक्त हमें जाफर के ठिकाने की नहीं, मोना चौधरी की जरूरत है।" पारसनाथ बोला।

"तुम मोना चौधरी को ढूंढो। मैं फाइल हासिल करने का काम निपटा लूं... ।"

"अकबर शाह बता रहा था कि जाफर शरीफ का ठिकाना, पहलगांव की तरफ हो सकता है।" पारसनाथ ने सोच भरे ढंग में महाजन को देखा—"मोना चौधरी को अगर ये बात पता चल गई होगी तो वो भी उधर जा सकती है।"

"मत भूलो, उसके साथ बशीर है, जो कि हकीकत में जाफर का आदमी है।" महाजन बोला—"ऐसे में बेबी को वो कहीं भी मुसीबत में डाल सकता है। जाफर के ठिकाने में ले जाकर आसानी से फंसा सकता है। खैर, तुम जो ठीक समझो, वो ही करो। मैं चलता हूं। फुर्सत मिलते ही आ जाऊंगा।" महाजन बाहर निकल गया।

सितारा ने पारसनाथ के खुरदरे, कठोर चेहरे को देखा।

"तूने क्या सोचा है परसू... ?"

"मोना चौधरी कहीं भी मिल सकती है। पहलगांव भी देख लेंगे।"

"मैं भी साथ चलूं?"

"चलो।"

❑❑❑

❑❑❑

महाजन टैक्सी द्वारा बरिया गांव पहुंचा।

करीब एक घंटा लगा था उसे यहां तक पहुंचने में। टैक्सी वाले ने उसे वीरान सड़क पर उतार दिया था और बता

दिया था कि बरिया गांव जाने के लिये, बाकी का रास्ता उसे पैदल ही तय करना पड़ेगा। जो कि वहां से एक किलोमीटर की दूरी पर था।

महाजन पैदल ही आगे बढ़ गया।

आगे सड़क न थी। कच्चा पहाड़ी रास्ता, टूटा-फूटा, गड्ढों से भरा था। कुछ देर बाद भेड़ें चराता एक लड़का दिखा तो उसने छोटा रास्ता बताया कि यहीं से पहाड़ी पर चढ़ जाये तो जल्दी पहुंच जायेगा।

चलने के लिहाज से वो आरामदेह पहाड़ी थी। महाजन उस पहाड़ी पर चढ़ता चला गया। करीब आधा घंटा लगा उसे पहाड़ी पर पहुंचने में। पहाड़ी का काफी बड़ा हिस्सा समतल था और उस पर ही बरिया गांव बसा हुआ था। तीस-चालीस घर नजर आ रहे थे। आधे से ज्यादा घर झोंपड़ों के रूप में थे। पन्द्रह के करीब घर पक्के बने लग रहे थे। सर्दी में महाजन का जिस्म रह-रहकर कांप उठता था। बदन पर दिल्ली वाले कपड़े ही थे।

लगभग हर घर के बाहर गाय-भैंसें या घोड़े बंधे नजर आ रहे थे। कहीं-कहीं पर घोड़ा-गाड़ी भी खड़ी नजर आ रही थी। महाजन गांव की गली में आ पहुंचा। वहां एक आदमी से उस्मान अली के बारे में पूछा।

"सीधे चले जाओ। जहां गली खत्म हो, वहां पूछ लेना।"

महाजन आगे बढ़ गया।

गली खत्म होने पर उसने एक औरत से उस्मान अली के बारे में पूछा।

"वो उधर... ।" औरत ने अलग-थलग बने मकान की तरफ इशारा किया—"उस्मान वहां रहता है।"

महाजन ने उस घर को देखा।

दो-तीन कमरे का मकान लग रहा था। मकान के साथ लगता बहुत बड़ा झोंपड़ा खड़ा था।

महाजन वहां पहुंचा। ठिठका। आसपास देखा। कोई न दिखा।

"उस्मान... ।" महाजन ने ऊंचे स्वर में पुकारा।

पुकारने के बाद मिनट भर बीत गया। कोई जवाब नहीं आया।

महाजन पुनः पुकारने लगा कि अपने पीछे उसे आहट सुनाई दी। वो फौरन पलटा।

पीछे, चार कदम के फासले पर उसने एक व्यक्ति को खड़े पाया। इकहरे बदन वाला, लम्बा-सा दिखने वाला वो व्यक्ति कमजोर-सा लग रहा था। ऐसा लगता था कि झगड़े-फ़साद से दूर रहता हो। चेहरे पर दाढ़ी थी। तेल लगे सिर के बाल पीछे को थे।

शरीर पर मैला हो रहा ओवरकोट पहन रखा था। टांगों पर गर्म पायजामा। पांवों में चमड़े के मोटे से जूते थे। उसकी आंखें लाल हो रही थीं, जैसे कुछ देर पहले ही नींद से उठा हो।

"क्या है?" उसने पूछने के साथ गर्दन भी हिलाई।

"तुम?"

"उस्मान अली ही हूं मैं...जिसे तुम पुकार रहे थे।" कहकर वो अपने मकान के गेट की तरफ बढ़ा।

पहाड़ी पर ठण्डी हवा बदन को चीर रही थी।

"तुमसे मिलना था मैंने... ।"

"क्यों?"

"भीतर चलकर बात करते हैं। यहां सर्दी बहुत है।"

"यहीं बात करो।" वो ठिठककर पलटा—"मैं हर किसी को अपने घर में नहीं ले जाता।"

दोनों कुछ पल एक-दूसरे को देखते रहे।

"सुमेर ने भेजा है मुझे... ।"

"सुमेर?" उसने सर्दी से नाक रगड़ी—"ये कौन है?"

"तुम्हें पता होगा।"

"मुझे न पता हो, तो?"

"सोचो, याद करो। पता चल जायेगा।" महाजन ने शांत स्वर में कहा।

"इस नाम के किसी आदमी को नहीं जानता मैं।"

महाजन ने जेब से सुमेर का लिखा पत्र निकालकर, उसकी तरफ बढ़ाया।

"ये पत्र सुमेर ने तुम्हारे लिये दिया है।"

वो आगे बढ़ा। महाजन के हाथ से पत्र लिया और खोलकर पढ़ने लगा।

"नाम क्या है तेरा?"

"महाजन, नीलू महाजन... ।"

"किधर से आया है?"

"दिल्ली से... ।"

उस्मान अली ने वो पत्र फाड़ा। उसके जर्रा-जर्रा टुकड़े किए और उन कागजों को मुट्ठी में जकड़ कर शांत भाव से आसपास देखा। कुछ पल उनके बीच खामोशी रही।

"आओ... ।" वो पलटा और गेट खोलते हुए मकान के भीतर प्रवेश कर गया।

महाजन उसके पीछे था।

भीतर जाकर उसने दरवाजा बंद किया और एक तरफ सुलग रही अंगीठी में कागज के फटे टुकड़ों को डाला, फिर एक कम्बल महाजन की तरफ उछाला।

"इसे ओढ़ लो। यहां की सर्दी बहुत खराब है। लग जाये तो फिर पीछा नहीं छोड़ती।"

महाजन ने कम्बल ओढ़ा तो उसे राहत मिली। वो बैठ गया।

उस्मान अली खड़ा उसे देख रहा था।

"यहीं रहते हो तुम?" महाजन ने पूछा।

"हां... ।" उसने शांत स्वर में कहा।

"कश्मीरी हो?"

"ये बात तो मेरे चेहरे पर लिखी है कि हां... ।" कहने के साथ ही वो दूसरे कमरे में चला गया।

महाजन इधर-उधर नजरें दौड़ाता बैठा रहा।
दो मिनट बाद ही वो भरा गिलास लिए भीतर आया।
"लो, पी लो। सारी सर्दी भाग जायेगी।"
महाजन ने गिलास थामा। सूंघा।
"शराब है?" पूछा।
"मैं अपनी शराब खुद बनाता हूं। आसपास के गांवों में मेरी बनाई शराब ही पीते हैं लोग। कश्मीर के हिसाब से एकदम बढ़िया शराब बनाता हूं मैं। जो मेरी बनाई शराब पीने लगता है, उसे बाजार की पसन्द नहीं आती।" उस्मान अली ने शांत स्वर में कहा—"लोग सारा दिन मेहनत करते हैं, पैसे कमाते हैं कि रात होने पर उस्मान अली की बनाई शराब पी सकें।"
"मतलब ये कि वो तुम्हें पैसे देने के लिये कमाते हैं।"
उस्मान अली ने कुछ नहीं कहा।
महाजन ने घूंट भरा और सिर हिलाकर बोला—
"अच्छी है।"
"कश्मीर में आतंकवाद नहीं होता तो आज पूरी कश्मीर मेरी बनाई शराब पी रहा होता। आतंकवाद ने सत्यानाश कर दिया है कश्मीर का। न जीने का मन करता है, न मरने की इच्छा होती है।" उसके स्वर में कोई भाव नहीं था।
महाजन ने घूंट भर कर कहा—
"मैं यहां तुम्हारी शराब पीने नहीं आया उस्मान अली।"
उस्मान अली ने महाजन को देखा।
"सुमेर ने मुझे वो फाइल लेने भेजा है, जो उसने तुम्हें रखने को दी थी।"
उस्मान अली कुछ नहीं बोला।
"वो फाइल तुम्हारे पास ही है ना?"
"हां।"
"मुझे दो।"
"सुमेर ने वो फाइल मुझे देते हुए कहा था कि वो फाइल लेने खुद ही आयेगा।"

"उसने तुम्हारे लिये पत्र देकर मुझे भेजा है। वो पत्र तुमने पढ़कर फाड़ दिया।"
"ऐसी चीजें सलामत नहीं रखी जातीं।" उस्मान अली ने कहा।
महाजन उसे देखता रहा, फिर बोला—
"सुमेर को कैसे जानते हो तुम?"
उस्मान अली, महाजन को घूरने लगा—
"तू सुमेर के बारे में क्या जानता है?"
"ये बताना जरूरी है?"
"अपने सवाल का जवाब चाहता है तो मेरे सवाल का जवाब देना ही पड़ेगा।"
"जाफर शरीफ के लिए काम करता था सुमेर... ।"
"हां।" उस्मान अली ने सिर हिलाया—"उस आतंकवादी के लिये काम करता है। दो साल पहले, जाफर के दस आदमी हथियारों के साथ आये, गांव के लोगों पर मुखबिर होने का शक था। बारह लोगों को उन्होंने चुनकर लाइन में खड़ा कर दिया। दो सामने खड़े थे, गनें तानकर। उनमें एक सुमेर भी था। वो गोलियां चलाने ही वाले थे कि मेरी आंखें सुमेर से मिलीं। मैंने उसे अपनी तरफ देखते पाया तो मैंने इंकार में सिर हिला दिया कि मुझे मत मारे। जाने उसके मन में क्या आया कि उसने मुझे लाइन से बाहर निकल जाने को कहा। मेरे लाइन से बाहर निकलते ही, उन लोगों ने सब को भून दिया। इस तरह मैं बच गया। वे सब चले गये।"
महाजन उसे देख रहा था।
उस्मान अली पुनः बोला—
"उसके बाद सुमेर पांच-सात बार मेरे पास आया। दो-तीन बार तो रात भी रहा। उसे मेरी शराब बहुत पसन्द है। जब भी आता पेट भरकर पीता। वो जो भी हो, अच्छा आदमी है। दोस्तों जैसी बात हो गई थी उससे।"
महाजन ने शराब का गिलास खाली कर दिया। शरीर में एकाएक गर्मी आ गई थी। सच में शराब बहुत तेज थी।

बेहतरीन चीज थी ये।

"फाइल मुझे दो। मैं यहां बैठने नहीं आया।"

"सुमेर दिल्ली में है?"

"हां।"

"तू उसका क्या लगता है?"

"कुछ नहीं। उसके किसी पहचान वाले का, पहचान वाला हूं और फाइल लेने आया हूं...।"

उस्मान अली खड़ा...टहलता रहा।

उसके बाद वो दूसरे कमरे में गया और जब वापस आया तो हाथ में लैदर के कवर वाली ब्राउन कलर की फाइल थी। जोकि सवा फीट लम्बी और पौन फीट चौड़ी था। उसने फाइल महाजन को थमा दी।

महाजन ने फाइल को सरसरी तौर पर खोला तो भीतर के पन्नों पर शहरों के नाम और एड्रेस लिखे देखे, जो कि काफी संख्या में थे। एक इंच के करीब मोटी थी फाइल।

महाजन ने उस्मान अली को देखा।

"जानते हो इसमें क्या है?"

"इसमें...।" उस्मान अली ने गंभीर स्वर में कहा—"जाफर शरीफ की जान है।"

महाजन ने सिर हिलाया, फिर उठ खड़ा हुआ।

"कश्मीर में रुकना नहीं।" उस्मान अली बोला—"यहां से सीधा दिल्ली निकल जाओ...।"

महाजन ने पुनः सिर हिलाया।

"अगर किसी के हाथ लग जाओ तो भूल के भी मेरा नाम इस मामले में मत ले लेना।"

"मैं समझता हूं।" महाजन कहकर दरवाजे की तरफ बढ़ा और फिर ठिठक कर पलटा—"जाफर का ठिकाना कहां है?"

"ये बात तुम्हें सुमेर से पूछनी चाहिये...।"

"जल्दबाजी में ध्यान नहीं रहा।" कहकर महाजन ने उसका कम्बल उतार कर एक तरफ रख दिया।

"तुमने क्या करना है ये जानकर? तुमने तो दिल्ली चले जाना है।"

"किसी को बताना है।"

"मैं नहीं जानता, लेकिन एक बार बातों-बातों में सुमेर ने बताया था कि पहलगांव की तरफ है। उसके पास कहीं या पहलगांव में ही, कहीं भी जाफर का ठिकाना हो सकता है।" उस्मान अली ने शांत स्वर में कहा।

"मेहरबानी...।" महाजन ने मुस्कुराकर कहा और फाइल थामें बाहर निकल गया।

□□□

□□□

महाजन वहां से सीधा पारसनाथ वाले होटल पहुंचा।

वहां पारसनाथ और सितारा नहीं थे।

महाजन ने कपड़ों में छिपा रखी फाइल निकाली और उसे पारसनाथ के सूटकेस में कपड़ों के नीचे छिपा दिया। उसके बाद हाथ-मुंह धोकर महाजन होटल से निकला और टैक्सी लेकर पहलगांव की तरफ चल पड़ा। वो नहीं जानता था कि पारसनाथ पहलगांव गया है। चूंकि पारसनाथ ने पहलगांव का जिक्र किया था, शायद वो पहलगांव ही गया हो और जाफर का ठिकाना भी कहीं उधर ही था।

मन-ही-मन उसे मोना चौधरी और मिस्टर पहाड़िया की चिन्ता हो रही थी।

मोना चौधरी के पास बशीर नाम का कोई आदमी था, जिसे मोना चौधरी मिस्टर पहाड़िया का आदमी समझ रही थी, जबकि हकीकत में वो जाफर शरीफ का आदमी था और मोना चौधरी इस हकीकत से अंजान थी।

उधर मिस्टर पहाड़िया दुश्मन की कैद में पहुंच चुके थे और कभी भी उन्हें सीमा पार पाकिस्तान पहुंचाया जा सकता था। यानि कि वक्त कम और काम ज्यादा थे।

टैक्सी पहलगांव की तरफ बढ़ती जा रही थी।

□□□
□□□

पहलगांव पहुंचकर बशीर ने अब्दुल्ला के चाय के होटल के सामने सड़क पार ठीक उसी जगह टैक्सी रोक दी, जहां एक दिन पहले रोकी थी। इंजन बंद करके बोला—

"लो आ गया पहलगांव... ।" उसने गर्दन पीछे मोड़ी।

विजय मल्होत्रा को उसने अपनी तरफ देखते पाया।

"तू फिर मुझे देख रहा है?"

विजय मल्होत्रा ने दरवाजा खोला और बाहर निकल आया।

हर तरफ बर्फ बिखरी नजर आ रही थी। कड़कती सर्दी का ठिठुरा देने वाला मौसम था।

मोना चौधरी भी बाहर निकली।

वहां तीन-चार वाहन और भी खड़े थे। सब कुछ सामान्य था।

"मैं यहीं इंतजार करूं?" बशीर बोला।

"चिंता मत करो। तुम्हारे साथ मैं भी यहीं हूं... ।" विजय मल्होत्रा बोला।

मोना चौधरी अब्दुल्ला की चाय की दुकान की तरफ, सड़क पार करती बढ़ गई।

"तू चाय पीने नहीं जायेगा?" बशीर बोला।

"नहीं... ।"

"क्यों?"

"मुझे सर्दी नहीं लग रही। तू पी आ।" विजय मल्होत्रा की निगाह बशीर के चेहरे पर जा टिकी।

"तू फिर मुझे घूरने लगा।"

"तेरा चेहरा मेरे दोस्त से मिलता है।"

"मैं तेरे साथ दिल्ली चलूंगा... ।"

"क्यों?"

"मुझे दिखाना अपना दोस्त... ।"

"नहीं... ।" विजय मल्होत्रा ने इंकार में सिर

हिलाया—"झगड़ा हो जायेगा।"

"झगड़ा क्यों?"

"तू कहेगा उसकी मां कश्मीर आई थी, वो कहेगा मेरा बाप कश्मीर आया था।" विजय मल्होत्रा ने मुंह बनाते हुए कहा और आगे बढ़ गया। कई कदम आगे जाकर, एक पुलिया पर बैठ गया। नजरें हर तरफ घूमने लगीं। मिनट भर भी न हुआ होगा कि उसे वो लोग नजर आ गये, जिन्हें देखना चाहता था।

वे तीन थे और कम्बलों को ओढ़े एक तरफ खड़े बातें कर रहे थे। तीनों ने चेहरों और सिर पर बन्दरों वाली टोपी पहन रखी थी। उन तीनों ने भी विजय मल्होत्रा को देख लिया था।

विजय मल्होत्रा को तसल्ली हुई कि सब ठीक है। उसने बशीर की तरफ देखा, जो कि टैक्सी से टेक लगाये अब्दुल्ला के होटल की तरफ देख लेता था।

एकाएक विजय मल्होत्रा पुलिया से खड़ा हुआ और उन तीनों की तरफ बढ़ गया।

तीनों के पास पहुंचा।

"बीड़ी सिगरेट दो।" विजय मल्होत्रा बोला।

एक ने बीड़ी दी।

विजय मल्होत्रा बीड़ी सुलगाते बोला—

"गन छिपा, कम्बल से बाहर निकल रही है।"

उसने फुर्ती से गन संभाली।

बीड़ी सुलगाकर विजय मल्होत्रा ने उन्हें माचिस देते हुए कहा।

"टैक्सी के साथ सट कर जो बंदा खड़ा है, उसे देख रहे हो?"

"हां। जिस टैक्सी से आप उतरे हैं, उसी की बात... ।"

"हां। उस पर नजर रखो।" कहकर विजय मल्होत्रा उनके पास से हट गया। कश लेता वापस उसी पुलिया के पास पहुंचा और उस पर बैठ गया।

तीव्र सर्द हवा चल रही थी। नाक-हाथ सुन्न हो रहे थे। हर तरफ बर्फ की सफेदी-ही-सफेदी नजर आ रही थी। गर्मियां होतीं तो ये जगह टूरिस्टों से भरी होती। परन्तु इस सर्दी में कश्मीर घूमने के लिये कोई भी नहीं आता। इन दिनों हर तरफ के रास्ते बंद कर देती है बर्फ।

तभी वहां एक टैक्सी आकर रुकी।

विजय मल्होत्रा ने उस तरफ देखा। उसके देखते-ही-देखते टैक्सी से पारसनाथ और सितारा बाहर निकले। उन्होंने टैक्सी का किराया दिया तो वो वापस चली गई।

परन्तु विजय मल्होत्रा की आंखें सिकुड़ चुकी थीं।

"पारसनाथ... यहां?" विजय मल्होत्रा बड़बड़ा उठा। परन्तु वो बैठा रहा। अगले ही पल उसने पारसनाथ और सितारा को, टैक्सी के साथ सट कर खड़े बशीर की तरफ बढ़ते देखा।

विजय मल्होत्रा उसी तरफ बैठा उन्हें देखता रहा।

□□□

□□□

"तुम टैक्सी ड्राइवर हो?" पारसनाथ ने बशीर से पूछा।

"हां।" बशीर ने उसे देखा—"लेकिन टैक्सी खाली नहीं है।"

"टैक्सी नहीं चाहिये।" पारसनाथ बोला—"हमारी एक साथी यहां बिछड़ गई है। शायद तुमने उसे देखा हो।"

"अच्छा... कैसी लगती है वो?"

"उसका नाम मोना चौधरी है।" सितारा कह उठी हड़बड़ी में।

बशीर की शांत निगाह सितारा पर जा टिकी। वो मुस्कुराकर बोला—

"अब नाम से मैं किसी को कैसे जानूं...। हुलिया हो तो कहो...।"

पारसनाथ ने मोना चौधरी का हुलिया बताया। बशीर ने इंकार में सिर हिलाते हुए दूर बैठे विजय

मल्होत्रा को चोर निगाहों से देखा।

"नहीं। इस हुलिये की युवती को तो मैंने नहीं देखा। कोई और निशानी हो तो बताओ।"

"उसके साथ स्थानीय कश्मीरी बशीर नाम का व्यक्ति है।" पारसनाथ ने कहा—"वो पहलगांव के पास कहीं हो सकते हैं।"

बशीर ने पारसनाथ को देखा।

"बेहतर होगा कि उस तरफ बाजार है। वहां जाकर पता करो...।" बशीर ने कुछ दूर एक गली की तरफ इशारा किया।

पारसनाथ ने गहरी सांस लेकर उधर देखा।

"तुम अगर काम की बात बताओ तो मैं तुम्हें हजार रुपये दे सकता हूं।" पारसनाथ ने बशीर से कहा।

"हजार रुपया... सच?" बशीर बोला।

"सुना है, यहां कहीं जाफर शरीफ का ठिकाना है।"

"जाफर शरीफ?" बशीर के चेहरे पर कोई भाव न आया।

"आतंकवादी।"

"ओह... अच्छा... क्या उसका ठिकाना यहां कहीं है?" बशीर धीमे स्वर में कह उठा—"कहां?"

पारसनाथ ने गहरी सांस लेकर सितारा को देखा।

"इसे तो कुछ भी नहीं पता।" सितारा ने पारसनाथ से कहा।

दोनों वहां से हटने लगे तो बशीर ने टोका—

"आप मुझे हजार रुपये दे रहे...।"

"तेरे को कुछ पता ही नहीं, तो क्यों दें तेरे को हजार रुपया?" सितारा ने मुंह बनाकर कहा।

बशीर शांत निगाहों से दोनों को देखने लगा।

पारसनाथ और सितारा वहां से आगे बढ़ गये। उनकी नजरें मोना चौधरी की तलाश में घूम रही थीं। इक्का-दुक्का लोग ही, कभी आते-जाते नजर आ जाते थे।

❑❑❑
❑❑❑

उनके आगे बढ़ते ही बशीर ने फोन निकाला और नम्बर मिलाने लगा।

तुरन्त ही बात हो गई।

"हैलो!" उधर से आवाज आई।

"मैं इस वक्त पहलगांव में, अब्दुल्ला के होटल के सामने हूं। टैक्सी के पास खड़ा हूं। यहां पर एक आदमी और एक खूबसूरत-सी औरत घूम रहे हैं। औरत ने आसमानी रंग का गर्म सूट और फर वाला कोट पहना हुआ है और सिर पर स्कार्फ बंधा है। वो जाफर शरीफ के ठिकाने के बारे में पूछ रहे थे।"

"ओह... ।"

"उन्हें उठा ले चलो। आदमी भेजो। मैं जानना चाहता हूं कि वे कौन हैं।"

"समझ गया।" इसके साथ ही उस तरफ से फोन बंद हो गया।

बशीर ने फोन बंद करके जेब में डाला और विजय मल्होत्रा ने मुंह फेर लिया।

"उल्लू का पट्ठा... ।" बशीर बड़बड़ा उठा।

अगले ही पल उसने विजय मल्होत्रा को पुलिया से उठते और इधर आते देखा।

वो पास आ गया।

"वो आदमी औरत क्या बात कर रहे थे... ।" विजय मल्होत्रा ने पूछा।

पारसनाथ और सितारा अब बाजार वाली गली की तरफ जा रहे थे।

"ब्यूटी पार्लर का पता पूछ रहे थे कि किधर है। मैंने बता दिया कि इस गली में है। नई-नई शादी हुई लगती है।"

विजय मल्होत्रा समझ गया कि बशीर उसे बताना नहीं चाहता।

"तू फिर मुझे घूरने लगा।"

विजय मल्होत्रा उसके पास से हट गया। उसने पारसनाथ और सितारा को देखा, जो कि उस गली में प्रवेश कर रहे थे। उसके चेहरे पर सोच के भाव नजर आ रहे थे। फिर उसने बशीर को देखा।

बशीर लापरवाही से टैक्सी से टेक लगाये खड़ा था। विजय मल्होत्रा समझ न पा रहा था कि पारसनाथ, यहां क्या कर रहा है? क्या मोना चौधरी ने बुलाया है उसे?

मोना चौधरी ने बुलाया होता तो उसे अवश्य पता होता और तब पारसनाथ अकेला आता। किसी युवती के साथ नहीं आता। ऐसे नाजुक मौके पर पारसनाथ का यहां दिखना हैरानी वाली बात ही तो थी।

विजय मल्होत्रा सीधे तौर पर पारसनाथ को नहीं जानता था, परन्तु ये पता था कि मोना चौधरी का खास साथी है पारसनाथ। उसने अपने तीनों आदमियों को देखा। वो तो जैसे उसके इशारे के लिये तैयार बैठे थे।

यही वो पल थे जब कि अब्दुल्ला के चायखाने की तरफ से कुछ शोर-सा उठा।

विजय मल्होत्रा एकाएक सतर्क हो उठा था।

❑❑❑
❑❑❑

मोना चौधरी ने चायखाने में प्रवेश किया और ठिठक कर, नजरें दौड़ाई।

छः-सात लोग ही बैठे थे वहां। भीतर सर्दी का एहसास कम हो रहा था। अब्दुल्ला जहां कल बैठा था, इस समय उसकी कुर्सी खाली थी। मोना चौधरी एक बैंच पर जा बैठी।

"चाय लाऊं मेमसाहब?" दूर से ही पुराना-सा कम्बल लपेटे लड़के ने पूछा।

"हां... ।"

"साथ में मट्ठी-फैन?"

"नहीं... ।" इसके पश्चात मोना चौधरी की निगाह

चायखाने में घूमने लगी।

दो मिनट में ही लड़का चाय का गिलास ले आया।

"अब्दुल्ला कहां है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"आता है।" कहने के साथ ही लड़का चला गया।

चायखाने के पीछे वाले हिस्से में जाने का रास्ता था। वहां पर्दा लटक रहा था।

मोना चौधरी ने चाय का घूंट भरा।

धीरे-धीरे चाय समाप्त होने को आ गई।

तभी मोना चौधरी ने देखा कि पीछे का पर्दा हटाकर, अब्दुल्ला चायखाने में आया। उसने गर्म कपड़े की कमीज-सलवार और उसके ऊपर पूरी बांह की गर्म जैकिट पहन रखी थी। सिर पर टोपी थी।

आगे बढ़ते हुए उसने चायखाने में सरसरी निगाह दौड़ाई कि मोना चौधरी पर नजर पड़ते ही उसके चेहरे के भाव बदले। वो ठिठकता-सा लगा, परन्तु पुनः आगे बढ़ने लगा।

मोना चौधरी नजरें मिलते ही मुस्कुराई।

अब्दुल्ला ने उसकी तरफ से मुंह फेर लिया था। वो एक तरफ पड़ी अपनी कुर्सी टेबल पर जा बैठा और पुनः मोना चौधरी को देखा। मोना चौधरी मुस्कुराई।

उसके कुछ होंठ भिंचे और मुंह घुमा लिया।

मोना चौधरी ने चाय का आखिरी घूंट भरा और गिलास लकड़ी की टेबल पर रखते हुए खड़ी हुई। फिर उसके कदम अब्दुल्ला की तरफ उठने लगे। वो जानती थी कि अब्दुल्ला छिपी नजरों से उसे पास आते देख रहा है। पास पहुंचकर मोना चौधरी ने वहां पड़े छोटे-से स्टूल को पास खींचा और बैठ गई।

अब्दुल्ला ने उसे देखा।

"हैलो!" मोना चौधरी शांत स्वर में बोली।

अब्दुल्ला ने उसकी आंखों में झांका।

"मैंने कहा था कि मैं फिर आऊंगी...आ गई।"

अब्दुल्ला कुछ नहीं बोला।

"रहमत बिला ने मुझे पूरा विश्वास दिलाया था मुझे कि तुम जाफर शरीफ के ठिकाने के बारे में बता दोगे।"

मोना चौधरी ने अब्दुल्ला के होंठ भिंचते से महसूस किए।

"नाराज हो?" मोना चौधरी के स्वर में तीखा भाव उभरा।

"तुम पागल हो... ।"

"चलो, कुछ तो बोले... ।"

"चली जाओ यहां से... ।"

"जाफर के बारे में जाने बिना नहीं जाऊंगी।"

"मेरा चाय का काम है। जाफर से मेरा कोई वास्ता नहीं... ।" अब्दुल्ला ने कहा।

"रहमत बिला ने कहा था कि पहले तुम ऐसी बात ही बोलोगे, फिर जाफर का ठिकाना बता दोगे।"

अब्दुल्ला ने उसे घूरा।

"मैं रहमत बिला को नहीं जानता।"

"मैंने कब कहा कि तुम जानते हो। लेकिन रहमत बिला तुम्हारी हकीकत जानता था। तभी तो उसने मुझे बताया।"

"चली जाओ यहां से... ।"

"जाफर के बारे में बताओ, चली जाती हूं मैं... ।"

अब्दुल्ला उखड़ता-सा दिखा।

"तुम पागलों वाली बात कर रही हो। क्या तुम चाहती हो कि मैं आस-पास के लोगों को इकट्ठा करूं?"

"करो...वो भी जान जायेंगे कि तुम जाफर जैसे आतंकवादी के साथी हो।" मोना चौधरी का स्वर शांत था—"आज मैं कल की तरह चली जाऊंगी, ये बात भूल जाओ। मैं पूरे मूड में तुम्हारे पास आई हूं।"

"मूड में?" अब्दुल्ला ने शब्दों को चबाया।

मोना चौधरी ने उसे देखते हुए सहमति से गर्दन हिलाई।

"नहीं मानोगी?"

"जाफर का ठिकाना बताओ, फिर सब मान जाऊंगी।"

अब्दुल्ला खा जाने वाली निगाहों से मोना चौधरी को घूरने लगा।

"कौन हो तुम?"

"मोना चौधरी...कल बताया था तुम्हें...भूल गये?"

"जाफर से क्या चाहिये?" उसका स्वर भिंचा हुआ था।

"जो चाहिये, मैं ले लूंगी। तुम ठिकाना बताओ।"

"उसके आदमियों को बुलवा देता हूं। वो तुम्हें जाफर तक पहुंचा... ।"

"कष्ट करने की जरूरत नहीं। मैं खुद पहुंच जाऊंगी। तुम ठिकाना बताओ।"

"ठिकाना नहीं बता सकता।"

"क्यों?"

"घड़े में रहकर पानी से बैर कौन लेना पसन्द करेगा।" अब्दुल्ला के चेहरे पर जहरीले भाव उभरे—"मेरी नेक-नियत का तुम फायदा उठाते हुए यहां बैठी हो। वरना मैं तो कल ही तुम्हारे टुकड़े करवा देता।"

"आज करवा दो... ।"

"मुझे भी लग रहा है कि आज कुछ करना ही पड़ेगा।"

"तुम क्या करोगे...पहले मैं ही कर देती हूं।" मोना चौधरी ने दांत पीस कर कहा और जोरदार घूंसा उसके चेहरे पर मारा।

अब्दुल्ला कराह उठा।

मोना चौधरी फुर्ती से खड़ी हुई और झपट पड़ी उस पर।

अब्दुल्ला संभल ना सका।

मोना चौधरी ने एक साथ तीन-चार घूंसे उस पर जड़ दिए। तभी अब्दुल्ला ने उसे कंधे से पकड़ कर धक्का दिया तो मोना चौधरी लड़खड़ा कर दो-तीन कदम पीछे हो गई।

इतने में अब्दुल्ला ने खुद को संभाला और खड़ा हो गया।

चायखाने में बैठे लोग हड़बड़ा उठे थे।

"क्या हुआ...क्या हुआ?"

"अब्दुल्ला का लड़की से झगड़ा हो गया है।"

"क्या...हैरत है।"

मोना चौधरी और अब्दुल्ला ने एक-दूसरे को घूरा।

"घड़े में रहकर पानी से बैर नहीं ले सकते तो ये मत भूलो, घड़े से बाहर वाले तुम्हें नहीं छोड़ेंगे। घड़े से बाहर खींच कर, तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।" मोना चौधरी खतरनाक स्वर में फुंफकार उठी।

"चली जाओ यहां से... ।" अब्दुल्ला दरिन्दगी भरे स्वर में कह उठा।

तभी मोना चौधरी ने रिवाल्वर निकाल ली।

रिवाल्वर को देखकर वहां के लोग सहम कर एक तरफ सिमटने लगे।

"तुम मेरे साथ चलोगे अब्दुल्ला... ।"

"चलो... । कहां ले जाना चाहती हो मुझे?"

"बाहर टैक्सी खड़ी है।" मोना चौधरी हाथ में दबा रिवाल्वर हिलाकर बोली—"चलो, तुम्हें टैक्सी की सैर कराऊंगी।"

अब्दुल्ला बिना कुछ कहे अपनी जगह से हिला और बाहर जाने वाले रास्ते की तरफ बढ़ा।

"कोई चालाकी मत करना... ।" तीन कदम पीछे मौजूद मोना चौधरी गुर्राई।

अब्दुल्ला शांत ढंग से अपनी चाय की दुकान से बाहर निकला और ठिठका। सड़क पार टैक्सी खड़ी थी और टैक्सी के पास बशीर। दूर से ही दोनों की नजरें मिलीं।

मोना चौधरी रिवाल्वर थामें अब्दुल्ला के पीछे थी।

"उस टैक्सी के पास चलो... ।" पीछे से मोना चौधरी ने कहा।

अब्दुल्ला सड़क पार करता टैक्सी की तरफ बढ़ने लगा।

□□□
□□□

यही वो वक्त था, जब बशीर के बुलाये चार आदमी वहां पहुंचे थे। उन्होंने पारसनाथ और सितारा की तलाश में नजरें घुमाई, परन्तु वे तो उन्हें न दिखे, अब्दुल्ला दिख गया।

"ये क्या?" एक के होठों से निकला—"वो लड़की अब्दुल्ला को लिए जा रही है?"

"रिवाल्वर के दम पर...।" दूसरे ने कहा।

"जिसके शिकार के लिये हम आये हैं, वो कहां है?" तीसरा बोला।

"वो तो नजर नहीं आ रहे।" ये चौथा था।

"हमें अब्दुल्ला को बचाना चाहिये।"

"इस काम के लिये हमें यहां नहीं भेजा गया।"

"जो काम हो जाये, वो ही बढ़िया। इस लड़की का निशाना लगाऊं?"

"नहीं...। हमें क्या पता कि क्या मामला है?"

"जो भी हो, अब्दुल्ला अपनी मर्जी से नहीं जा रहा। ये तो नजर आ ही रहा है। हमें कुछ करना होगा।"

"रुक...अभी देखते हैं।"

❑❑❑

❑❑❑

विजय मल्होत्रा ने अब्दुल्ला और मोना चौधरी को चाय के होटल से निकलते देखा तो उसी पल टैक्सी की तरफ बढ़ आया था। बशीर के पास पहुंचा।

"ये क्या हो रहा है?" विजय मल्होत्रा ने बशीर से कहा।

"मोना चौधरी, अब्दुल्ला चाय वाले को रिवाल्वर के दम पर इधर ला रही है।" बशीर शांत स्वर में बोला।

"टैक्सी में बिठाकर इसे कहीं ले जाना चाहती होगी।"

बशीर ने कुछ नहीं कहा।

अब्दुल्ला और मोना चौधरी टैक्सी के पास पहुंचे।

"टैक्सी में बैठ...।" मोना चौधरी ने कठोर स्वर में कहा।

अब्दुल्ला ने बशीर को देखकर कहा—

"मैंने तेरे को कल कहा था कि इसका दिमाग गर्म है, ठण्डा पानी पिला इसे...।"

"मैं कैसे पिला दूं।" बशीर एकाएक मुस्कुराया—"मामूली-सा टैक्सी ड्राइवर हूं मैं...।"

"है तो यहीं का।" अब्दुल्ला बोला।

"जो नोट देता है, मैं उसी का हूं।"

विजय मल्होत्रा, एकटक बशीर को देखे जा रहा था।

"बैठ भीतर...।" मोना चौधरी ने रिवाल्वर की नाल अब्दुल्ला की कमर से लगा दी।

बशीर ने फौरन पीछे का दरवाजा खोला।

न चाहते हुए भी अब्दुल्ला को भीतर बैठना पड़ा।

मोना चौधरी उसकी बगल में बैठी और रिवाल्वर कमर से लगा दी। दूसरी तरफ से विजय मल्होत्रा, पीछे वाली सीट पर भीतर बैठा। अब्दुल्ला दोनों के बीच फंस-सा गया था।

भीतर बैठने से पहले विजय मल्होत्रा ने अपने आदमियों को पीछे आने का इशारा कर दिया था।

बशीर ड्राइविंग सीट पर बैठा।

"किधर चलना है?" स्टार्ट करते हुए बशीर ने पूछा।

"टैक्सी वापस घुमाओ और ऐसी जगह पर ले चलो, जहां गोली की आवाज कोई न सुन सके।"

बशीर ने टैक्सी आगे बढ़ा दी।

❑❑❑

❑❑❑

"वो अब्दुल्ला को ले गये। अब क्या करें?"

"हमें उनके पीछे जाना चाहिये। देखते हैं कि वो कहां जाते हैं?"

"अब्दुल्ला पर कोई खतरा हुआ तो उसे बचा लायेंगे।"

"खतरा तो है ही। मुझे लगता है कि कोई भारी गड़बड़ है।"

"कार में बैठो। जल्दी...।"

वे चारों कार की तरफ दौड़े।

पारसनाथ और सितारा को वो पूरी तरह भूल गये थे—जोकि अब सामने वाली गली से बाहर आ रहे थे।

□□□

□□□

विजय मल्होत्रा के तीनों आदमी, कार में सबसे पीछे थे।

उन्होंने पीछे लगी, बशीर के आदमियों की कार देख ली थी।

"उस टैक्सी के पीछे एक और कार है।" एक ने कहा।

"हां, उसमें चार आदमी हैं।" दूसरा बोला।

"कुछ समझ नहीं आ रहा कि मामला क्या है?" तीसरे ने सोच भरे स्वर में कहा।

उनकी कार बराबर फासला रखकर पीछा कर रही थी।

"इतना तो साफ है कि जो कार टैक्सी के पीछे लगी है, वो अपने लोग नहीं हैं।"

"आगे अवश्य कुछ होगा, तभी तो हमें पीछे आने को कहा गया है।"

वे कार द्वारा पीछा करते रहे।

□□□

□□□

पारसनाथ और सितारा उस गली से बाहर निकल आये थे। वे दोनों मोना चौधरी का हुलिया बताकर, मोना चौधरी के बारे में जानने की चेष्टा कर रहे थे कि, क्या वो यहां कहीं देखी गयी है।

अब्दुल्ला की चाय की दुकान की तरफ चंद लोगों की भीड़ ने उन्हें आकर्षित किया।

दोनों वहां पहुंचे।

पता चला कि कोई लड़की, चायवाले का अपहरण करके ले गई है।

पारसनाथ ने तुरन्त मोना चौधरी का हुलिया बताकर

उसके बारे में पूछा।

"जनाब।" एक ने कहा—"जिस लड़की का हुलिया आप बता रहे हैं, उसी ने तो अब्दुल्ला का अपहरण किया है।"

"ओह...।" पारसनाथ के होठों से निकला।

"पहले वो भीतर बैठी चाय पी रही थी। मैंने उसे देखा अच्छी तरह। खूबसूरत थी वो, फिर उठी और अब्दुल्ला से झगड़ा करने लगी। जाने क्या बात थी। उसके बाद रिवाल्वर निकालकर, उसे धमका कर ले गई।"

पारसनाथ के होंठ सिकुड़े पड़े थे।

"आप कौन हैं, जो उसे ढूंढते फिर रहे हैं?"

"पुलिस वाले हैं। वो खतरनाक अपराधी है।" पारसनाथ को यही कहना ठीक लगा।

"तो पकड़िये उसे। यहां खड़े क्या कर रहे हैं। वो उस तरफ टैक्सी में गई है।"

पारसनाथ और सितारा वहां से हटकर एक तरफ आ गये।

"इसका मतलब, जब हम यहां पहुंचे तो मोना चौधरी उस चाय की दुकान में थी।" पारसनाथ ने कहा।

"मुझे तो लगता है मोना चौधरी, चाय वाले को उसी टैक्सी में ले गयी है, जिसके ड्राइवर से हमने बात की थी।" सितारा बोली।

"शायद, तुम ठीक कहती हो।" पारसनाथ के होंठ भिंच गये—"अगर मोना चौधरी उसी टैक्सी से यहां पहुंची थी तो उसके ड्राइवर ने हुलिया बताने पर भी, मोना चौधरी के बारे में हमें क्यों नहीं बताया?"

"अब मैं क्या कहूं?"

"इतना तो स्पष्ट हो गया कि मोना चौधरी अभी ठीक-ठाक है।" पारसनाथ ने विचार भरे स्वर में कहा—"ये भी हो सकता है कि बशीर से—जाफर के आदमी से—उसका वास्ता ही न पड़ा हो...।"

"आ परसू। हम मोना चौधरी को तलाश करते हैं।"
"टैक्सी कोई नहीं है यहां... ।"
एकाएक सितारा कह उठी—
"वो आ रही है।"
दोनों की निगाहें टैक्सी पर जा टिकीं।
टैक्सी पास आकर रुकी। भीतर महाजन बैठा था। वो बाहर निकलने लगा तो पारसनाथ बोला—
"भीतर ही रहो। हमें आगे जाना है।"
पारसनाथ और सितारा भीतर बैठ गये।
टैक्सी आगे बढ़ गई।
"क्या हुआ?"
पारसनाथ बताने लगा कि क्या हुआ।
सुनकर महाजन ने राहत की सांस ली कि मोना चौधरी सलामत है और पास ही कहीं है।

□□□
□□□

बशीर ने एक सुनसान जगह पर टैक्सी सड़क से उतारकर, पेड़ों के बीच रोक दी।
कड़ाके की सर्दी थी यहां। खुला जंगली इलाका। हर तरफ पेड़-ही-पेड़ और झाड़ियां नजर आ रही थीं। दूर बर्फ की सफेदी में डूबे पहाड़ खड़े थे। हवा रुकी हुई थी। गुम-सा मौसम लग रहा था।
"यहां गोली की आवाज कोई न सुन सकेगा।" बशीर ने कहा और इंजन बंद कर दिया।
मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा, अब्दुल्ला को लिए टैक्सी से बाहर निकले।
"इसकी तलाशी लो।" मोना चौधरी ने रिवाल्वर थामें सख्त स्वर में कहा।
विजय मल्होत्रा ने तलाशी में, अब्दुल्ला से रिवाल्वर बरामद किया।
"साला, इस रिवाल्वर से हमारी जान ले सकता था।"

मल्होत्रा कह उठा।
बशीर भी बाहर आ चुका था और टैक्सी से टेक लगाकर खड़ा था।
अब्दुल्ला ने मोना चौधरी को खा जाने वाली नजरों से देखा, फिर बशीर को।
बशीर के चेहरे पर किसी तरह का भाव नहीं था।
"अब बोल!" मोना चौधरी गुर्राई—"जाफर शरीफ का ठिकाना कहां है?"
"ये बात तुम मुझसे कभी नहीं जान सकतीं।" अब्दुल्ला दृढ़ता भरे स्वर में कह उठा।
"जानूंगी।" मोना चौधरी दांत किटकिटा उठी।
"भूल में हो।" अब्दुल्ला के चेहरे पर गुस्सा सिमटा हुआ था—"ये कश्मीर है। दिल्ली नहीं। यहां... ।"
"हम वक्त बरबाद कर रहे हैं।" विजय मल्होत्रा बोला—"इसे गोली मारूं?"
"पैर पर... ।" मोना चौधरी अब्दुल्ला की आंखों में देखती कहर से बोली।
विजय मल्होत्रा के हाथ में अब्दुल्ला वाला रिवाल्वर दबा था। उसी से पैर की तरफ फायर किया।
परन्तु अब्दुल्ला उसी पल उछल कर खुद को बचा गया।
"बच गया हरामी... ।" विजय मल्होत्रा खतरनाक स्वर में कह उठा।
मोना चौधरी के चेहरे पर दरिन्दगी नाच रही थी।
अब्दुल्ला ने बशीर को देखकर कहा—
"तुम ही इन्हें समझाओ कि ये जो कर रहे हैं, उसका अंजाम बहुत बुरा होगा।"
"मैं कैसे समझा सकता हूं!" बशीर मुस्कुराया—"मैं मामूली-सा टैक्सी ड्राइवर, मेरी क्या औकात... ।"
अब्दुल्ला ने दांत भींचकर मोना चौधरी को देखा।
"अभी भी वक्त हाथ में है अब्दुल्ला, बता दे ज़ाफर का ठिकाना...वरना... ।"

उसी पल कड़कदार आवाज गूंजी—
"कोई अपनी जगह से नहीं हिलेगा।"
इस आवाज के साथ ही वे तीनों कुछ पल सकते की-सी हालत में रह गये।
"रिवाल्वरें गिरा दो...वरना भून दिए जाओगे।" आवाज पुनः उभरी।
विजय मल्होत्रा और मोना चौधरी की नजरें मिलीं, फिर उन्होंने रिवाल्वरें गिरा दीं।
अब्दुल्ला के चेहरे पर उलझन की चमक नजर आने लगी थी। उसकी नजरें आवाज की तरफ फिर रही थीं। परन्तु हर तरफ पेड़ों के मोटे-मोटे तने ही नजर आ रहे थे।
"अब्दुल्ला!" वो ही आवाज पुनः उभरी—"देखता क्या है, रिवाल्वरें उठा!"
अब्दुल्ला को और क्या चाहिये था।
वो तुरन्त रिवाल्वरों पर झपटा और दोनों रिवाल्वरों को उठा कर मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा को देखा। फिर व्यंग भरी हंसी में, हौले से हंसा। उसका चेहरा अभी भी सुर्ख पड़ा हुआ था।
तभी उन्हें पेड़ों के पीछे से आदमी निकलते दिखे।
वे चार थे। चारों स्थानीय। उनके हाथों में रिवाल्वरें दबी थीं।
अब्दुल्ला उन्हें देखते ही पहचान गया कि वे जाफर के आदमी है।
"बहुत मौके पर आये... ।" अब्दुल्ला हंस कर बोला।
"तेरी किस्मत अच्छी है, वरना हम तो किसी और काम के लिये निकले थे। हूं...ये क्या कह रहे हैं?"
बशीर की सतर्क निगाह सब पर फिर रही थी।
"जाफर का पता पूछ रहे हैं।" अब्दुल्ला कहर से बोला।
"तूने बता दिया?"
"तेरा क्या ख्याल है कि बता दिया?" अब्दुल्ला ने खा जाने वाले स्वर में पूछा।

वो हंस पड़ा, फिर सिर हिलाकर बोला—
"मैं तो मजाक कर रहा था। ये है कौन?"
"मोना चौधरी। कहती है दिल्ली से आई है। रहमत बिला का नाम लेती है।"
"वो तो मर गया।"
"इसी हरामजादी ने मारा होगा।"
अब सबकी निगाह मोना चौधरी और मल्होत्रा पर टिकने लगी।
"बता क्या चक्कर है तेरा?" उस आदमी ने मोना चौधरी से पूछा।
"तुम कौन हो?"
"जाफर के आदमी...और कुछ पूछना है क्या?"
"भून दें इन्हें।"
"पूछने दे कि ये... ।"
"कोई जरूरत नहीं, भून दोनों को। हमें कुछ नहीं पूछना इनसे।" अब्दुल्ला गुर्रा उठा।
"सोच ले अब्दुल्ला। अगर जाफर ने गुस्सा किया कि क्यों इन्हें गोली मारी तो... ?"
"जाफर से मैं बात कर लूंगा। तू भून इन दोनों को।"
हाथों में दबी रिवाल्वरें सीधी कीं उन चारों ने।
अब्दुल्ला उनकी तरफ सरक आया कि कोई गोली उसे न लगे।
यही वो वक्त था कि सारा वातावरण गोलियों की आवाजों से गूंज उठा।
वो चारों और अब्दुल्ला भी, उन गोलियों की जद में आ गये। वे एक भी फायर न कर सके और सैकिण्डों में मौत के मुंह में चले गये। अब खून से सने उनके शरीर ही पड़े दिखाई दे रहे थे।
मोना चौधरी और बशीर, इस तरह गोलियां चलने से चौंके।
तीनों ने उस तरफ देखा, जिधर से गोलियां चली थीं।

वहां तीन आदमी गनों के साथ दिखे।

"एक को तो जिंदा छोड़ देते कि उससे जाफर का ठिकाना पूछ सकते।" विजय मल्होत्रा ने उनसे कहा।

"इतना वक्त नहीं था।" वे तीनों मल्होत्रा के ही आदमी थे।

"जाओ...। बढ़िया काम किया तुमने।"

वो तीनों पलटे और चंद पलों में ही निगाहों से ओझल हो गये।

मोना चौधरी ने होंठ सिकोड़ कर विजय मल्होत्रा को देखा।

"ये तुम्हारे आदमी थे?"

"हां।" मल्होत्रा मुस्कुराया।

"हां...।" मोना चौधरी ने अजीब से स्वर में कहा—"तुम्हारे आदमी कहां से पैदा हो गये?"

"पहले बाकी का काम कर लें। ये बात तो फिर भी हो जायेगी।" विजय मल्होत्रा ने कहा।

"अब और क्या काम बचा है?"

विजय मल्होत्रा ने बशीर को देखकर चुभते स्वर में कहा—

"अपने बशीर साहब बचे हैं। 'हुक्म मेरे आका' वाले बशीर साहब...।"

मोना चौधरी ने बारी-बारी दोनों को देखा।

बशीर लापरवाही से टैक्सी से टेक लगाकर खड़ा मल्होत्रा को देखने लगा था।

"कैसे हैं बशीर साहब?" मल्होत्रा ने कहा—"मुझे शुरू से ऐसा क्यों लगता रहा कि मैंने तुम्हें देखा है। देखा है कहीं...।"

"ये तुम जानो...।"

तभी मोना चौधरी कह उठी—

"मल्होत्रा, तुम जाने क्या कहना चाहते हो? लेकिन एक बात मैं भी बशीर से पूछना चाहती हूं।"

बशीर की निगाह मोना चौधरी पर जा टिकी।

"अब्दुल्ला ने उन लोगों से कहा कि इन दोनों को खत्म कर दो, जबकि तुम भी हमारे साथ थे। लेकिन अब्दुल्ला ने तुम्हारी मौजूदगी की तो परवाह ही नहीं की? जबकि उसे चाहिये था कि तुम्हें भी खत्म करने को कहता।"

बशीर मुस्कुराया।

"इस बात का जवाब तो अब्दुल्ला ही दे सकता था।" बशीर बोला।

"ये सवाल तो मैंने भी पूछना था मोना चौधरी...।" बशीर को घूरते हुए मल्होत्रा बोला—"लेकिन साथ ही इसका जवाब भी मैंने दे देना था। ये क्या जवाब देगा इस बात का!"

"क्या मतलब?"

"ये साला जाफर शरीफ है!" मल्होत्रा कड़वे स्वर में कह उठा और नीचे गिरी रिवाल्वर उठा ली।

मोना चौधरी उछल पड़ी।

"क्या?" मोना चौधरी के होठों से हक्का-बक्का-सा स्वर निकला—"ये जाफर शरीफ है?"

"हां...।" विजय मल्होत्रा ने बशीर को घूरते हुए कहा।

बशीर के चेहरे पर शांत मुस्कान उभरी दिखाई दे रही थी।

"ये नहीं हो सकता।" मोना चौधरी तेज स्वर में बोली—"ये तो...।"

"मेरी बात पर शक मत करो। ये जाफर शरीफ ही है।" विजय मल्होत्रा ने कहा—"पूछ लो।" फिर वो जाफर शरीफ से बोला—"बोल, क्या मैंने गलत कहा है?"

"मैं अगर जाफर शरीफ हूं तो क्यों मानूंगा कि मैं जाफर शरीफ हूं।"

"वो तो मैं मनवा लूंगा।" विजय मल्होत्रा रिवाल्वर हिलाते, कठोर स्वर में बोला।

बशीर ने मोना चौधरी को देखा।

"ये क्या हो रहा है?" बशीर बोला।

"मैं खुद नहीं समझ पा रही कि क्या हो रहा है।" मोना चौधरी उलझन में फंसी थी।

"मैं इसे इसलिए देखता रहता था कि ये मुझे पहचाना-सा लगता था, परन्तु समझ नहीं पा रहा था कि ये कौन है। अब अब्दुल्ला ने जब इसे मारने को नहीं कहा तो मैं चौंका...तभी मुझे लगा कि ये जाफर शरीफ ही है। क्योंकि मैंने इसकी तस्वीर देखी थी। तुमने भी तो देखी है मोना चौधरी। ध्यान से देखो, ये जाफर ही है।"

बशीर के होठों पर व्यंग भरी मुस्कान उभरी।

मोना चौधरी ने तबीयत भरी निगाहों से बशीर को देखा।

बशीर टैक्सी का सहारा छोड़कर इस तरह खड़ा हो गया, जैसे परेड में खड़ा हो।

"अब पहचाना?" विजय मल्होत्रा ने पूछा।

"मुझे तो ये जाफर शरीफ नहीं लगता... ।" मोना चौधरी ने गंभीर स्वर में कहा।

"ध्यान से देखो... ।" विजय मल्होत्रा कह उठा बेचैनी से।

"देख लिया है।" मोना चौधरी की आंखों में उलझन थी।

बशीर हंस पड़ा, फिर बोला—

"मुझे जाफर शरीफ बनाकर ही रहेगा। क्यों विजय मल्होत्रा?"

विजय मल्होत्रा के दांत भिंच गये।

"तुम मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते... ।"

"मैं बशीर हूं। बशीर खान... ।"

"नहीं! तुम जाफर शरीफ हो। माने हुए आतंकवादी। मोना चौधरी तुम मेरी बात का यकीन... ।"

"मैंने जाफर की तस्वीर अच्छी तरह देखी है। बहुत ही अच्छी तरह... ।" मोना चौधरी बोली—"मुझे तो ये किसी भी तरह से जाफर शरीफ नहीं लगता।" फिर वो बशीर खान से बोली—"क्या तुम अपनी कोई पहचान दिखाओगे?"

"जितनी पहचान कहो, उतनी दिखा देता हूं।" बशीर ने मुस्कुराकर कहा—"इसका दिमाग खराब हो गया है। सुबह से ये मेरे साथ है इसलिये ये भी नहीं कह सकता कि इसने कोई नशा किया है।" कहकर बशीर ने टैक्सी का दरवाजा खोला और झुक कर सीट के नीचे कुछ तलाश करने लगा।

विजय मल्होत्रा सावधान था कि वो कोई शरारत करे तो, वो गोली चलाये।

कुछ पलों बाद बशीर सीधा हुआ। पलटा। उसके हाथ में तह किया लिफाफा था। जिसे उसने खोल कर बीच में से दो कार्ड निकाले और मोना चौधरी की तरफ बढ़ाये।

"इनमें एक मेरा ड्राइविंग लाइसेंस है और दूसरा मेरा, मिलिट्री सीक्रेट सर्विस का आई-कार्ड... ।"

मोना चौधरी ने दोनों को लेकर देखा।

दोनों में उसकी तस्वीर लगी थी।

अच्छी तरह देखा। शक-शुब्हे की कोई बात न दिखी।

"तुम भी देख लो... ।" मोना चौधरी ने वो कार्ड विजय मल्होत्रा को दिया।

विजय मल्होत्रा ने दोनों कार्ड देखे, परन्तु कोई खराबी न निकाल पाया उनमें। फिर भी शक की लहरें उसके चेहरे पर उछालें मार रही थीं। उसने वे कार्ड बशीर को वापस कर दिए।

कार्ड लेकर बशीर उन्हें लिफाफे में रखता कह उठा—

"मोना चौधरी! हमारा काम विश्वास के ऊपर चलता है। शक मन में आये तो फिर साथ रहकर काम नहीं होता।"

"क्या कहना चाहते हो?" मोना चौधरी बोली।

"मेरे बदले तुम किसी दूसरे एजेंट की सेवाएं ले सकती हो।"

"नहीं। ये गलत होगा। मल्होत्रा ने तुम पर शक किया है, मैंने नहीं। इसका तुम्हारे से सीधा वास्ता नहीं है। तुम

ही मेरे साथ रहोगे, जैसे कि अब तक रहे हो। हमारे काम का पहला उसूल भी है, शक करना।" मोना चौधरी मुस्कुरा पड़ी।

बशीर ले लिफाफा वापस टैक्सी के भीतर कहीं रखा, फिर बोला—

"यहां से चलें?"

"हां। इधर हमारा और कोई काम नहीं।" मोना चौधरी बोली।

वे तीनों टैक्सी में बैठे। बशीर ने टैक्सी आगे बढ़ा दी। कुछ ही देर में टैक्सी मुख्य सड़क पर आ गई।

विजय मल्होत्रा चुप रहा, कुछ परेशान-सा बैठा, खिड़की से बाहर देख रहा था।

"क्यों जासूस साहब।" टैक्सी चलाते बशीर हंसा—"क्या अब भी मैं तुम्हें जाफर शरीफ लगता हूं?"

विजय मल्होत्रा ने होंठ भींच लिए। कोई जवाब नहीं दिया।

"जाना कहां है?" बशीर ने पूछा।

"होटल... ।" मोना चौधरी बोली—"अब सोचना पड़ेगा कि जाफर तक पहुंचने के लिये हमें क्या करना चाहिये। अब्दुल्ला बता सकता था कि जाफर कहां मिलेगा। लेकिन वो मारा गया।"

"तब अब्दुल्ला को बचाकर गोलियां चलानी चाहिये थीं।" बशीर ने कहा।

मोना चौधरी ने गंभीर नजरों से मल्होत्रा को देखा।

"वो आदमी कौन थे?" मोना चौधरी ने पूछा।

"मेरे आदमी थे... ।" उसने शांत स्वर में कहा।

"तुम्हारे आदमी कश्मीर में कैसे आ गये?"

"आ गये... ।"

मोना चौधरी के माथे पर बल पड़े।

"तुम ठीक से जवाब नहीं दे रहे मल्होत्रा?"

विजय मल्होत्रा चुप।

"अब जवाब दे बच्चू!" बशीर हंसा—"तू तो मुझे जाफर बना रहा था।"

विजय मल्होत्रा ने कुछ भी नहीं कहा और बाहर देखता रहा।

"इसकी तो बोलती बंद हो गई।" बशीर ने मजाक में कहा।

"मुझे कभी धोखा नहीं होता... ।" विजय मल्होत्रा शब्दों को चबाकर कह उठा।

"लेकिन मेरे बारे में हो गया।"

"यही तो मैं कहना चाहता हूं कि मुझे धोखा नहीं हुआ... ।"

"यानि कि मैं जाफर शरीफ हूं? आतंकवादी हूं... ?"

विजय मल्होत्रा ने होंठ भींच लिये।

मोना चौधरी ने विजय मल्होत्रा को देखा। कहा कुछ नहीं।

कुछ ही देर बाद टैक्सी लाल चौक के पास, कुमार होटल के सामने पहुंचकर रुक गई।

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा बाहर निकले।

"मैं यहीं मिलूंगा। आसपास ही कहीं... ।" कहकर बशीर टैक्सी आगे बढ़ाता ले गया।

मोना चौधरी और विजय मल्होत्रा की नजरें मिलीं।

"मेरी बात का जवाब दो मल्होत्रा कि तुम्हारे आदमी कहां से आ गये, कश्मीर में?"

"हुक्म मेरे आका।" विजय मल्होत्रा ने गम्भीर स्वर में कहा।

मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

"क्या मतलब?"

"मैं मिलिट्री सीक्रेट सर्विस का एजेंट नम्बर 442 हूं।" विजय मल्होत्रा का स्वर गम्भीर था।

"मैं नहीं मानती... ।" मोना चौधरी के होठों से निकला।

"मिस्टर पहाड़िया से बात कर सकती हो।" मल्होत्रा ने अपना फोन निकालकर मोना चौधरी की तरफ बढ़ाया—"मैं मिस्टर पहाड़िया यानि कि चीफ के कहने पर शुरू से ही प्रिया के लिये काम कर रहा था और...।"

"ऐसा है तो मिस्टर पहाड़िया तुम्हारे बारे में मुझे जरूर बताते।" मोना चौधरी ने कहा।

"चीफ से इस बारे में मेरी बात हुई थी, वो बताना चाहते थे, जब रानी को तुमने पकड़ लिया था। लेकिन मैंने ही मना कर दिया कि अब तुम हर उस आदमी पर शक करोगी, जो चीफ से जुड़ा है। मेरे ख्याल से अगर तुम्हें पता चल जाता कि मैं चीफ का एजेंट हूं तो तुम मुझे अपने साथ यहां न लातीं।"

मोना चौधरी ने उनके हाथ से फोन लिया और मिस्टर पहाड़िया के नम्बर मिलाने लगी।

कई बार कोशिश करने पर भी उनका पर्सनल नम्बर न मिला तो मोना चौधरी ने उनके आफिस का वो नम्बर मिलाया, जो फोन उनकी टेबल पर रहता था। घंटी बजते ही रिसीवर उठाया गया।

"हैलो...।" उधर से आती आवाज कानों में पड़ी।

वो मिस्टर पहाड़िया की आवाज नहीं थी।

"मिस्टर पहाड़िया से बात कराइये।" मोना चौधरी ने कहा।

"वो व्यस्त हैं। फोन पर नहीं आ सकते। आपको जो मैसेज देना हो, दे दीजिये।"

"मैं सिर्फ बात करना चाहती हूं।"

"आपका नाम?"

"नहीं बताना चाहती।"

"नाम बताना जरूरी है। तभी आगे बात होगी।" उधर से कहा गया।

मोना चौधरी ने फोन बंद कर दिया।

"क्या हुआ?" विजय मल्होत्रा ने पूछा।

"मिस्टर पहाड़िया से बात नहीं हो पा रही। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। तुम फोन ट्राई करते रहो। जब उनसे बात हो जाये तो मेरी भी बात करा देना। और तब तक तुम मेरे साथ काम नहीं करोगे।"

"क्यों?"

"शक। जैसा शक तुमने बशीर पर किया, अब वैसा ही शक तुम्हारे लिये मेरे मन में आने लगा है।"

"मेरी बात को झूठा मानती हो कि वो बशीर है? जाफर शरीफ नहीं...।"

"मैं किसी की बात का अब विश्वास नहीं कर रही।"

"तुम मेरी बात को गम्भीरता से लो। वो तुम्हें जाफर शरीफ ही नजर आयेगा।"

जवाब में मोना चौधरी मुस्कुरा कर रह गई।

"तुमने तस्वीर देखी है जाफर शरीफ की। सोचों ही सोचों में उस तस्वीर का बशीर के साथ मिलान करो।"

"मैं जरूरत नहीं समझती...।" मोना चौधरी ने कहा और होटल में प्रवेश करती चली गई।

विजय मल्होत्रा वहीं खड़ा सोचों में व्याकुल-सा दिखने लगा। फिर हाथ में थाम रखे फोन से मिस्टर पहाड़िया का नम्बर मिलाने लगा। परन्तु लम्बी चेष्टा के पश्चात् भी मिस्टर पहाड़िया से बात नहीं हो पाई। उसने फोन से नजरें हटाकर हर तरफ निगाह दौड़ाई तो कुछ दूर एक तरफ बशीर की टैक्सी दिखी। टैक्सी पर अधलेटा-सा बशीर भी दिखा।

विजय मल्होत्रा ने गहरी सांस ली और होटल में प्रवेश कर गया।

□□□
□□□

कमरे में पहुंचते ही मोना चौधरी ने अकबर शाह को फोन किया।

"मोना चौधरी बोल रही हूं।" बात हुई।

"कहो...।"

"बशीर कैसा आदमी है?"

"बढ़िया। विश्वासी... ।"

"हूं। मुझे एक और विश्वासी आदमी चाहिये। जिसे कम लोग जानते हों।"

"तुम कौन-से होटल में हो? अपना फोन नम्बर बोलो। रफीक नाम का एजेंट तुम्हें फोन करेगा।"

मोना चौधरी ने होटल का फोन नम्बर बताकर रिसीवर रख दिया।

कुछ देर बाद विजय मल्होत्रा ने भीतर प्रवेश किया। मोना चौधरी ने उसे देखा। कहा कुछ नहीं।

"मुझ पर शक करके तुम गलती कर रही हो।"

"मेरी गलती को तुम सुधारने की चेष्टा न करो। बेहतर होगा कि अगर तुम पहले ही अपनी असलियत बता देते। अब जब तक मिस्टर पहाड़िया से मेरी बात नहीं हो जाती, मैं तुम्हें दूर ही रखूंगी।" मोना चौधरी ने शांत स्वर में कहा।

"मर्जी तुम्हारी। लेकिन यकीन करो, बशीर ही जाफर शरीफ है। वो जो कार्ड उसने दिखाये हैं, वैसे बना लेना कोई कठिन नहीं।"

"मालूम है।"

"फिर तुम्हें मेरी बात माननी... ।"

तभी फोन बजा।

मोना चौधरी ने रिसीवर उठाया।

"हुक्म मेरे आका... ।" मोना चौधरी के कानों में गंभीर स्वर पड़ा।

"नाम?"

"रफीक।" उधर से आवाज आई।

"जाफर शरीफ को देखा है कभी?"

"देखा है, एक जलसे में। उसकी तस्वीर भी है मेरे पास। कहीं दिखेगा तो पहचान सकता हूं... ।"

"मैं इस वक्त, कुमार होटल में हूं। मेरे होटल के बाहर तुम्हें एक टैक्सी खड़ी दिखेगी, जिसका नम्बर... ।" मोना

चौधरी ने टैक्सी का नम्बर बताया—"उस टैक्सी को चलाने वाला बशीर नाम का आदमी है। जानते हो बशीर को... ?"

"मुझे क्या पता किस बशीर की बात कर रही हो तुम?"

"कश्मीर में हमारा एजेंट बशीर... ।"

"मैं जानता हूं उसे।"

"उसी की बात कर रही हूं। वो इस नम्बर की टैक्सी में मौजूद है बाहर। फौरन यहां पहुंचो और उस पर पूरी तरह नजर रखो कि वो कहां जाता है और उससे कौन मिलता है। तुम्हारे पास अपनी गाड़ी होनी चाहिये उसका पीछा करने के लिये।"

"समझ गया।"

"मुझे रिपोर्ट देते रहना इसी नम्बर पर।" कहने के साथ ही मोना चौधरी ने रिसीवर रख दिया।

विजय मल्होत्रा एकटक उसे देख रहा था।

"तो तुम्हें अब मेरी बात पर यकीन होने लगा है?" मल्होत्रा बोला।

"नहीं। लेकिन जहां शक खड़ा हो, उस जगह को चैक कर लेना चाहिये। इसलिये ये काम किया है। चाय बोलो।"

मल्होत्रा ने इंटरकाम पर रूम सर्विस को चाय के लिये कहा।

"मैं जाफर को तब ही पहचान लेता जब उसे पहले दिन देखा था। लेकिन उसने अपने चेहरे को बहुत अच्छे ढंग से बदल रखा है। परन्तु मेरी निगाह उस पर ही रहती थी। वो मुझे पहचाना-सा लगता था। अब अचानक ही दिमाग में ये बात छू गई कि वो तो जाफर शरीफ की तरह लगता है...वो...वो... ।" फिर वो गहरी सांस लेकर रह गया।

"मुझे ज्यादा समझाने की कोशिश मत करो। पहले मिस्टर पहाड़िया से मेरी बात कराओ।"

"नम्बर ट्राई किया है, मिल नहीं रहा।"

मोना चौधरी आगे बढ़ी और कुर्सी पर जा बैठी।

कुछ ही देर में वेटर चाय ले आया।

मोना चौधरी के चेहरे पर सोच और गम्भीरता के भाव नजर आ रहे थे।

वेटर के जाने के बाद विजय मल्होत्रा ने मोना चौधरी से कहा—

"आज हमने नेता गुलाम मोहम्मद के पास जाना है।"

"तुम्हारे साथ मुझे कहीं नहीं जाना।"

विजय मल्होत्रा गहरी सांस लेकर रह गया। फिर बोला—

"एक बात तो तुम्हें बताना ही भूल गया... ।"

मोना चौधरी ने उसे देखा।

"पारसनाथ को मैंने तब पहलगांव में देखा था, जब तुम अब्दुल्ला के चायखाने में थीं। साथ में एक लड़की भी थी।"

"ओह!" मोना चौधरी के होठों से निकला—"वो कश्मीर आया हुआ है, ये तो पता था। परन्तु... ।"

"उसने बशीर से बात की थी। वो शायद कुछ पूछ रहा था उससे। मैं दूर था। जब बशीर से पूछा कि वो क्या पूछ रहा है तो बशीर बात को टाल गया। उसके बाद पारसनाथ और वो युवती सामने की गली में चले गये।"

"तुम पारसनाथ को कैसे जानते हो?" मोना चौधरी ने पूछा।

"मैं महाजन को भी जानता हूं। बात कभी नहीं हुई, चेहरे से जानता हूं।"

मोना चौधरी कुछ पल खामोश रही, फिर कह उठी—

"तुम मुझे बाजार से बुर्का लाकर दे सकते हो?"

"कहीं बाहर जाना है क्या?"

"सवाल नहीं, अगर ला सकते हो तो... ।"

"ला देता हूं।" विजय मल्होत्रा उठ खड़ा हुआ—"पास ही में कई दुकानें हैं।" वो कमरे से बाहर निकल गया।

मोना चौधरी ने चाय का प्याला उठाया और घूंट भरने लगी।

□□□
□□□

आधे घंटे बाद विजय मल्होत्रा कमरे में आया। उसके हाथ में एक लिफाफा था। जिसमें से बुर्का निकाल कर, उसे बैड पर रखते हुए कहा।

"मेरे ख्याल से तुम बशीर की नजरों में नहीं आना चाहतीं, होटल से निकलते वक्त... ।"

मोना चौधरी ने कुछ नहीं कहा और कपड़ों के ऊपर ही बुर्का पहनने लगी। बुर्के में मोना चौधरी का चेहरा भी ढक गया था।

विजय मल्होत्रा गंभीर स्वर में कह उठा—

"होटल से बाहर निकलो तो अपनी चाल बदल लेना। वरना टैक्सी में बैठा जाफर शरीफ पहचान लेगा तुम्हें।"

मोना चौधरी ने माथे पर लगा बुर्के का नन्हा-सा पर्दा चेहरे पर कर लिया।

"तुम शायद गुलाम मोहम्मद के यहां जा रही हो।" मल्होत्रा उसे देखता कह उठा।

"तुम कमरे से बाहर नहीं निकलोगे।" मोना चौधरी ने सपाट स्वर में कहा।

"तुम्हें मुझ पर विश्वास करना चाहिये। मैं मिस्टर पहाड़िया का आदमी हूं।"

मोना चौधरी दरवाजे की तरफ बढ़ी।

"बेहतर होगा मुझे साथ ले चलो।" विजय मल्होत्रा बोला— "वहां तुम्हारे लिये खतरा भी हो सकता है।"

"तुम कमरे से बाहर नहीं निकलोगे।" मोना चौधरी ने कहा और बुर्का ओढ़े बाहर निकल गई।

विजय मल्होत्रा कई पलों तक खुले दरवाजे को देखता रहा। चेहरे पर गम्भीरता थी। फिर उठा और आगे बढ़कर दरवाजा बंद किया। उसकी आंखें बता रही थीं कि वो सोचों में है।

तभी फोन की बेल बजी।

मल्होत्रा ने रिसीवर उठाया।

"हैलो... ।"

"मोना चौधरी से बात कराओ... ।"

"वो अभी किसी काम से बाहर गई है। तुम जो कहना चाहते हो कहो।"

"तुम कौन हो?"

"मेरा नाम विजय मल्होत्रा है। मैं दिल्ली से मोना चौधरी के साथ हूं।"

"मैं रफीक हूं। मोना चौधरी ने मुझे टैक्सी में बैठे बशीर पर नजर रखने को कहा था।"

"मालूम है मुझे। मेरे सामने ही ये बात हुई थी।" विजय मल्होत्रा ने सतर्क स्वर में कहा।

"मैं इस वक्त होटल के बाहर ही हूं और बशीर नाम का वो आदमी मेरी नजरों में है। लेकिन मैं ये कहना चाहता हूं कि वो हमारा एजेंट बशीर नहीं है।" रफीक की आवाज कानों में पड़ी।

विजय मल्होत्रा की आंखें चमक उठीं।

"तुम बशीर को जानते हो?"

"बहुत अच्छी तरह से... ।"

"सुनो। मैंने पहले ही मोना चौधरी को कहा था कि वो बशीर नहीं है। लेकिन मोना चौधरी ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया और तुम्हें उसकी निगरानी पर लगा दिया कि अगर गड़बड़ हो तो तुम उसे बता सको। मोना चौधरी इस वक्त यहां नहीं है। उसकी वापसी तक तुम्हें उस आदमी पर नजर रखनी होगी।"

"वो मेरी नजरों में है।"

"अब मेरी बात पर गौर करो... ।" विजय मल्होत्रा ने कहा।

"क्या?"

"क्या वो तुम्हें जाफर शरीफ नहीं लग रहा?"

विजय मल्होत्रा के इस सवाल पर, लाइन में खामोशी

छा गई।

"सुना तुमने?"

"हां। तुम्हारी बात अजीब-सी है, जो तुम कह रहे हो। मैंने सोचा, उसे देखा, लेकिन कह नहीं सकता कि वो जाफर हो सकता है या नहीं। मेरे ख्याल में जाफर नहीं हो सकता।" रफीक की सोच भरी आवाज कानों में पड़ी।

"क्यों?"

"जाफर इस तरह खुले में क्यों आयेगा? उसके पास ढेरों आदमी हैं अपने। उन्हें मैदान में भेज सकता है।"

"पता नहीं क्यों, मुझे वो जाफर शरीफ लगा।"

"तुम लोग क्या उसे बशीर समझ पर अपने साथ रखे हुए थे?" रफीक ने उधर से पूछा।

"हां।"

"बहुत बड़ा धोखा खाया।"

विजय मल्होत्रा गहरी सांस लेकर रह गया।

"मैं उस पर नजर रख रहा हूं। कोई बात हुई तो फिर फोन करूंगा।"

विजय मल्होत्रा ने रिसीवर रख दिया।

उसकी आंखों में चमक और चेहरे पर सख्ती थी।

रफीक ने कहा कि वो बशीर नहीं है। इससे उसके शक को यकीनी पक्कापन मिला कि हो न हो, वो जाफर शरीफ ही है। उसने जाफर शरीफ की जो तस्वीर देखी थी, तस्वीर की आंखों पर उसने खासतौर से गौर किया था। उसकी बायीं आंख में लाल-सा तिल जैसा निशान था।

उसी निशान को उसने बशीर बने व्यक्ति की आंखों में देखा था। उसके बाद उसने उसका हुलिया देखा, जोकि जाफर से मिल रहा था। चेहरा अवश्य बदला हुआ था, परन्तु चेहरे पर मेकअप किया जा सकता था। अब रफ़ीक की बात सुनकर, उसे यकीन आ गया था कि वो जाफर शरीफ हो सकता है।

जाफर शरीफ न हो तो उसका आदमी होगा वो!

अब विजय मल्होत्रा को इंतजार था मोना चौधरी के वापस आने का।

□□□
□□□

पारसनाथ, सितारा और महाजन टैक्सी को सड़कों पर घुमाये जा रहे थे। वे उस टैक्सी की तलाश में थे, जिसमें मोना चौधरी, उस चाय वाले को बिठाकर ले गई थी।

परन्तु दो घंटे सड़कों पर दौड़ते रहने के बाद भी कोई फायदा न हुआ।

"अब नहीं मिलने वाली वो... ।" सितारा कह उठी।

"मेरे ख्याल में हम अपना वक्त खराब कर रहे हैं।" महाजन बोला—"बेबी इस तरह नहीं मिलेगी।"

"मैं भी यही सोच रहा हूं। उसे होटलों में तलाश करना चाहिये।" पारसनाथ बोला।

"दिन के वक्त वो होटल में तो बैठी न होगी... ।" सितारा कह उठी।

"कुछ न करने से से बेहतर है कि उसे ढूंढते हुए वक्त बितायें... ।" पारसनाथ ने कहा।

पारसनाथ ड्राइवर से बोला—

"यहां होटल किधर होंगे?"

"पास में लाल चौक है। उसके आसपास कई होटल हैं।"

"तुमने लाल चौक पर बने होटलों को देखा है?" महाजन ने पारसनाथ से पूछा।

"नहीं... ।"

"ड्राइवर! लाल चौक पर चलो... ।"

पांच मिनट में ही वे लाल चौक पर पहुंच गये।

दोपहर का वक्त हो रहा था। परन्तु वहां भीड़ थी इस कड़ाके की सर्दी में भी। क्योंकि पास ही में बस अड्डा था। लोगों के अलावा इधर-उधर घूमते कुली भी नजर आ रहे थे। एक तरफ टैक्सी स्टैण्ड था।

ड्राइवर ने जहां टैक्सी रोकी, उसके पास ही बशीर अपनी टैक्सी में मौजूद था और उस वक्त उस औरत को देख रहा था, जो बुर्के में होटल से बाहर निकली और फुटपाथ पर आगे जा रही थी। उस की चाल से कभी उसे लगता कि वो कहीं मोना चौधरी तो नहीं, परन्तु चलते-चलते वो कभी-कभी लंगड़ाती भी थी। इस वजह से बशीर का शक यकीन में न बदल सका था।

इधर टैक्सी रुकते ही सितारा की निगाह बगल वाली टैक्सी में बैठे बशीर पर पड़ी।

"वो मिल गया?" सितारा के होठों से निकला।

"कौन?" महाजन ने सितारा को देखा।

"वो ही टैक्सी वाला, जो हमें पहलगांव में मिला था। जिसकी टैक्सी में से मोना चौधरी निकली थी।"

पारसनाथ ने भी बशीर को पहचान लिया।

महाजन ने टैक्सी वाले को किराया दिया और तीनों बशीर के पास पहुंच गये।

बशीर की निगाह भी उन पर पड़ चुकी थी।

"बाहर निकल... ।" पारसनाथ ने कठोर स्वर में कहा।

"मैं?"

"हां, तेरे से ही कह रहा हूं।" कहते हुए पारसनाथ ने दरवाजा खोला।

बशीर बाहर निकलते हुए कह उठा—

"टैक्सी खाली नहीं... ।"

"पहलगांव में मैंने तेरे से एक हुलिया बता कर पूछा था कि मोना चौधरी को कहीं देखा है?"

"तो?"

"वो बाद में तेरी ही टैक्सी पर, उस चायवाले को बिठाकर ले गई। तेरे को पता था तो तूने मेरे से क्यों झूठ कहा कि तू उसे नहीं जानता?" पारसनाथ का स्वर कठोर था।

"मुझे क्या पता कि आप किसके बारे में पूछ रहे हैं?"

बशीर कह उठा—"मुझे क्या पता कि उसका नाम मोना चौधरी है?"

"तुम्हारा नाम तो बशीर है?" पारसनाथ ने चुभते स्वर में कहा।

बशीर ने पारसनाथ को देखा।

"मैंने तुम्हारा नाम भी लिया था। बशीर... याद है।"

बशीर चुप रहा।

"चुप रहने से काम नहीं चलेगा... जवाब दे।" महाजन सख्त स्वर में कह उठा।

"कश्मीर में, हर किसी की बात का जवाब नहीं दिया जाता, इसलिये मैं चुप रहा।"

"तो अब बता दे... ।" सितारा कह उठी—"तू बशीर ही है ना?"

"हां।"

"मोना चौधरी कहां है?" पारसनाथ ने चुभते स्वर में पूछा।

"सामने होटल के 24 नम्बर कमरे में... ।" बशीर ने शांत स्वर में कहा—"तुम लोग कौन हो?"

"चल हमारे साथ!"

"किधर?"

"होटल में... ।"

"मेरा वहां जाना ठीक नहीं। मैं यहीं खड़ा हूं। तुम लोग हो आओ।"

"बेटे... ।" महाजन ने कड़वे स्वर में कहा—"हमें बेबी से ज्यादा तेरी जरूरत है।"

"क्या मतलब?"

"हम जानते हैं कि तू असली बशीर नहीं।"

"क्या कह रहे हो? मैं ही बशीर हूं। मेरा लायसेंस देख लो। परिचय-पत्र देख लो...मैं... ।"

"वो भी देख लेंगे... ।" महाजन ने उसे जेब में पड़े

रिवाल्वर की झलक दिखाई—"सीधा होकर हमारे साथ चल।"

बशीर ने कंधे हिलाये।

"चलो। ऐसी बात है तो मुझे कोई एतराज नहीं... ।"

तीनों बशीर को साथ लिए, होटल की तरफ बढ़े।

बशीर का चेहरा शांत था।

"तुम लोग कौन हो, ये तो मैं नहीं समझ पा रहा, लेकिन ये कैसे सोच लिया कि मैं बशीर नहीं हूं?"

"कल बशीर की मौत मेरे सामने हुई थी और मरने से पहले उसने सब कुछ मुझे बता दिया था।" पारसनाथ ने कहा।

"क्या सब कुछ?"

"यही कि उसका अपहरण कर लिया गया। जाफर को सब कुछ पता चल गया और उसकी जगह किसी और को बशीर बनाकर उसने मोना चौधरी के सामने पेश कर दिया।" पारसनाथ ने सख्त स्वर में कहा।

"किसी ने कहा और तुम लोगों ने मान लिया?" बशीर मुस्कुराकर बोला।

"न मानने की कोई वजह भी नहीं थी।"

"मैं बशीर ही हूं। बहुत जल्दी तुम लोगों को अपनी गलती का एहसास हो जायेगा।"

"चुपचाप हमारे साथ चलते रहो।"

❑❑❑

❑❑❑

दरवाजे पर थपथपाहट हुई तो विजय मल्होत्रा ने दरवाजा खोला। सामने पारसनाथ, सितारा, महाजन और बशीर को देखकर हैरान रह गया।

"तुम?" उसके होंठों से निकला।

"मोना चौधरी कहां है?" पारसनाथ ने पूछा।

"बाहर गई है।" मल्होत्रा ने बशीर पर निगाह मार कर कहा।

बशीर समझ गया कि वो बुर्के वाली मोना चौधरी ही होगी, जो होटल से निकल कर जा रही थी और उसे, उस पर मोना चौधरी होने का शक हो रहा था।

"सामने से हटो... ।"

मल्होत्रा हटा और वे सब भीतर आ गये।

दरवाजा बंद हो गया।

"तुमने ये नहीं पूछा कि हम कौन हैं?" महाजन बोला।

"मैं जानता हूं। तुम दोनों को, मोना चौधरी के खास हो।"

महाजन चेयर की तरफ बढ़ता बोला–

"इस पर नजर रखो।" उसका इशारा बशीर की तरफ था।

"क्यों?" मल्होत्रा के होठों से निकला।

"ये बशीर नहीं है।" पारसनाथ बोला–"बशीर ने कल मेरे सामने दम तोड़ा था।"

"मैं जानता हूं ये बशीर नहीं है।" विजय मल्होत्रा ने तेज स्वर में कहा–"ये बात मैंने मोना चौधरी से भी कही थी, लेकिन उसने मेरी बात का यकीन नहीं किया। ये जाफर शरीफ है।"

"जाफर शरीफ?" महाजन चौंका।

"हां। जाफर शरीफ है ये!"

बशीर मुस्कुरा पड़ा।

"जो मन में आये बना लो मुझे। क्या फर्क पड़ता है! किसी के कहने पर मेरा नाम तो बदलने वाला नहीं।"

"ये जो भी है, पता चल जायेगा।" पारसनाथ ने कठोर स्वर में कहा–"इस पर नजर रखो।"

"मोना चौधरी कहां है?" सितारा ने पूछा।

"वो बाहर गई है और मुझे बता कर नहीं गई कि किधर जा रही है।" मल्होत्रा ने कहा।

"अपने बारे में बताओ।"

"मेरा नाम विजय मल्होत्रा है और मिलिट्री सीक्रेट

सर्विस का एजेंट हूं।"

"मिस्टर पहाड़िया के साथ काम करते हो?"

"हां... ।"

"वो भी कश्मीर में हैं।"

"कश्मीर में...चीफ?" विजय मल्होत्रा चौंका।

"हां। मेरे साथ ही बंदी बनाकर कश्मीर लाया गया। मैं किसी तरह बच निकला, परन्तु वे फंसे रह गये।" महाजन ने होंठ भींचकर कहा।

"ओह... ।"

"मिस्टर पहाड़िया खतरे में हैं। उन्हें पाकिस्तान ले जाने का प्रोग्राम है।"

"पाकिस्तान?"

"हां, उन्हें पाकिस्तान पहुंचाने का काम जाफर शरीफ ही करेगा। इस वक्त वो जाफर शरीफ के पास कैद हैं, या फिर उन्हें पाकिस्तान पहुंचा दिया गया है।" महाजन ने गंभीर स्वर में कहा।

विजय मल्होत्रा ने बशीर को देखा और दांत भींचकर बोला–

"कहां है चीफ?"

"मुझे क्या पता! मैं तो तुम्हारे साथ ही तीन दिन से ड्यूटी पर जमा हुआ हूं। मेरी चीफ से कोई बात नहीं हुई।"

"मैं ये बात बशीर से नहीं, जाफर शरीफ से पूछ रहा हूं... ।" मल्होत्रा गुर्राया।

"मैं बशीर हूं। जाफर शरीफ से मुझे कोई मतलब नहीं।"

"उल्लू का पट्ठा... ।"

"कह ले। मेरा क्या जायेगा!" बशीर हंस पड़ा।

तभी फोन की बेल बजने लगी।

बशीर बाथरूम की तरफ बढ़ गया।

मल्होत्रा ने रिसीवर उठाकर बात की। उस तरफ रफीक था।

"बशीर, दो आदमियों और एक औरत के साथ तुम्हारे पास पहुंचा?" वो पूछ रहा था।

"हां।"

"वे तीनों जबरदस्ती बशीर को रिवाल्वर दिखाकर साथ ले गये हैं। कुछ दूर से मैं सब देख रहा था।"

"सब ठीक है...तुम फिक्र मत करो।"

"अब मैं क्या करूं?"

"अभी तो तुम्हारे लिये कोई और काम नहीं।"

"मैं होटल के बाहर ही मौजूद हूं। मोना चौधरी के आदेश के बिना नहीं जाऊंगा।"

"जमे रहो। जब मोना चौधरी आयेगी, तुम्हारी बात करा दूंगा।" कहकर मल्होत्रा ने रिसीवर रखा।

महाजन, पारसनाथ और सितारा बैठे हुए थे। वो जानता था कि बशीर बाथरूम में गया है।

"क्या लेंगे आप...चाय-कॉफी?" मल्होत्रा ने पूछा।

"मंगवा ले... ।" महाजन ने कहा।

मल्होत्रा ने इंटरकाम पर चाय-कॉफी और स्नेक्स का आर्डर दिया।

"तुम मुझसे बताओगे कि दिल्ली में क्या हुआ? कैसे तुम्हें और चीफ को बंदी बनाया गया?" मल्होत्रा ने पूछा।

"बेबी को आ लेने दो, सब पता चल जायेगा।" महाजन ने कहा।

"ठीक है।" उसने पारसनाथ को देखा—"ये बशीर के मरने वाला क्या मामला है?"

"तसल्ली रख। पता चल जायेगा।" महाजन ने टोका।

"ये तो बता दो कि तुम मोना चौधरी को बेबी क्यों कहते हो?"

"वो बच्ची है मेरी।" महाजन मुस्कुराया।

"बच्ची?" मल्होत्रा ने आंखें सिकोड़ीं।

"बच्चे कितने भी बड़े हो जायें, बड़ों के सामने बच्चे ही रहते हैं।"

"मैं कुछ समझ नहीं पाया कि तुम... ।"

तभी पारसनाथ उठा और बाथरूम के पास पहुंचकर दरवाजा थपथपाया।

भीतर से कोई जवाब नहीं मिला।

"दरवाजा खोल... ।" पारसनाथ ने जोरों से दरवाजा थपथपाया।

इस बार भी कोई जवाब नहीं।

महाजन और मल्होत्रा की आंखें सिकुड़ीं।

पारसनाथ ने कंधे से दरवाजे पर चोट की। दूसरी चोट में दरवाजे की भीतरी सिटकनी टूट गई।

पारसनाथ ने भीतर प्रवेश किया। बाथरूम खाली मिला।

"किधर है?" पीछे से महाजन आ पहुंचा... ।

"भाग गया... ।" पारसनाथ की निगाह सामने शीशे की खिड़की पर पड़ी। जिसका पल्ला कब्जों से तोड़कर, खिड़की को नीचे रखा हुआ था और उस जगह से बशीर निकल भागा था।

महाजन ने आगे बढ़कर वहां से बाहर झांका।

उस तरफ शाफ्ट थी और वहां कोई भी नजर नहीं आ रहा था।

"भाग गया?" दरवाजे पर खड़ा विजय मल्होत्रा कह उठा।

"हां... ।" पारसनाथ ने पलट कर उसे देखा।

"हमसे गलती हो गई। हमें उससे इस कदर लापरवाह नहीं होना चाहिये था।"

"तो क्या उसके साथ बाथरूम में जाते?" महाजन ने मुंह बना कर कहा।

"बाथरूम में न जाते, परन्तु दरवाजा तो खुला रखवा कर, वहां खड़े रह सकते थे।" विजय मल्होत्रा के चेहरे पर व्याकुलता के भाव थे—"वो...वो शायद जाफर शरीफ ही

वो जो भी था, चला गया था।

वे सब खाली हाथ रह गये थे।

❑❑❑

❑❑❑

दोपहर का वक्त हो रहा था।

आज सर्दी ज्यादा थी। इस वक्त कोहरा हर तरफ ठहर चुका था।

मोना चौधरी टैक्सी द्वारा गुलाम मोहम्मद के घर तक पहुंची थी। टैक्सी कुछ पहले ही छोड़ दी थी। वहां से पैदल ही बंगले तक आई थी। दूर से ही देख लिया था कि गेट के बाहर इतनी सर्दी में भी दो दरबान मुस्तैद नजर आ रहे थे। उस सड़क पर इक्का-दुक्का ही कोई आता-जाता नजर आ रहा था।

वो इस वक्त भी बुर्के में थी।

पैदल चलती वो फाटक के सामने से निकली और बंगले के पीछे वाले कोने की तरफ पहुंचकर ठिठकी। पलट कर देखा, यहां से दरबान नजर नहीं आ रहे थे। दीवार के पास ख़ड़ी होकर उसने बुर्का उतार कर नीचे रखा और आस-पास देखा, कोई नजर नहीं आ रहा था।

अगले ही पल उसने दीवार की तरफ मुंह किया और बांहें ऊंची करके, जोर से उछाल उभरी। उसके हाथों में दीवार का कोना आ गया। तो उसने अपने शरीर को झटका दिया तो बांहें ऊपर दीवार से जा लिपटीं।

खुद भी ऊपर तक आ गई थी। मोना चौधरी ने भीतर झांका।

खूबसूरत छोटा-सा बाग बना दिखा भीतर।

कई पलों तक मोना चौधरी नजरें दौड़ाती रही, कोई न दिखा।

फिर मोना चौधरी दीवार पर चढ़ी और नीचे कूद गई। कोई खास आवाज न उभरी उसके कूदने की। नीचे मिट्टी थी। ठिठकी-सी मोना चौधरी की निगाह हर तरफ घूमी।

सब ठीक था।

अगले ही पल मोना चौधरी बंगले के मुख्य द्वार की तरफ न बढ़कर साइड वाले हिस्से की तरफ बढ़ी। वो भीतर जाने के लिये कोई खुला रास्ता तलाश करना चाहती थी। आगे बढ़ने के साथ उसकी निगाह भी हर तरफ जा रही थी। तभी मोना चौधरी के कदम ठिठक गये।

एक आदमी बाग में पीठ किए, एक क्यारी की सफाई करने बैठा था।

मोना चौधरी कई पलों तक उसे देखती रही। फिर उसकी तरफ ही बढ़ गई। दबे पांव इस तरह उसके पास पहुंची कि जरा भी आहट न उभरी थी और उसे पता न चल सका कि पीछे कोई आ खड़ा हुआ है। वैसे ही खड़ी मोना चौधरी कई पलों तक उसे देखती रही, फिर रिवाल्वर निकाल कर हाथ में ले ली।

शायद तब तक उस व्यक्ति को पीछे किसी के होने का आभास हो गया था।

उसने गर्दन घुमाई।

मोना चौधरी को देखते ही उसका हरकत करता शरीर थम गया।

मोना चौधरी ने उसे पहचाना कि ये वो ही नौकर था, जो कल उन्हें गुलाम मोहम्मद तक ले गया था।

आखिरकार उसकी निगाह मोना चौधरी के हाथ में दबे रिवाल्वर पर जा टिकी। चेहरे पर भय नाच उठा।

"पहचाना मुझे...?" मोना चौधरी का स्वर शांत था।

एकाएक वो उठा और पलटकर मोना चौधरी को देखने लगा।

"कल जब मैं आई तो तुम मुझे गुलाम मोहम्मद तक ले गये थे। मैंने उसे गोली मार दी। लेकिन वो गुलाम मोहम्मद नहीं था।"

उसने सूखे होठों पर जीभ फेरी।

"जवाब दो।" मोना चौधरी ने रिवाल्वर वाला हाथ

हिलाया।

"म...मेरा कोई कसूर नहीं है।" वो घबराये स्वर में कह उठा।

"तो किसका कसूर है?"

वो होंठ हिलाकर रह गया।

"गोली चलाऊं?"

"न...नहीं... ।" उसकी आवाज कांप गई।

"वो कौन था जो मेरे हाथों मारा गया?" मोना चौधरी ने एक-एक शब्द चबाकर पूछा।

"उ...उसूल... ।"

"वो गुलाम मोहम्मद क्यों नहीं था? तुम तो मुझे गुलाम मोहम्मद तक ले गये थे।"

"म...मालिक घर पर नहीं थे... ।"

"तो तुम कह देते कि नहीं है, मैं चली जाती... ।"

"वो...वो जाफर साहब का फोन आया था।"

"किसे?" मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

"बंगले पर। मैंने बात की, जाफर साहब ने कहा कि एक लड़का-लड़की गुलाम मोहम्मद को मिलने बंगले पर आ रहे हैं। उसूल को गुलाम मोहम्मद बना कर, उनसे मिलवा दो। मैंने ऐसा ही किया।"

मोना चौधरी ने गहरी सांस ली।

वो समझ गई कि फोन करने वाला बशीर उर्फ जाफर ही होगा। क्योंकि उन तीनों के अलावा तब और किसी को मालूम नहीं था कि वो और मल्होत्रा, गुलाम मोहम्मद के पास आ रहे हैं। यानि कि विजय मल्होत्रा का कहना ठीक है कि बशीर, बशीर नहीं, जाफर शरीफ है।

"उसूल की लाश के बारे में पुलिस को खबर नहीं दी गई?" मोना चौधरी ने पूछा।

"नहीं। जाफर के आदमी उसे ले गये... ।" वो पूरी तरह घबराया हुआ था।

"गुलाम मोहम्मद कहां है?"

"बंगले पर नहीं है। बेशक देख लो।"

मोना चौधरी ने उसकी आंखों में झांका।

वो सच बोलता लगा।

"कब गये?"

"रात आये ही नहीं। फोन आया था कि अभी कुछ दिन बाद आयेंगे। वैसे वो कश्मीर में नहीं हैं।"

मोना चौधरी समझ गई कि गुलाम मोहम्मद सावधानी के नाते बंगले पर नहीं आ रहा।

"गुलाम मोहम्मद, जाफर शरीफ को कितना जानता है?"

"दोस्त हैं दोनों। दस-पन्द्रह दिन में एक बार जाफर साहब चाय पीने आ ही जाते हैं यहां।"

"तुम्हें गोली मारूं?"

"नहीं, मत मारना...।" वो दोनों हाथ आगे करके कांपते स्वर में कह उठा।

"यानि कि जिन्दा रहना चाहते हो?"

"ह...हां...मुझे मत मारो।"

"तो मेरे सवाल का जवाब दो, तभी तुम जिन्दा रह सकते हो। जाफर शरीफ का ठिकाना कहां है?"

"मैं नौकर हूं। मुझे क्या पता जाफर साहब का ठिकाना कहां है!" वो घबराकर बोला—"जाफर साहब जब भी आते हैं यहां तो उनके आदमी भी आते हैं, परन्तु अपने ठिकाने के बारे में वे मुझे क्यों बतायेंगे?"

"कभी उनके मुंह से सुना हो।"

"नहीं... ।"

"तो तुम मरना चाहोगे।" मोना चौधरी ने सख्त स्वर में कहकर रिवाल्वर वाला हाथ सीधा किया।

"मुझे मत मारो, जब मैं जानता ही नहीं तो तुम्हें कैसे बताऊंगा।" गिड़गिड़ाने के लहजे में वो कह उठा।

मोना चौधरी की निगाह कुछ पल उसके चेहरे पर टिकी रही, फिर रिवाल्वर वाला हाथ नीचे कर लिया। ये देखकर

नौकर के चेहरे पर राहत के भाव उभरे। उसने गहरी-लम्बी सांस ली।

"कोई ऐसा आदमी जो जाफर के ठिकाने के बारे में जानता हो?" मोना चौधरी ने पूछा।

"अब्दुल्ला...वो पहलगांव में चाय की दुकान...।"

"मर गया वो...।"

"म...मर गया?" उसके होठों से अजीब-सा स्वर निकला।

मोना चौधरी ने एक बार फिर हर तरफ निगाह मारी। सब ठीक था।

"अगर तुम्हारी कोई बात झूठी निकली तो मैं वापस आकर तुम्हारी जान ले लूंगी।"

"म...मैंने जो कहा है सच कहा है, कसम से।" वो यकीन दिलाने वाले स्वर में कह उठा।

"ठीक है।" मोना चौधरी रिवाल्वर हिलाते बोली—"तुम दस मिनट तक यहीं खड़े रहोगे। मुंह से आवाज भी नहीं निकालोगे। मैं जा रही हूं। अगर तुमने गनमैन को सचेत करने की कोशिश की तो...मैं...।"

"म...मैं यहीं खड़ा हूं।" वो सूखे होठों पर जीभ फेरता कह उठा।

मोना चौधरी रिवाल्वर जेब में डाले पलटी और दीवार की तरफ बढ़ गई। देखते-ही-देखते उसने दीवार की मुंडेर को उछल कर थामा और उछलकर, दीवार के पार नजरों से ओझल हो गई।

नौकर सहमा-सा वहीं खड़ा रहा।

□□□

□□□

मोना चौधरी टैक्सी द्वारा वापस होटल पहुंची। पहले की तरह बुर्का पहन रखा था। होटल में प्रवेश न करके, उस तरफ जा पहुंची, जिधर बशीर टैक्सी में खड़ा हुआ करता था।

मोना चौधरी को तलाश थी बशीर की।

परन्तु न तो वहां बशीर दिखा, न ही उसकी टैक्सी। जबकि उसे यहीं होना चाहिये था। फिर उसने सोचा कि हो सकता है मल्होत्रा कहीं गया हो और टैक्सी को लेता गया हो।

शाम के साढ़े चार बज गये थे। दिन लगभग ढल-सा गया था। सर्दी की तीव्रता बढ़ती जा रही थी। मौसम खराब हो रहा था। बशीर के वहां न होने की तसल्ली करके मोना चौधरी होटल की तरफ बढ़ गई।

मोना चौधरी जब होटल के कमरे में पहुंची, उसका सामना पारसनाथ, सितारा और महाजन से हुआ। उन्हें इस तरह सामने देखकर वो हैरान रह गई।

□□□

□□□

सबकी सुनी। सब पता चला मोना चौधरी को।

मिस्टर पहाड़िया के बारे में भी और बशीर के बारे में भी।

"हम तो सोच भी नहीं सकते थे कि वो इस तरह बाथरूम के रास्ते भाग जायेगा।" सितारा बोली—"जिस विश्वास के साथ वो हमसे पेश आया तो हमें ये लगा कि कहीं वो बशीर ही न हो। हम ही गलती पर न हों।"

"वो जाफर शरीफ ही था।" विजय मल्होत्रा ने दृढ़ता से कहा।

"जाफर शरीफ खुद क्यों इस तरह मैदान में आयेगा?" महाजन ने कहा।

"ये वो जाने...।"

विजय मल्होत्रा ने मोना चौधरी से पूछा—

"तुम कहां गई थीं, अब तो बता दो।"

"गुलाम मोहम्मद के यहां...।"

"मिला?"

"नहीं, लेकिन नौकर मिला। उसने बताया कि कल हमारे वहां पहुंचने से पहले, जाफर का फोन आया था उसे

कि हम वहां पहुंच रहे हैं, ऐसे नकली गुलाम मोहम्मद को हमारे सामने पेश कर दिया गया।''

''और वो फोन किसने किया?'' मल्होत्रा कह उठा।

''शायद बशीर ने ही। क्योंकि तुम तो हर वक्त मेरे साथ ही रहे थे।''

''अब तो मानती हो ना कि बशीर ही जाफर शरीफ है।''

''अभी यकीन के साथ नहीं कह सकती। लेकिन वो जाफर का आदमी हो सकता है।''

''चलो कुछ तो माना तुमने।'' विजय मल्होत्रा ने गहरी सांस लीं।

मोना चौधरी ने इन्टरकॉम द्वारा रूम सर्विस को कॉफी और स्नैक्स का आर्डर दिया।

''बशीर जो कोई भी है, जाफर शरीफ का ही आदमी है।'' मोना चौधरी बैठते हुए बोली—''वो देख चुका है कि हम कहां पर हैं। ऐसे में उसकी तरफ से हम पर किसी भी तरह का खतरा आ सकता है।''

''ये बात तो तुमने ठीक कही....।'' सितारा बोली।

''मेरी समझ में नहीं आता कि जाफर का आदमी इतने दिनों तुम्हारे साथ क्यों रहा? जबकि तुम्हें खत्म करने के लिये, उसके पास कई मौके थे। वो आसानी से तुम्हें खत्म कर सकता था, लेकिन किया नहीं... ।'' पारसनाथ ने कहा।

''अब ये बात तो जाफर ही जाने कि उसने ऐसा क्यों नहीं किया। अपने आदमी को मेरे साथ रखकर क्या जानना चाहता था? ये तो उसने जान ही लिया कि हम उसका ठिकाना नहीं जानते। इतना जानकर वो निश्चिंत हो गया होगा।'' मोना चौधरी ने कहा।

''जाफर शरीफ इतनी आसानी से निश्चिंत होकर बैठने वाला नहीं हैं।'' विजय मल्होत्रा ने कहा—''वो कुछ करेगा।''

''तुम्हारी बात सही हो सकती है।'' मोना चौधरी ने सिर हिलाया।

तभी खामोश बैठा महाजन कह उठा—

''मिस्टर पहाड़िया को, जाफर शरीफ के यहां से बचाना है। आई.एस.आई. के एजेंटों ने मिस्टर पहाड़िया का अपहरण किया, कश्मीर ले आये। यहां से मिस्टर पहाड़िया को पाकिस्तान की सीमा पर पहुंचाने का काम जाफर शरीफ का है। ये बात मुझे आई.एस.आई. के एजेंटों से ही पता चली है।''

''मिस्टर पहाड़िया के दो एजेंटों की वजह से ही मेरा कश्मीर आना हुआ...। रानी और प्रिया नाम की एजेंट यहां पर जाफर की कैद में हैं। मैं उन्हें बचाने के लिए ही आई और...।''

''प्रिया बच निकली है। वो दिल्ली में है। मैं उससे मिलकर आया हूं।'' महाजन बोला।

''हां। अब बची रानी। जिसके बारे में पक्के तौर पर नहीं पता कि वो कैद में जिन्दा है या उसे मार दिया गया। इतना तो स्पष्ट है कि कश्मीर में जाफर का दबदबा कायम है। तभी तो हमें जाफर के ठिकाने के बारे में नहीं मालूम हो पा रहा। वरना अब तक उस तक पहुंचने का कोई तो रास्ता मिलता।''

तभी दरवाजे पर थपथपाहट पड़ी।

सबकी निगाहें दरवाजे की तरफ उठीं।

मल्होत्रा ने रिवाल्वर निकाली और दरवाजे के पास जा पहुंचा।

''कौन?'' उसने पूछा।

''वेटर सर... ।''

मल्होत्रा ने रिवाल्वर जेब में डालते हुए दरवाजा खोला। बाहर वेटर कॉफी और स्नैक्स की ट्रे लिए खड़ा था।

वेटर सामान भीतर रख कर चला गया।

मल्होत्रा ने दरवाजा बंद किया।

सितारा कॉफी कपों में डालने लगी।

''इस काम को करने में मुझे इसलिए देर हो रही है कि

जाफर का ठिकाना पता नहीं चल रहा।''

''अगर तुम्हें उसका ठिकाना पता चल जाता तो शायद अब तक तुम मारी भी जातीं।'' पारसनाथ बोला।

''वो कैसे?'' मोना चौधरी ने उसे देखा।

''नकली बशीर को भूल रही हो तुम? जो हर वक्त तुम्हारे साथ था। वो जाफर का आदमी था। मेरे ख्याल से उस वक्त वो तुम्हारी जान ले लेता, जब उसे पता चलता कि तुम्हें जाफर के ठिकाने का पता चल गया है।''

मोना चौधरी सिर हिलाकर रह गई।

''लेकिन जाफर ने अपने साथी अब्दुल्ला को क्यों मरने दिया? तब वो सामने ही था।'' मल्होत्रा बोला।

''वो जाफर शरीफ नहीं हो सकता। उसका आदमी था नकली बशीर... ।''

''मैंने उसे आंखों से पहचाना है, वो जाफर ही था।''

''मैं नहीं मानती। क्योंकि मैंने उसकी तस्वीर देखी है।'' मोना चौधरी ने दृढ़ता भरे स्वर में कहा।

बातों के दौरान वे कॉफी पी रहे थे और स्नैक्स का मजा ले रहे थे।

''जो भी था वो...तब उसे अब्दुल्ला को बचाने की चेष्टा करनी चाहिये थी।'' मल्होत्रा ने कहा।

''उसे इतना वक्त ही नहीं मिला कि अब्दुल्ला को बचा पाता।'' मोना चौधरी ने कहा—''तुम्हारे आदमियों ने अचानक ही उन पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं। मेरे ख्याल से तब वो हक्का-बक्का रह गया होगा कि ये क्या हो गया... ।''

कुछ पल उनके बीच चुप्पी रही।

''अब क्या करना है?'' महाजन बोला।

''अब तक तो जाफर शरीफ और भी सतर्क हो गया होगा। वो ये भी पता लगा लेगा कि तुम लोग कौन हो।'' मोना चौधरी ने कहा—''जब तक हम ये नहीं जान लेते कि उसका ठिकाना कहां है, हमें कामयाबी नहीं मिलेगी।''

''कोशिश करेंगे पता लगाने की तो... ।''

''उससे पहले हमें ये होटल छोड़ना पड़ेगा। जाफर अपने आदमियों को यहां भेज सकता है।'' मोना चौधरी ने कहा।

''कॉफी खत्म करो, यहां से हम निकलते हैं।'' पारसनाथ बोला।

''अब तक तो जाफर शरीफ और भी सतर्क हो गया होगा। वो ये भी पता लगा लेगा कि तुम लोग कौन हो।'' मोना चौधरी ने कहा—''जब तक हम ये नहीं जान लेते कि उसका ठिकाना कहां है, हमें कामयाबी नहीं मिलेगी।''

''कोशिश करेंगे पता लगाने की... ।''

''उससे पहले हमें ये होटल छोड़ना पड़ेगा। जाफर अपने आदमियों को यहां भेज सकता है।'' मोना चौधरी ने कहा।

''कॉफी खत्म करो, यहां से हम निकलते हैं।'' पारसनाथ बोला।

महाजन उठते हुए बोला।

''वो फाइल मेरे पास है जिसके लिये जाफर परेशान हो रहा है।''

''तुम्हारे पास?''

''हां, दिल्ली में मुझे प्रिया और सुमेर ने बता दिया था कि फाइल कश्मीर में कहां पर रखी है। वहां से मैंने ले ली।''

''गुड। उस फाइल में जाफर शरीफ के देश भर में फैले एजेंटों की लिस्ट है, अब पुलिस उन सब जगहों पर छापे मारेगी। जाफर का सारा नेटवर्क तबाह हो जायेगा। उसके एजेंट या तो मारे जायेंगे या पकड़े जायेंगे।'' मोना चौधरी ने कहा।

कुछ मिनट में ही वो सब चलने को तैयार थे।

कमरे से बाहर निकले तो फोन की बेल बज उठी। मोना चौधरी उस वक्त सबसे पीछे, कमरे से बाहर निकल रही थी कि फोन बजते ही ठिठक गई। फिर पलटकर फोन के पास पहुंची। रिसीवर उठाया।

''हैलो... ।''

"मोना चौधरी?"

"हां... ।" मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

"मैं रफीक बोल रहा हूं... ।"

मोना चौधरी रफीक को तो भूल ही गई थी, जिसे बशीर पर नजर रखने को लगाया था।

"कहो... ।" मोना चौधरी के होठों से निकला।

"मैं नकली बशीर के पीछे गया था...वो... ।"

"बशीर के पीछे?" मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं—"वो तुम्हें कहां मिला?"

"जब कुछ लोग उसे होटल के भीतर ले गये थे तो मैं बाहर ही रहा। क्योंकि तुमसे बात नहीं हो पाई थी।"

"समझी... ।"

"तो पन्द्रह मिनट बाद मैंने बशीर को तेजी से बाहर निकलते देखा। वो सीधा टैक्सी में पहुंचा और टैक्सी को दौड़ा ले गया। मेरे पास कार थी, मैंने सावधानी से उसका पीछा किया।"

मोना चौधरी की आंखें चमक उठीं।

"पता किया वो कहां गया?"

"हां। यहां से वो सीधा इलायची बाग गया।"

"इलायची बाग?"

"जगह का नाम है। आधे घंटे की दूरी पर है।"

"हूं, वहां किधर गया?"

"उधर सेबों के बागों से सेब तोड़कर लाये जाते हैं, ट्रकों में भर कर और उन्हें पेटियों में भर कर, देश के दूसरे शहरों में भेजा जाता है। वो बहुत बड़ा गोदाम जैसी जगह है। वहीं गया था नकली बशीर। टैक्सी उसने गोदाम से बाहर छोड़ दी थी। उसके चलने का ढंग बता रहा था कि यहां वो आता-जाता है। उसे किसी ने रोका-टोका नहीं। दो-चार ने सलाम अवश्य मारा।"

मोना चौधरी के चेहरे पर सोच के भाव नजर आ रहे थे।

कुछ पल लाईन पर चुप्पी रही।

"हैलो... ।" रफीक की आवाज आई।

"सुन रही हूं।" मोना चौधरी ने होंठ खोले—"उस गोदाम का कोई नाम है?"

"आजाद एपल... ।"

"तुम इस वक्त कहां हो?"

"होटल के बाहर... ।"

"हम बाहर आ रहे हैं...तुम हमें पहचान लोगे?"

"हां... ।"

"तो हमारे पीछे आना। रास्ते में हम मिलेंगे।"

"ठीक है।"

मोना चौधरी ने रिसीवर रखा, तभी दरवाजे पर महाजन दिखा।

"चलो बेबी, क्या हो रहा है?"

"चलो... ।" मोना चौधरी दरवाजे की तरफ बढ़ गई। दोनों बाहर निकल कर आगे बढ़े।

"फोन पर क्या बात हो रही थी?" महाजन ने पूछा।

मोना चौधरी ने कम शब्दों में सारी बात बताई।

"ओह... ।" महाजन के होंठ सिकुड़ गये—"वो जगह यकीनन जाफर शरीफ का ठिकाना होगी।"

□□□

□□□

कुछ आगे जाकर, पीछे से आता रफीक भी मिल गया।

वो पैंतीस बरस का कश्मीरी व्यक्ति था। चेहरे पर दाढ़ी। सिर पर कश्मीरी टोपी पहन रखी थी। दिन ढलने के साथ-साथ सर्दी बढ़ती जा रही थी। शाम के चार ही बजे थे और लोगों का नजर आना बंद हो गया था। वो ही लोग इस वक्त आते-जाते दिख रहे थे, जिन्हें शायद जरूरी काम था।

सबको पता चल गया था कि रफीक ने बशीर का पीछा किया है और मालूम हो गया है कि वो कहां गया है। ये एक अच्छी खबर थी सबके लिये।

"बशीर का सीधा वहां जाना, जाहिर करता है कि वो उसके लिये खास जगह है।" मोना चौधरी बोली।

"वहां उसका कोई बड़ा हो सकता है जिसे वो रिपोर्ट देने गया हो।" पारसनाथ बोला।

"वो किसे रिपोर्ट देगा?" मल्होत्रा झल्लाया—"वो तो खुद ही जाफर है।"

"अगर वो जाफर ही है तो वो उसका अहम ठिकाना होगा, जहां वो पहुंचा।" महाजन ने कहा।

मोना चौधरी ने रफीक से पूछा—

"तुम्हारा क्या ख्याल है कि वो जगह जाफर की कितनी अहमियत वाली होगी?"

"अगर वो जाफर का ठिकाना है तो, वो उसका खास ठिकाना हो सकता है।" रफीक ने कहा।

"कैसे?"

"क्योंकि इलायची बाग कश्मीर में बहुत शांत इलाका माना जाता है। वहां सेबों के और भी बड़े-बड़े गोदाम हैं, जहां सेब लाये जाते हैं और उन्हें पेटियों में पैक करके, दूसरे शहरों में भेजा जाता है। आज तक वहां आतंकियों से जुड़ी कोई वारदात नहीं हुई। वहां पर जाफर का लिंक होना मायने रखता है।" रफीक ने कहा—"हो सकता है वो जगह जाफर का ही कोई मुनासिब ठिकाना हो।"

सबकी निगाह आपस में मिली।

"इससे पहले कभी जाफर का नाम उस इलाके से जुड़ा है?"

"नहीं। लेकिन अब सोचता हूं कि वहां जाफर का मुनासिब ठिकाना हो सकता है।" रफीक ने गहरी सांस ली।

"क्या हर्ज है अगर आजाद एपल के गोदाम को देख लिया जाये।" महाजन ने मोना चौधरी से कहा।

"कोई हर्ज नहीं।"

"अगर वहां जाफर शरीफ का ठिकाना हुआ तो खतरा हो सकता है।" पारसनाथ ने मोना चौधरी को देखा।

"रफीक!" मोना चौधरी बोली—"सेबों का पैक करने का काम वहां कब तक चलता होगा?"

"अगर सेब पड़े हैं तो उन्हें पैक करने का काम रात भर भी चल सकता है।" रफीक बोला—"ये तो इस बात पर निर्भर है कि उनके पास अर्जेंट माल भेजने के आर्डर कितने हैं।"

"मेरे ख्याल में... ।" सितारा कह उठी—"हमें उस जगह पर धावा बोलना चाहिये।"

"लेकिन छिपकर... ।" मोना चौधरी बोली।

"ये काम आज रात ही हो जाये तो ठीक रहेगा।" महाजन ने कहा।

"सर्दी बहुत है। रात दस बजे हम हरकत में आयें तो ठीक रहेगा। ज्यादा लेट हरकत करने का कोई फायदा नहीं।" मोना चौधरी ने सोच भरे स्वर में कहा—"हो सकता है वहां बशीर भी हमें मिल जाये।"

"बेहतर होगा कि पहले ही गोदाम की स्थिति दिन में जान जायें।" मल्होत्रा ने कहा—"इससे हमें ये आसानी होगी कि रात को किस प्रकार वहां प्रवेश करना है, इस बात को तय कर लेंगे।"

उनकी निगाह एक-दूसरे पर गई।

"ये बेहतर होगा।" पारसनाथ ने कहा।

"मैं रफीक के साथ जाकर वहां के बारे में पता करता हूं। आजाद एपल गोदाम की स्थिति नोट करता हूं।"

रफीक ने सिर हिला दिया।

"उसके बाद कहां मिलोगे?" मोना चौधरी ने पूछा।

"जहां तुम कहो... ।"

पारसनाथ ने अपने होटल के बारे में बताकर कहा—

"इस होटल के रूम नम्बर बारह में हम मिलेंगे।"

विजय मल्होत्रा को रफीक अपनी कार में वहां से ले गया।

पारसनाथ, सितारा और मोना चौधरी टैक्सी से

पारसनाथ के होटल रवाना हो गये।

❑❑❑

❑❑❑

आठ बजे विजय मल्होत्रा और रफीक लौटे।

तब तक सर्दी बहुत बढ़ गई थी। पारसनाथ, महाजन, सितारा और मोना चोधरी कमरे में बंद थे और उन्हीं दोनों की वापसी का इंतजार कर रहे थे।

मल्होत्रा बैठते हुए कह उठा—

"वो गोदाम हजार गज के करीब की जगह में बना हुआ है। छत लोहे की चादरों...और सीमेंट की चादरों से इस प्रकार बनी हुई है कि सर्द हवा भीतर न घुस सके। तीन रास्ते हैं उसमें प्रवेश होने के। एक सामने की तरफ से रास्ता है। दूसरा पीछे की तरफ से और एक रास्ता बायीं तरफ से है। जिधर शेड के नीचे चार-पांच पक्के कमरे बन हुए हैं। कमरे की तरफ वाले रास्ते को, वहां के मजदूर लोग इस्तेमाल नहीं करते।"

"मतलब कि बायीं तरफ जो कमरे बने हुए हैं, उस रास्ते को कमरे वाले ही इस्तेमाल करते हैं। वहां के मालिक वगैहरा।" रफीक बोला—"जब नकली बशीर गोदाम के भीतर गया था तो सामने वाले रास्ते से गया था। वहां से वो कमरों में चला गया होगा।"

"उधर तीन बड़ी-बड़ी खिड़कियां हैं, जो शायद सर्दी की वजह से बंद रखी हुई हैं। धूप निकलने पर ही उन खिड़कियों को खोलते होंगे।" विजय मल्होत्रा बोला—"हमें गोदाम के भीतर झांकने का मौका मिला। वहां थोड़े से सेब ही पेटियों में पैक करने को बचे थे। अधिकतर पेटियां तैयार हैं जाने को। वहां हमें सिर्फ तीन-चार लोग ही पैकिंग करते दिखे। शायद बाकी के लोग चले गये होंगे। क्योंकि पैक करने को सेब तो लगभग खत्म हो गये हैं वहां।"

"इसका मतलब, वो जो तीन-चार लोग हैं, वो भी जा सकते हैं वहां से।" पारसनाथ बोला—"या फिर वो रात वहीं

पर बिता सकते हैं। कुल मिलाकर वहां तीन-चार लोगों से ज्यादा लोग नहीं हैं।"

"ठीक समझे...।"

"और कमरों की तरफ?"

"वहां कोई न दिखा।"

"भीतर लोग हो सकते हैं।"

"हैं तो, ज्यादा लोग नहीं होंगे। क्योंकि वहां किसी तरह का शोर-शराबा नहीं था।"

खामोश बैठी मोना चौधरी कह उठी—

"हम आज रात वहां चलेंगे। एक घंटे तक हम यहां से रवाना होंगे।"

"बशीर क्या वहीं होगा?" मल्होत्रा ने पूछा।

"वो नहीं होगा तो उसके साथी होंगे कमरों में।" मोना चौधरी ने सख्त स्वर में कहा—"सेबों के उस गोदाम को देखना, इसलिये जरूरी हो गया है कि हमारे पास करने को कोई दूसरा काम नहीं। नकली बशीर यहां से सीधा वहीं गया है तो वो जगह यकीनन जाफर के लिये खास होगी।"

तभी सितारा ने पारसनाथ से कहा—

"मैं भी साथ चलूंगी।"

"नहीं। तुम्हारा वहां जाना ठीक नहीं होगा। कैसा भी खतरा आ सकता है। तुम मुकाबला नहीं कर सकोगी।"

"क्यों? मैं तो...।"

पारसनाथ ने सितारा को घूरा तो सितारा मुस्कुरा कर कह उठी—

"नाराज क्यों होता है परसू, तू नहीं चाहता तो नहीं जाऊंगी...होटल में ही रहूंगी।"

"हमारे पास वक्त कम है। डिनर का आर्डर दो।" पारसनाथ ने कहा।

सितारा डिनर का आर्डर देने के लिये इन्टरकाम के पास पहुंच गई।

मोना चौधरी ने रफीक से कहा—

"क्या तुम हमारे साथ रहना पसन्द करोगे?"

"जैसा तुम कहो... ।" रफीक ने गम्भीर स्वर में कहा।

"हमारे साथ चलने में तुम्हें नुकसान क्या है?"

"मैं स्थानीय हूं। उनकी नजरों में आ जाऊंगा। तुम लोग तो काम करके यहां से निकल जाओगे। वे मुझे न छोड़ेंगे।"

"फिर तो तुम्हारा हमारे साथ जाना ठीक न होगा। तुम अपने घर जाओ। सुबह हमें फोन कर लेना।"

रफीक चला गया।

विजय मल्होत्रा ने मोना चौधरी से कहा—

"मेरे पास कश्मीर के ऐसे एजेंट हैं, जो हथियारों के साथ हरकत में आ सकते हैं। कहो तो... ।"

"हम चार बहुत हैं। हथियार भी हमारे पास हैं। जरूरत पड़ी तो इस बारे में सोचेंगे।"

❑❑❑

❑❑❑

रात के दस बज रहे थे।

हजार गज में फैला गोदाम गहरी धुंध में घिरा हुआ था। कोहरे की वजह से वो स्पष्ट नजर न आ रहा था। काला साया-सा लग रहा था। आकाश में भी बादलों का जमघट था। वहां भी कोहरा था। ओस गिर रही थी। जिसकी वजह से सड़कें गीली-काली होकर चमक रही थीं। घास और पेड़-पौधे भी पानी से नहाये लग रहे थे। गुम-सा वातावरण हर तरफ छाया हुआ था।

शायद ही कभी-कभार इक्का-दुक्का वाहन जाता नजर आ जाता था।

चंद पल पहले ही वे गोदाम के बाहर पहुंचे थे।

गोदाम के भीतर, दो-तीन बल्ब जलते नजर आ रहे थे। बुरे मौसम की वजह से उनकी रोशनी ज्यादा न फैल रही थी। गोदाम के बाहर कोई भी नजर न आ रहा था।

उन्होंने खामोशी से गोदाम का मुख्य दरवाजा चैक किया।

वो भीतर से बंद था।

दरवाजा लोहे की चादरों को जड़ कर बनाया गया था कि भीतर सर्दी न पहुंचे। परन्तु फिर भी लोहे की चादरों में इतनी जगह बाकी थी कि आंख लगाकर भीतर देखा जा सके।

मोना चौधरी ने एक जगह आंख लगाकर भीतर देखा।

भीतर मध्यम-सी रोशनी में पेटियों का ढेर दिखा, परन्तु कोई आदमी न दिखा।

पन्द्रह मिनट में उन्होंने पूरे गोदाम का चक्कर लगा लिया। परन्तु ऐसा कोई रास्ता न दिखा, जिससे कि भीतर जाया जा सकता। हर रास्ता-खिड़की भीतर से अच्छी तरह बंद था।

"भीतर कैसे घुसा जाये?" विजय मल्होत्रा कह उठा।

"चादरें, कीलों के दम पर रुकी हुई हैं। हम लोहे की चादरों को हटाकर... ।" महाजन ने कहना चाहा।

"नहीं।" मोना चौधरी ने टोका—"इससे शोर हो सकता है। भीतर के लोग सतर्क हो सकते हैं। जबकि हमें चुपचाप भीतर जाना चाहिये, तभी हम वहां के हालातों से वाकिफ हो सकते हैं।"

"चुपचाप वाला कोई रास्ता नहीं है।" पारसनाथ ने कहा।

"हमें एक बार फिर हर तरफ... ।" मोना चौधरी के शब्द अधूरे रह गये।

कुछ दूर उन्हें किसी वाहन की हैडलाइटें दिखीं। जो कि इसी तरफ रोशनी फेंक रही थीं और वाहन इधर, गोदाम की तरफ ही आ रहा था।

"ओट ले लो... ।"

अगले ही पल वे चारों पास ही मुनासिब ओट में जा छिपे।

"ये शायद ट्रक है।" पारसनाथ ने कहा।

सबकी नज़रें उस पर टिकी रहीं।

वो पास आया। ट्रक ही था।

मुख्य दरवाजे पर पहुंच कर ट्रक रुका और उसने हार्न बजाया।

"ट्रक गोदाम में जायेगा।" मोना चौधरी ने कहा और दबे पांव ट्रक के पास पहुंची। उसके पीछे वाले हिस्से में झांका।

भीतर से ट्रक खाली था।

मोना चौधरी ने तीनों को पास आने का इशारा किया और बेआवाज-सी ट्रक में चढ़ गई।

ट्रक ने पुनः हार्न बजाया।

बाकी तीनों भी सावधानी से ट्रक के भीतर चढ़े और उसके ठण्डे फर्श पर लेट गये। तभी फाटकनुमा दरवाजा खुलने का स्वर सुनाई दिया। शायद दरवाजा पूरा खुल गया था। स्टार्ट ट्रक पुनः आगे बढ़ा और गोदाम के भीतर प्रवेश कर गया। फिर कुछ आगे जाकर ठहर गया।

वे चारों दम साधे ट्रक के ठण्डे फ़र्श पर लेटे रहे।

ट्रक का इंजन बंद होने और दरवाजा खोलकर बाहर कूदने की आवाज सुनाई दी।

"ट्रक छोड़ जा रहा हूं।" ये ट्रक ड्राइवर की आवाज थी—"कब तक पेटियां ट्रक में लोड कर दोगे?"

"आज रात काम नहीं होगा। कल सुबह लेबर आयेगी। तुम दोपहर को एक बजे आना, ट्रक तैयार मिलेगा।"

"ठीक है। एक बजे से देर मत करना। दिल्ली ले जाना है माल को। दिन में निकलना ठीक रहेगा।"

फिर उस व्यक्ति के गोदाम से बाहर जाने और फाटक बंद किए जाने की आवाजें आईं। उसके बाद फाटक बंद करने वाले के कदमों की आवाजें गूंजती रहीं, फिर शान्ति छा गई।

वे चारों ट्रक के ठण्डे फर्श पर सांस रोके पड़े रहे।

पांच मिनट बीत गये।

कोई आहट न उभरी।

सबसे पहले मोना चौधरी बे-आवाज-सी दबे पांव ट्रक के पीछे वाले रास्ते पर पहुंची और बाहर झांका। सारा गोदाम वीरान लगा। अगले ही पल मोना चौधरी ट्रक का पीछे का पल्ला पकड़कर बाहर को लटकी और नीचे आ गई। नजरें हर तरफ घूमने लगीं।

दो बल्ब गोदाम के बीच लटके जल रहे थे। एक तरफ सेबों की भरी पेटियां लगी हुई थीं। दूसरी तरफ खाली पेटियों का ढेर था। सेबों की महक हर तरफ फैली हुई थी।

महाजन, पारसनाथ और विजय मल्होत्रा भी ट्रक से नीचे आ गये थे।

"कोई नहीं है?" पारसनाथ बोला।

"इधर तो कोई नहीं है।" मोना चौधरी ने कहा।

"वो देख...। मामा खड़ा है।" विजय मल्होत्रा ने पीछे देखते हुए कहा।

सबकी निगाह उस तरफ घूमी।

वहां पचास बरस का एक आदमी खड़ा हक्का-बक्का-सा उसे देख रहा था।

मोना चौधरी ने फौरन रिवाल्वर निकाली और बांह उसकी तरफ उठा दी। उसके चेहरे पर ढेर सारी घबराहट दिखी। रिवाल्वर ताने मोना चौधरी आगे बढ़ी।

"हिलना मत...। बोलना मत...।"

वो कहां हिलने-बोलने वाला था।

पास पहुंचकर मोना चौधरी ने उस व्यक्ति को धक्का दिया। वो नीचे गिरा। मोना चौधरी उसकी छाती पर बैठी और रिवाल्वर की नाल उसके गले पर रख दी।

"मुझे... मत मारना...।" वो कांपते स्वर में कह उठा।

"कितने लोग हैं यहां?" मोना चौधरी ने दांत भींचकर पूछा।

"म... मैं। उधर कमरे में मैनेजर साहब हैं।" उसने कहते हुए सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"शाम को चार बजे एक आदमी इधर आया था।"

मोना चौधरी ने उसका हुलिया बताया।

"क...कौन है? मैं...नहीं जानता। तुम किसकी बात कर रही हो?"

"कितने आदमी हैं कमरे में?"

"एक ही। मैनेजर साहब...।"

मोना चौधरी ने रिवाल्वर की नाल की चोट उसकी कनपटी पर की। उसके होठों से छोटी-सी कराह निकली और वो बेहोश होता चला गया। मोना चौधरी उसे छोड़कर उठी और गोदाम के कोने में बने कमरे की तरफ बढ़ गई। पारसनाथ मोना चौधरी के साथ बढ़ता कह उठा—

"तुम दोनों बाहर नजर रखो...।"

महाजन और विजय मल्होत्रा वहीं ठिठक गये।

पूरे गोदाम में वीरानी छाई हुई थी। एक तरफ आधे ट्रक जितना सेबों का ढेर पड़ा था। मल्होत्रा फौरन वहां पहुंचा और एक सेब उठा लाया। खाता हुआ बोला—

"कश्मीरी सेब का स्वाद ही सबसे अलग है।"

महाजन की निगाह हर तरफ घूम रही थी।

❑❑❑

❑❑❑

मोना चौधरी और पारसनाथ उन कमरों के सामने पहुंचकर ठिठके। दोनों की निगाहें मिलीं। सामने का दरवाजा खुला हुआ था। वे भीतर प्रवेश कर गये।

ये कमरा खाली था। कमरे में लकड़ी की एक टेबल के अलावा चार कुर्सियां पड़ी थीं। एक तरफ लकड़ी की अलमारी पड़ी थी। टेबल पर दो-चार कागज बिखरे नजर आ रहे थे।

तभी वे चौंके।

साथ वाले कमरे में आहट मिली थी।

रिवाल्वर थामे मोना चौधरी दबे पांव आगे बढ़ी। दूसरे कमरे में झांका।

वहां एक आदमी गर्म कपड़ों में लिपटा बैठा था। पास

ही बोतल-गिलास और प्लेट में मुर्गा भुना हुआ पड़ा था। बोतल आधी खाली हो चुकी थी। चेहरा नशे से भरा था।

मोना चौधरी ने भीतर प्रवेश किया और उसके सामने जा खड़ी हुई।

उसकी आंखें फैल गईं, मोना चौधरी और रिवाल्वर को देखकर। वो उठने लगा।

"बैठा रह...।" मोना चौधरी गुर्राई।

वो वैसे ही बैठा रह गया।

पारसनाथ बाकी के दो कमरों का फेरा लगाकर वापस आ गया।

वहां उसके अलावा कोई न था।

वो अभी भी घबराया-सा मोना चौधरी को देख रहा था।

"नाम क्या है तेरा?" मोना चौधरी दांत भींचे बोली।

"द...दीनू...।"

"यहां क्या कर रहा है?"

"पी...पी रहा हूं।"

"किस हैसियत से यहां बैठा है?"

"म...मैनेजर हूं गोदाम का। त...तुम दोनों कौन हो और भीतर कैसे आ...।"

"मेरी सुन...।" मोना चौधरी ने गुर्राहट भरे लहजे में टोका।

वो मोना चौधरी को देखता रहा।

"शाम साढ़े चार के आस-पास एक आदमी यहां आया था।" मोना चौधरी ने बशीर का हुलिया बताया।

अगले ही पल मोना चौधरी ने महसूस किया कि जैसे वो चौंका हो।

"मुझे ये आदमी चाहिये...कहां है ये?"

"यहां तो कई आते हैं...कई जाते हैं, मुझे क्या पता...।"

"वो आने-जाने वालों में से नहीं था।" दांत भींचे मोना चौधरी आगे बढ़ी और रिवाल्वर की नाल उसकी छाती पर

रख दी। भय से उसकी आंखें फैल गई—"मरना चाहता है, मारूं गोली?"

"न...हीं। मत मारना।"

"तो बता उस आदमी के बारे में...मुझे वो चाहिये।"

उसने सूखे होठों पर जीभ फेरी।

"गिलास उठा और पी जा... ।"

दीनू ने गिलास उठाया और होठों से लगाकर खाली कर दिया।

"अब ठीक है।" मोना चौधरी कहर भरे स्वर में बोली—"मरने में ज्यादा तकलीफ नहीं होगी... ।"

"क्या...?" उसने घबराहट में उठना चाहा।

"बैठा रह... ।"

"तुम मुझे मारना मत... ।"

"उस आदमी के बारे में बता...नहीं मारूंगी... ।"

अभी खाली किए गिलास की वजह से उसका दिमाग घूम गया था। चेहरा और धधक उठा था।

"नीचे है।" उसने सिर आगे किया और मोना चौधरी से फुसफुसा कर बोला।

दो पल के लिये तो मोना चौधरी भी न समझ पाई कि वो क्या कहना चाहता है।

"नीचे?" मोना चौधरी की आंखें सिकुड़ीं।

"हां... ।"

"किधर नीचे...तेरी कुर्सी के नीचे।"

"धत्! तू बच्ची है। नहीं समझेगी। जमीन के नीचे। उधर से रास्ता है।"

मोना चौधरी के दांत भिंचते चले गये।

पारसनाथ भी सम्भल गया।

"नीचे जाने का कोई खुफिया रास्ता है?"

"हां, ऊपर वाले कमरे से नीचे जाया जाता है।" उसने पुनः फुसफुसा कर कहा।

"एक और गिलास बना और चढ़ा जा।" मोना चौधरी ने कहा।

उसने पुनः गिलास बनाया और चढ़ा गया।

मोना चौधरी और पारसनाथ की नजरें मिलीं।

वो मुर्गे का टुकड़ा उठाकर खाने लगा। नशे में पूरी तरह टुन्न था वो।

"नीचे कितने लोग हैं?" मोना चौधरी ने पूछा।

"दस-बारह तो होंगे ही। तुम नीचे मत जाना।"

"क्यों?"

"वो सब खतरनाक हैं। मार देंगे तुम्हें। पहले ही तुम जैसी एक छोकरी को कमरे में बन्द रखा हुआ है।"

"नाम क्या है उसका?"

"रानी। खाना-पीना उसे मैं ही देता हूं।"

मोना चौधरी की आंखें चमक उठीं।

"एक और बात बताऊं?" दीनू ने सिर आगे करके कहा।

"बता।"

"तुम जिसे पूछ रही हो, वो जाफर शरीफ है। बहुत खतरनाक है वो। कश्मीर में उसके कई ठिकाने हैं। ये भी तो उसका ही ठिकाना है। मुझे खाने-पीने को खूब मिलता है। देख ही रहे हो...बोतल...मुर्गा। नोट भी देता है। सेबों का काम मैं देखता हूं और नीचे आने-जाने वालों पर नजर रखता हूं। मजे हैं यहां।"

"जाफर शरीफ इस वक्त नीचे है?"

"हां।"

"रास्ता बता नीचे का।"

"चलो... ।" वो उठने को हुआ, लेकिन नशे की वजह से पुनः कुर्सी पर बैठ गया।

पारसनाथ बाहर निकला और महाजन व मल्होत्रा को बुला लाया।

तब तक दीनू खड़ा हो गया था।

"आओ... मेरे पीछे आओ।" कहते हुए वो लड़खड़ाता-सा भीतरी कमरे की तरफ बढ़ा।

मोना चौधरी उसके साथ बढ़ती अपने साथियों से बोली—

"नीचे कोई गुप्त जगह है। जाफर का ठिकाना है और इस वक्त जाफर मौजूद है। मैं जिस एजेन्ट रानी के लिये यहां आई हूं, वो भी इसी जगह पर कैद है।"

"मिस्टर पहाड़िया के बारे में कोई खबर नहीं?" महाजन ने पूछा।

"नहीं, कोई खबर... ।"

तभी दीनू पलटकर बोला—

"पहाड़...पहाड़िया... ।" उसने हाथ हिलाया—"मैंने ये नाम दिन में सुना था। ये कहीं कैद है और आज रात इसे...इसे कहीं भेजा...ह...हां...पाकिस्तान भेजा जा रहा है।"

"कहां मिलेंगे ये?" महाजन ने जल्दी से पूछा।

"पता नहीं। जो सुना...बता दिया... ।"

नशे में दीनू बिना पूछे सब बताये जा रहा था।

वो उन्हें चौथे कमरे में ले गये।

उस कमरे में फर्श पर कारपेट बिछा था। बैड था। कुर्सियां टेबल थे। पूरी तरह सजा हुआ कमरा था। दीनू कोने में पहुंचा और एक तरफ से कालीन को पकड़कर उलट दिया।

काफी बड़ा हिस्सा कालीन का हट गया था।

नीचे लकड़ी का फर्श दिखा।

"इसे हटाओ। नीचे जाने के लिये सीढ़ियां हैं। जाओ और जाफर से मिल लो। जाफर को बता मत देना कि मैंने तुम्हें रास्ता बताया है। बहुत खतरनाक है वो। गुस्से में मुझे मार देगा... ।"

"तू मेरे साथ चल... ।" पारसनाथ ने उसकी बांह पकड़ी।

"किधर... ?"

"बोतल के पास। वहां मुर्गा भी है। तू उसे निपटा, हम अभी आते हैं।"

"ठीक है।"

पारसनाथ उसे उसी कमरे में छोड़कर वापस आ गया।

मोना चौधरी सबको देखती धीमे स्वर में कह उठी—

"नीचे जाफर शरीफ भी है और उसके दस-बारह आदमी भी। हम उन पर काबू पा सकते हैं और नहीं भी। हम नहीं जानते नीचे वो हमसे बचकर इस रास्ते से भाग भी सकते हैं। मल्होत्रा, तुम हमारे साथ नीचे नहीं जाओगे। यहीं रहोगे।"

विजय मल्होत्रा ने गहरी सांस ली।

"अगर कोई यहां से भागता दिखे तो उसे शूट कर देना।" मोना चौधरी ने कहा।

विजय मल्होत्रा ने सिर हिलाया।

तभी पारसनाथ ने उन फट्टों को हटाया तो नीचे जाने के लिये सीढ़ियां दिखीं। वे तीनों बेआवाज सीढ़ियों से नीचे उतरते चले गये।

❑❑❑
❑❑❑

नीचे का कमरा ऊपर के कमरे जैसा ही था।

यहां सोफा चेयर, कारपेट वगैरह हर चीज थी। खाली था कमरा। परन्तु दूसरे कमरों से मध्यम से शोर की आवाजें आ रही थीं। मोना चौधरी के होंठ भिंच चुके थे। रिवाल्वर थामे वो दबे पांव आगे बढ़ी और सामने नजर आते दरवाजे के पास खड़े होकर भीतर झांका।

वहां चार आदमी बोतल खोले बैठे थे।

पी रहे थे। हंस रहे थे। बातें कर रहे थे।

तभी एक की निगाह मोना चौधरी पर पड़ी तो वो हक्का-बक्का रह गया। इससे पहले कि वो कुछ कह पाता, मोना चौधरी रिवाल्वर थामे तेजी से भीतर प्रवेश कर गई।

"खबरदार जो किसी ने हिलने की चेष्टा की।"

वो चारों आदमी ठगे से बैठे रह गये।

दो पलों के लिये उन्हें ये भी समझ में न आया कि मामला क्या है?

धीरे-धीरे वे हालातों से वाकिफ होने लगे।

"कवर करो इन्हें।" मोना चौधरी ने कहा और सामने नजर आते दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

महाजन और पारसनाथ ने अपनी रिवाल्वरें उन पर तान दीं।

मोना चौधरी ने उस कमरे में झांका।

तभी कानों को फाड़ देने वाला धमाका हुआ और अगर मोना चौधरी फुर्ती से सिर पीछे न कर लेती तो गोली ने उसके सिर में से रास्ता बना लेना था।

मोना चौधरी ने झलक पा ली थी कि भीतर बशीर और दो आदमी हैं।

"हमसे मुकाबला क ने की कोशिश न करो।" मोना चौधरी ने कठोर स्वर में कहा—"ये जगह पुलिस ने हर तरफ से घेर ली है। अब कोई भी तुम लोगों को बचा नहीं सकता। मरना चाहते हो तो गोलियां चलाते रहो।"

मोना चौधरी की आवाज के साथ ही वहां चुप्पी उभर आई।

"बशीर... ।" मोना चौधरी ने कहा—"मैं जानती हूं तुम बशीर नहीं हो। फिर भी तुम्हें इस नाम से पुकार रही हूं। रिवाल्वर फेंक कर हाथ ऊपर करो और बाहर आ जाओ। मुकाबले का कोई फायदा नहीं।"

कुछ चुप्पी के बाद बशीर की आवाज आई—

"तुम्हें यहां आया पाकर हैरानी हुई मोना चौधरी... ।"

"हैरान होने की कोई जरूरत नहीं। तुम क्या समझते हो कि तुम ही चालाक हो? शाम को तुम्हारा पीछा करके ही हमने इस जगह के बारे में जाना। क्या तुम लोग रिवाल्वर फेंककर हमारे सामने आ रहे हो?"

आवाज नहीं आई।

"सोच लो। ये जगह पुलिस के घेरे में है।"

"तुम हमें मार दोगे?"

"नहीं... पुलिस तुम सबको गिरफ्तार करेगी। मुकाबला किया तो मारे जाओगे।" मोना चौधरी ने सख्त स्वर में कहा।

महाजन व पारसनाथ जिन पर रिवाल्वर ताने खड़े थे, वो कह उठे—

"हम हाथ उठाते हैं।"

पारसनाथ ने महाजन से कहा।

"इनके हथियार जब्त करो... ।"

महाजन आगे बढ़कर सावधानी से उनकी तलाशी लेने लगा।

मोना चौधरी का पूरा ध्यान कमरे के भीतर की तरफ था।

"क्या तुम मुकाबले के लिये तैयार हो बशीर... मैं गोलियां... ।"

"ठहरो... ।" बशीर की आवाज आई—"गोली मत चलाना। हम हाथ उठा रहे हैं।"

"जल्दी सामने आओ... ।"

फिर बशीर और उसके साथ के दोनों आदमी हाथ उठाये आते दिखे।

मोना चौधरी दरवाजे से हट गई।

वे एक-एक करके इस कमरे में आ गये।

बशीर गम्भीर निगाहों से मोना चौधरी को देख रहा था।

"महाजन! तलाशी लो इनकी।"

महाजन ने तलाशी में उनसे रिवाल्वरें निकालीं और सावधानी से पीछे खड़ा हो गया।

"नीचे बैठ जाओ। सब... जल्दी... ।"

सातों के सातों नीचे बैठ गये।

मोना चौधरी उन्हें वहीं छोड़कर रिवाल्वर थामे सावधानी से बाकी के दोनों कमरों में फिरी। एक कमरे में उसे रानी

मिली, जो कि बंधी पड़ी थी। वो कमजोर लग रही थी। और कोई न मिला।

मोना चौधरी फुर्ती के साथ रानी के बंधन खोलने लगी। बंधन खुलते ही रानी कह उठी—

"कौन हो तुम...?"

"मोना चौधरी।"

"मैंने तुम्हें पहचाना नहीं...तुम...।"

"मिस्टर पहाड़िया को पहचानती हो?"

"ह...हां।"

"तुम्हें लेने के लिये मिस्टर पहाड़िया ने ही भेजा है मुझे। चलो यहां से।"

मोना चौधरी, रानी को लेकर उस कमरे में पहुंची। उन लोगों के सामने पड़ते ही रानी सहम गई।

"डरो मत।" मोना चौधरी बोली—"ये अब तुम्हें कोई तकलीफ न दे सकेंगे।"

"ये मुझे...मुझे मारने वाले थे।"

"अब निश्चिंत हो जाओ।" मोना चौधरी ने व्यंग से कहा—"इनकी हालत देख ही रही हो। वो सामने सीढ़ियां हैं, ऊपर जाने के लिये, तुम ऊपर पहुंचो, हम आ रहे हैं।"

रानी तेज कदमों से सीढ़ियों की तरफ बढ़ गई।

"तुम ये सब ठीक नहीं कर रहीं।" बशीर कह उठा।

"अपने बारे में बता।" मोना चौधरी रिवाल्वर थामे गुर्राई— "मल्होत्रा कहता है कि तू जाफर शरीफ है?"

"नहीं। मेरा नाम नसीम है।"

"तो मल्होत्रा क्यों कहता है तू जाफर है?"

"मेरा चेहरा कुछ हद तक उससे मिलता है। कइयों को गलतफहमी हो जाती है।"

"बशीर बनकर मेरे साथ क्यों था तू?"

"जाफर का दिल्ली से फोन आया था। वो जानता था कि तुम किस प्लेन से कश्मीर पहुंच रही हो...और यहां तुम्हें बशीर मिलेगा। सब कुछ जानकर मैंने बशीर को काबू में

किया। उसका मुंह खुलवाया और खुद बशीर बनकर तुमसे आ मिला।"

"क्यों?"

"जाफर का कहना था कि तुम्हारे साथ रहूं और देखूं कि क्या तुम जाफर की गुम हो चुकी फाइल के बारे में कोई बात करती हो। उस फाइल को ढूंढने के लिये जाफर दिल्ली में भागा फिर रहा है।" नसीम ने कहा।

"जाफर अब भी दिल्ली में है?"

"हां।"

"उससे कहना फाइल हमें मिल गई है। देश भर में उसने जो आतंक का पंजा फैला रखा है, वो अगले चौबीस घंटों में सिमटना शुरू हो जायेगा।" मोना चौधरी ने दांत भींचकर कहा।

"ये बात मैं कहूं जाफर से?"

"हां।"

"इसका मतलब बाहर पुलिस नहीं है?" नसीम की आंखें सिकुड़ गईं।

"इस बार तेरे को छोड़ रही हूं। दोबारा कभी मेरे सामने पड़ा तो नहीं छोडूंगी।"

नसीम दांत भींचकर रह गया।

"अब मेरे आखिरी सवाल का जवाब दे। जीना चाहता है तो जवाब जरूर देना।"

नसीम मोना चौधरी को देखने लगा।

"मिस्टर पहाड़िया कहां हैं?"

नसीम ने दांत भींच लिए।

"मैंने कहा था कि जिन्दा रहना चाहता है तो जवाब जरूर देना।" मोना चौधरी के होठों से गुर्राहट निकली और आगे बढ़कर रिवाल्वर की नाल नीचे बैठे नसीम के सिर पर रख दी—"अब तू...।"

"मत मारना।" नसीम जल्दी से कह उठा—"मैं तुम्हें मिस्टर पहाड़िया के पास ले चलता हूं।"

"तू सिर्फ ये बता दे कि वो कहां हैं?"

"उन्हें एक जगल में बने कमरे में रखा हुआ है। उसके साथ काजी है।"

"ऐसा क्यों? मिस्टर पहाड़िया को तो पाकिसतान ले जाना... ।"

"जाफर दिल्ली में है। वो आयेगा तो मिस्टर पहाड़िया को सीमा पार पहुंचायेगा।" नसीम कह उठा।

मोना चौधरी कुछ पल उसे देखती रही, फिर बोली—

"उठ...तू मेरे साथ चल। मिस्टर पहाड़िया के पास ले चल मुझे।"

बशीर उर्फ नसीम उठ खड़ा हुआ।

"बाकी सबको बेहोश कर दो...। दो घंटे से पहले होश में न आयें।" मोना चौधरी ने कहा।

पारसनाथ और महाजन ने ऐसा ही किया।

"अगर रास्ते में तूने कोई शरारत की तो जिन्दा नहीं बचेगा।" मोना चौधरी ने दांत भींचकर कहा।

वो चुप रहा।

"चल ऊपर।"

मोना चौधरी, बशीर उर्फ नसीम को लेकर ऊपर पहुंची। मल्होत्रा, रानी भी वहां थे।

"गुलाम मोहम्मद के यहां तूने फोन किया था कि हम वहां पहुंच रहे हैं?" मोना चौधरी ने पूछा।

"हां।"

"क्यों किया?"

"इसलिये कि गुलाम मोहम्मद जिन्दा रहे। वो जाफर का यार है। उसके बदले तुम किसी और को मार दो, इसका इन्तजाम भी मैंने करवा दिया था। लेकिन अगले दिन अखबार से तुम्हें पता चल गया कि वो नहीं मरा।"

"मुझे तो हैरानी है कि तू जाफर नहीं है।" विजय मल्होत्रा उसे घूरता कह उठा।

नसीम कुछ न बोला।

"मारा नहीं किसी को?" मल्होत्रा ने मोना चौधरी से पूछा।

"कोई मुकाबले पर नहीं उतरा।" मोना चौधरी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तो इन लोगों को छोड़ने का क्या फायदा? ये फिर जाफर के लिये काम करेंगे और... ।"

"और हम जैसा कोई इन्हें मार देगा। तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं।"

मल्होत्रा ने कुछ नहीं कहा।

तभी पारसनाथ और मल्होत्रा ऊपर पहुंचे।

दीनू नशे में एक तरफ लुढ़का पड़ा था।

मोना चौधरी ने मल्होत्रा से कहा—

"तुम रानी को लेकर सितारा के पास पहुंचो। काम निपटा कर हम वहीं आते हैं।"

फिर वे सब बाहर निकले।

मल्होत्रा, रानी के साथ चला गया और मोना चौधरी, महाजन, पारसनाथ, नसीम के साथ दूसरे रास्ते पर बढ़ गये। रात के बारह बज रहे थे। सर्दी कड़ाके की पड़ रही थी।

□□□
□□□

घने जंगल में पहुंचते ही सर्दी का अहसास तेज हो गया था। अंधेरा गहरा था। मोना चौधरी ने नसीम का हाथ कसकर पकड़ा हुआ था कि अंधेरे का फायदा उठाकर, वो खिसक न जाये। आगे बढ़ने के साथ-साथ महाजन और पारसनाथ भी उस पर नजर रखे हुए थे।

जंगल के बाहर सड़क तक पहुंचने में उन्होंने चोरी की एक कार का इस्तेमाल किया था। यहां तक पहुंचने में उन्हें घंटा भर लग गया था।

जंगल का रास्ता कैसा है, अंधेरे में कुछ भी पता न चल रहा था।

"अगर तू कोई चालाकी कर रहा है तो जिन्दा नहीं

बचेगा।" महाजन कठोर स्वर में कह उठा।

"मैं कोई चालाकी नहीं कर रहा।"

"कहां हैं मिस्टर पहाड़िया?"

"कुछ आगे और... ।"

"इस जंगल जैसी जगह पर कौन आता होगा?"

"सब आते हैं। हम लोगों को साफ रास्ता पता है, क्योंकि हम दिन में भी इधर आते हैं। जाफर ने सिर्फ एक जगह को ही अपना ठिकाना नहीं बना रखा, ठिकाने के नाम पर जाफर कई जगहों का इस्तेमाल करता है। किसी को छिपाकर रखना हो तो इसी जगह का इस्तेमाल किया जाता है, जहां हम जा रहे हैं।"

"कैसी जगह है ये?"

"सेबों के बाग में, एक तरफ बड़ा-सा कमरा बना रखा है। जैसा कि आम तौर पर सेबों के बागों में, सेब रखने के लिये बनाया जाता है। ऐसी जगहों पर कोई शक भी नहीं कर सकता।" नसीम ने कहा।

नसीम के मार्गदर्शन में वे बीस मिनट तक अन्धेरे में ऐसे ही बढ़ते रहे।

फिर नसीम ठिठका।

"बस। अब कुछ आगे ही सेबों का बाग शुरू हो जाता है। मैं आगे नहीं जाऊंगा।"

"क्यों?" मोना चौधरी ने अंधेरे में उसे देखा।

"जाफर को पता चल जायेगा कि मैं तुम लोगों को यहां तक लाया हूं...वो मुझे मार देगा।"

"जाफर को तो, ये बात वो लोग भी बता देंगे, जिन्हें हम जिन्दा छोड़कर आये हैं।"

"वो मेरे भरोसे के हैं। नहीं बतायेंगे।"

"अभी कुछ और हमारे साथ चलो।"

मोना चौधरी उसका हाथ पकड़े लगभग खींचती हुई आगे बढ़ी।

कुछ कदमों बाद ही जंगल खत्म हो गया।

सामने बाग-सा नजर आ रहा था। कोहरे में वो छिप-सा गया था। एक तरफ बल्ब जल रहा था। जिसकी रोशनी कोहरे में न के बराबर थी।

"वो रहा कमरा...।" नसीम एक तरफ इशारा करता हुआ बोला—"उसी में मिस्टर पहाड़िया और काजी हैं।"

"काजी अकेला है?" पारसनाथ ने पूछा।

"हां... ।"

"अगर... ।" मोना चौधरी दरिन्दगी से कह उठी—"तुम्हारी कोई भी बात गलत निकली तो... ।"

"मैंने कुछ भी गलत नहीं कहा। विश्वास करो मेरा... ।"

उसी पल मोना चौधरी का रिवाल्वर वाला हाथ उठा और नाल उसकी कनपटी पर पड़ी। नसीम के होठों से कराह निकली। दूसरी चोट होते ही वो बेहोश होकर नीचे गिरता चला गया।

जानलेवा सर्दी के आगोश में पैना सन्नाटा छाया हुआ था।

मोना चौधरी, महाजन और पारसनाथ दबे पांव आगे बढ़े। उनके पांवों के नीचे पत्थर आते तो कुछ आहट-सी उभरती, फिर सब कुछ शांत पड़ जाता। दो मिनट में ही वो सेबों के बाग में जाकर ठिठके।

अंधेरे में नजरें हर तरफ घूमीं।

"नसीम की बात का पूरी तरह विश्वास नहीं किया जा सकता।" मोना चौधरी गम्भीर स्वर में कह उठी—"हमें यही सोचकर आगे बढ़ना है कि वहां एक से ज्यादा आदमी हो सकते हैं। बिखर जाओ और अलग-अलग होकर आगे बढ़ो।"

अगले ही पल वे तीनों अलग होते चले गये।

मोना चौधरी वहीं खड़ी रही।

पारसनाथ और महाजन अंधेरे में गुम हो गये।

रिवाल्वर थामे मोना चौधरी सतर्कता से उस कमरे की

तरफ बढ़ने लगी, जिसके बाहर रोशनी का मध्यम-सा बल्ब जल रहा था। सर्दी की अधिकता के कारण, मोना चौधरी के दांत रह-रहकर किटकिटा उठते थे।

कोई खतरा न आया।

वो दरवाजे तक पहुंच गई।

अलग-अलग रास्तों से महाजन और पारसनाथ भी वहां आ गये।

हर तरफ सन्नाटा पसरा हुआ था।

मोना चौधरी ने रिवाल्वर की नाल जोरों से दरवाजे पर ठकठकाई।

"कौन?" उसी पल भीतर से आवाज उभरी।

महाजन ने पहचान किया कि ये काजी की आवाज थी।

"जाफर!" मोना चौधरी ने आवाज को अजीब-सी मोटी बनाकर कहा।

"क्या कहा...जाफर...जाफर शरीफ...?"

"हां, जल्दी खोलो...बाहर सर्दी बहुत है।" मोना चौधरी ने उसी तरह से मोटे से लहजे में कहा।

भीतर से आहटें तो उभरीं, परन्तु दरवाजा नहीं खोला गया।

"दरवाजा खोलो, देर क्यों लगा रहे हो?" उसी आवाज में मोना चौधरी ने कहा।

"मुझे यकीन नहीं आ रहा कि तुम जाफर हो।" भीतर से काजी की आवाज आई।

"क्या तुम मुझ पर शक कर रहे हो बेवकूफ!"

"तुम्हारी आवाज...आवाज कुछ अलग-सी है।"

"सर्दी लग गई है। गला खराब है। तुम दरवाजा खोलते हो कि मैं जाऊं?"

पलों की खामोशी के बाद भीतर से आवाज आई—

"तुम्हारे साथ कौन है?"

"मैं अकेला हूं और कठिनता से वक्त निकालकर यहां पहुंचा हूं। आज दिन में ही दिल्ली से यहां पहुंचा हूं। अगर

तुम मुझ पर शक कर रहे हो तो मैं दिन में तुम्हारे पास आऊंगा।"

"ठहरो...।"

"जल्दी करो...।"

"खोलता हूं...।" इसके साथ ही भीतर से दरवाजा खोलने की आवाज आई।

दरवाजा खुला। उसी पल काजी का हाथ बाहर आया और उसमें दबी रिवाल्वर की नाल मोना चौधरी के पेट में लग गई। दरवाजे के ऊपर जल रहे बल्ब में मोना चौधरी स्पष्ट नजर आई उसे।

जाफर शरीफ की जगह किसी युवती को पाकर काजी की आंखें फैल गईं।

इससे पहले कि वो गोली चला पाता—एक तरफ छिपे खड़े महाजन ने उसके हाथ में दबी रिवाल्वर पर इस तरह झपट्टा मारा कि अगर गोली चले भी तो किसी को लगे नहीं।

अगले ही पल रिवाल्वर महाजन के हाथ में थी।

मोना चौधरी ने रिवाल्वर की नाल काजी के पेट से लगाते उसे भीतर धकेला।

"चल...।"

काजी उल्टे पांव पीछे होता चला गया।

मोना चौधरी भीतर प्रवेश कर गई।

कमरे में एक तरफ सेबों का छोटा-सा ढेर पड़ा था। उसके पास ही हाथ-पांव बंधे मिस्टर पहाड़िया मौजूद थे। उनके ऊपर रजाई डाली हुई थी। एक तरफ चारपाई बिछी थी, जो कि काजी के अपने लिये थी। भीतर जल रही रोशनी में सब के चेहरे स्पष्ट हो गये।

पारसनाथ और महाजन भी भीतर आ गये।

"क...कौन हो तुम?" काजी हिम्मत इकट्ठी करके बोला।

"मोना चौधरी...।"

"क...कौन मोना चौधरी...?"

मोना चौधरी की निगाह मिस्टर पहाड़िया पर पड़ी।
"आप ठीक हैं?" मोना चौधरी ने पूछा।
"हां।" मिस्टर पहाड़िया का स्वर शांत था।
पारसनाथ आगे बढ़कर मिस्टर पहाड़िया को खोलने लगा।
तभी काजी की निगाह महाजन पर पड़ी तो वो चौंका।
"तुम...?"
"हां मैं।" महाजन कड़वे स्वर में कह उठा—"बिलाल और अकरम मेरे ही हाथों मारे गये थे।"
काजी के चेहरे पर घबराहट उभरती स्पष्ट दिखी।
पारसनाथ ने मिस्टर पहाड़िया को खोलकर, उन्हें सहारा देकर उठाया। मिस्टर पहाड़िया अपने हाथ-पांव हिलाकर, शरीर को पुनः सामान्य हालत में लाने की चेष्टा करते बोले—
"ये आई.एस.आई. का एजेन्ट है।"
उसी पल मोना चौधरी ने रिवाल्वर की नाल ठीक उसके दिल वाले हिस्से में रखी और ट्रेगर दबा दिया। गोली का तेज धमाका हुआ और काजी नीचे जा गिरा।
"क्यों मारा इसे?" मिस्टर पहाड़िया बोले—"ये हमें कई काम की बातें बता सकता था।"
"इतना वक्त नहीं है कि इसे साथ लेते फिरें।" मोना चौधरी ने शांत स्वर में कहा।
"अब हमें यहां से निकल चलना चाहिये।" महाजन बोला।
"हां।" मोना चौधरी ने मिस्टर पहाड़िया से कहा—"रानी मिल गई है हमें।"
"गुड।" मिस्टर पहाड़िया मुस्कुराये—"मुझे आशा नहीं थी कि यहां पर कोई मुझे बचाने आ सकता है।"
"हमें भी आशा नहीं थी कि हम आप तक पहुंच पायेंगे।" मोना चौधरी मुस्कुराई।
तभी दरवाजे से भीतर फायर हुआ।
गोली मोना चौधरी की कमर को हवा देती दीवार से जा लगी।
उन सबने फुर्ती से दरवाजे के साथ की दीवार की ओट ले ली। सबके चेहरों पर खतरनाक भाव आ ठहरे थे। सन्नाटा हर तरफ पसरा पड़ा था। खुले दरवाजे से ठण्डी हवा की लहर तेजी से भीतर आ रही थी। वे सब बाहर की आहटें सुनने का प्रयत्न कर रहे थे।
परन्तु बाहर से कोई आहट नहीं आई।
इसका मतलब बाहर ज्यादा लोग नहीं थे।
उसी पल बाहर से बशीर उर्फ नसीम की ऊंची आवाज सुनाई दी—
"मोना चौधरी! अब तुम लोग नहीं बचोगे। जब भी बाहर निकलोगे, मैं तुम लोगों को शूट कर दूंगा।"
"बहुत जल्दी होश आ गया इसे?" पारसनाथ कह उठा।
मोना चौधरी ने महाजन से कहा—
"तुमने इसकी तलाशी ठीक से नहीं ली थी। रिवाल्वर है इसके पास...।"
"शायद मैं चूक गया।
"जरा-सी चूक हम लोगों की मौत बन सकती है। देख ही रहे हो।" मोना चौधरी बोली।
महाजन खामोश रहा।
"हमसे टकराने की चेष्टा न करो।" मोना चौधरी ने ऊंचे स्वर में कहा—"जान बचाकर भाग जाओ।"
"नहीं। अब मैं तुममें से किसी को नहीं छोडूंगा।" नसीम का स्वर गुस्से से भरा हुआ था।
मोना चौधरी की कठोर निगाह कमरे में फिरने लगी। उसकी आवाज से ये अंदाजा हो गया कि वो दरवाजे से पांच-सात कदमों की दूरी पर ही है।
"महाजन...।" मोना चौधरी ने सरसराते स्वर में कहा—"चारपाई पर पड़ा वो तकिया उठाओ।"
महाजन ने तुरन्त आगे बढ़कर तकिया उठाया।

"मेरा इशारा पाते ही तकिया, दरवाजे से इस तरह बाहर फेंकना जैसे कोई कूदा हो।" स्वर बेहद धीमा था।

महाजन ने सहमति से सिर हिलाया।

फिर मोना चौधरी ने ऊंचे स्वर में कहा—

"मैं बाहर आ रही हूं।"

"आओ।" नसीम का खतरनाक स्वर कानों में पड़ा—"मैं तुम सबको गोली मार दूंगा।"

"तुम ऐसा नहीं कर सकते।" मोना चौधरी दरवाजे के पास आकर बोली।

जवाब में नसीम की आवाज नहीं आई।

मोना चौधरी नीचे झुकी और खुले दरवाजे के पास पेट के बल नीचे लेटी, उसके बाद वो इस तरह बैठ गई कि उचककर गर्दन और रिवाल्वर वाला हाथ दरवाजे से बाहर निकाल सके।

"हमारे दोस्त बन जाओ नसीम। बहुत फायदा होगा तुम्हें... ।" मोना चौधरी ने कहा।

"बकवास मत करो! हम कभी भी दोस्त नहीं... ।"

इसी पल मोना चौधरी ने इशारा किया महाजन को।

महाजन ने इस तरह तकिया बाहर उछाला जैसे किसी ने बाहर छलांग लगाई हो।

एक के बाद एक दो गोलियां सुलगती-सी तकिये को लगती देखीं।

उसी पल मोना चौधरी ने सिर और रिवाल्वर वाला हाथ दरवाजे से बाहर निकाला। चार कदमों की दूरी पर नसीम दीवार के साथ सटा मौजूद था। उसका ध्यान तकिये की तरफ था। शायद अब तक उसे इस बात का अहसास हो गया था कि उसने किसी आदमी पर नहीं, तकिये पर गोलियां चलाई हैं। इस अहसास के साथ उसने दरवाजे की तरफ देखा लेकिन फिर कुछ कर न सका।

दरवाजे के पास, सिर बाहर निकाले उसकी निगाह मोना चौधरी पर पड़ी। मोना चौधरी का रिवाल्वर वाला हाथ उसकी

तरफ था कि तभी ट्रेगर दबा गया।

तेज आवाज के साथ गोली उसकी छाती में लगी।

वो दीवार से टकराया।

मोना चौधरी की चलाई दूसरी गोली उसकी कनपटी में जा धंसी। वो पुनः दीवार से टकराया और नीचे जा गिरा। फिर उसके शरीर में कोई हरकत न हुई।

□□□

□□□

जाफर शरीफ हाथ नहीं आया था।

बाकी सब काम निपट गया था।

मिस्टर पहाड़िया उसी समय अलग हो गये थे।

महाजन, मोना चौधरी, पारसनाथ वापस होटल पहुंचे तो सुबह के चार बज रहे थे। विजय मल्होत्रा और रानी वहां पर पहले से ही मौजूद थे। बगल वाला खाली कमरा होटल वालों से और ले लिया और वो सब नींद में जा डूबे। बेफिक्री की नींद। सुबह काम जो नहीं करना था।

अगले दिन मोना चौधरी की आंख ग्यारह बजे खुली। उसी वक्त ही महाजन ने चाय मंगवाई थी। मोना चौधरी को भी मिल गई।

"जाफर शरीफ हाथ नहीं लगा।" महाजन बोला।

"लग जायेगा। अब नहीं तो फिर कभी सही।" मोना चौधरी ने चाय का घूंट भरा।

"पारसनाथ कहता है कि वो अभी सितारा के साथ कुछ दिन और कश्मीर में रहेगा।"

"रहने दो। हम चलते हैं, वापस दिल्ली। मल्होत्रा और रानी हमारे साथ जायेंगे।"

महाजन ने सिर हिला दिया।

मोना चौधरी ने चाय समाप्त की ही थी कि मिस्टर पहाड़िया का फोन आया। पहले महाजन ने सुना, फिर रिसीवर मोना चौधरी की तरफ बढ़ा दिया।

"कहिये।" मोना चौधरी बोली।

"तुम घंटे तक एयरपोर्ट पहुंचो। वहां हम दोनों एक साथ दिल्ली चलेंगे।" मिस्टर पहाड़िया की आवाज कानों में पड़ी।

"हम दोनों? बाकी नहीं?"

"वो दूसरे प्लेन से आ जायेंगे।"

"ठीक है। एक घंटे बाद मैं एयरपोर्ट पर मिलूंगी।" कहकर मोना चौधरी ने रिसीवर रख दिया।

"क्या हुआ?" महाजन ने पूछा।

"मैं मिस्टर पहाड़िया के साथ दिल्ली जा रही हूं। तुम तीनों अलग से पहुंच जाना।" मोना चौधरी ने कहा।

❑❑❑

❑❑❑

एक घंटे बाद मोना चौधरी एयरपोर्ट पर थी।

मिस्टर पहाड़िया वहां मिले।

दोनों एयरपोर्ट के अलग से बने रनवे पर पहुंचे, जहां छोटा-सा चार्टर्ड प्लेन तैयार खड़ा था। सीढ़ी लगी हुई थी। दोनों भीतर चढ़े तो सीढ़ी हटा ली गई। दरवाजा बन्द हो गया। भीतर उनकी सेवा के लिये सिर्फ एक व्यक्ति था। बैठने के लिये गद्देदार कुर्सियों के अलावा दो अलग-अलग बैड भी बिछे थे।

"मिलिट्री का विमान है ये?" मोना चौधरी ने पूछा।

"ऐसा ही समझ लो।" मिस्टर पहाड़िया मुस्कुराये।

चन्द मिनटों में ही उस छोटे से प्लेन ने आकाश में उड़ान भर ली।

मोना चौधरी उस बैड पर अधलेटी थी।

"इस बार आपका काम काफी उलझा हुआ था।" मोना चौधरी ने कहा।

"तुमने अभी हमारे काम देखे ही कहां हैं। अक्सर बड़ी मुसीबतों से हमें निकलना पड़ता है। देश की सीमा के मसले और भीतरी मामलों से भी निपटना पड़ता है। कई बार बहुत बड़ी परेशानी आ जाती है।"

"जो भी हो...इस बार काम करने में मजा आया।"

"सच?"

"हां।"

"हमारे साथ काम करना पसन्द करोगी?" मिस्टर पहाड़िया के होंठों पर मुस्कान थी।

मोना चौधरी ने मिस्टर पहाड़िया को देखा।

"देश-सेवा करना अच्छा काम है। पैसा जो तुम चाहोगी, वो ही मिलेगा। हर आराम मिलेगा, लेकिन काम खतरनाक से खतरनाक करने होंगे। किसी भी काम में तुम्हारी जान जा सकती है।"

"पुलिस में मैं वांटेड हूं।" मोना चौधरी ने सोच भरे स्वर में कहा।

"उसकी तुम फिक्र मत करो। मैं सब सम्भाल लूंगा।" मिस्टर पहाड़िया का स्वर गम्भीर हो गया।

मोना चौधरी कई पलों तक मिस्टर पहाड़िया को देखती रही, फिर मुस्कुरा पड़ी।

"मंजूर... ।"

"यानि कि तुम मिलिट्री सीक्रेट सर्विस की एजेन्ट बनने को तैयार हो?"

"हां, लेकिन मुझ पर कोई बंदिश नहीं होगी। अपनी मनमर्जी की मालिक रहूंगी मैं।"

"ठीक है, लेकिन आज के बाद तुम कानून नहीं तोड़ोगी।"

"इन कामों में कानून तोड़ना तो मामूली बात है।"

"अपने फायदे के लिये कानून नहीं तोड़ोगी।"

"ये बात मानने में मुझे कोई एतराज नहीं।"

मिस्टर पहाड़िया ने एक तरफ पड़ा लैपटॉप उठाया और उसे खोला। उनकी उंगलियां लैपटॉप के बटनों से खेलने लगीं। चेहरे पर आज अनोखी-सी चमक नजर आ रही थी।

दो मिनट बाद ही मिस्टर पहाड़िया ने लैपटॉप से निगाहें उठाकर कहा—

"आज से तुम मिलिट्री सीक्रेट सर्विस की एजेन्ट नम्बर 999 बन गई हो। एजेन्ट नम्बर 999 से वास्ता रखती, जरूरत की चीजें तुम तक पहुंचा दी जायेंगी बेटी।"

"थैंक्यू चीफ... !" मोना चौधरी मुस्कुराकर कह उठी।

तभी मिस्टर पहाड़िया का अटैंडेंट नाश्ते की ट्रॉली धकेलता वहां आ पहुंचा।

"मैं किसी के नीचे काम नहीं करूंगी।" मोना चौधरी बोली।

"तुम सिर्फ मेरे सवालों का जवाब देने को बाध्य हो और काम देश के लिये करोगी।"

मोना चौधरी के होठों पर मुस्कान थी।

कुछ पलों बाद ही दोनों नाश्ते में जुट गये।

चार्टर्ड प्लेन आसमान को चीरता हुआ दिल्ली की तरफ बढ़ा जा रहा था।

समाप्त